RNI Number : MPHIN/2016/70609

ISSN NUMBER : 2455-9814

वर्ष : 3, अंक : 9
अप्रैल-जून 2018
मूल्य पचास रुपये

कहानी विशेषांक

विभोम-स्वर

वैश्विक हिन्दी चिंतन की अंतर्राष्ट्रीय पत्रिका

शिवना प्रकाशन : जनवरी 2018 सेट में शामिल पुस्तकें

विमर्श - नक़्क़ाशीदार केबिनेट
संपादक : पंकज सुबीर

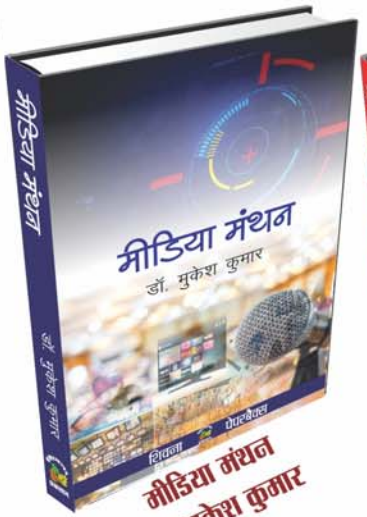

मीडिया मंथन
डॉ. मुकेश कुमार

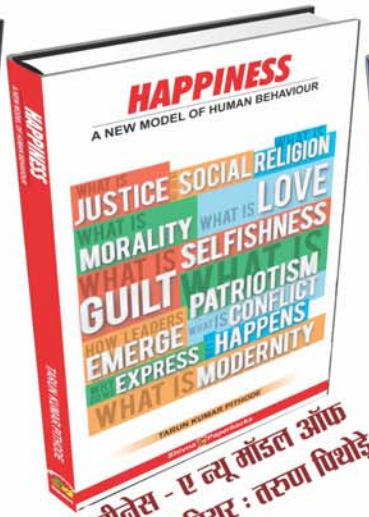

हैपीनेस - ए न्यू मॉडल ऑफ
ह्यूमन बिहेवियर : तरुण पिथोड़े

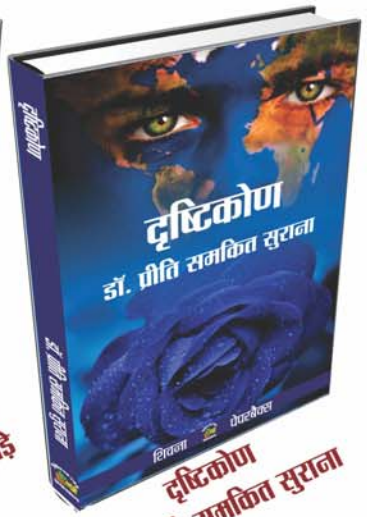

दृष्टिकोण
डॉ. प्रीति समकित सुराना

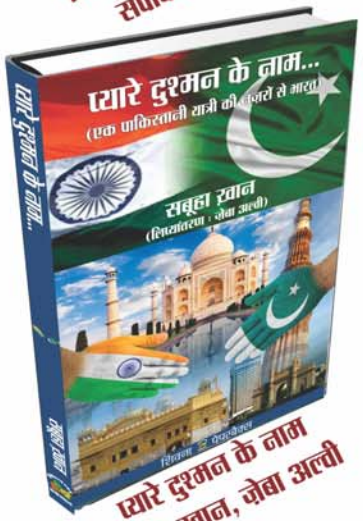

प्यारे दुश्मन के नाम
सबूहा ख़ान, ज़ेबा अली

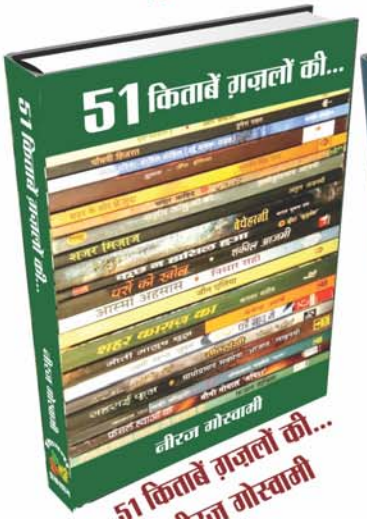

51 किताबें ग़ज़लों की...
नीरज गोस्वामी

तुम्हारे जाने के बाद
कृष्णकांत निलोसे

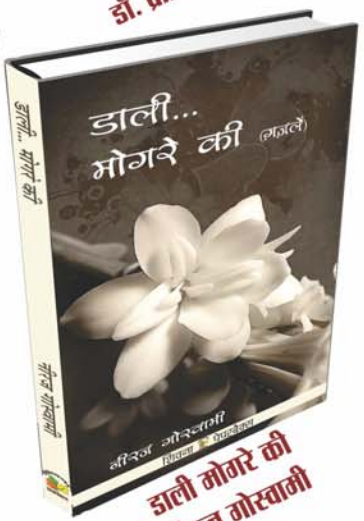

डाली मोगरे की
नीरज गोस्वामी

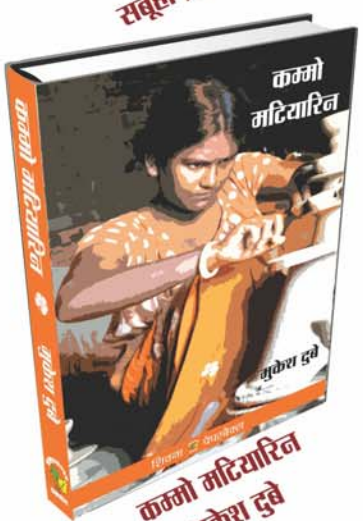

कम्मो मटियारिन
मुकेश दुबे

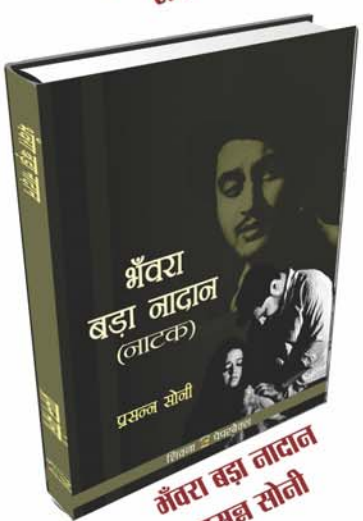

भँवरा बड़ा नादान
प्रसन्न सोनी

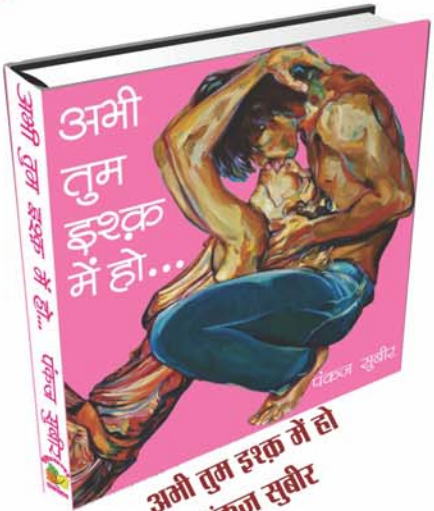

अभी तुम इश्क़ में हो
पंकज सुबीर

शिवना प्रकाशन, शॉप नं. 3-4-5-6, सम्राट
कॉम्प्लैक्स बेसमेंट, बस स्टैंड के सामने
सीहोर, मध्य प्रदेश 466001
फोन : 07562-405545, 07562-695918
मोबाइल : +91-9806162184 (शहरयार)
ईमेल : shivna.prakashan@gmail.com
http://shivnaprakashan.blogspot.in
https://www.facebook.com/shivna.prakashan

शिवना प्रकाशन
की पुस्तकें सभी प्रमुख
ऑनलाइन शॉपिंग
स्टोर्स पर

amazon http://www.amazon.in
flipkart.com http://www.flipkart.com
paytm https://www.paytm.com
ebay http://www.ebay.in

दिल्ली में पुस्तकें प्राप्त करें : हिन्दी बुक सेंटर, 4/5 आसफ अली रोड
फोन : 011-23286757 http://www.hindibook.com

संरक्षक एवं प्रमुख संपादक
सुधा ओम ढींगरा

संपादक
पंकज सुबीर

संपादकीय एवं व्यवस्थापकीय कार्यालय
पी. सी. लैब, शॉप नं. 3-4-5-6
सम्राट कॉम्प्लैक्स बेसमेंट
बस स्टैंड के सामने, सीहोर, म.प्र. 466001
दूरभाष : 07562405545, 07562695918
मोबाइल : 09806162184
ईमेल : vibhomswar@gmail.com

ऑनलाइन 'विभोम-स्वर' :
http://www.vibhom.com/vibhomswar.html
http://vibhomswar.blogspot.in
फेसबुक पर 'विभोम स्वर'
https://www.facebook.com/vibhomswar
एक प्रति : 50 रुपये (विदेशों हेतु ५ डॉलर $5)
सदस्यता शुल्क
200 रुपये (एक वर्ष), 400 रुपये (दो वर्ष)
1000 रुपये (पाँच वर्ष), 3000 रुपये (आजीवन)

विदेश प्रतिनिधि
अनिता शर्मा (शंघाई, चीन)
रेखा राजवंशी (सिडनी, आस्ट्रेलिया)
शिखा वार्ष्णेय (लंदन, यू के)
नीरा त्यागी (लीड्स, यू के)
अनिल शर्मा (बैंगकॉक)
डिज़ायनिंग
सनी गोस्वामी, शहरयार
तकनीकी सहयोग
पारुल सिंह
संपादन, प्रकाशन एवं संचालन पूर्णत: अवैतनिक, अव्यवसायिक।
पत्रिका में प्रकाशित सामग्री लेखकों के निजी विचार हैं। संपादक तथा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचारों का पूर्ण उत्तरदायित्व लेखक पर होगा।
पत्रिका जनवरी, अप्रैल, जुलाई तथा अक्टूबर में प्रकाशित होगी।
समस्त विवादों का न्याय क्षेत्र सीहोर मध्यप्रदेश रहेगा।

विभोम-स्वर

वैश्विक हिन्दी चिंतन की अंतर्राष्ट्रीय पत्रिका

वर्ष : 3, अंक : 9, त्रैमासिक : अप्रैल-जून 2018
RNI NUMBER : MPHIN/2016/70609
ISSN NUMBER : 2455-9814

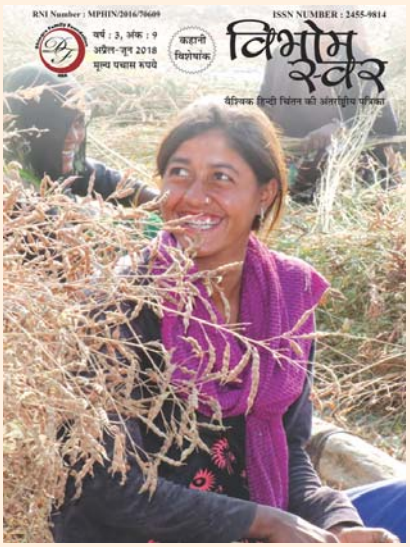

आवरण चित्र
राजेंद्र शर्मा बब्बल गुरु

Dhingra Family Foundation
101 Guymon Court, Morrisville
NC-27560, USA
Ph. +1-919-678-9056 (H),
+1-919-801-0672(MO.)
Email: sudhadrishti@gmail.com

इस अंक में

वर्ष : 3, अंक : 9
त्रैमासिक : अप्रैल-जून 2018

संपादकीय 5
मित्रनामा 7
कथा कहानी
एक और इबारत
विकेश निझावन 11
वह सुबह कुछ और थी
डॉ. हंसा दीप 15
बट जॉइंट
रोचिका शर्मा 19
शुवे
अनीता शर्मा 23
एक अरसे के बाद
अमरेन्द्र कुमार 30
वेटिंग क्लियर
महेश शर्मा 34
कटही
गोविन्द उपाध्याय 38
रिफ्यूजन
चन्द्रकान्ता अग्निहोत्री 42
ब्लैक एन्ड व्हाइट
नकुल गौतम 46
लघुकथाएँ
बटवारा
संदीप तोमर 14
कसाईख़ाना
ज़ोहेब युसुफ़ज़ई 18
लड्डु
मुरारी गुप्ता 29
मेरी याद
डॉ. चंद्रेश कुमार छतलानी 33
बाजरे की रोटी
डॉ. पूरन सिंह 37
कमर के नीचे का यथार्थ
डॉ. पूरन सिंह 40
मौक़ापरस्त
सुभाष चंद्र लखेड़ा 50
संवेदना
भारती शर्मा 57
भाषांतर
असमिया कहानी
पांचाली / डॉली तालुकदार
अनुवाद-पापोरी गोस्वामी 48
पंजाबी कहानी
नए गीत का मुखड़ा / हरजीत अटवाल
अनुवाद-बलबीर सिंह 51
व्यंग्य
'चम्मच-चुराण' महापुराण
डॉ. अनीता यादव 55
रामभरोस का भरोसा रामभरोसे
मोहनलाल मौर्य 56
शहरों की रूह
यात्रा वृत्तान्त
उमेश पंत 58
संस्मरण
चिट्ठियों का महत्त्व-कबूतर जा-जा-जा
शशि पाधा 61
कविताएँ
शिवकुमार अर्चन 63
निर्देश निधि 64
विश्वम्भर पाण्डेय 'व्यग्र' 65
राग रंजन 65
सतीश सिंह 66
संध्या 66
संगीता सिंह 'भावना' 67
सुनीता काम्बोज 67
नव पल्लव
दिल्ली मेरी दोस्त, तू कहाँ गई
अमृत वाधवा 69
समाचार सार
शिवना सम्मान समारोह 70
इफको साहित्य सम्मान 70
गूदड़ बस्ती का लोकार्पण 71
क्लब लिटराटी का आयोजन 72
एस आर हरनोट की कथा पुस्तक 73
'बंद मुट्ठी' का विमोचन 74
शिवना प्रकाशन विमोचन समारोह 74
रवीन्द्रनाथ त्यागी स्मृति शीर्ष सम्मान 75
विज्ञान व्रत के चित्रों की एकल-प्रदर्शनी 75
खामोश आवाज़ें का लोकार्पण 75
नेशनल डायमंड एचीवर अवॉर्ड 75
मीडियावाला न्यूज़ पोर्टल का लोकार्पण 76
मालती जोशी जी का अभिनंदन 76
क्षितिज लघुकथा समग्र सम्मान 77
जन्म शताब्दी समारोह 78
लेखक से मिलिए 78
सर्व भाषा साहित्य उत्सव 79
आकाशवाणी और राष्ट्रीय पुस्तक न्यास 79
विश्व पुस्तक मेले में शिवना प्रकाशन 80-81
आख़िरी पन्ना 82

विभोम-स्वर सदस्यता प्रपत्र

यदि आप विभोम-स्वर की सदस्यता लेना चाहते हैं, तो सदस्यता शुल्क इस प्रकार है : 200 रुपये (एक वर्ष), 400 रुपये (दो वर्ष), 1000 रुपये (पाँच वर्ष), 3000 रुपये (आजीवन)। सदस्यता शुल्क आप चैक / ड्राफ़्ट द्वारा विभोम स्वर (VIBHOM SWAR) के नाम से भेज सकते हैं। आप सदस्यता शुल्क को विभोम-स्वर के बैंक खाते में भी जमा कर सकते हैं, बैंक खाते का विवरण इस प्रकार है : Name of Account : **Vibhom Swar**, Account Number : **30010200000312**, Type : **Current Account**, Bank : **Bank Of Baroda**, Branch : **Sehore (M.P.)**, IFSC Code : **BARB0SEHORE** (Fifth Character is "Zero") (विशेष रूप से ध्यान दें कि आई. एफ. एस. सी. कोड में पाँचवा कैरेक्टर अंग्रेज़ी का अक्षर 'ओ' नहीं है बल्कि अंक 'ज़ीरो' है।) सदस्यता शुल्क के साथ नीचे दिये गए विवरण अनुसार जानकारी ईमेल अथवा डाक से हमें भेजें जिससे आपको पत्रिका भेजी जा सके:

नाम :_____ **डाक का पता :**_____

_____ **सदस्यता शुल्क :**_____ **चैक / ड्राफ़्ट नंबर :**_____

ट्रांज़ेक्शन कोड (यदि ऑनलाइन ट्रांसफ़र किया है) :_____ **दिनांक :**_____

(यदि सदस्यता शुल्क बैंक खाते में नकद जमा किया है तो बैंक की जमा रसीद डाक से अथवा स्कैन करके ईमेल द्वारा प्रेषित करें।)

संपादकीय एवं व्यवस्थापकीय कार्यालय : पी. सी. लैब, शॉप नंबर. 3-4-5-6, सम्राट कॉम्प्लैक्स बेसमेंट, बस स्टैंड के सामने, सीहोर, म.प्र. 466001, दूरभाष : 07562405545, मोबाइल : 09806162184, ईमेल : vibhomswar@gmail.com

जिसे अपना देश कहा जाता है, उसका नुक्सान क्यों?

हर भारतीय लड़की की भाँति शादी के बाद मैं वहीं आकर बस गई, जहाँ पति की नौकरी थी। 1982 से अमेरिका में हूँ। यहाँ की राजनीतिक और सामाजिक परिस्थितियों और समय-समय पर आए इस देश में परिवर्तनों के साथ मेरे जीवन की गाड़ी भी चलती रही । हर आम लड़की की तरह समय-समय पर मैंने अपने मायके को याद किया । हम परदेसनें देश को मायका ही कहती हैं। मायके की यादें बेहद सकून देती हैं, उससे जुड़े रहना कितना सुख देता है, यह बस महसूस किया जा सकता है; इसे शब्दों में बाँधना कठिन है।

सिर्फ अहसास है ये रूह से महसूस करो..... (गुलज़ार)

देश में कोई दुर्घटना घटे तो उसका असर इस देश में बैठे भारतीयों पर भी पड़ता है और सबके भीतर तक चोट पहुँचती है। ऐसे में विवेक अपना बही-खता खोल लेता है और दो देशों का 'बेस्ट' होते हुए, सही-गलत का अंतर्द्वंद्व अपना मोर्चा खोल लेता है।

मित्रो, कुछ न कर पाने की लाचारी कितनी पीड़ादाई है, यह सिर्फ भुक्तभोगी ही जान सकता है। गैंग रेप के समाचार पढ़े, टीवी में उन्हें बार-बार दिखाया गया। विचलित होना स्वभाविक है।

गैंग रेप आठ साल की बच्ची का हो या किसी महिला का अत्यंत शर्मनाक घटना है । दिन-ब-दिन बलात्कारी बढ़ते जा रहे हैं। पुरुष सत्ता की सोच अमानवीय हो रही है या स्त्री का सबल होना पुरुष सत्ता को चुनौती लगता है। जानना चाहती हूँ, कहाँ हैं मेरी वे बहनें! क्या कर रही हैं अब वे! जो मूवी के एक दृश्य के लिए तो नारी की अस्मिता और संस्कृति को बचाने की गुहार लगा कर जुलूस में आगे चल कर खूब नारे बाज़ी कर रही थीं। बलात्कार के खिलाफ क्यों खड़ी नहीं होती ? क्या अपनी ही जात के साथ हो रहे इस घृणित अत्याचार का उन्हें कोई रंज नहीं। अब कोई जुलूस नहीं निकल रहा, कहीं कोई तोड़-फोड़ नहीं हो रही। आरक्षण के लिए भी जुलूस निकले, बाज़ार बंद हुए। और बलात्कार के लिए सोशल मिडिया पर बस सहानुभूति..... बहनों! ज़रा सोचें, क्या हममें इतनी भी शक्ति नहीं कि हम अपने लिए खड़ी हो सकें। साहित्य में स्त्री-विमर्श का कोई महत्त्व नहीं रह जाएगा, अगर हम उससे जीवन में कोई परिवर्तन नहीं ला सकती।

अब मैं उस देश की बात करती हूँ, जहाँ रह रही हूँ और वर्षों से लोगों को परिवर्तन लाते और उसके लिए कार्य करते देखा है। हालाँकि वोटबैंक की राजनीति यहाँ भी कम घिनौनी नहीं।

सुधा ओम ढींगरा
101, गाईमन कोर्ट, मोर्रिस्विल्ल
नॉर्थ कैरोलाइना-27560, यू.एस. ए.
फोन : +1-919-678-9056
मोबाइल : +1-919-801-0672
ईमेल sudhadrishti@gmail.com

संपादकीय

पार्कलैंड, फ़्लोरिडा के स्कूल में हुई शूटिंग के बाद स्कूल के बच्चों ने फेसबुक और सोशल मिडिया से पूरे अमेरिका में बंदूकों के खिलाफ़ मुहिम चलाई। बच्चों ने शांति पूर्वक धरने दिए, बच्चों और अभिभावकों ने प्रशासन को अपनी बात बताई। कहीं कोई तोड़-फोड़ नहीं की और बन्दूक रखने की उम्र के कानून में एक महीने के अंदर परिवर्तन करवा लिया। कई माँ-बाप ने अपनी बंदूकें आत्मसमर्पित कर दीं।

वर्षों से मैंने ऐसे ही प्रदर्शन होते देखे हैं। देश, संपत्ति, जनजीवन को कोई हानि नहीं पहुँचाई जाती। मोर्चा निकला जाता है, मुद्दों को अधिकारियों तक, सरकार तक पहुँचाया जाता है। लोग कुछ बदलाव चाहते हैं और अगर उसके लिए हस्ताक्षरों की ज़रूरत होती है तो स्वयंसेवी घर-घर जाकर हस्ताक्षर लेते हैं। पर कहीं शोर-शराबा नहीं करते। कुछ उठा-पटक नहीं होती।

पता नहीं देश में क्या मानसिकता है, हर बात पर तोड़-फोड़, संपत्ति की क्षति, आग लगाना और दुकानें बंद करवाना दिनचर्या सी हो गई है । ऐसे लोगों से पूछना चाहती हूँ, कभी अपने घर को आग लगाई है! कभी अपने घर के सामान की तोड़फोड़ की है! नहीं न! फिर जिसे अपना देश कहा जाता है, उसका नुक्सान क्यों? कभी सोचा है! क्या सचमुच आप उस देश के वासी हैं? क्या आप अपने देश से प्रेम करते हैं? समय निकाल कर इस पर विचार करें।

सुनिए! कुछ खास बताने जा रही हूँ..... पाठकों की रुचि देखते हुए विभोम-स्वर की टीम ने यह अंक कहानी विशेषांक बना दिया है। हैरानी हुई.... अरे वाह! यही तो हम चाहते थे।

इस अंक में ग्यारह कहानियाँ हैं। हरेक का अलग अंदाज़, भिन्न खुशबू, कथ्य और शैली के नए प्रयोग आप पाएँगे। भारत से विकेश निझावन, रोचिका शर्मा, महेश शर्मा, गोविन्द उपाध्याय, चन्द्रकान्ता अग्निहोत्री और नकुल गौतम की तथा चीन से अनीता शर्मा , अमेरिका से अमरेन्द्र कुमार और कैनेडा से डॉ. हंसा दीप की कहानियाँ हैं। भाषांतर में असमिया और यूके से पंजाबी अनुदित कहानी है। नियमित स्तम्भ तो होंगे ही।

आपको ये कहानियाँ कैसी लगीं? आपकी नि:संकोच प्रतिक्रियाओं का इंतज़ार रहेगा....

अगले अंक में मिलूँगी, कहने से पहले मैं व्यंग्यकार, आलोचक और संपादक सुशील सिद्धार्थ जी को अपनी पूरी टीम की तरफ से श्रद्धा सुमन अर्पित करती हूँ। वे शिवना साहित्यिकी में नियमित लिखते थे। उनकी कमी हमें और हमारे पाठकों को खलेगी। भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित हमारे समय के महत्त्वपूर्ण कवि केदारनाथ सिंह जी का जाना हिन्दी कविता के लिए अपूरणीय क्षति है, पूरी टीम की तरफ़ से उनको श्रद्धांजलि।

आपकी,

सुधा ओम ढींगरा

श्रम का सच्चा अर्थ हमेशा से स्त्रियाँ ही सिखाती रही हैं। इसलिए क्योंकि स्त्रियाँ एक साथ घर तथा बाहर दोनों जगहों पर श्रम करती हैं। वे घर भी सँभालती हैं और फिर पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर खेतों में भी काम करती हैं। स्त्रियाँ बरसों से इस दुनिया को रहने योग्य बनाने हेतु श्रम कर रही हैं। करती रहेंगी..।

मित्रनामा

आवाज़ उठाने के लिए चुनौती

दोनों पत्रिकाओं 'विभोम-स्वर' एवं 'शिवना साहित्यकी' के नए अंक प्राप्त हुए। धन्यवाद। 'विभोम-स्वर' के सम्पादकीय का शीर्षक देख कर थोड़ी हैरानी हुई कि कैसे एक महिला ही दूसरी महिला को चोट पहुँचा सकती है। आज तो महिलाएँ स्त्री-विमर्श और नारी सशक्तिकरण का झंडा हर स्थान पर गाड़ रही हैं तो फिर चोट कैसी? सुधा जी ने मुद्दा लिया है -Me Too का। यानी इन दो शब्दों ने अमरीका में ही नहीं पूरे विश्व में एक आन्दोलन की लहर चला दी है। जो नारी आज तक नहीं बोल पाई, वो भी आपबीती बताने में झिझक नहीं रही है, क्यूँकि उसे अपनी बात कहने का मंच मिला है, उसकी दबी हुई पीड़ा को शब्द मिले हैं। पूरे सम्पादकीय को पढ़ कर शीर्षक का यही अर्थ लगा पाई कि सम्पादिका अपनी पत्रिका के माध्यम से विश्व भर की महिलाओं को शोषण के विरुद्ध आवाज़ उठाने के लिए चुनौती दे रही हैं। शायद यही सही सशक्तिकरण का एक महत्त्वपूर्ण पड़ाव है। कुछ बातों का पढ़ कर अधिक प्रभाव होता है और यह सत्य है कि उनका संदेश है -अगर बुरा होता देखो या सुनो तो उसे दबाओ नहीं, उसके विरुद्ध आवाज़ उठाओ।

पत्रिका में सब से पहले कहानियाँ पढ़ने का अवसर मिला। अचला नागर जी की 'ढोर' ने ऐसा बाँधा कि अंतर्मन उन्हीं परिस्थितियों में खो गया। कहानी की भाषा तो मुग्ध कर ही गई लेकिन बाबा हुकमसिंह जैसा चरित्र बहुत ही प्रभावित कर गया। मुझे कहानी में कहीं कहीं भोला से, अव्यक्त प्रेम की झलक भी दिखाई दी जो किसी भी आदर्श व्यक्ति के लिए एक भोली भाली स्त्री के मन में हो सकती है। बहुत प्यारी सी कहानी है ढोर। अफ़रोज़ ताज जी की 'नूर बानो' तो हृदय में घर कर गई। जिस प्रकार लेखक ने बहुत कम शब्दों में विभाजन की वीभत्स पीड़ा को कथानक में पिरोया है, वो पाठक को अंत तक बाँधे रखता है। मैंने कहानी का अंत दो बार पढ़ा केवल इस बात से आश्वस्त होने के लिए कि नानी ही नूर बानो थीं। कथाकार ने बहुत कुशलता से नानी का चरित्र बुना है। वो हमें अपनी ही नानी लगने लगीं। युवा लेखक शहादत की कहानी 'मौलाना' बहुत ही संवेदनशील कथा है जो तन और मन को भिगो देती है। बाकी कहानियाँ भी विभिन्न कथानक लिए हुए थीं और सभी अपने वैशिष्ट्य अंदाज़ से पाठक को प्रभावित करती हैं।

पत्रिका में प्रकाशित लघुकथाएँ और कविताएँ सामग्री में विविधता और मनोरंजन प्रदान करती हैं। व्यंग्य का प्रयोजन ही गुद्गुदाना है तो सभी व्यंग्य पढ़ कर मुसकाए बिना नहीं रह पाई। मेरे संस्मरण को स्थान देने के लिए आप का धन्यवाद। इस के माध्यम से मैं यही कहना चाहती थी कि सैनिक केवल युद्ध नहीं करता, वो पुत्र, पिता, प्रेमी विदूषक रक्षक सभी कुछ हो सकता है। 'शिवना साहित्यिकी' की सामग्री देख और पढ़ कर हम प्रवासियों को यह भी पता चलता रहता है कि आज कैसा साहित्य आ रहा है। इसके लिए श्री पंकज जी और उनकी पूरी टीम को साधुवाद।

***

-शशि पाधा, 10804, Sunset hills Rd, Reston Virginia 20190,
shashipadha@gmail.com

अंक का उतावली से इंतज़ार

'विभोम-स्वर' पत्रिका ने अभी दूसरे वर्ष में ही प्रवेश किया है और अपनी सफलता से साहित्य प्रेमियों के हृदय और घर में विशिष्ठ स्थान बना लिया है। हर अंक का उतावली से इंतजार रहता है और फिर संतुष्ट हो पढ़ा जाता है। इस अंक में किस-किस कहानी, व्यंग्य या आलेख की चर्चा करूं!

डॉ. अचला नागर की कहानी 'ढोर' उनकी सशक्त और मंझी हुई लेखनी की एक बानगी है। मनसा, वाचा, कर्मणा शक्तिशाली हुकम सिंह के चरित्र के अति कोमल पक्ष और उनकी सहृदयता को संतो के साथ हुई घटना के माध्यम से दरसाया गया है। अपना पराया छोड़ समाज हित और न्याय के लिए मर मिटने को तैयार आदर्श पुरुष हुकुम सिंह के जीवन के अंतिम दिन अपने ही बेटों के हाथ जिस गौरव हीन व दयनीय स्तिथि में बीते यह नियति की विडम्बना ही तो है। अचला जी ने इस कहानी की लड़ी में सब कुछ इतनी सरलता से पिरोया है जैसे थाली में रखे फूल उठा-उठा कर पिरोती जा रहीं हैं।

अफ़रोज़ ताज की कहानी स्वप्न और जागरण के साथ इठलाती, लुकाछिपी करती आगे बढ़ती है। नायिका 'नूर-बनो' ने तो मेरी नींद उड़ा दी। पूरी कहानी को दो-दो बार पढ़ कर भी रात बिस्तर पर पड़े मैं नाटक के पात्रों और दृश्यों में उलझी रही। यह देश विभाजन के समय की त्रासदी, घर-परिवार के बिखरने और जाति-धर्म से परे मनुष्यता के असीम बल की अमर कहानी है। कथा का अप्रत्याशित अंत पाठक को विस्मय में डाल देता है और अनायास ही मुख पर एक मुस्कान बिखर जाती है।

तेजेन्द्र शर्मा की 'यह कैसी शव यात्रा!' के अति रोचक व्यंग्य आलेख सी कहानी से मैं 'वाट्सऐप', 'फेसबुक अकाउंट', 'पिकासा', 'मेमरी-स्टिक', आदि शब्दों से परिचित हुई। आज की नई पीढ़ी के कुछ युवक-युवतियाँ 'लाईक' और 'कमेन्ट' की गणना पर अपने जीवन की सफलता और सार्थकता निर्धारित करते हैं। बावलेपन की सीमा पार कर के कुछ लोग मन गढंत घटनाएँ रचते है और पोस्ट कर, अपने बढ़ते 'लाईक' के नंबर से बिन पिए झूम उठते हैं।

तेजेन्द्र जी ने क्या कहानी गढ़ी है ! आँखों देखा हाल भी इतनी पकड़ वाला होना मुश्किल है।

'कर्फ्यू' में चौधरी मदन मोहन 'समर' ने भारत के गरीबों के दर्दनाक जीवन का बड़ा प्रभावी चित्रण किया है। पढ़ते समय पीड़ा से गले में कुछ गाँठ सी महसूस होती है।

साहित्य जगत् में शशि पाधा का नाम अनजाना नहीं है। इनका यह संस्मरण 'एक अंतहीन प्रेम कथा' में सैनिक पत्नी होने के नाते इन्होंने इन भारतीय वीरों और उनके परिवारों को करीब से देखा, समझा और हृदय से लगाया है। यह प्रेम कथा उनकी अनेकों देखी और साथ निभाई, जीई कथाओं सी है। शशि जी जब इन साक्षात्कारों को शब्द बद्ध करती हैं तो पाठक को लगता है कि वह भी साथ ही सब देख-सुन रहा है। तटस्थता नहीं रह जाती।

लेखकों के साथ ही अपनी सूक्ष्म दृष्टि और चुनाव के लिए संपादक द्वय, सुधा ओम

ढींगरा व पंकज सुबीर भी साधुवाद के पात्र हैं !

समस्त शुभ कामनाओं सहित,

***

-मीरा गोयल, 211 Landreth Ct, Durham, NC, 27713

भारतीय समाजों का शाश्वत सत्य

अमरीका के समाज की मुझे कुछ खबर तो नहीं है पर, 'महिला ही दूसरी महिला को पहले चोट पहुँचाती है' हमारे भारतीय समाजों का शाश्वत सत्य यही है। सुशिक्षित अमरीकी समाज में स्त्रियाँ वैचारिक रूप से ज़्यादा सजग हैं और तभी तो अपने ऊपर हुए शारीरिक और मानसिक शोषण के खिलाफ अश्वेत महिलाएँ भी मुखर होकर बोल सकती हैं, लेकिन भारत में स्त्रियों में इतनी हिम्मत ही नहीं कि अपना मुँह खोल सकें और अपने ऊपर हुई ज़्यादती और अत्याचार को जगजाहिर कर सकें। भारतीय समाजों में (बल्कि एशियाई समाजों में) स्त्रियों का भरपूर शोषण होता है और लज्जाजनक बात यह है कि शोषकों में स्त्रियाँ भी शामिल रहती हैं। सुशिक्षित और आधुनिक विचारों वाली स्त्रियाँ भी सच बोलने से कतराती हैं क्योंकि सदियों से हावी पितृसत्तात्मक व्यवस्था को सच सुनने की आदत नहीं है। भारतीय समाजों में स्त्रियों को रोते-सिसकते तो देख सकते हैं, पर मुखर होकर अपनी लड़ाई- लड़ने की कूवत विरल है और जो भी दुर्भाग्य से अपना मुँह खोल देती हैं, उनकी आवाज़ दबाने के लिए परिवार, समाज, सत्ता और कानून व्यवस्था सबके सब एक हो जाते हैं !

अगर किसी स्त्री के साथ बलात्कार हो जाता है तो सबसे पहले उसके चरित्र और पहनावे पर ही टीका - टिप्पणी शुरू हो जाती है और यौन उत्पीड़न के बाद स्त्री को पुरुष सत्ता के द्वारा पूछे गए अनर्गल प्रश्नों से मानसिक उत्पीड़न भी झेलना पड़ता है। भारतीय समाजों की स्त्रियों के बीच से कभी भी यौन शोषण के खिलाफ लड़ने वाली कोई तराना बुर्के नहीं उभर सकती, क्योंकि तसलीमा नसरीन के साथ कैसा बर्ताव होता रहा है यह किसी से भी छुपा नहीं है। स्त्रियाँ यदि एकजुट हो जाएँ तो इस संसार के स्वरूप को ही बदल कर रख दें और यह पितृसत्तात्मक ज़ुल्म क्या चीज़ है। बस भारतीय स्त्रियों को अपने आत्मसम्मान का बोध हो जाए तो कैसे भी सेक्सुअल हैरासमेंट और इमोशनल हैरासमेंट का मुँहतोड़ जवाब दे दें, पर भारतीय समाजों में स्त्रियाँ संगठित नहीं हैं। यहाँ पितृसत्तात्मक व्यवस्था ने इस बात का हमेशा खास ख़याल रखा कि स्त्रियाँ संगठित न हो सकें। यहाँ यह व्यवस्था की गई कि पीढ़ी दर पीढ़ी कैसे स्त्री ही स्त्री का शोषण करें पितृसत्तात्मक व्यवस्था के हित में। हॉलीवुड अभिनेत्री एलीसा मिलानो जैसी दुस्साहसी अभिनेत्रियों का घोर अभाव है हमारे बॉलीवुड में, नहीं तो स्त्री शोषण के मामले में हार्वी वाइन्सटाइन के बाप हैं मुम्बईया सिने-जगत में पर यहाँ आंदोलन नहीं हो सकता। नारी एकता भारतीय कथा साहित्य में तो खूब दिखता है पर आचरण में नहीं, क्योंकि भारतीय स्त्री को इतनी जातीय और धार्मिक खेमों में प्रारंभिक युगों में ही बाँट दिया गया कि आज भी वे इस नस्लभेद को छिन्न - भिन्न नहीं कर सकी हैं और इसलिए शायद कैरियर की सफलता के लिए बहुधा स्त्रियों को शरीर के तल पर कई असहनीय समझौते करने ही पड़ते हैं। इस आपसी विभेद के कारण ही स्त्रियों की आवाज़ इतनी मुखर नहीं हो पाती है कि आंदोलन बन जाए। स्त्री द्वारा स्त्री का शोषण पितृसत्ता के शोषण का ही हिस्सा है क्योंकि सदियों की गुलामी से मुक्ति के लिए तरसती स्त्रियों को अब गुलामी ही रास आने लगी है। आज भी स्त्री पुरुष पर निर्भर है कुछ अपवादों को छोड़कर। विदेशी स्त्रियाँ जहाँ जीवन के हर क्षेत्र में पुरुष के कंधे से कंधा मिलाकर चल रही हैं वहीं भारत में आज भी दहेज के लिए बहू जलाई जाती है। बेटी को जन्म के साथ ही कुलच्छनी और समस्या की तरह देखा जाता है। सुशिक्षित वर्ग हो या अशिक्षित स्वत्रंत विचारों वाली स्त्रियों को बर्दाश्त नहीं कर पाता है। स्वावलंबन का अभाव है और इसलिए भारतीय समाजों में स्त्रियों को सामाजिक ढाँचे और पारिवारिक सोच के अनुरूप ही ढलना पड़ता है। आपका संपादकीय स्त्रियों को अनुप्रेरित करने वाला है तो पुरुषों के प्रज्ञा को भी जगाने वाला है।

सुधा जी विभोम-स्वर के हर अंक में किसी न किसी विलक्षण व्यक्ति से मिलने जैसा सुख प्रदान करती हैं अपने साक्षात्कार में और इसलिए साक्षात्कार को पढ़ना सचमुच एक अपूर्व अनुभव होता है ! मॉरीशस में हिन्दी का प्रचार प्रसार करने वाले डॉ. उदय नारायण गंगू से हिन्दी, भोजपुरी और आर्य समाज को लेकर हुई सुधाजी की ऑन लाइन बातचीत अविस्मरणीय है। भोजपुरी भाषा बड़ी मीठी भाषा है, सो भोजपूरी लोक साहित्य पर शोध कार्य करने वाले अप्रतिम विद्वान के व्यक्तित्व ने इतना प्रभावित किया कि क्या कहूँ ! आर्य समाज के सद्प्रयास से मॉरीशस में हिन्दी को जो प्रोत्साहन और प्रसार प्राप्त हुआ वो अन्यत्र दुर्लभ है। स्वामी दयानंद सरस्वती की पुस्तक 'सत्यार्थप्रकाश' के पाठ और आर्य समाज की स्थापना ने किस तरह से मॉरीशस में नवजागरण ला दिया यह तथ्य याद रखने योग्य लगा। इतनी आसक्ति और समर्पण के साथ हिन्दी के प्रति लोगों में अनुराग पैदा करने की ज़िम्मेदारी और प्रतिबद्धता हमारे देश में गिनेचुने ही लोगों में दिखेगी पर उदयजी ने मॉरीशस में हिन्दी सेवा का जैसा व्रत ले रखा है वो अनुकरणीय है। इस सार्थक बातचीत के दौरान बहुत कुछ जानने का अवसर मिला सो सुधाजी का हार्दिक आभार !

फेसबुक की लत बहुत ही बेकार और वाहियात सी लत है, क्योंकि इसमें समय के अपव्यय के आलावा कुछ हासिल नहीं होता है। सोशल साइट्स के नशे से आज बहुत कम ही लोग मुक्त होंगे, वरना हर वह शख्स जिसके पास मोबाइल फ़ोन है, सोशल साइट्स पर व्यस्त है।

हिन्दी के अद्भुत कथाकार तेजेन्द्र शर्मा की कथा 'यह कैसी शवयात्रा...!' की कुछ प्रारंभिक पंक्तियाँ पढ़ लेने के बाद मुझे अहसास हुआ कि गम्भीर कहानी लिखी है तेजेन्द्र शर्मा ने, क्योंकि फेसबुक के कारण आज समाज की कई धारणाओं/अवधारणाओं में बहुत तेज़ी से परिवर्तन आ रहा है और हमारे कथाकारों और लेखकों को इस विषय पर सशक्त, सार्थक और विमर्श परक आलेख और कहानियाँ लिखने की ज़रूरत है ! फेसबुक हमारे हँसने और रोने को ही नहीं हमारे एकान्त और अंतरंग जीवन को भी प्रभावित कर रहा है।

शादीशुदा स्त्री और पुरुष अपनी पहचान छुपा कर फेसबुक पर रोमांटिक और प्यार भरी बातें करते हैं क्योंकि वाकई जब बहुत सारे लाइक्स और कमेन्ट्स मिलते हैं तो मन खुशी से बंगाली रसगुल्ले की तरह फूल जाता है। लेकिन जब दूसरे की बनिस्बत खुद को कम लाइक्स और कमेन्ट्स मिलते हैं तो जलन होती है। फेसबुक पर पहचान छिपा कर दूसरों को उल्लू बनाने वाले भी कम नही हैं। लेकिन फेसबुक की दुनियाँ को हम चाहे जितना भी यथार्थ मानें, है यह नकली और मायावी। मित्र भी ऐसे जिन्हें हम ठीक से जानते नहीं और न जानने की ज़रूरत समझते हैं। फेसबुक की मित्रता पारम्परिक मित्रता से अलहदा है और इस अलहदेपन को लेकर क्या ही बेहतरीन कहानी लिखी है तेजेन्द्र जी ने। यक़ीनन हर आदमी फेसबुक पर हमेशा कुछ ऐसा लगाते रहना चाहता है, जिसे बेहिसाब लाइक्स और कमेन्ट्स मिलते रहें या फेसबुक पर तूफ़ान आ जाए। अकसर लोग कुछ न कुछ अनोखा और बेतुका पोस्ट लगाते रहते हैं पर इस कहानी के नायक ने तो हद ही कर दिया है। मरने के नकली ख़बर पर इतने लाइक्स और कमेन्ट्स मिले कि बेचारा खुशी से बेमौत मर गया।

***

-नवनीत कुमार झा, हरिहरपुर, दरभंगा - 847306 (बिहार)

पठनीय सामग्री

साहित्य के आकाश में विभोम-स्वर ने नई जगह बनाई है। पत्रिका के अंक में संकलित कहानियाँ, कविताएँ, संस्मरण अन्य साहित्यिक समाचार बहुत ही रोचक एवं प्रभावी रहते हैं।

इस पत्रिका से मैं बहुत प्रभावित हूँ। पत्रिका की पठनीय सामग्री से व्यक्तिगत जुड़ाव हो गया है। हर अंक बेहतर है। हर नए अंक का बेसब्री से इंतज़ार रहता है। सभी संपादक मंडल को बेहतर साहित्य सामग्री प्रकाशित करने के लिए हृदय से धन्यवाद।

***

-प्रदीप गौतम सुमन, उपवन नगर, बोदाबाग, रीवा (म. प्र.) 486001
मोबाइल: 9827309705

'एक और शवयात्रा!' टाइप्ड फार्मूला

'विभोम-स्वर' त्रैमासिक पत्रिका का जनवरी-मार्च 2018 अंक पढ़ा। पत्रिका का संपादकीय पत्रिका की दिशा और दशा दोनों का प्रतिनिधित्व करता है। अप्रैल-जून 2016 के अंक से, जब पत्रिका प्रारंभ हुई थी, आज तक संपादकीय स्पष्ट और सटीक रहे हैं। उसी रेंज पर आख़िरी पन्ना समाप्त होता रहा है। पहले दिन से इस पत्रिका से जुड़ा हुआ हूँ, इसकी लोकप्रियता और आज जिस मुकाम पर यह पत्रिका पहुँची है, संपादकीय और आख़िरी पन्ने का भी योगदान है। कहानियाँ तो इसकी बेहतर होती ही हैं।

अचला नागर की कहानी ढोर, चौधरी मदन मोहन 'समर' की कर्फ़्यू, शहादत की 'मौलाना' और अफ़रोज़ की नूर बानों बहुत पसंद आईं। कृष्णा अग्निहोत्री 'एक सड़क और' में क्या कहना चाहती हैं.....? हाँ एक कहानी जिस पर मैं बात करना चाहता हूँ, वह है तेजेन्द्र शर्मा की कहानी 'एक और शवयात्रा..... !'

बाज़ारवाद का तेजेन्द्र शर्मा की लेखनी पर जम कर असर हुआ है। तेजेन्द्र शर्मा ने यह जान लिया है कि कहानियों के लिए कौन से मुद्दे हैं जो पाठकों को भावुक कर सकते हैं और वे भुनाए जा सकते हैं। कैंसर और मौत बस इसी के इर्द-गिर्द वे अपनी कहानी रचते हैं। मेरे जैसे पाठक, जो उनकी कहनियाँ एक अरसे से पढ़ रहे हैं, अब उनके टाइप्ड फार्मूला से बोर होने लगे हैं। प्रियंवद का कभी मैं बहुत प्रशंसक था, अब उनकी कहनियाँ पढ़ी ही नहीं जाती। समझ में नहीं आता, अनुभवों की लकीरें चेहरे पर आने के बाद लेखकों की कलम की स्याही क्यों छितराने लगती है?

***

-विनोद आनन्द, बलबीर नगर चौक, शाहदरा, दिल्ली।

जबरदस्ती लिखी गई कहानियाँ

'विभोम-स्वर' त्रैमासिक पत्रिका का जनवरी-मार्च 2018 अंक मिला। मैं पहले हमेशा कहानियाँ पढ़ती हूँ। एक-एक कर कहनियाँ पढ़ीं। सभी ने अपनी छाप छोड़ी पर कृष्णा अग्निहोत्री 'एक सड़क और' और तेजेन्द्र शर्मा की 'एक और शवयात्रा..... !'. जबरदस्ती लिखी गई कहानियाँ लगीं। फेसबुक पर कैंसर की घोषणा और फिर नायक का मरना फ़िल्मी सा लगा। संस्मरण और लघुकथाएँ बहुत अच्छी लगीं।

***

-नीलिमा देव, 481 Southwicke Dr., Streamwood, Chicago

बेजोड़ कहानी

'विभोम-स्वर' त्रैमासिक पत्रिका के जनवरी-मार्च 2018 के अंक में प्रकाशित कहानी 'यह कैसी शवयात्रा..!' पढ़ी। आज के मानव के जीवन के यथार्थ को बयान करती यह कहानी पाठक को शुरू से ही रोमांचित करती है और पढ़ने की जिज्ञासा भी जगाती है कि आगे क्या होने वाला है?

सोशल मीडिया- व्हाट्सएप, फेसबुक की आभासी दुनिया पर लिखी ''यह कैसी शवयात्रा'' बेजोड़ कहानी है। कहानी पढ़ते-पढ़ते हँसी छूटती है, तो कभी-कभी लगता है कि यह हम सबकी कहानी है। पढ़ते समय पाठक इस कहानी से अपने-आपको जुड़ा महसूस करता है। कहानी में लेखक ने बताने का भरसक प्रयास किया है, और वे काफी हद तक सफल भी हुए हैं कि 'कभी-कभी हँसी-हँसी में किया गया मज़ाक, या हद से ज़्यादा खुशी खतरनाक साबित होती है...'। मैं तेजेन्द्र शर्मा की कहानियों का शुरू से ही प्रशंसक रहा हूँ। चाहे 'एक बार फिर होली' हो या 'ढिबरी टाइट'। तेजेन्द्र शर्मा की सभी कहानियों से मुझे एक अनोखा जुड़ाव महसूस हुआ है।

'यह कैसी शवयात्रा..!' कहानी लाइक-कमेंट की दुनिया में जी-रहे युवाओं को सबक भी देती है। यह कहानी, जो सोशल-मीडिया पर यह देखने के लिए लगे रहते हैं कि किसने क्या लिखा ? मेरी पोस्ट पर कितने लाइक आए ? मानव के अन्दर एक ईर्ष्या को जन्म देती है, और हम सब जानते हैं कि यह प्रवृत्ति खतरनाक है।

मुझे अपने पहले के दिन याद आ गए, जब मैं भी 2011 में नया-नया फेसबुक से जुड़ा था और पोस्ट डालने के बाद हमेशा ऑनलाइन रहता था। प्रत्येक कमेंट देखना, प्रत्येक पर टिप्पणी करना। लेकिन कुछ ही दिनों में समझ आ गया कि यह जीवनचर्या ठीक नहीं है। इंसान को इस आभासी दुनिया

से बाहर निकलकर आना होगा। जीवन की इन्हीं सचाइयों को उद्घाटित करती है 'यह कैसी शवयात्रा' कहानी। कहानी में कई संवाद यादगार बन पड़े हैं। हिन्दी के हर पाठक को यह कहानी पढ़नी चाहिए।

***

-उमेश चन्द्र सिरसवारी (भारत)

रोचक और पठनीय

आपके संपादन में प्रकाशित पत्रिका 'विभोम-स्वर' का जनवरी-मार्च 2018 अंक प्राप्त हुआ। पत्रिका का यह अंक शुरू से अंत तक आकर्षक है। कवर पृष्ठ। पर प्रकाशित चित्र का चयन श्रेष्ठ है। यह भारतीय संस्कृति की एक झलक लिए हुए है। अंक में प्रकाशित संपादकीय वर्तमान वैश्विक समाज में आधी आबादी की स्थिति के बारे में सोचने को प्रेरित करता है। आख़िरी पन्ने पर प्रकाशित 'सोई भगी पिरपिराट' में उठाए गए मुद्दे गंभीर और चिंतनीय भी हैं।

पत्रिका में डॉ. उदय नारायण गंगू के साक्षात्कोर से मॉरीशस में हिन्दी भाषा के इतिहास एवं प्रयोग के बारे में उपयोगी जानकारी प्राप्त हुई। अंक में शामिल अन्य कहानियाँ एवं कविताएँ भी रोचक और पठनीय हैं। अंत के पृष्ठों पर समाचार-सार में विभिन्न भाषाई और साहित्यिक गतिविधियों का प्रकाशन जानकारीपूर्ण है।

इस अंक के सफल प्रकाशन के लिए आपको बधाई।

***

-डॉ. जवाहर कर्नावट, उप महाप्रबंधक, बैंक ऑफ़ बड़ौदा, (राजभाषा एवं शिक्षण संसाधन केंद्र), 022 65792602

और मजबूत होगा 'विभोम-स्वर'

जनवरी-मार्च 2018 अंक प्राप्त हुआ। ''मीटू'' नेटवर्क पर केन्द्रित सम्पादकीय रोचकता के साथ-साथ स्त्री विमर्श के ज्वलंत मुद्दे पर एक नई संभावना की आशा लिए हुए है। कहानियाँ, कविताएँ सभी प्रभावी हैं लेकिन एक शहीद की पत्नी की डायरी ''एक अंतहीन प्रेम कथा'' (संस्मरण) पढ़ते-पढ़ते नैन भीग गए। ''शांत मौत'' एक मार्मिक लघुकथा है लेकिन ''एक छल'' में सात वर्ष की छोटी उम्र के बच्चे से (जो डिपार्टमेंटल स्टोर नहीं जानता) अंत में बड़ी बात कहलवाना दुविधा उत्पन्न करता है। पंजाबी कहानी और 'हालोईन का त्यौहार' अंक को रोचक बना रहे हैं तो 'आख़िरी पन्ना' सोशल नेटवर्क पर छाने की जल्दबाजी को लेकर शानदार, प्रभावी वक्रोक्ति है। हर अंक के साथ निरंतर निखरता 'विभोम-स्वर' आने वाले समय में साहित्य जगत् का एक मज़बूत स्वर बनेगा, ऐसी उम्मीद है।

***

संतोष सुपेकर, 31, सुदामा नगर, उज्जैन-456001 (म.प्र.), दूरभाष : 0734-2559323, चलायमान : 094248 16096,
santoshsupeker@rediffmail.com

बोलते हुए कवर पेज

दोनों पत्रिकाओं 'विभोम-स्वर' एवं 'शिवना-साहित्यकी' के नए अंक प्राप्त हुए। दोनों ही पत्रिकाओं के कवर पृष्ठ बहुत देर तक नज़र को बाँधे रहे। पत्रिकाओं में कवर पृष्ठ के लिए फ़ोटो का चयन दोनों ही पत्रिकाओं की सबसे बड़ी विशेषता होती जा रही है। इन दिनों साहित्यिक पत्रिकाओं में जिस प्रकार के कवर पृष्ठ बनाए जा रहे हैं, उनकी तुलना में इन दोनों पत्रिकाओं के कवर पेज बिल्कुल ताज़ा हवा के झोंके की तरह अलग से महसूस होते हैं। पहले फ़ोटो पत्रकारिता हेतु अलग से संपादक पत्र-पत्रिकाओं में हुआ करते थे जो तय करते थे कि कवर पर कौन सा फ़ोटो लिया जाना है। यह निर्णय मौसम, पर्व, त्योहार आदि को ध्यान में रखकर किया जाता था। पत्रिकाओं में कवर पेज को लेकर बहुत संवेदनशील हुआ करता था पहले संपादक मंडल। इन दोनों पत्रिकाओं को देखकर उस समय की याद ताज़ा हो जाती है। इस बार के दोनों ही कवर पेज बोलते हुए हैं। ऊँट के साथ खड़ी हुई राजस्थानी महिला का चित्र बहुत शानदार कोण से लिया गया है। इतने अनूठे कवर पृष्ठों के लिए आपको भी बधाई तथा आपके छायाकार को भी बधाई।

***

-दिनेश कुमार
प्रेस छायाकार, मुम्बई

लेखकों से अनुरोध

'विभोम-स्वर' में सभी लेखकों का स्वागत है। अपनी मौलिक, अप्रकाशित रचनाएँ ही भेजें। पत्रिका में राजनैतिक तथा विवादास्पद विषयों पर रचनाएँ प्रकाशित नहीं की जाएँगी। रचना को स्वीकार या अस्वीकार करने का पूर्ण अधिकार संपादक मंडल का होगा। प्रकाशित रचनाओं पर कोई पारिश्रमिक नहीं दिया जाएगा। बहुत अधिक लम्बे पत्र तथा लम्बे आलेख न भेजें। अपनी सामग्री यूनिकोड अथवा चाणक्य फॉण्ट में वर्डपेड की टैक्स्ट फ़ाइल अथवा वर्ड की फ़ाइल के द्वारा ही भेजें। पीडीऍफ़ या स्कैन की हुई जेपीजी फ़ाइल में नहीं भेजें, इस प्रकार की रचनाएँ विचार में नहीं ली जाएँगी। रचनाओं की साफ़्ट कॉपी ही ईमेल के द्वारा भेजें, डाक द्वारा हार्ड कॉपी नहीं भेजें, उसे प्रकाशित करना अथवा आपको वापस कर पाना हमारे लिए संभव नहीं होगा। रचना के साथ पूरा नाम व पता, ईमेल आदि लिखा होना ज़रूरी है। आलेख, कहानी के साथ अपना चित्र तथा संक्षिप्त सा परिचय भी भेजें। पुस्तक समीक्षाओं का स्वागत है, समीक्षाएँ अधिक लम्बी नहीं हों, सारगर्भित हों। समीक्षाओं के साथ पुस्तक के कवर का चित्र, लेखक का चित्र तथा प्रकाशन संबंधी आवश्यक जानकारियाँ भी अवश्य भेजें। एक अंक में आपकी किसी भी विधा की रचना (समीक्षा के अलावा) यदि प्रकाशित हो चुकी है तो अगली रचना के लिए तीन अंकों की प्रतीक्षा करें। एक बार में अपनी एक ही विधा की रचना भेजें, एक साथ कई विधाओं में अपनी रचनाएँ न भेजें। रचनाएँ भेजने से पूर्व एक बार पत्रिका में प्रकाशित हो रही रचनाओं को अवश्य देखें। रचना भेजने के बाद स्वीकृति हेतु प्रतीक्षा करें, बार-बार ईमेल नहीं करें, चूँकि पत्रिका त्रैमासिक है अत: कई बार किसी रचना को स्वीकृत करने तथा उसे अंक में प्रकाशित करने के बीच कुछ अंतराल हो सकता है।

धन्यवाद
संपादक
vibhom.swar@gmail.com

एक और इबारत

विकेश निझावन

प्लाज़ा अपार्टमेन्ट की सातवीं मंज़िल पर मैं लिफ्ट द्वारा पहुँचा था। प्रफुल्ल से मोबाइल पर तय हो गया था कि हम पूरे सात बजे उसी के कमरे में मिलेंगे। पट्ठा मोबाइल पर ही चालीस मिनट बात करता चला गया था। पिछले बीस बरसों का खाता खोल कर बैठ गया था।

'लगता है, पैसा बहुत बना लिया है। जानता है इस वक्त तेरे मोबाइल का क्या बिल बन रहा होगा?

'दोस्त, अपने को मोबाइल से मत तोल। अभी तो बीस बरसों का प्री-फ़ेस पढ़ा है। चैप्टर तो मिलने पर ही खुलेंगे।'

मैं हँस पड़ा था। प्रफुल्ल को मैंने बहुत चाहा। चन्द पलों में ही हम इतने करीब आ गए थे, जैसे बरसों से एक दूसरे को जानते हों। उसकी आँखों में मुझे एक गहराई नज़र आती थी, जिसमें मैं डूब-डूब जाता था।और जब कुछ बरस बीत गए तो हम एक दूसरे में पूरी तरह समाहित हो गए थे.. और तब, प्रफुल्ल एकाएक इतनी दूर चला आया था।

यों लगा नहीं था कि वह इतनी दूर चला गया है। उसके साथ गुज़ारा एक-एक पल जैसे शेष जीवन के लिए काफी था। हालाँकि सदमा तो लगा था और मैंने कहा था ये क्या कह रहा है तू! मुम्बई जाएगा। इस तरह से बीजी और बाऊजी को छोड़कर। और वो भी एकदम से।'

'निर्णय एकदम से ही लिए जाते हैं रजत! सोच-समझकर और धीरे-धीरे लिए गए निर्णय से कई बार व्यक्ति चूक भी जाता है, और फिर वह सारी उम्र हाथ मलता रह जाता है।'

हाँ! मैं भी हाथ मलता रह गया था। रोहण भैया ने बड़े स्पष्ट शब्दों में कहा था, 'अब तुम्हारे पर कोई ज़िम्मेवारी नहीं है। माँ-पिताजी ने मुक्ति पा ली है। तुम भी अगर अपने बारे में सोच लो, तो हम भी पूरी तरह से मुक्त हो जाएँगे।'

रोहण भैया की बात का अर्थ नहीं समझ पाया था। लगा था, इनके संरक्षण के बिना कैसे जी सकता हूँ। और फिर मैं चला गया तो ये बिल्कुल अकेले हो जाएँगे। बाऊजी की अन्तिम विदाई पर भाभी ने कसम खाई थी कि वह मुझे रोहण भैया की तरह रखेंगी। लेकिन कुछ ही दिनों बाद भाभी ने बड़े स्पष्ट शब्दों में कह दिया था, 'क्या मैं रोहण को इस चारदीवारी में बन्द करके रखूँगी।'

भाभी की बात का अर्थ मेरी समझ में आने लगा था। रोहण भैया दबे से बोले थे तुम कोई

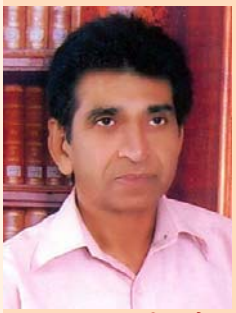

अम्बाला निवासी विकेश निझावन के दस कहानी -संग्रह, दो उपन्यास, एक लघुकथा संग्रह तथा कुछ बाल पुस्तकें प्रकाशित। कहानी संग्रह 'अब दिन नहीं निकलेगा', एक कविता संग्रह 'एक टुकड़ा आकाश' हरियाणा साहित्य अकादमी द्वारा पुरस्कृत। संप्रति त्रैमासिक पत्रिका 'पुष्पगंधा' के संपादक हैं।
संपर्क: 557 बी, पुलिस ग्राउंड के सामने, अम्बाला शहर: 134003, 'हरियाणा'
ईमेल: vikeshnijhawan@rediffmail.com
मोबाइल:9896100557

नौकरी क्यों नहीं तलाशते?'

नौकरी! इस देश में, इस शब्द की समस्या से मैं भी जकड़ गया था। सुबह से शाम तक न जाने कितने ही दफ्तरों के चक्कर लगा आता।

भाभी हँसी थीं, 'बबुआ! इस शहर की सरहद से बाहर निकलोगे तो कुछ बनेगा। लोग तो नौकरी पाने के लिए सात समुद्र पार निकल जाते हैं। तुम अपनी ही खूँटी के चारों ओर चक्कर लगाने में लगे हो।'

जीवन की वास्तविकता को अब समझ पाया था मैं। हर व्यक्ति को अपने लिए खुद ही जीना होता है। या यों कह लो कि जीने के लिए अपने ही जिस्म को चलाना होता है। जो हम दूसरों के लिए छोड़ देते हैं, वह केवल बोझ होता है। एकाएक प्रफुल्ल का ध्यान आया था। अच्छा रहा वह। कितना आगे निकल गया है। ढेर पैसा कमा रहा है। मेरी तरह कविता और कहानी ही तो लिखा करता था।

'कहानी और कविता ही आज उसके लिए आजीविका बन गई।'

'बन नहीं गई। उसने बना ली।' भाई गरजे थे, 'तुम भी उस मुकाम पर पहुँच सकते थे। यहाँ से निकलोगे तो कुछ हो पाएगा। तुम सोचते हो, कागज़ काले करके उन्हें अलमारी में बन्द करके रख दिया और अमर हो गए।'

लिफ्ट की आवाज़ ने मुझे वर्तमान में खींचा था। प्रफुल्ल की इन्तज़ार में पूरे पैन्तीस मिनट निकल चले थे। लिफ्ट से कोई औरनहीं, प्रफुल्ल ही बाहर आया था। हम यों लिपट गए थे, मानों किसी ने साये को उसके जिस्म से अलग कर दिया हो।

'बहुत देर लगा दी?'

'हाँ! साला एक डायरैक्टर मिल गया था। पिछले पन्द्रह दिनों से सर खाए जा रहा है। उसे कोई नया स्क्रिप्ट चाहिए।'

प्रफुल्ल ने ताला खोल भीतर कदम रखा। मैं उसके पीछे हो लिया था। मेरे भीतर पाँव रखते ही वह बोला, 'दरवाज़ा लॉक कर दे।'

'क्यों, क्या बात?' मैं उसकी बात से कुछ शंकित सा हो आया था।

'यहाँ कैसे-कैसे लोग आते हैं, तुम्हें नहीं मालूम। यहाँ अगर 'की- होल' न हो, तो जाने कैसे-कैसे जानवरों के बीच हमें कितने-कितने घण्टे इसी मंज़िल पर सड़ना पड़े।'

प्रफुल्ल के शब्दों में जो कड़वाहट थी, मैं उसे पूरी तरह से नहीं समझ पाया था। ऐसे में कह दिया, 'भई अगर अपने पास वक्त नहीं तो दूसरे से स्पष्ट बात भी तो की जा सकती है।'

'नहीं रे! यहाँ कुछ भी स्पष्ट नहीं है। जाने कब किसकी ज़रूरत आन पड़े, कुछ पता नहीं।बस, जीने के लिए केवल जुगाड़ करने पड़ते हैं यहाँ।' प्रफुल्ल की बातें पहेलियों की तरह लगने लगी थीं। मैंने भी हँसते हुए कह दिया, 'भई, बड़े नगर के लोगों की बड़ी-बड़ी बातें अपनी समझ में नहीं आने की।' हम दोनों का सम्मिलित ठहाका गूँजा था। गैस पर दो कप चाय चढ़ा प्रफुल्ल ने साथ लाया पॉलिथिन का लिफाफा खोला।कुछ खाने-पीने का सामान वह साथ लाया था।

किचन काफी बड़ी थी। एक ओर बड़ा सा फ्रिज, दूसरी ओर शेल्फ पर ढेरों बर्तन।

'अरे! इतने बर्तन! अभी तो तेरी शादी भी नहीं हुई। पूरा घर बना लिया तूने तो।'

'व्यक्ति अकेला हो या दुकेला, हर सामान की ज़रूरत पड़ती है उसे। हम लोगों का लाईफस्टाइल ही ऐसा है।'

वह ठीक कह रहा था। चाय को कप में डालता हुआ बोला, 'छलनी नहीं है मेरे पास।'

मैं मुस्कुरा दिया, 'सब चलेगा।'

चाय सुड़कते हुए वह बोला, 'कभी किसी से मुलाकात हुई क्या?'

उसका आशय मैं समझ गया था। यकीनन वह अपनेघर-परिवार के बारे में पूछ रहा था। कल आते हुए बाबूजी से ही फ़ोन पर सारा अता-पता और फ़ोन नम्बर लिया था मैंने। लेकिन कोई विशेष बात या मुलाकात तो आते-आते नहीं हो पाई थी। चन्द रोज़ पहले बाबूजी मन्दिर में मिले थे। वहीं पर सभी के बारे में जायज़ा ले लिया था।

महेन्द्र अपनी बीवी को लेकर अलग मकान में हो गया है। चन्दर को टी.बी.हो गई है। इलाज चल रहा है। लेकिन जाने क्यों, मर्ज़ बढ़ता ही जा रहा है। डॉक्टर कहते हैं, इसे शारीरिक बीमारी नहीं, मानसिक बीमारी है।

मैं कह तो गया, लेकिन मैंने महसूस किया कि प्रफुल्ल को यह सब अच्छा नहीं लगा है। यकीनन, यह अच्छी लगने वाली बात भी नहीं थी। मैंने शब्दों को बदलते हुए बात को आगे बढ़ाया, 'प्रफुल्ल, तुझे तकलीफ देना मेरा मकसद नहीं था। लेकिन कुछ छिपाना या झूठ बोलना मेरे मन ने गंवारा नहीं समझा। सच कैसा भी हो, उससे कब तक भागा जा सकता है।'

प्रफुल्ल कुछ नहीं बोला। बस, मेरे चेहरे की ओर देखता जा रहा था। सम्भवत: और बहुत कुछ सुनना चाहता था वह। मैं उसी रौ में बोला ' प्रफुल्ल! तुम जितना दूर चले आए, उतना ही बाबूजी के और करीब हो गए। उन्हें गर्व है तुम पर। तुमने पैसा कमाया, नाम कमाया, इसी से वे अपने रिक्त होते जीवन को भर लेते हैं।'

'जानता हूँ रजत। पैसा आज की बहुत बड़ी ताकत है। और बाऊजी को अगर आज मुझ पर गर्व है तो केवल मेरे पैसे की वजह से। नाम और शोहरत क्या होती है, यह बात उनके लिए कोई मायने नहीं रखती।' प्रफुल्ल की बात पर मैं झेंपा था।

रात वह व्हिस्की की बोतल ले आया। कमरे की सभी खिड़कियाँ खोलते हुए बोला, 'तुम्हें यहाँ कैसा लग रहा है?'

'बहुत अच्छा! देखो तो, हवा के ठण्डे झोंके कैसे लुभा रहे हैं।'

'हाँ! इन्हीं झोंको ने मुझे लुभाया था।

'क्या तुम यहाँ खुश नहीं हो ?'

दरअसल जब से वह मिला था, उदासी उसके चेहरे से स्पष्ट झलक रही थी। लेकिन उसकी हँसी के ठहाके मुझे उलझन में डाल रहे थे। अब उसने उदासी साफ जाहिर कर दी, तो मैं पूछे बिना न रह सका।

'अब खुशी की परिभाषा क्या होती है, मैं तो यह भी नहीं समझ पा रहा रजत।' प्रफुल्ल एक बड़ा पैग एक ही घूँट में चढ़ा गया था।

मुझे सिप करते देख बोला, 'तुम आराम से पीना।मुझे आदत हो चुकी है।'

'जानता हूँ। बहुत सुना-पढ़ा है कि मीडिया में आकर अगर कम्पनी न की जाए तो आदमी फ्लॉप हो जाता है।'

'तुमने ग़लत सुना-पढ़ा है।'

'ग़लत सुना है! क्या कह रहे हो?'

'हाँ! कोई भी यहाँ पीने के लिए मजबूर

नहीं करता। लेकिन जब अपना ही जीवन कटरा-कतरा होकर अपने ही सामने बिखरने लगता है, उसे समेटने के लिए ऐसा करना पड़ता है। यों कह लो कि व्यक्ति अनायास ही इस शराब में डूबने लगता है।'

'तुम भावुक हो रहे हो प्रफुल्ल।!'

'हाँ! तूने ठीक जाना। ज़िन्दगी यहाँ इतनी व्यवहारिक हो गई है कि जब कभी थोड़ा सा एकान्त मिलता है, तो अपने बारे में सोच खुद से ग्लानि होने लगती है। ऐसे में भावुकता आड़े आ जाती है।' हवा का एक तेज़ झोंका भीतर आया तो महसूस हुआ कि उसमें एक गीलापन है। हम दोनों ने चेहरा खिड़की की ओर घुमाया। वर्षा शुरू हो चुकी थी। बूँदों की बौछार जैसे अन्तर्मन को भिगोने लगी थी। लेकिन प्रफुल्ल के भीतर इस वक्त क्या है, मैं पूरी तरह से नहीं समझ पा रहा था। मुझे लग रहा था, इस वक्त वह जितना भावुक हो रहा है, भीतर से उतना कठोर भी हो रहा है। पैग बनाते हुए बोला, 'कमरे की लाइट बुझा कर विण्डो-शेड की लाइट जला दे।'

जाने क्यों मुझे लगा, वह अँधेरे में डूब जाना चाहता है। खिड़की से बाहर विण्डो-शेड की लाइट हमारे चेहरे पर न पड़कर मेज़ पर सीधी पड़ने लगी थी। प्रफुल्ल थोड़ा-सा आगे की ओर झुकता हुआ बोला, 'जब घर से निकला था, मानस भैया की आँखों से एक बूँद आँसू टपकते हुए देखा था। जाने क्यों लगा था, मैं उस घर की चौखट हमेशा के लिए लाँघ आया हूँ। कितनी बार तो उनके मुँह से सुन चुका था, कोई नौकरी तलाश ले कहीं जाकर। मैं जानता था, एक छोटी सी छत के नीचे हम तीनों भाई गुज़ारा नहीं कर पाएँगे।' प्रफुल्ल पलभर को रुका फिर ठण्डी आह भरता बोला, ' सोचता हूँ, मानस भैया माँ और बाबूजी से अधिक समझदार निकले।'

एकाएक बत्ती गुल हो गई थी। लगा, प्रफुल्ल सच में इस अँधेरे में कहीं डूब गया हैज कहीं खो गया है इस अँधेरे में। एकाएक दहशत से भर आया था मैं। मन हुआ, ज़ोर से प्रफुल्ल को एक आवाज़ लगाऊँ या फिर हाथ आगे बढ़ा कर उसे छू कर देख लूँ। बहुत मुश्किल से खुद को रोक पाया था मैं। मेरा साँस फूलने लगा था। मैं पसीने से तर-ब-तर हो रहा हूँ, मुझे खुद को इसका अहसास होने लगा था। बत्ती पुन: आई तो मेरी जान में जान आई। पानी-पानी होता मेरा माथा और शरीर प्रफुल्ल नहीं देख पाया था अँधेरे में।

अब तक प्रफुल्ल को शायद मेरे किन्ही शब्दों का इंतज़ार था। हालाँकि इस सबके लिए मुझे स्वयं को भी लग रहा था कि मैं अधिक न सही, उसकी बातों के रिसपॉन्स में कुछ तो बोलूँ। लेकिन इस वक्त मुझे यह भी महसूस हो रहा था कि मेरी आवाज़ कहीं इसी अँधेरे के पीछे दब गई है। प्रफुल्ल अभी मेरे सामने सवाल रख देगा कि मैं इतना खामोश क्यों हूँ। तब एकाएक क्या जवाब दूँगा। लेकिन प्रफुल्ल ने कोई सवाल नहीं किया था। यह केवल मेरी अपनी सोच थी। वह उसी रौ में बोला, 'विभा दी कहाँ है आजकल? बाबूजी के पास या...?'

प्रफुल्ल का असली दर्द मैं अब छू पाने लगा था। लगा, वह अभी तक भूमिका बाँध रहा था। विभा शब्द से ही उसका स्वर पूरी तरह से काँप गया था। सम्भवत: घर-परिवार में वह सबसे पहले विभा के बारे में ही जानना चाह रहा था। लेकिन विभा इस वक्त मेरे मन- मस्तिष्क से पूरी तरह से नदारद थी। उसका कोई स्पष्ट चित्र मेरे सामने नहीं बन पा रहा था। कॉलेज के बाद मैंने विभा को केवल उसकी शादी के मण्डप पर देखा था। दुल्हन बनी विभा में मैं कॉलेज वाली विभा ढूँढ़ता रह गया था। अक्सर कॉलेज में इधर से उधर आते-जाते हमारा सामना हो जाता। जाने ऐसा क्या था कि हम दोनों एक -दूसरे को देखते ही ठिठक से जाते और पलभर के लिए हमारे पाँव वहीं जम जाते। हमारे बीच की इस जड़ता का कहीं भी अन्त नहीं हो पाया था। प्रफुल्ल से दोस्ती के बाद तो मैं विभा से कतराकर ही निकल जाता। लेकिन कॉलेज के आख़िरी दिनों में विभा स्वयं ही मेरे सामने आ खड़ी हुई थी, कोई हमें अच्छा लगने लगे तो इसमें बुराई क्या है। हम बात तो कर सकते हैं।

विभा ने तो कह दिया लेकिन मैं कुछ नहीं कह सका। उसी के शब्दों को दोहराना उस वक्त जाने क्यों बेमानी सा लगा। मेरी चुप्पी का कुछ और अर्थ ले गई विभा, जानती हूँ, प्यार एक तरफा हो, तो सिरे नहीं चढ़ता। मैं तुम्हें मजबूर नहीं करूँगी।

विभा की विदाई के बाद वे दोनों ही चेहरे गड्डमड्ड होते चले गए थे और उसका असली चेहरा मेरे सामने से लुप्त होता चला गया था। मुम्बई आते हुए प्रफुल्ल ने बताया था कि विभा अपने वैवाहिक जीवन में खुश नहीं है। मैंने उसे सांत्वना देते हुए कहा था ये रिश्ते ऐसे ही होते हैं। कई बार इनमें सामंजस्य लाने में समय लग जाता है। दो अलग परिवारों के व्यक्ति, अलग सोच, अलग संस्कार.. प्राय: ऐसा होता है। तुम चिन्ता नहीं करो।' प्रफुल्ल मुस्कुरा दिया था। बस वही अन्तिम मुस्कराहट मैंने प्रफुल्ल के चेहरे पर देखी थी।

विभा के बारे में बाऊजी से भी कोई बात नहीं हुई थी। लेकिन एक बार बीच-बाज़ार में चलते-चलते समीरा से भेंट हो गई थी और उसने बताया था कि विभा देवेन को छोड़ आई है। उसके साथ धोखा हुआ है, विभा ने समीरा से बताया था। लेकिन कैसा धोखा, समीरा ने नहीं बताया और हमारी बातें कॉलेज के उन तमाम चेहरों को छूने लगी थीं, जो हमारे अन्तरंग थे। यह बात मैंने स्पष्ट रूप से प्रफुल्ल से बता दी थी।

इस वक्त प्रफुल्ल नहीं, मैं विभा के बारे में जानने को उत्सुक हो उठा था।

'तुम्हारी कभी विभा से बात नहीं हुई क्या?' प्रफुल्ल विभा दी कहता था लेकिन मेरे मुँह से हमेशा विभा ही निकलता था। विभा उम्र में बड़ी होते हुए भी मुझे नादान लगती थी।

प्रफुल्ल कुछ पल के लिए उठ गया और टॉयलट होकर वापिस आया। बैठते हुए बोला, 'कल डॉक्टर के पास जाना है।'

'क्यों?'

'कुछ यूरीन-इन्फैक्शन चल रही है। बहुत दवाइयाँ खा ली हैं, कोई फर्क नहीं पड़ा।'

'क्यों?'

'पता नहीं। कल एक्स-रे होना है।'

'ऐसे में यह शराब..!'

'मैं नहीं जानता।'

सोचा कह दूँ, कोई रोग तो नहीं लगा लिया। लेकिन इस वाक्य को मैं टाल गया। एकाएक जाने क्यों लगा, प्रफुल्ल विभा की बात को टालना चाहता है। मैंने सीधे से पूछ लिया, 'इस बीच तुम्हारी विभा से कोई बात नहीं हुई क्या?'

'हुई थी।'

'कब?'

'जब देवेन को छोड़ कर चली आई थी।'

'क्या कहती है?'

'नहीं रहना चाहती उसके साथ।'

'क्यों?'

'कहती है, वह तन से भी नपुंसक है, मन से भी।'

आकाश में बिजली कौंधी थी। लगा था, प्रकृति भी काँप उठी है। बरसात ज़ोरों पर होने लगी थी। क्या बरसात भी रुदन करने लगी है। इस वक्त बरसात न होती तो प्रफुल्ल को लेकर कहीं बाहर निकल जाता। यह बात मेरे लिए भी अविश्वसनीय थी, फिर प्रफुल्ल कैसे सह पाया होगा?

पैग बनाते हुए प्रफुल्ल बोला, 'इसी विषय को लेकर एक छोटा-सा स्क्रिप्ट तैयार किया था। एक डायरेक्टर को दिखाया तो उसने वह पुलिंदा एक ओर फेंक मारा था। रजत, यहाँ इन्सान दूसरे की भावनाओं को नहीं समझ पाता। उन्हें वही चाहिए, जो वे सोचते हैं। जाने कितना कुछ आत्मसात् करके लिखा, लेकिन सब रिजेक्ट होता चला गया। अब हम वही लिखते हैं, जो उन्हें चाहिए। वे कहते हैं, पब्लिक ऐसा माँगती है। क्या लोग सच में बदल गए हैं रजत! दूसरे के दर्द को वे सच में नहीं समझ पाते या समझना ही नहीं चाहते?

प्रफुल्ल के इस सवाल का जवाब देना ज़रूरी नहीं लगा। उसने सवाल तो रख दिया, पर सब समझता है, सब जानता है।

'विभा दी से कह दिया था एक बार, लौट जाओ उस व्यक्ति के पास! वह दया का पात्र है। तुम्हारे चले आने से बिल्कुल टूट जाएगा वह।' प्रफुल्ल फिर उसी रौ में बह उठा-

'नहीं मानी थी विभा दी। सर पटक-पटक कर लहूलुहान कर लिया था अपने आप को। कहने लगी, नहीं भैया! नहीं जी सकती उस व्यक्ति के साथ मैं। आई हेट हिम...आई हेट हिम! उसके बाद विभा दी से इस बात को दोहराना बेमानी लगा था। अगर इस बात को उन पर थोपा जाता, तो सम्भवत: वे आत्महत्या कर लेतीं।'

प्रफुल्ल ने एक घूँट भरा और उसाँस भरता बोला, 'विभा दी को मिले बहुत देर हो गई है। लगता है अब मिल भी नहीं पाऊँगा। मिलना भी नहीं चाहता! लेकिन कर्कभी-कभी जी चाहता है, कोई चलते-चलते बता दे, विभा दी ज़िन्दा हैं। वे ठीक हैं... वे खुश हैं...।'

प्रफुल्ल ने एकाएक विषय बदल दिया, 'लोग समझते हैं, हम बहुत बड़े लेखक हैं। क्योंकि दुनिया के सामने पर्दे पर हमारा नाम आता है। लेकिन टुकड़ों को जोड़-जोड़ कर, कभी इधर-कभी उधर करते हुए लगता है, हम पात्रों के साथ बलात्कार कर रहे हैं। खुद से ग्लानि होने लगती है रजत।' प्रफुल्ल एक पल को रुका फिर बोला, 'जीवन कोई गणित तो नहीं है रजत। परन्तु जीवन के शुरू में ही हम अपने जीवन की एक इबारत लिख डालते हैं। हमें क्या करना है, कब करना है, कैसे करना है.. बस उसी को हल करते जीते चलते हैं। जीवन एक ही ढर्रे पर चलता चला जाता है और कहीं से जब वह ढर्रा टूटने लगता है, तो हम फरस्ट्रेटिड होने लगते हैं। आई हेट दिस रजत। लाइफ शुड बी एडवेन्चरस!.. सोचा था, एडवेन्चर जीवन में न पा सका तो इन कहानियों में पा लूँगा। लेकिन यहाँ भी एक बंधे-बंधाए ढर्रे की कहानी की इबारत पकड़ा दी जाती है और फिर उसी को हल करना पड़ता है।' प्रफुल्ल पैग बनाने लगा तो मैंने उसके हाथ पर अपना हाथ रख दिया, 'बस्स! बहुत ले बैठे हो तुम। अब बस करो।'

'घबराओ नहीं!' प्रफुल्ल हँस पड़ा, 'अभी नहीं मरूँगा। आज तुम आए हो, इसी खुशी में ज़्यादा ले गया। बस आख़िरी पैग है यह।'

अब नहीं रोका था मैंने उसे। आख़िरी पैग में वह मेरा भी साथ चाहता था और मैंने साथ दिया।

बरसात उसी तेज़ी से टपक रही थी। आँखें उनींदी होने लगी थीं। प्रफुल्ल उठते हुए बोला, 'रजत, सब कुछ तुम्हीं से कह गया! और किससे कहता। कुछ तुम भी कहना चाहते हो, मैं जानता हूँ। तुम्हारे जीवन की भी एक इबारत होगी। हम सुनेंगे उसे। उसका भी कोई हल होगा।'

प्रफुल्ल ऊपर वाले कमरे में जा कर सो गया। मैं अपने जीवन की इबारत में कहीं विभा को ढूँढ़ने लगा था।

***

लघु कथा

बटवारा

संदीप तोमर

माँ की अंत्येष्टि पर तीनों भाइयों ने तमाम सम्पत्ति का बटवारा करने का फैसला किया ताकि किसी ग़लत फहमी या फसाद की गुन्जाइश न रहे। तीनों ही बेटों की माँ के प्रति 'अटूट श्रद्धा' उमड़ पड़ी।

बड़े बेटे ने दिवंगत माँ को सम्बोधित किया, ''माँ तू मुझे हमेशा खर्च के लिए पिताजी से छुपाकर रुपये दिया करती थी। तू तो जानती है मुझे पैसों से कितना लगाव है। तेरे बैंक के रुपयों पर तो मेरा ही अधिकार है ना।''

मँझले बेटे ने तर्क किया, ''माँ, तू तो जानती है मुझे सोने से कितना प्यार है। तू सबसे छिपछिपाकर मेरे लिए अँगूठी, चेन बनवा दिया करती थी। तेरे गहनों पर तो मेरा ही अधिकार हुआ ना।''

अब बारी सबसे छोटे बेटे की थी। उसने देखा-उसकी आँखों के सामने माँ की अस्थियों का कलश रखा था। उसने कलश उठाया और बुदबुदाते हुए अपने कमरे की ओर बढ़ गया। दोनों बड़े भाइयों के कानों में छोटे के शब्द पड़े-''माँ, तेरी अस्थियाँ मेरे लिए तेरे सिद्धान्तों का सम्बल हैं। ये कलश मुझे पल-पल मजबूती देता रहे, ऐसा आशीर्वाद दीजिएगा।''

***

संपर्क: D 2/1 जीवन पार्क, उत्तमनगर, नई दिल्ली - 110059
ईमेल : gangdhari.sandy@gmail.com
मोबाइल: 8377875009

वह सुबह कुछ और थी

डॉ. हंसा दीप

''नमस्ते जी, आज तो जल्दी निकल पड़े हो।'' खन्ना साहब की आवाज़ सुनकर चौंका नील। आज से पहले कभी काम पर जाते हुए उनसे मुलाकात नहीं हुई थी। शाम को टहलते समय ही मिलते थे कभी-कभी। आज से पहले इतनी जल्दी तैयार होकर बाहर निकला भी नहीं था वह।

''हाँ जी, खन्ना साहब, मौसम खराब है तो थोड़ा मार्जिन रखकर जाना बेहतर है आज, वरना लेट होने के पूरे चांस हैं।'' रात से ही तय करके सोया था कि ऐसे मौसम में घर से निकलने का समय एक घंटा पहले होगा और बिस्तर छोड़ने का समय भी एक घंटा पहले। वह घड़ी के काँटों को जल्दी अलार्म देने के लिए मजबूर करके ही सोया था।

खन्ना साहब का मिलना इस बात का संकेत था कि वाकई वह जल्दी उठा है। सबसे पहले बिल्डिंग से अगर कोई निकलता था तो वे खन्ना साहब ही थे। वे टैक्सी चलाते थे। जहाँ सुबह-सुबह खराब मौसम हर किसी के लिए परेशानी का सबब बनता था वहीं उनके लिए खराब मौसम सोना-चाँदी उगलता था। उनकी टैक्सी का किराया भी डबल हो जाता था और खूब सवारियाँ भी मिलती थीं।

रात से बर्फ के तूफ़ान की चेतावनियाँ टीवी पर दोहराई जा रही थीं। शून्य से बीस डिग्री कम तापमान और बर्फीला तूफ़ान। मौसम के ऐसे कहर में काम पर जाने वाले किसी भी व्यक्ति को पैसा खर्च करना नागवार नहीं गुज़रता। कुछ पैसे खर्च करके काम पर सही सलामत पहुँचना कहीं भी रास्ते में अटकने से तो बेहतर ही था।

अपनी गाड़ी की चाभी को घुमाते हुए खन्ना साहब बोले - ''खराब तो रोज़ ही होता है आज बहुत खराब है, तेवर ही अलग हैं मौसम के।'' यह उनकी आवाज़ की लय थी जो सिक्कों की खनक का अहसास देते हुए खन्ना साहब की आज की कमाई को आँक रही थी।

''सब कुछ धीरे चलने वाला है आज। हर जगह प्रतीक्षा, लम्बी-लम्बी कतारें, सब-वे की तेज़ ट्रेनों में, बस स्टॉप पर और हर जगह।'' नील ने अपनी परेशानियों की सूची को बढ़ाते हुए कहा। एक के बाद एक अपनी आने वाली मुश्किल घड़ियों का विवरण देते हुए मन को बहुत शांति मिलती है। इंसानी फितरत को छोटी से छोटी परेशानी को बड़ी बनाना बहुत अच्छी तरह आता है।

''कोई गल नहीं जी, मैं छोड़ दूँ?'' सुना था उसने खन्ना जी के बारे में। दिल के बहुत साफ हैं और लोगों की मदद करने में उनका कोई मुकाबला नहीं कर सकता उनकी इस बिल्डिंग में। उसको कभी काम नहीं पड़ा था। देर से काम पर जाने वाले कभी उनसे नहीं मिल पाते थे। वे ठहरे परिंदों के साथ उठकर कामकाजी सवेरा जीने वाले और नील ठहरा नींद की भरपूर सुबह जीने वाला। कभी एक दूसरे का आमना-सामना होना संभव ही नहीं था।

''अरे नहीं, नहीं जी, आप बिल्कुल तकलीफ न करें आपका रास्ता कहीं ओर, मेरा कहीं ओर?'' नील ने अपनी राह अलग करते कहा।

टोरंटो, कनाडा निवासी डॉ. हंसा दीप हिन्दी साहित्य में पीएच.डी. हैं। हंसा दीप का 'बंद मुट्ठी' (उपन्यास) व 'चश्मे अपने-अपने' (कहानी संग्रह) तथा सौ से अधिक कहानियाँ प्रमुख पत्र-पत्रिकाओं प्रकाशित। कैनेडियन विश्वविद्यालयों में हिन्दी छात्रों के लिए अंग्रेज़ी-हिन्दी में 4 पाठ्य-पुस्तकों के कई संस्करण प्रकाशित। संप्रति यूनिवर्सिटी ऑफ टोरंटो में 2005 से लेक्चरार के पद पर कार्यरत। पूर्व में यॉर्क विश्वविद्यालय टोरंटो में हिन्दी कोर्स डायरेक्टर एवं भारतीय विश्वविद्यालयों में सहायक प्राध्यापक।

संपर्क:
ईमेल: deeptrans@gmail.com
मोबाइल: + 647 213 1817

''आपको कहाँ जाना है जी?'' खन्ना साहब की अच्छाइयों के बारे में सुना ज़रूर था पर उतना भी नहीं कि वे दो कदम आगे बढ़ कर इस तरह किसी की परेशानी को कम करने का प्रयास करेंगे।

''मैं डाउन टाउन जाता हूँ खन्ना साहब, वहीं है मेरा ऑफिस।'' कुछ इस तरह शब्द निकले कि जैसे कह रहा हो 'वहाँ तो आपको जाना ही नहीं है।'

''लो जी, आज तो मैंने भी वहीं जाना है, चलो बादशाहो बैठो गड्डी में.....'' अपनी लिमोज़ीन के पास जाकर बड़े प्यार से सहलाया उन्होंने उसे जैसे कोई सम्राट अपने घोड़े पर चढ़ कर राज्य की सैर करने के लिए निकल रहा हो। बहुत ही अदब से मुस्कुराते हुए नील के लिए दरवाज़ा खोल दिया उन्होंने।

अब तो ना-नुकूर का सवाल ही नहीं था। नेकी और पूछ-पूछ। 'सब-वे' की ट्रेन तक का बर्फ में चलने का रास्ता कम हो गया और वहाँ से ऑफिस तक पहुँचने का भी दो ब्लॉक का रास्ता कम हो जाएगा। गाड़ी में बैठकर लगा 'हर दिन' नई चुनौती देता उगता है परन्तु आज तो वह 'हर दिन' नहीं लगता। आज कुछ तो 'खास' है।

गाड़ी ने गति पकड़ी तो बेहद आरामदेह सफ़र लगा। बिना किसी अटके-झटके के 'स्मूथ राइड'। वाह क्या बढ़िया चलती है यह गाड़ी। पहली बार लिमोज़ीन में बैठना वह भी बगैर किराया दिए एक पेशेवर ड्राइवर के साथ, मानों गाड़ी किसी राष्ट्रपति को बैठा कर ले जा रही थी। जब तक खुद को राष्ट्रपति के रूप में तब्दील करने की सोच आगे बढ़े तब तक तो खन्ना जी ने गाड़ी ऑफिस की इमारत के अंदर ले ली थी। 'हो सकता है खन्ना साहब की बोनी का समय है तो टैक्सी का किराया देना पड़ जाए। अगर ऐसा हुआ तो सुबह-सुबह पचास डॉलर की चपत लग जाएगी। लग भी जाए तो अब क्या, ओखली में सिर तो दे ही दिया है।'

यूँ शान से ऑफिस पहुँचना एक अलग ही सुख दे रहा था। कई सारी योजनाएँ आकार लेने की कोशिश कर रही थीं - 'अब जाकर आराम से बैठकर सुबह का नाश्ता करूँगा।'

'बहुत सारे काम हैं जो लेट पहुँचने से हो नहीं पाते थे आज पूरे हो जाएँगे।'

'सारे देर से आने वाले लोग आज नील की समय की पाबंदी को दाद देंगे।'

'आज सबसे रुककर दुआ सलाम करने के बाद ही काम शुरू करेगा वह।'

'मिस माधुरी से भी थोड़ी गपशप करनी तो बनती है।'' और भी बहुत कुछ। अपनी खुशी को अपने में समेटता मन खन्ना साहब से बात भी कर रहा था और खुद की उड़ान भी भर रहा था। अपनी मंज़िल पर पहुँचकर गाड़ी से उतरते हुए जेब में हाथ डालने लगा तो खन्ना साहब समझ गए।

''घर वालों से पैसे नहीं लेता जी मैं'' उनके चेहरे की मुस्कुराहट में इतनी आत्मीयता थी कि वह कुछ नहीं कह पाया। बस दिल से शुक्रिया अदा किया और ऑफिस की इमारत की ओर कदम बढ़ा दिए।

आज नील की चलने की गति और चेहरे की खुशी का सामंजस्य अलग ही था। आत्मविश्वास से भरा ऐसा सुकून जहाँ कोई हड़बड़ी नहीं थी। रोज़ की तरह नज़रें चुराते अपनी टेबल पर पहुँचने की जल्दी भी नहीं थी। आज तो मन में आवेश था सुबह जल्दी उठने का। स्वयं से किया वादा पूरा करने का। सुबह की नींद ही इतनी प्यारी होती है। किसी स्वप्न लोक से खींच कर उठा देता है अलार्म। वे सुबह के पल जितने बेशकीमती होते हैं उतने ही मदहोशी भरे भी होते हैं जो वापस मीठी नींद सुला देते हैं। नींद के आगोश में इस बात का ज़रा भी अहसास नहीं होता कि जितनी देर लगेगी उठने में, उतनी परेशानियाँ उठानी पड़ेंगी पूरे दिन। हर काम में लेट-लतीफ़ी होगी। सब कुछ जानते समझते भी नींद का चैन ही कुछ ऐसा होता है कि बस नींद के आगोश में ही ले जाता है, दिन की भागमभाग से दूर बहुत दूर। बस अपनी मस्ती में अलार्म भी बंद हो जाता है। फिर से नींद भी लग जाती है। और जब तक नींद की खुमारी दूर होती है तब तक समय हाथ से निकल चुका होता है।

ऑफिस की इमारत में घुसते हुए आज हर चेहरा चाहे वह पहचाना हो या अनजाना हो एक प्राकृतिक मुस्कान लिए था, बगैर किसी लाग-लपेट वाली। जाकी रही भावना जैसी प्रभु मूरत देखी तिन तैसी। ऐसा भी तो हो सकता है कि उसकी नज़रों का दोष हो। चूँकि वह खुश है तो हर कोई उसे वैसा ही लग रहा है। रोज़ वह लेट आने के अपराध भाव से ग्रस्त होता है तो सभी उसे घूरते नज़र आते हैं। वे ही नज़रें उसे हिकारत भरी लगती हैं। मानों हर कोई चीख-चीख कर कह रहा हो - 'देखो इस इंसान को जो कभी समय का ध्यान नहीं रखता।'

ऑफिस में पहुँचकर देखा तो बॉस के अलावा कोई नहीं पहुँचा था अब तक। बॉस के पास बैठकर नाश्ता करने का सौभाग्य कितने लोगों को मिलता है, आज उसे मिला चार साल की नौकरी में पहली बार। आज के मौसम में जब कोई नहीं आ पाया तब उसकी हाज़िरी एक अचूक काम कर गई। बगैर निशाना साधे ही तीर निशाने पर लगना एक अलग ही अनुभूति दे देता है।

अपना काम शुरू करते हुए ख़याल आया आज मिसेज़ त्रिवेदी से लेकर प्लम्बर जोसेफ तक ने छुट्टी ले ली थी। हर कोई घर बैठे मज़े ले रहा था सिवाय नील के। दुबे जी जो अकाउंटेंट हैं अखबार उठाने निकले तो उसे देखकर बोल पड़े थे - ''नील जी बड़े सिनसियर हो आप तो। चल दिए काम पर। काम तो रोज़ ही करना होता है कभी-कभी तो मौसमी फल खा लिया करो।''

दुबे जी की घिघियाती आवाज़ न कभी अच्छी लगी थी न लग सकती थी। ये सारे पारिवारिक लोग तो अपने-अपने घरों में बैठकर क्रिकेट देख रहे होंगे या फिर किचन में अपनी-अपनी बीवियों के साथ खटर-पटर बढ़ा रहे होंगे।

दुबे जी बाल बच्चे वाले हैं उनके घर से जो यदा-कदा ऊँचा शोर होता है वह कभी-कभी परेशान करता है। खन्ना जी के परिवार में पत्नी और बेटी हैं। बेटी कभी-कभी दिखाई देती है, कहीं और पढ़ती है। एक मेहता जी हैं जिनका परिवार कभी-कभी आता है। उनकी पत्नी किसी और शहर में काम करती है। दो-चार और अभारतीय परिवार हैं जिनसे 'हाय-हलो' होती है पर ज़्यादा कुछ जानकारी नहीं है उनके बारे में। इन सभी परिवारों के बीच एक 'छड़ा' आदमी, फायदे ही फायदे थे। सब घरेलू आंटियों में होड़ लगी रहती थी उसे खाना खिलाने की। सभी को अच्छा लगता था एक युवा, आकर्षक, अकेले रह रहे लड़के से

बात करना और उसे अपने पाक कौशल से परिचित करवाने की कोशिश करना।

कभी आहट से, कभी सुगबुगाहट से, तो कभी फुसफुसाहट से, आने वाले कदम उसकी आज़ाद उड़ान को भाँपने की कोशिश करते। 'नील बाबू कब आते हैं, कब जाते हैं और क्या करते हैं' यह जानने की उत्सुकता सबको होती थी। कम बोलने वाले व्यक्ति के बारे में जल्दी ही 'ऐसी-वैसी' बातें हवा में उड़ जाती हैं। उसके बारे में भी उड़ती ही होंगी। पर इन सबसे बेख़बर होने का नाटक करते वह लजीज़ खाने का फायदा उठाता था और अपनी किसी भी निजी बात को बताने से कन्नी काट लेता था।

''अरे नील तुम, इतने खराब मौसम में बिल्कुल समय पर पहुँच गए। क्या बात है!'' बॉस के शब्द जैसे कानों में शहद की वर्षा कर गए। बगैर सोच-विचार के, बगैर किसी प्रयास के ही आज तो अच्छा-खासा मक्खन लग गया है।

''जी सर, आप भी तो आ गए इतनी जल्दी।'' एक कूटनीतिज्ञ की भाँति अपनी प्रशंसा को कम कर दिया नील ने ताकि सामने वाला व्यक्ति खास तौर से यदि वह बॉस हो तो दीर्घकालीन 'इमेज' बन जाए उसके मन में।

सच पूछो तो कुछ पेपर्स उठाने के लिए आए थे बॉस, पर वे भी नील को देखकर थोड़ा रुक गए। कर्मचारियों के सामने उदाहरण होता है बॉस का। काम में व्यस्त और इतना व्यस्त बॉस कि समय का स्मरण कराने के लिए भी कोई हो, पत्नी का फ़ोन हो या फिर ताला लगाने वाले सुरक्षा कर्मी हों। आज तो एक ही कर्मचारी उपस्थित था फिर भी ऐसे कैसे पिंडोल करके जा सकते थे बॉस। आ बैठे नील के पास। अच्छे मूड में थे यह देखकर कि काफी समर्पित लोग हैं उनके ऑफिस में। चाय के साथ उससे बात करने लगे। उनका सानिध्य मिला नील को तो कई राज़ पता चले। एक घंटे की अनावश्यक मुलाकात में बहुत कुछ पता चला ऑफिस के बारे में, लोगों के बारे में। अच्छा बॉस वही होता है जो अपने कर्मचारियों के बारे में पूरी जानकारी रखे। ये सारी बातें ऑफिस के काम को, माहौल को प्रभावित करने की पूरी क्षमता रखती हैं।

''मिस माधुरी शादी करने वाली है।''

''जॉन फिलिप दूसरी कंपनी में जा रहे हैं।''

''अपने नेटवर्क के इंचार्ज माइकल तलाक ले रहे हैं।''

''मिसेज़ ठाकुर की अपनी सास से रोज़ लड़ाइयाँ होती हैं।''

''बिश्नोई जी अब अपने बेटे को सब कुछ सौंपकर रिटायरमेंट लेने वाले हैं।'' और एक खास और ज़रूरी सूचना कि - ''अब कोई भी ऑफिस में काम के अलावा किसी और नेटवर्क की साइट पर जा नहीं पाएगा। कर्मचारीगण वेब के उचित और अनुचित फायदे उठाने में कामयाब नहीं हो पाएँगे अब।''

पिछले महीने कई लोगों को नोटिस जारी किए गए थे जिन्होंने काम के अलावा वेब सर्फिंग के मज़े लिए थे।

नील के लिए भी एक अवसर मुहैया करा दिया बॉस ने यह कहकर कि - ''अगर मौका मिले तो वह आगे की पढ़ाई के लिए आवेदन कर सकता है। पढ़ते हुए काम करने की शैली को विकसित किया जा रहा है कंपनी की पॉलिसी में।''

दोनों अकेले थे। एक के बाद एक फ़ोन आते रहे लोगों के - ''आज काम पर नहीं आ पाएँगे''। मौसम विभाग की चेतावनी के चलते किसी भी कर्मचारी पर दबाव नहीं बना सकता था कोई भी बॉस। जिसे फ़ोन अटेंड करने होते हैं वे मिस रोज़ा भी खुद फ़ोन करके बता चुकी थीं कि - ''वे आज नहीं आ पाएँगी।''

बॉस आख़िर कब तक बॉस होने का ढोंग करते। अंदर का इंसान कुलबुला रहा था घर जाने के लिए। कुछ ही देर बाद वे बोले - ''हम भी घर चलते हैं। क्योंकि मौसम तो और भी खराब होने वाला है। चलो मैं तुम्हें छोड़ दूँगा।''

मन बल्लियों उछलने लगा। वाह री किस्मत! आते हुए लिमोज़ीन से आना और लौटते हुए बॉस की कार से घर पहुँचना। आज तो वह जो कुछ भी चाहे, जो कुछ भी माँगे, सब कुछ मिल जाएगा। याद करने लगा आज सुबह उठकर किसका मुँह सबसे पहले देखा था उसने। निश्चित रूप से अपना ही देखा होगा। बालों की बड़ी चिन्ता रहती है उसे। हमेशा बिस्तर छोड़ते ही बाल ठीक करने लग जाता है। रोज़ ही खुद का मुँह देखता है, किसी और का नहीं।

गाड़ी घर के सामने रुकी तो नील ने औपचारिकता निभाते हुए कहा बॉस को - ''आइए न सर मेरे ग़रीबखाने पर, चाय पीते हैं।''

''नहीं, निकलता हूँ, चाय फिर कभी।'' खिड़कियों से कई निगाहें देख रही थीं उसके ठाठ। वह भी मुस्कुराता हुआ अपने अगले आकस्मिक सुख के बारे में सोचने लगा। अब क्या हो सकता है, दोपहर होने वाली है। भूखे भजन न होय गोपाला - 'बेटा नील लग जा किचन में कुछ बना ले वरना इतनी अच्छी सुबह की कोई कीमत नहीं रह जाएगी।'

अपने घर के आगे जाकर चाभी निकाल रहा था वह कि आवाज़ आई - ''नील जी रुको'' पास वाली आंटी थीं।

''हमारे घर किटी पार्टी थी कुछ खाना है आपके लिए।'' आंटी ने एक के बाद एक डिब्बे पकड़ाने शुरू किए।

''अरे वाह, शुक्रिया आंटी।'' खाने के डिब्बों का वज़न महसूस करके भूख और बढ़ गई। इसके पहले कि खाना ठंडा हो उसे फटाफट खा लेना चाहिए। डिब्बे खोले तो खुशबू से ही कमरा भर गया। एक से एक बढ़िया व्यंजन। पालक-पनीर, मलाई कोफ़्ता, बिरयानी, गुलाब जामुन सब कुछ देखते ही स्वर्ग का नज़ारा कैसा होता होगा इसकी झलक मिल गई थी उसे। खा-पीकर डकार ली तृप्ति की, संतृप्ति की।

शाम को देखने के लिए ऐसा कुछ था नहीं कि मस्त खाना खाने के बाद दिन खत्म हो सके। यह सोचने भर की देर थी कि पास वाले मेहता जी का फ़ोन आया। उनके पास टिकट हैं आइस हॉकी के, 'टोरंटो मैपल लीफ' के गेम के लिए। उसकी पसंदीदा टीम खेल रही है। खूब मज़े लिए खेल के। पॉपकॉर्न और कोक के साथ 'नाचोज़ चिप्स' और फिर घर वापसी।

बस वह समझने की कोशिश कर रहा था कि आज के दिन का श्रेय खुद को दे या उन लोगों को जो उसके आसपास हैं। ये सब तो रोज़ ही वहीं होते हैं। 'आज' 'रोज़' भी तो हो सकता है। आज का दिन खत्म होते-होते भी मेहरबान था। क्या कुछ नहीं मिला! इतना सब कुछ एक दिन में हो गया। और उस दिन हुआ जब वह पूरी तरह तैयार

था रास्ते की हर मुसीबत से लड़ने के लिए। क्यों न हर दिन यही सोचकर बिस्तर से उठा जाए कि आज का दिन मुश्किल होगा तो कई मुश्किलें यूँ ही आसान हो जाएँगी। खुशनुमा जीवन की छोटी-छोटी खुशियाँ।

नींद आने से पहले आज की सुबह की शुरूआत उसकी आँखों से गुज़रने लगी। रोज़ सुबह एक कौआ काँव-काँव कर जगा देता था लेकिन आज उसका कहीं अता-पता नहीं था। शायद वह जल्दी उठा था तो रोज़ वाली कोई बात उसे परेशान नहीं कर रही थी। सुबह की मीठी नींद में कोई भी खलल हो तो वह 'चेंचें' दिन भर दिमाग में रहती है। लेकिन वही 'चेंचें' उठने में भी मदद करती है। इतने शोर में तो कोई चाह कर भी सो नहीं पाए।

रोज़ तो अलसाई सुबह होती है आज तो चुस्ती-फुर्ती वाली थी। बड़ा भाग्यवान् दिन था। हालाँकि जल्दी उठ कर अपना दिन तो खुद ही सँवारा था पर श्रेय भाग्य को ही जाना था। जीवन के इन जीवंत क्षणों को कैद करके रख लिया जाए तो कैसा रहे। जब भी ज़रूरत हो भुना लो उन्हें।

और एक खुशनुमा दिन की मीठी नींद वाली रात निकल गई, एक दिवा स्वप्न छोड़कर।

अगली सुबह असली सुबह में बदल गई थी। भूल चुका था वह कि - 'जल्दी उठना है अब हर रोज़'। कल तो बीत चुका था और आज वही हुआ जो रोज़ होता था।

'कल तो 'कल' ही रहेगा 'आज' कैसे हो सकता है।'

उनींदी आँखें खुलीं मगर कोई परवाह नहीं की जल्दी उठने की। वही अलार्म बजना, वही हड़बड़ाना और वही अलार्म बंद कर सो जाना। वही भागमभाग। वही मुसीबतों का पहाड़। वही एक के बाद एक अपना चेहरा दिखाती परेशानियाँ। फ्रिज़ खोला तो दूध नहीं था। सीरियल का डिब्बा भी खाली था। काली चाय बनाने के लिए भी चाय की पत्ती नदारद थी।

खिड़की के बाहर मुँडेर पर बैठा कौआ अपनी चोंच में ब्रेड का टुकड़ा दबाए हुए था। काग के भाग! वह ललचाई आँखों से देख रहा था कौए को अपना ब्रेकफास्ट करते हुए।

***

लघु कथा

कसाईख़ाना

ज़ोहेब युसुफ़ज़ई

एक निजी अस्पताल के आई सी यू वार्ड में अत्याधुनिक मशीनों से घिरे बिस्तर पर मरीज़ बेसुध लेटा था। मरीज़ दो दिन से कोमा में था। मशीनों की स्क्रीनें मरीज़ के ज़िन्दा होने की तसदीक़ कर रहीं थी। वार्ड के बाहर मरीज़ के रिश्तेदार जमा थे। दुआओं और मनौतियों का ताँता लगा था। किसी को भी मरीज़ के वार्ड में जाने की इजाज़त नहीं थी। रिश्तेदार केवल दरवाज़े पर बने झरोख़े से मरीज़ को देख सकते थे।

''चलो..बाहर कैंटीन में चाय पी लेते हैं..।'' एक रिश्तेदार ने दूसरे से कहा। दूसरे ने भी हामी भरी और दोनों कैंटीन की ओर चल पड़े। कैंटीन से डिसपोज़ेबल कप में चाय लेकर दोनों बाहर एक पेड़ के नीचे खड़े होकर चाय पीने लगे।

तभी एक आदमी जो काफी देर से उन्हें देख रहा था, बड़े ख़ुफिया तरीक़े से उनके पास आया। चौकस नज़रों से इधर-उधर देख कर बोला,-''आपका मरीज़ आई सी यू वार्ड नंबर 2 में है ना..''

''हाँ क्यों ?...'' एक रिश्तेदार बोला।

वह आदमी थोड़ा और पास आकर गहरी आवाज़ में बोला,-''अगर आप मुझे पाँच हज़ार दो, तो मैं आपका एक लाख रुपये बचा सकता हूँ, जो आपके मरीज़ पर ख़र्च होने वाला है..।''

''हमें दलाल की कोई ज़रूरत नहीं है।''कह कर रिश्तेदार ने आदमी की तरफ से पीठ मोड़ ली। ''ऐसे लोगों की वजह से ही हमारा देश तरक्की नहीं करता''। रिश्तेदार ने हमारे देश के आम आदमी की प्रिय पंक्ति दोहराई।

''लेकिन इसकी पूरी बात सुनने में कोई हर्ज़ नहीं है....'' दूसरे रिश्तेदार ने समझदारी दिखाते हुए कहा,-''कहो भाई ! कैसे बचा सकते हो तुम हमारे पैसे ?'' पहले रिश्तेदार ने हैरानी से दूसरे की तरफ देखा, जैसे कह रहा हो कि तुम ऐसा कैसे कर सकते हो। लेकिन दूसरे ने आँखों ही आँखों में उसे शांत रहने को कहा।

''कहो क्या कहना चाहते हो ?...''

''पहले आप मुझे पाँच हज़ार रुपये दो...फिर मैं आपके फायदे की बात बताता हूँ, अगर आपको मेरी बात ग़लत लगी तो बेशक पैसे वापिस ले लेना।''

''ये आदमी हमारा वक्त और पैसा दोनों बर्बाद कर रहा है, क्यों इसके चक्कर में पड़ रहे हो।''इस बार पहले के लहज़े में गुस्सा था।

दूसरे ने हाथ के इशारे से उसे शांत किया और जेब से रुपये निकाल कर आदमी को थमा दिए।

आदमी ने इत्मिनान से रुपये जेब में रखे और बोला,-''आपको सुन कर दुख होगा लेकिन मैं सच बताता हूँ, आपके मरीज़ को मरे चौबीस घंटों से ज़्यादा हो गए हैं।''

''क्या बकवास कर रहे हो?...डाक्टर ने तो कहा कि.....।''

''सच कह रहा हूँ, वो मर चुका है, मशीनें कम्प्युटराइज़ हैं; जो उसे ज़िन्दा दिखा रही हैं। डाक्टर उसे दो-तीन दिन और आई सी यू में रखेंगें, पचास हज़ार रोज़ाना के हिसाब से फीस लेंगें और तीसरे दिन मरीज़ मर गया कह कर शव आपके हवाले कर देंगे। मैंने सच आपको बता दिया। आगे आप लोगों को जो करना है वो आप जानो।'' कह कर आदमी जाने लगा लेकिन फिर मुड़ा और बोला,-''भाई साहब, ये अस्पताल नहीं आलीशान कसाईख़ाने हैं, जहाँ इंसान के गोश्त का कारोबार होता है।''

***

संपर्क: नाहन, ज़िला सिरमौर, हि0प्र0
ईमेल- khan81zoheb@gmail.com

बट जॉइंट

रोचिका शर्मा

आज सुलभा बहुत खुश थी इतने बरसों बाद घर में खुशियाँ मनाई गई थीं। उस के बेटे अमित की शादी बड़ी धूमधाम से हुई और बहू के रूप में सुन्दर सी सौम्या उस के घर में आ गई। सभी मेहमानों के जाने के बाद अमित व सौम्या हनीमून के लिए चले गए। लेकिन जब वे वहाँ से लौट कर आए तो दोनों के ही चेहरों पर वह चमक नज़र नहीं आई, जो नव विवाहित जोड़ों के चहरे पर अक्सर देखने को मिलती है।

सुलभा ने अमित से पूछा ''अमित क्या बात है तुम उदास क्यूँ दिखाई देते हो'' ?

''नहीं मम्मी कोई ख़ास बात नहीं बस थोड़ी सी थकान है'' अमित ने कहा। सुलभा मुस्कुरा कर रसोई में चली गई।

अभी दो महीने बीते और अमित ने सुलभा को कहा ''मम्मी मैं सौम्या को तलाक दे रहा हूँ''।

''क्या'' ? सुलभा चिंतित स्वर में बोली।

हाँ मम्मी, शायद उसे मैं पसंद ही नहीं, मेरे पास आना ही नहीं चाहती। कहने को तो हम पति-पत्नी हैं लेकिन असली ज़िंदगी में रेलवे ट्रैक की दो समानांतर पटरियाँ। जो साथ तो चल रही हैं, लेकिन पिछले दो महीनों में एक बार भी मिले नहीं और सामानांतर रेखाएँ कभी मिला नहीं करती मम्मी। तो फिर हम दोनों क्यूँ एक दूसरे का वक़्त बर्बाद करें। मैंने हनीमून पर भी बहुत कोशिश की, कि मैं उसे अपने करीब ला सकूँ, लेकिन मेरी हर कोशिश नाकाम रही।

सुलभा ने उदास स्वर में पूछा ''क्या चाहती है सौम्या ? उस ने तुम से तलाक माँगा ?''

''वही तो समस्या है कि वह कुछ बोलती ही नहीं। मैं कुछ पूछूँ तो चुप लगा कर बैठ जाती है और ज़्यादा कुछ कहूँ तो सुबक-सुबक कर रोने लग जाती है। इसलिए उसे आज़ाद कर देना ही अच्छा। क्यूँ ज़बरदस्ती उस की भी ज़िंदगी खराब करूँ। उस के बाद वह जिस के साथ और जैसे भी जीना चाहे जिए,'' खिन्न मूड से अमित ने जवाब दिया।

सुलभा तो सोच भी नहीं सकती थी कि धूमधाम से आईं खुशियाँ ऐसे दबे पाँव वापिस भी चली जाएँगी। वह मन ही मन अपने बेटे को ले कर बहुत चिंतित हो गई और सोचने लगी ''आख़िर ऐसा क्या हुआ कि सौम्या इस विवाह से खुश नहीं, न जाने उसके माता-पिता ने उस की मर्ज़ी के बिना यह विवाह कर दिया हो या फिर वह किसी और के प्रेम बंधन में बंधी हो, लेकिन फिर उस के बेटे से खिलवाड़ करने की क्या ज़रूरत थी ? साफ़-साफ़ भी तो बता सकती थी''।

उस से रहा न गया तो अपने बेटे अमित को बोली ''क्या तुम मुझे छूट दोगे कि मैं एक बार सौम्या से बात कर लूँ इस विषय पर''।

रोचिका शर्मा (खाँडल) की कविताएँ, आलेख, कहानी, मुक्तक, दोहे, बाल कविताएँ एवं कहानियाँ गृह शोभा, सरिता, सरस सलिल, सखी जागरण, अहा ज़िंदगी, कादम्बिनी, अभिनव इमरोज़, साहित्य समीर दस्तक, हिमप्रस्थ इत्यादि पत्रिकाओं और सभी राष्ट्रीय स्तर के समाचार पत्रों में निरंतर प्रकाशित होती हैं। कई सम्मानों से सम्मानित रोचिका शर्मा का अटूट बंधन (साझा कहानी संग्रह) मुट्ठी भर धूप, कविता अनवरत 3 (साझा कविता संग्रह), लघुकथा अनवरत 2017 (साझा लघुकथा संग्रह) हैं। संप्रति सुपर गॅन ट्रेडर अकॅडमी प्राइवेट लिमिटेड में डाइरेक्टर हैं।
संपर्क: F-206, Ceebros Belvedere, Opposite Nilgiris, Kumarsamy Nagar, Model School Road, Shollingnallore, Chennai-600119
ईमेल: sgtarochika@gmail.com
मोबाइल: 9597172444

अमित ने थोड़ा सोचते हुआ कहा ''हाँ आप कर सकती हैं, मुझे तो कोई एतराज नहीं''।

अगले ही दिन सुलभा ने अमित के दफ्तर के बाद मौक़ा देख कर सौम्या से पूछा ''सौम्या बेटी तुम्हें हमारा घर पसंद आया कि नहीं'' ? ऐसा लगता है कि तुम अपने मायके को बहुत मिस कर रही हो''।

वह कहने लगी ''ऐसी तो कोई बात नहीं मुझे तो बहुत सुन्दर और अच्छा लगा नया घर। आप इतनी अच्छी हैं कि मैंने तो ऐसी सास की कल्पना भी नहीं की थी। मैं तो धन्य हो गई इस परिवार से रिश्ता जोड़ कर। मुझे यहाँ कोई तकलीफ नहीं।'' उस ने अपनी सौम्य मुस्कान बिखेरते हुए कहा।

सुलभा को समझ न आया कि क्या सही है ? वह सोचने लगी ''कल अमित जो कह रहा था और आज सौम्या जो कह रही है उन दोनों बातों में तो दूर-दूर तक कोई मेल ही नहीं''।

रात को जब अमित आया सुलभा ने उसे समझाते हुए कहा ''देखो अमित अभी तुम्हारी नई-नई शादी हुई है। इतनी जल्दी तलाक का फैसला लेना ठीक नहीं। कोई और बात भी हो सकती है, तुम थोड़ा धैर्य से काम लो और तलाक की बात तो अभी दिमाग से निकाल ही दो''।

अमित ने भी सर हिला कर सुलभा की बात समझने की कोशिश की।

आज अमित ने सौम्या से पूछा ''सौम्या क्या हम नॅशनल पार्क घूमने चलें'' ?

''हाँ-हाँ क्यूँ नहीं,'' सौम्या ने मुस्कुराते हुए कहा और वह झट से अपना नया गुलाबी रंग का सलवार-कुर्ता पहन कर तैयार हो गई।

सुलभा उसे अमित के साथ खुश देख कर बहुत खुश होती और मन ही मन सोचती कि शायद धीरे-धीरे अमित और सौम्या एक होने लगे हैं और अब तलाक की नौबत नहीं आए गी।

समय बीते जा रहा था। ऋतुएँ भी क्रमवार बदल रही थीं। अमित सौम्या को घुमाने-फिराने के बहाने उसे बाहर ले जाता तो वह सदा प्रसन्नचित ही नज़र आती, खुली हवा और बाग़-बगीचों में सैर करना उसे बहुत ही अच्छा लगता। लेकिन एक दिन जैसे ही अमित ने उस के करीब आना चाहा न जाने उसे क्या हुआ, वह छिटक कर उस से दूर हो गई..... अमित सोच में पड़ गया, पर कुछ बोला नहीं.....

सुलभा यदा-कदा अमित से सौम्या के व्यवहार के बारे में जानकारी लेती रहती, अमित अपनी माँ का मन रखने को झूठ ही कह देता कि माँ सब ठीक चल रहा है।

लेकिन जब सुलभा को सब ठीक लगा तो वह अपने दादी बनने के सपने देखने लगी और एक दिन अमित को अपनी मंशा जताते हुए बोली ''बेटा ईश्वर की कृपा से घर में सब अच्छा चल रहा है, बस एक किलकारी और गूँज जाए घर में तो परिवार पूरा हो जाए।''

अमित के लिए परीक्षा की घड़ी थी, कैसे छुपाता अपनी माँ से वह सच्चाई ? असल में तो अमित व सौम्या शारीरिक रूप से कभी एक हुए ही नहीं और अब तो अमित ने कोशिश करना ही बंद कर दिया था और सब कुछ ईश्वर के हाथ में छोड़ दिया था। लेकिन माँ के बार-बार एक पोते का मुँह देखने की इच्छा जताने पर अमित को सच की चिलमन खोलनी ही पड़ी और सुलभा तो जैसे उस की बात सुन कर जड़ ही हो गई।

आज अमित की शादी की सालगिरह थी, इस एक वर्ष में सौम्या और सुलभा सास-बहू नहीं पक्की सहेलियाँ बन गई थीं। सुलभा किसी न किसी तरह पूछने की कोशिश करती कि असलियत क्या है और सौम्या को समस्या क्या है ? लेकिन सौम्या हर बार टाल जाती। आज सुलभा ने अपने बेटे-बहू को विवाह की वर्षगाँठ की बधाई देते हुए कहा ''बेटी अब मुझे जल्दी से पोते का मुँह दिखा दो, उस के बाद मुझे कोई चिंता-फ़िक्र नहीं, पूरा एक वर्ष हो गया है तुम्हारे विवाह को अब तो मेरी सहेलियाँ भी पूछने लगी हैं।''

हमेशा अपनी सास के सामने मुस्कुराने वाली सौम्या की आँखें अनायास ही नम हो आईं। उस से कुछ कहते न बना तो वह झट से अपने आँसू पोंछते हुए कमरे में चली गई।

लेकिन आज सुलभा ने ठान ही लिया था कि वह हकीकत जान कर रहेगी। सो उस ने सौम्या को प्यार से बहुत सवाल किए और कहा ''एक साल हो गया तुम्हारी शादी को अब मुझे एक प्यारे से बच्चे की दादी बना ही दो।''

इतना सुन सौम्या की आँखें भर आईं तो सुलभा समझ गई कि अमित ने जो बताया वह ठीक ही है। उस ने बात ही बात में सौम्या से पूछना शुरू किया ''क्या तुम्हें अमित पसंद नहीं सौम्या ? या तुम्हारा शादी के पहले कोई प्रेम प्रसंग था ? अमित कह रहा था कि तुम उस के पास जाने से भी कतराती हो। यदि तुम्हें वह पसंद नहीं तो तुम ने इस शादी से इनकार क्यूँ नहीं किया'' ?

सुलभा के सवालों का सौम्या के पास कोई जवाब नहीं था.... अब वह सुलभा से भी कतराने लगी थी।

सुलभा पर तो मानों एक-एक दिन भारी पड़ने लगा था सो एक दिन सुलभा ने सौम्या को अपना दुख बता कर उलाहना देते हुए कहा ''अमित के पिता के बाद बहुत मुश्किल से अकेले-अकेले अमित को पाला और अब तुम मुझे एक बच्चे के लिए तरसा रही हो।''

सुलभा के मन के दर्द को समझते हुए सौम्या से रहा न गया और वह फफक कर रो पड़ी। सुलभा ने उसे गले लगाते हुए कहा ''तुम्हें कोई दुख है तो मुझे सच-सच बताओ लेकिन मेरे बेटे को न तड़पाओ वो मेरे जीवन का आख़िरी सहारा है, तुम मुझे अपनी माँ समान समझो सौम्या।''

सुलभा को इस तरह मजबूर हो रोते देख सौम्या से उन का दुख बर्दाश्त न हुआ। वह कहने लगी क्या बताऊँ मम्मी मैं मजबूर हूँ अपने मन से। मैं खूब कोशिश करती हूँ कि अमित के करीब जाऊँ लेकिन मुझे डर लगता है और वही पुराना ..... इतना कह वह सुबकने लगी, उस की आँखों से आँसू छलछला पड़े।

''क्या पुराना ... तुम ने बात आधे में ही क्यूँ छोड़ दी सौम्या ? मुझे पूरी बात बताओ।'' सुलभा ने उस के बाल सहलाते हुए कहा।

''नहीं कुछ नहीं'' सौम्या सुलभा को टालते हुए बोली। सुलभा को समझते देर न लगी कि सौम्या उसे टाल रही है सो वह उसे मजबूर करते हुए बोली ''सौम्या तुम मुझे मम्मी कहती हो तो आज सब सच बताओगी कि परेशानी क्या है ? मैं तुम दोनों को इस तरह घुट-घुट कर नहीं जीने दूँगी।''

चाह कर भी सौम्या अब सुलभा को टाल न पाई और उस का जी भर आया था। लम्बे समय से जो राज़ उस ने छुपा रखा था, जिस के चलते वह एक अजीब सी घुटन की ज़िंदगी जी रही थी और उस से उबर जाना चाहती थी। वह अपने चेहरे पर पहना मुस्कराहट का मुखौटा उतार देना चाहती थी।

उस ने जो बताया उसे सुन सुलभा की आँखें भर आईं, उस ने सौम्या को गले से लगा कर कहा ''तो यह बात है, बेटी बस एक हादसा समझ कर भूल जाओ इसे, मैं तुम्हारी माँ तो नहीं फिर भी माँ से कम भी नहीं,'' सुलभा अपने आँसू पोंछते हुए बोली।

शाम को अकेले में बैठी सुलभा मन ही मन सोच रही थी ''मेरे बेटे के साथ ही ऐसा होना लिखा था।'' अमित दफ्तर से जब आया तो रात का खाना खाने के बाद सुलभा अकेले में उसे बोली ''बेटा अमित कैसे कहूँ तुम से, परन्तु तुम्हें बताना भी तो ज़रूरी है।'' अमित ने पूछा ''क्या हुआ मम्मी ? आप इतनी उदास सी क्यूँ दिखाई दे रही हैं ?''

''बात ही कुछ ऐसी है अमित, बताती हूँ पर बेटा थोड़ा हिम्मत रखना। इतना कह सुलभा ने उसे सौम्या की हकीकत बताई।

उसे सुन अमित भी उदास हो गया और अगले ही पल उस की आँखों से आँसू बह निकले। वह वहाँ से झट से उठ कर सौम्या के पास गया और उसे बाँहों में भर निढाल सा हो कर बोला ''सब ठीक हो जाएगा सौम्या, मैं हूँ न तुम्हारे साथ।''

कहाँ भूल पाया था वह राधिका को, उस की पहली प्रेयसी। आज उस के सारे ज़ख्म हरे हो उठे थे, आँखों की बरसों पुरानी सूखी नदी में फिर से उफान आने लगा था। उस का ऐसा हाल देख सौम्या ने पूछ ही लिया ''क्या हुआ अमित''?

''क्या बताऊँ सौम्या ? बात ही कुछ ऐसी है'' ? अमित ने रुंधे स्वर में कहा।

राधिका हमारे पड़ोस में रहती थी और मेरे बचपन की दोस्त भी थी। मैं मन ही मन उसे चाहता था, हम दोनों एक ही कॉलेज में फर्स्ट ईयर में पढ़ते थे। वह एक बार किसी सीनियर से नोट्स लेने उस के रूम में गई थी। उस सीनियर ने मौक़ा देख कर उस का बलात्कार किया।राधिका जब घर आई, बहुत बुरे हाल में थी, उस की माँ उस की हालत देख समझ गई थी और जब राधिका ने सच्चाई बताई तो उस के पिता ने कॉलेज के प्रिंसिपल से शिकायत की। मालूम हुआ वह बलात्कारी तो प्रिंसिपल के दोस्त का बेटा था, जिसके पिता एक वकील थे। प्रिंसिपल ने राधिका के पिता की एक न सुनी। उन्होंने पुलिस में एफ़. आई. आर. दर्ज करवाई। बस उसी दिन से राधिका के बुरे दिन शुरू हो गए। सबसे पहले पुलिस वालों ने बलात्कार के सिलसिले में इतने गंदे सवाल पूछे कि वह शर्म से अपनी नज़रें नीचे झुका लेती थी। वहाँ से निकले तो हॉस्पिटल में टेस्ट करवाना था ''टू फिंगर टेस्ट'' ताकि बलात्कार की पुष्टि हो सके।

सौम्या बोली वह क्या होता है ? सौम्या बलात्कार की पुष्टि के लिए यह टेस्ट किया जाता है इसके लिए पीड़िता के वजाइना में दो ऊँगलियाँ डाल कर यह जाँच की जाती है कि वह वर्जिन है या पहले से ही सेक्स की आदि है। मुझे याद है मेरी मम्मी भी उस की माँ के साथ अस्पताल गई थी और उन्होंने मुझे बताया था इस टेस्ट के दौरान राधिका दर्द से चीख उठी थी। उसे ऐसा महसूस हुआ था जैसे कोई दूसरा बलात्कार कर रहा है उस के साथ। उस के बाद वहाँ के वार्ड बॉयज़ की घूरती निगाहें ! हर कोई उसे अजीब सी नज़र से देख रहा था। हर घूरती नज़र बलात्कार पे बलात्कार कर रही थी। वह शर्म से धरती में गड़ी जा रही थी। मानों किसी ने उस का बलात्कार किया तो इस में उस का स्वयं का कुसूर हो। वो टेस्ट रिपोर्ट कोर्ट में गई; जिसमें डॉक्टर ने लिखा था लड़की के साथ बलात्कार नहीं हुआ, वह तो पहले से ही सेक्स की आदि थी और उस ने लड़के से अपनी मर्जी से संबंध बनाए थे। यह रिपोर्ट देख राधिका के पिता की हार्ट-अटैक से मृत्यु हो गई।

लड़के के वकील पिता ने डॉकटर को खरीद लिया था और उसने झूठी रिपोर्ट बना दी थी। वकील ने उससे इतने घिनौने सवाल पूछे कि उन का जवाब वह कैसे देती ? तब से राधिका एक ज़िंदा लाश हो गई थी।

कॉलेज जाती तो उस की सहेलियों ने उससे बात करना बंद कर दिया। साथ के दूसरे लड़के उस पर फब्तियाँ कसते ''एक मौक़ा हम को भी दोगी''? वह तिल-तिल कर मर रही थी। उसने कॉलेज जाना भी छोड़ दिया था। उसे न्याय तो नहीं मिला, बदनामी बहुत मिली।

बिलकुल अकेली हो गई थी वह, मुझ से भी नहीं मिलना चाहती थी। अपने आप को जैसे घर के किसी कोने में छिपा लेना चाहती थी। उस की माँ को भी लोग तरह-तरह के ताने देते। बस मेरी मम्मी ही उन की एक मात्र सहेली थी, जिस ने उन के परिवार पर आई परेशानी को समझ कर बुरे वक़्त में जितना हो सका साथ दिया।

उन दिनों एक बार मम्मी, राधिका व उस की माँ पास के मंदिर गईं, वहाँ के पुजारी ने भी उसे मंदिर में प्रवेश की इजाज़त नहीं दी और कहा ''ऐसी कुलक्षिणी मंदिर में आएगी तो शरीफ लोग तो मंदिर का रास्ता ही छोड़ देंगे।'' किसी ने तो यहाँ तक कहा ''नौ सौ चूहे खा कर बिल्ली हज को चली।''

उस दिन राधिका घर आ कर बहुत फूट-फूट कर रोई। उस की माँ ने उसे बहुत समझाया कि इस में उस का कोई दोष नहीं। लेकिन वह शायद डिप्रेशन में चली गई थी। हकीकत जानते हुए भी वह स्वयं को दोषी मानने लगी थी। शायद हमारा समाज और धर्म एक अबला पर ही प्रहार करना जानता है, जिस का दोष था वह तो आज़ाद घूम रहा था और राधिका घुट-घुट कर जी रही थी।

मैंने उसे बहुत हिम्मत देने की कोशिश की। एक दिन घर में राधिका पँखे से लटकी मिली। उस ने आत्म हत्या कर ली थी। उस की माँ ने कोर्ट में खूब गुहार लगाई ''जज साब यह आत्म हत्या नहीं मेरी बेटी की हत्या है, जिस के हत्यारे हैं प्रिंसिपल, वकील साहब, डॉक्टर, पुलिस वाले और आप का ये न्यायिक सिस्टम। जिसमें एक रेप पीड़िता को न्याय के लिए इतने सबूत देने होते हैं कि हाँ उस का रेप हुआ है। और इतनी लम्बी न्याय प्रक्रिया कि रेप पीड़िता स्वयं ही कहे ''मुझे मौत दे दो'' और जब वह न मिले तो वह मजबूर हो कर आत्म हत्या कर ले।

उस की मौत से हम बहुत टूट गए। राधिका तो चली गई, पर उस की मौत यह बता गई कि इस पुरुष प्रधान समाज में पुरुष द्वारा किए गए अत्याचार का दोष भी महिला

के मत्थे मढ़ दिया जाता है और वह ताउम्र घुट-घुट कर मरने को मजबूर हो जाती है।

सौम्या जब तुम्हारे बारे में माँ से सुना तो ऐसा महसूस हुआ कि यहाँ तो न जाने कितनी बलात्कार पीड़िता होंगी, जिनके माता-पिता ने उन्हें यह कह कर चुप करवा दिया होगा कि ''लोग क्या कहेंगे, अब तुम अपवित्र हो गई हो। तुम से विवाह कौन करेगा ? हमारी इज्ज़त का क्या होगा ? और यदि अदालत का दरवाज़ा खटखटाया तो चप्पलें घिस जाएँगी और न्याय नहीं बदनामी मिलेगी।'' पर तुम चिंता न करो सौम्या मैं तुम्हारे दर्द को समझ सकता हूँ। आज तक भी कहाँ भूल पाया हूँ मैं राधिका को। हर वक़्त उस की तस्वीर मेरी निगाहों के सामने घूमती है। वो जैसी भी थी, मैंने उससे प्यार किया था, पर वह ही हिम्मत हार गई। मैंने उसे बहुत दिलासा दिया था। वह अपने आपको अपवित्र समझने लगी थी। क्या करती बेचारी दुनिया का न्याय ही उल्टा है। एक अबला को अपवित्र करार दे कर गुनहगार को छोड़ दिया जाता है। उस का दंश वह झेल नहीं पाई। उस ने मुझ पर भी भरोसा नहीं रखा और मुझे अकेला छोड़ गई।

तुम मुझ पर भरोसा रखोगी न सौम्या, मैं तुम्हारे साथ जीना चाहता हूँ। जीवन की खुशियाँ बटोरना चाहता हूँ। मेरा यकीन करो तुम मंदिर की मूरत की तरह पवित्र हो, यदि किसी ने तुम्हारा बलात्कार किया तो इस में तुम्हारा कोई दोष नहीं। और तुम्हें तो उस बलात्कार से उबरने का मौका भी नहीं मिला। मुझ से सगाई होने के बाद हुआ तो क्या हुआ ? यदि तुम मुझे यह हादसा विवाह पूर्व भी बताती तो भी मैं तुम्हें नकारता नहीं।

सौम्या अमित से लिपट कर अपनी आँखों के बहते सैलाब को रोकने की कोशिश कर रही थी। किन्तु इतने समय से शांत समुन्द्र आज अपने पूरे ज्वार पर था। इतने बरसों बाद आज अमित तड़प उठा था और उसने कहा सौम्या अब यह तुम्हारी परेशानी नहीं हमारी परेशानी है। मुझे तुम से कोई शिकायत नहीं। मैं तुम्हारे साथ हूँ, तुम्हारा हर दुख मेरा दुख है।

अगले दिन सुलभा ने सौम्या को बहुत समझाया कि जो अमित कह रहा है वह सही है। वह बोली ''मैं भी एक महिला हूँ सौम्या और खूब समझती हूँ कि आज जहाँ लड़कियाँ पढ़-लिख कर पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिला कर दफ्तरों में नौकरी कर रही हैं, विभिन्न क्षेत्रों में आगे बढ़ रही हैं तो जिस तरह और हादसे होते हैं, बलात्कार होना भी मात्र एक हादसा है जिसे अपने ज़हन में से जल्दी ही निकाल देना चाहिए।'' उसे समझा बुझा कर वह अगले ही दिन एक काउंसलर के पास ले कर गई।

काउंसलर ने सौम्या से बहुत प्यार से बातें की और पूछा ''तुम क्यूँ नहीं अमित के पास जाती'' ? सौम्या कहने लगी शारीरिक संबंध के ख़याल से ही मुझे ऐसा लगता है जैसे फिर एक बलात्कार होने वाला है। मेरे पति में मुझे उस रेपिस्ट की झलक दिखाई देने लगती है। मुझे ऐसा भी लगता है कि मैं तो अपवित्र हो चुकी हूँ। विवाह पूर्व माँ ने कहा था यह बात किसी को नहीं बताना इसलिए इतने समय से घुट-घुट कर जी रही हूँ।

यह मेरी अमित से सगाई के बाद की घटना है, विवाह के एक महीने पहले हम लोग एक बारफ़ैमिली आउटिंग के लिए गए थे। जिस ने रेप किया वह मेरे पिता के बिज़नेस पार्टनर का बेटा था। जब रात को सब कैसिनो में गए, मैं रूम में सोई थी। उसने इस का फ़ायदा उठाया और मेरे रूम के दरवाज़े पर दस्तक दी। जैसे ही मैंने दरवाज़ा खोला तो देखा कि वह नशे में था उस ने मुझे पीछे धकेल कर कमरे का दरवाज़ा बंद कर लिया और ज़बरदस्ती की। जब मैंने मम्मी को सब सही-सही बताया तो उन्होंने उलटा मुझे ही डाँटा कि मैंने दरवाज़ा क्यूँ खोला? मम्मी कहने लगीं- ''हमारा समाज और धर्म हमें ही कोसेगा कि कुँवारी के नाजायज़ संबंध थे। अब तो तुम्हारी सगाई भी हो चुकी है, न जाने अमित की माँ व अमित यह बात सुनते ही यह रिश्ता न तोड़ दें। बलात्कार हुई लड़की से कौन ब्याह करेगा भला ? उसी समय मम्मी व पापा ने मुझे सदा के लिए चुप करवा दिया। बस इसीलिए जब अमित मेरे पास आते हैं तो मुझे लगता है कि मैं कहीं उन्हें अपवित्र न कर दूँ। कहीं मेरे साथ फिर बलात्कार न हो जाए। इतना कह सौम्या रो पड़ी.....।

सुलभा ने उसे अपनी छाती से चिपका लिया। काउंसलर ने उसे पानी देते हुए कहा ''इस में तुम्हारी कोई ग़लती नहीं, तुम पूरी तरह से पवित्र हो, ग़लती तो रेपिस्ट की होती है। हमारा समाज और धर्म सिर्फ पीड़िता को दोष देता है शायद इसी डर से तुम्हारी मम्मी व पापा ने तुम्हें मुँह बंद रखने को कहा। अब तुम डरना नहीं हम सब तुम्हारे साथ हैं, अपने आत्म विश्वास के साथ जिओ और अमित को अपना ही समझो। वह तुम्हारा रेप नहीं करेगा।

अमित ने भी कहा ''जब तुम चाहो मेरे पास आना, मैं तुम्हें छुऊँगा भी नहीं।''

अरसे बाद सौम्या दिल से मुस्कुराई थी। उस ने कहा ''जब आप लोग सब मेरे साथ हैं तो मैं नहीं डरूँगी, वह अंतर्मन में अमित को एक अच्छे इंसान के रूप में देख रही थी और सोच रही थी कि वह शायद बहुत ही भाग्यशाली है, जिसे अमित जैसा पति मिला है। इतना सोचते हुए अनायास ही उस के कदम अमित के तरफ बढ़े और अगले ही पल वह अमित के सीने से लग कर अपना दर्द हल्का कर रही थी।''

सौम्या को अमित के सानिध्य में देख सुलभा मुस्कुरा उठी थी। उस ने सौम्या की काउंसलिंग जारी रखी ताकि वह किसी भी हाल में अपने साथ हुए बलात्कार में अपने आप को दोषी न समझे।उस ने तय किया कि वह स्वयं भी इस बात को याद नहीं रखेगी कि बहू एक बलात्कार पीड़िता है, क्यूँकि वह भली-भाँति समझती थी कि जिस तरह राह चलते कई तरह की दुर्घटनाएँ हो जाती हैं, बलात्कार भी ऐसी ही दुर्घटना है, जिसमें दोषी पीड़िता नहीं होती। उसे दोषी करार देने से इतर, सहानुभूति देकर उसे जीने की नई राह दिखानी चाहिए।

अमित मन ही मन सोच रहा था कहते हैं सामान्तर रेखाएँ कभी मिलती नहीं हैं, रेल की पटरियों की तरह। यदि पटरियाँ मिलें तो दुर्घटना हो जाती है। यदि दुर्घटना के बाद वे उस स्थल को छोड़ दें तो पास-पास रह कर एक हो सकती हैं जैसे कि वेल्डिंग का बट जॉइंट। हाँ, उस पर रेल नहीं चल सकती लेकिन अमित व सौम्या के जीवन की रेल तो चल पड़ी थी। सुलभा को विश्वास नहीं हो रहा था कि यह हकीकत है या मात्र एक स्वप्न।

***

शुवे

अनीता शर्मा

शुवे जैसे कोमा से बाहर निकली हो, जब से घर आई बॉलकनी में बैठी है, पता नहीं चला कब दो बजे से नौ बज गए। वह उठी और बॉलकनी की रेलिंग के पास खड़ी होकर नीचे सड़क पर आती-जाती गाड़ियों को देखने लगी। रंगबिरंगी बत्तियों से सजी सड़क अचानक रंगीन क्लब में बदल गई और शुवे उसमें बैठी क्रिस को निहार रही है, उसे अपनी ही किस्मत से रश्क होने लगा था जब अचानक क्रिस ने उससे एंगेजमेंट रिंग का नाप भी पूछ लिया था।

उसे क्रिस से मिले हुए अभी पाँच महीने भी पूरे नहीं हुए थे, उसके कुछ कह पाने से पहले ही क्रिस ने अपने आप ही नाप लेने से मना कर दिया, कहने लगा उससे बहुत बड़ी भूल हुई जो उसने ऐसा सोच लिया और पता नहीं कैसे उसके मुँह से यह बात निकल गई। साथ ही वह बहुत उदास हो गया। शुवे हैरान परेशान! उसे समझ नहीं आ रहा था कि वह कैसे रिएक्ट करे! उसने धीरे से कहा, ''क्रिस मैं तो समझती थी कि हम दोनों में अच्छी दोस्ती हो गई है सो हम एक दूसरे से खुल कर बात कर सकते हैं, मुझे नहीं लगता तुम्हें ऐसा सोचना चाहिए। पर यह ख़याल तुम्हारे मन में आया कैसे ? मेरा मतलब तुम जैसा हैंडसम लड़का मुझसे शादी क्यों करना चाहेगा ? तुम्हारे पीछे तो कई लड़कियाँ पड़ी होंगी, नहीं.... ? उसने बात मज़ाक में ले जानी चाही तो क्रिस और सीरीयस हो गया। यह बात तुम्हारे दिमाग में क्यों आई कि मेरे जैसे लड़के को तुम से शादी करने में कोई दिक्कत होगी ? मैं तो तुम्हारे और अपने स्टेट्स के बारे में बात कर रहा था। मैं ठहरा एक मामूली सा फिटनेस कोच और वह भी एक स्कूल में, तुम इतनी बड़ी मल्टीनेशनल कम्पनी में मैनेजर। जितनी मेरी पूरे एक साल की सैलरी है, उतनी तुम्हारी डेढ़ महीने की, फिर साथ में इतना बड़ा फ्लैट और इतनी बड़ी गाड़ी भी कम्पनी की तरफ से। हाँ, लड़कियाँ मेरे पीछे आती हैं और खूबसूरत भी होती हैं पर क्या ज़िंदगी काटने के लिए ख़ूबसूरती ही ज़रूरी होती है या सुंदर दिल और मेंटल लेवल ? सॉरी डियर मैं पता नहीं कैसे भूल गया कि शादी के लिए बराबर का स्टेट्स भी होना चाहिए। आइ एम वेरी सॉरी ! ओ के चलता हूँ, कहकर क्रिस तो चला गया पर जाते-जाते शुवे के लिए कितने सारे प्रश्नों, उमंगों, ख़यालों तथा सपनों भरी रातें छोड़ गया।

शुवे दिन भर तो ऑफिस के काम में बिज़ी रहती, घर आकर थोड़ा घर का काम करती, खाना खाती, फ़ोन पर माँ और पा के साथ कुछ हल्की-फुल्की बातें करके अपने बेडरूम में आती तो क्रिस का चेहरा सामने आ जाता। गोरी गुलाबी रंगत, नीली आँखें, हल्के भूरे बाल और पाँच फुट दस इंच कद वाली गठी हुई बॉडी। कोई भी जवान लड़की उसे देख कर उस पर लट्टू हो सकती है, पर वह तो अब जवान नहीं रही, वह खुद ब खुद मुस्कुराने लगी। चाइना में तीस से ऊपर कुँवारी लड़की जवान नहीं कहलाती, हाँ चालीस की मैरिड यंग मॉम हो सकती है। पर क्रिस के देश में बत्तीस साल की लड़की शादी के लायक मानी जाती है, शायद इसीलिए उसे उसकी उम्र से एतराज़ नहीं। चाहे वह खुद बत्तीस-चौतीस का है, पर, जो बात उसे सबसे ज़्यादा खल रही है, वो यह कि उसकी अच्छी सैलरी के साथ-साथ

अनीता शर्मा शंघाई (चीन) में विभोम-स्वर की प्रतिनिधि, पत्रकार एवं स्वतंत्र लेखक हैं। चीन में हिन्दी के प्रचार-प्रसार में महत्त्वपूर्ण योगदान है। नूरपुर, पंजाब में जन्मी, अनीता शर्मा ने गुरुनानक देव यूनिवर्सिटी से बी.ए.एम.एस.किया, कास्मेटोलोजी में पी. जी. डिप्लोमा तथा शंघाई मैरीटाइम यूनिवर्सिटी से चाइनीज़ लैंग्वेज कोर्स। विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में कहानियाँ, लेख प्रकाशित।
सम्पर्क:
इमेल: anitasmexico@hotmail.com
फ़ोन न. : 86-15821770829

उसका खुद का वज़न भी अच्छा खासा है। क्या क्रिस वाकई उससे शादी करना चाहता है ?

वीकेंड पर माँ के घर आई तो भी वह अपनेआप में खोई सी रही, माँ-पा से थोड़ी सी बात की और अंदर आ गई। मन में कुछ उमड़-घुमड़ सी चल रही थी, क्या क्रिस भी पहले लड़कों की तरह उसके स्टेट्स से जुड़ना चाहता है ? जितना वह इस बारे में सोचती नतीजा एक ही निकलता, वह कुछ नहीं जानना चाहती बस उससे शादी करना चाहती है।उसे पता ही नहीं चला माँ कब उसके पास आ कर बैठ गई। माँ ने उसके हाथ को हल्का सा दबाया तो वह चौंक गई। माँ मुस्कुराने लगी तो उसकी आँखों ने माँ पर प्रश्न उछाल दिया।

'अब तुम मुझे मत बनाओ शुवे जैसे मुझे कुछ समझ ही नहीं आ रहा !' कहकर माँ धीरे से हँसने लगी तो शुवे भी बच्चे की तरह ठुनक उठी, उठके माँ के कंधे से चिपक गई, शायद ऐसा मौका पिछले आठ दस सालों में कभी नहीं आया; जब वह फिर से छोटी बच्ची बन गई हो। माँ भी कैसे बावली सी होके पा को पुकारने लग गई। उसके प्यारे पा भी सुन कर ऐसे नाचने लगे जैसे कोई छुपा हुआ खज़ाना हाथ लग गया हो।

वो पा की सगी बेटी न सही पर पिछले 12 साल से जब से उसकी माँ ने शादी की, पा ने उसे इतना प्यार किया जितना वह कभी सोच भी न पाई थी। वह उस पर ऐसे भर-भर के प्यार उड़ेलते, कभी-कभी वह रो पड़ती थी। पा भी शायद प्यार देने के लिए तरसते रहे होंगे सालों तक। उसे ऐसे लगता जैसे कोई माँ खाने का कटोरा लेकर खिलाने के लिए अपने बच्चे को ढूँढती रही हो और जब वह बच्चा मिला तो खिला-खिला कर निहाल हुई जा रही हो, बस बिल्कुल ऐसा ही हाल था पा का।

शादी से पहले माँ डरती थी कि कहीं शादी के बाद वो शुवे से सौतेले बाप सा व्यवहार करें तो ? ऐसा न हो पति का साथ मिल जाए पर बेटी को सहना पड़े। तब शुवे ही माँ को समझाती थी, 'माँ मैं उन्नीस की हो चुकी हूँ अब किसकी हिम्मत है मुझे तंग करने की ? फिर मैं तुम्हारे साथ रहती ही कितना हूँ महीने में कभी एक या दो बार घर आ पाती हूँ। दो साल से ऐसा ही चल रहा है और तुम्हारी शक्ल कैसी हो गई है देखा है कभी ?'

वह माँ को मानाने के लिए कहती- 'मेरा लाओपान (बॉस) अच्छा आदमी है। यह मैं नहीं वांग आई (आंटी) कहती हैं, वो उसे दस साल से जानती हैं।' कैसे-कैसे ज़ोर लगाना पड़ा था उसे। उसने माँ को शादी के लिए मना तो लिया था पर अंदर से वो भी डरती थी कि अगर माँ का दूसरा पति भी उसके पापा जैसा निकला तो उनकी ज़िंदगी फिर से नरक न बन जाए।

क्या नहीं सहा है उसकी माँ ने। वह आठ साल की ही थी जब उसके पापा उन्हें छोड़ गए थे।उनके ज़ुल्म उसे याद हैं। रोज़ माँ को मार पड़ती थी, वो डर के मारे बाथरूम में छुप जाती थी। वन बेडरूम सेट था, कोई जगह नहीं होती थी छुपने के लिए। कितनी बार माँ की चीखें सुन के उसका पेशाब निकल जाता था। कई बार तो रो-रो कर उल्टी आ जाती थी। पापा उसे प्यार करते तो वह न तो खुश हो पाती, ना ही उनसे कह पाती कि उसे उनका प्यार करना बिल्कुल पसंद नहीं। जिस दिन से पापा माँ को छोड़ के गए, वह माँ की दोस्त बन गई थी। छोटी सी उम्र में काफी बड़ा समझने लगी थी खुद को।बस एक खालीपन सा अखरता रहा हमेशा।खालीपन को दूर करने के लिए वह दबा-दबा के पेट भरती। कहाँ जानती थी पगली कि पेट भरने से खालीपन नहीं भरता। खालीपन की बजाए उसका शरीर जरूर भरता गया। माँ कितना टोकती उसे, ''कम खाया कर अब बड़ी हो गई है। ऐसे मोटापे को देख कोई लड़का उसका बॉय फ्रेंड नहीं बनेगा।''

पर वह माँ को कैसे समझाती कि वह तो इसी तरह से अपना खालीपन भरती आई है।

जैसे-जैसे वह बड़ी होती गई, माँ की चिंता दोगुनी-तिगुनी बढ़ती गई। पन्द्रह सोलह साल की होते ही माँ पूछने लग गई, ''हुई किसी लड़के से दोस्ती ?'' पहले-पहले उसे सुनके अच्छा लगता था पर कोई लड़का उसे इस नज़र से देखता तक नहीं था।

पढ़ने में होशियार होने के कारण लड़के-लड़कियाँ उससे दोस्ती ज़रूर रखते पर वैसी दोस्ती किसी लड़के से न हो पाई।

वो उम्र ऐसी थी सभी लड़कियाँ अपनी-अपनी कथा लेकर बैठ जातीं, आपस में कई तरह के किस्से शेयर करतीं, वह सबका मुँह तकती रहती। एक दो बार लड़कियों ने जानते हुए भी उससे पूछा था, कोई तो होगा ? उसके मना करने पर भी मुँह बना- बना के पूछतीं, अरे ऐसा कैसे हो सकता है किसी टीनएजर का कोई बॉय फ्रेंड ना हो ? तुम झूठ बोल रही हो, वरना लड़के तो लड़कियों के पीछे-पीछे भागते हैं। धीरे-धीरे उसने लड़कियों से दूरी बना ली ओर सारा ध्यान पढ़ने में लगा दिया था।

एक ही पक्की सहेली थी उसकी, ली; जिसके साथ वो हर बात कर सकती थी और जिसकी हर बात सुनती थी। ली भी शुवे पे जान छिड़कती।

ली ओर शुवे दोनों ही पढ़ने में होशियार थीं। शुवे हमेशा अव्वल आती थी, इसके कारण ज़रूर उसका सिर गर्व से ऊँचा रहता। ली को कभी भी उसके अव्वल आने पे जलन नहीं होती, उसे पता था उसकी सहेली के पास खुश रहने के लिए माँ के इलावा सिर्फ उसके कीर्तिमान हैं। ली के लिए तो उसके अमीर और प्यार करने वाले माँ-पापा ईये ईये नाय नाय(दादा-दादी) बंगला, गाड़ी और बॉय फ्रेंड सब हैं। ली तो अपनी शुवे के अव्वल आने पे उससे भी ज़्यादा खुश होती।जब शुवे को कॉलेज में स्कॉलरशिप मिली तो ली ने सारी क्लॉस को पार्टी दी थी। शुवे के मना करने पे भी वो नहीं मानी थी। वो चिड़ाना चाहती थी उन सभी को जो उसकी प्यारी सहेली को तंज कसते थे उसे उसकी फिगर के कारण नीचा दिखाते थे।

शुवे तो खामोश रही पर ली बताना चाहती थी उन सब ज़ुल्मी बालाओं को कि देखो सफलता फिगर से नहीं दिमाग, मेहनत ओर लगन से मिलती है और हुआ भी वही सभी लड़कियाँ पार्टी में शुवे से नज़रें चुराती नज़र आईं। यह देखकर ली को लगा जैसे उसने अपनी मित्र के सारे ज़ुल्मों का बदला ले लिया हो।

कॉलेज जाने के बाद शुवे माँ के पीछे पड़ गई थी शादी के लिए और वह माँ की शादी करवा के ही मानी थी।

उस पर भी उसे और माँ को कितना सहना पड़ा था। लोगों ने माँ से क्या-क्या

नहीं कहा, ''अरे मिस हान बहुत अच्छा किया यह तो आपने, पर शादी की खबर सुन के हमें लगा शायद कोई गल्ती हुई सुनने में, शुवे की शादी होगी। शादी की उम्र तो उसकी है ना। अभी तो आपको शुवे के लिए लड़का देखने का सोचना चाहिए था पर आपने तो अपनी शादी करवा के हमें हैरान कर दिया, नहीं ?''

''मिस हान आपको इस उम्र में शादी करके थोड़ा अजीब तो लगा होगा, क्या नहीं ? और वो भी काफी बड़ी उम्र के आदमी के साथ, है ना ? माँ पा से सात साल छोटी थी पर सब ऐसे जता रहे थे जैसे उसने बाप की उम्र वाले आदमी के साथ शादी की हो।

रिश्तेदार भी इसे गुस्ताखी मान रहे थे, ''अब क्या पड़ी थी यह सब करने की ? दो चार साल में तो नानी बन जाती तुम, क्या फिर से माँ बनेंगी ?''

शुवे ने ही चिढ़के कहा था, ''माँ अब बिल्कुल अकेली रह गई थी इसीलिए मैंने ही माँ को किसी तरह से मनाया।'' मेरे सु शर (हॉस्टेल) रहने के बाद माँ कितनी कमज़ोर हो गई है। फिर आप सब और सारे पड़ोसी तो बहुत व्यस्त हैं, आपको तो कह नहीं सकती थी माँ का ख़याल रखने के लिए।'' सुनकर सब थोड़ा चुप से हो गए पर आपस में कानाफूसी बंद नहीं हुई।

शादी के बाद माँ कैसे खिल आई थी। पहली बार एक महीने बाद जब वह घर गई तो माँ को देखकर लगा जादू सा कर दिया था पा ने उस पर। शुवे तो माँ को देखकर झूम उठी थी। भाड़ में जाए सब दुनिया उसे अपनी माँ खुश दिखनी चाहिए, बस इसी तरह रहे।

क्या पा ऐसे ही रहेंगे ? यह खुमार कुछ दिन का तो नहीं ? वह बदल तो नहीं जाएँगे ? पता नहीं उनका पहला तलाक किस वजह से हुआ था पर फिर उसने स्वयं ही सिर झटक दिया। अरे नहीं वांग आई पा के साथ दस साल से काम कर रही हैं। वो बता रही थीं पा बहुत अच्छे इंसान हैं।

पहली बार में ही पा ने उसका भी दिल जीत लिया था। उसे विश्वास ही नहीं हो रहा था माँ का दूसरा पति इतना अच्छा पापा हो सकता है।नहीं पापा नहीं सिर्फ 'पा'।'पापा' नाम से ही उसका मन चिढ़ सा जाता है।

उसके बाद के सात साल तो जैसे हँसते गाते पंख लगा कर उड़ गए। पर समय कभी एक जैसा नहीं रहता तभी तो सब बड़े कहते हैं कि अगर आपका समय खराब हो तो आपको खुश होना चाहिए। आगे आने वाला समय अच्छा होगा और अच्छा समय हो तो ज़्यादा खुश न हों; क्योंकि आने वाला समय करवट लेगा।वही हुआ माँ-पा की खुशिओं को धीरे-धीरे ग्रहण लगने लगा था, वह भी उसी के कारण।

एम बी ए करके वह बढ़िया जॉब करने लगी तो माँ का आख़िरी सपना फन उठाने लगा, अब शुवे की शादी हो जानी चाहिए। फिर क्या था माँ उसके पीछे लग जाती, यह नहीं, यह खा इससे वज़न घटता है। पा के बनाए फ्राईड डंपलिंग शुवे की कमज़ोरी थी पर माँ उसे खाने न देती। नहीं इससे तो मोटापा बहुत बड़ता है। कभी कोई सलाह दे जाता स्विमिंग से मोटापा जल्दी घटता है तो माँ उसके कान में कहना शुरू कर देती, कॉलेज के बाद उसे स्विमिंग करने जरूर जाना चाहिए। एक बार तो वो इतना खीझ पड़ी थी कि पार्टी छोड़ वापिस ही आ गई थी जब माँ की फ्रेंड ने उसे केक का दूसरा पीस उठाते देख उससे वज़न बढ़ने के कारण न खाने की सलाह दी और साथ में माँ को शुवे के खाने पर लगाम लगाने की भी सलाह दे डाली। पर जो बात उसे चुभी थी वो यह कि यह बात माँ से कही गई पर पार्टी में सबको सुनाई गई।

धीरे-धीरे शुवे के न खाने वाली चीज़ों की लिस्ट लम्बी होती गई पर वज़न जस का तस रहा। बिना स्वाद के मुँह और खाली पेट रह कर शुवे थक जाती तो कई बार वह ली के घर अपनी पसंद की डिश बनवा कर भरपेट खाती।

हर शनिवार और इतवार को माँ उसके पीछे पड़ जाती कि वह सजधज के क्लब में जाए या अपने किसी कुँवारे सहयोगी को घर बुलाए। शुवे सब समझती थी यह सब इसीलिए था ताकि कोई उसके व्यवहार के कारण उससे दोस्ती कर ले और फिर दोस्ती प्यार में बदल जाए।

माँ को कौन समझाए कि इस तरह के चोंचले पहले चल जाते थे, अब सब सयाने हो चुके हैं। किसी लड़के को घर आने का न्योता देना यानि मुफ्त में ऑफिस में मज़ाक का पात्र बनना। सभी को पता है वह सिंगल है।हाँ अगर उसका कोई बॉय फ्रेंड होता तो बात और थी।

इसी तरह तीन साल बीत गए। अब माँ को भरोसा देने वाले पा के चेहरे पर भी चिंता की लकीरें दिखने लगीं। वो चाहे हँस-हँस कर जितना मर्ज़ी छुपाने की कोशिश करते पर वो क्या बच्ची है।धीरे-धीरे घर की खुशिओं के आगे गहराते बादल और बड़े होते जा रहे थे। चाहे इतने सालों में वह कम्पनी की मैनेजर बन चुकी थी, कम्पनी की तरफ से बढ़िया पॉश एरिया में तीन बेडरूम वाला फ्लैट ओर बड़ी गाड़ी उसे मिल गई थी।

एक तरह से कहा जाए तो उसे ज़िंदगी से कुछ खास गिला भी नहीं था, ना ही उसे इस तरह की कमी लगती जिसे पूरा करने के लिए वो मरी जा रही थी, पर माँ और पा का क्या करे! इसी चक्कर में दो लड़कों से धोखा खा चुकी थी और वह उन्हें बुरे सपने की तरह भूल भी चुकी थी; क्योंकि उनके साथ रिश्ते में प्यार नहीं बल्कि ज़रूरत थी रिश्ता बनाने की वो भी समाज के वास्ते।

उसके पास इन सबके लिए वक्त भी कहाँ था। पूरा सप्ताह ऑफिस से थककर घर आ कर थोड़ा आराम चाहिए होता, सो वह रिलैक्स करती, टी वी देखती या अपनी मनपसन्द किताब पढ़ते-पढ़ते सो जाती। वीकएंड में माँ के घर चली जाती या वो उसके फ्लैट पर आ जाते। तीनों इक्कट्ठे होकर समय का भरपूर आनन्द उठाते।

पर धीरे-धीरे सब बेमानी सा होता गया। जब भी सब इक्कट्ठे होते बातों-बातों में शादी की बात निकल आती और फिर वहीं अटके रह जाते।अब तो वीकएंड में भी उनकी अच्छे से बात नहीं हो पाती। शनिवार को माँ-पा के दोस्त या रिश्तेदार आए रहते। वे दोनों उनकी ख़ातिरदारी में लगे रहते। उन्हें लगता वे शायद शुवे के लिए कोई अच्छा लड़का बता देंगे। वे सब भी यही जता कर आ धमकते, पा उनके लिए कुछ खास बनाने में जुट जाते ओर माँ तरह-तरह की चिअउ (शराब) परोसने में लगी रहती।रिश्तेदार माल उड़ाते रहते, बीच-बीच में वो शुवे के मोटापे के कारण उसे नान फंगिओ(बॉय फ्रेंड) ना मिलने का अफ़सोस

जताते रहते। वह खीझ उठती थी, गाड़ी उठाती ओर सीधे पहुँच जाती ली के घर।

ली उसे समझाती कि यह दौर भी निकल ही जाएगा।

चार महीने में क्रिस से वो रोज़ जिम में मिलती थी दोनों में बातें भी होती थी पर उसे ऐसा कुछ महसूस नहीं हुआ। पता नहीं उसे क्रिस की आँखों में वो नहीं दिखा या उसकी महसूसने वाली नसें ही सूख चुकी हैं।

जब अचानक ही क्रिस ने उसे रिंग का नाप पूछा तो उसकी आँखों में शर्म की बजाए हैरानी उतर आई थी। वह समझ नहीं पाई उससे कोई ऐसा क्यों पूछने लगा। पर उसके बाद शुवे की कल्पनाओं को पर ज़रूर लग गए थे। क्रिस पुराने दो लड़कों जैसा आम तो नहीं था, वो तो स्पेशल था। एक तो लाओ वाए (विदेशी) वो भी अमेरिकन था।

धीरे-धीरे वह क्रिस की तरफ खिंचने लगी थी उसकी बातों में दिलचस्पी लेने लगी थी। दिलचस्पी कब बेताबी में बदल गई थी, वह जान ही नहीं पाई। पर क्रिस वैसा ही था पहले की तरह मस्तमौला।

उसका जीने का अपना ही ढंग था। जैसे वो उसके साथ हर पल रहना चाहती थी लेकिन क्रिस में ऐसी कोई बेताबी नहीं थी। वो वीकएंड पर कभी फ़ोन करके उसे बताता वह दोस्तों संग माउंटेन क्लामिंग के लिए जा रहा है, कभी कहता आज मियूज़िकल फेस्टिवल के लिए जा रहा है। शुवे मन मसोस कर रह जाती।

एक दिन जब मंडे को क्रिस उसे जिम में मिला तो उसने हिम्मत करके क्रिस को कह ही दिया कि वो यह वीकएंड उसके साथ बिताना चाहती है। वीकडेज़ में सिर्फ जिम में मिलते हैं कोई खास बात भी नहीं कर सकते। तो क्रिस अपने अंदाज़ में हौले से मुस्कराया और कहने लगा, ''डिअर मेरे शंघाई में कुछ खास दोस्त हैं उन सबके साथ मेरा वीकएंड का प्रोग्राम तो कैंसिल नहीं हो सकता। ओ के ! मैं फिर भी कुछ सोचूँगा।''

दूसरे ही दिन रात को आठ बजे क्रिस अपना तामझाम लेके शुवे के फ्लैट पर पहुँच गया। शुवे तो एकदम हैरान ! उसे खुश होना चाहिए या नाराज़ ? वो क्या कहे मुँह से सिर्फ इतना ही निकला, 'क्रिस तुम ? '

'अरे हाँ, तुमने साथ में समय बिताने की बात कही थी तो मुझे लगा यह अच्छा रहेगा। हर रात हम मिल कर बैठेंगे और बातें करेंगे और वीकएंड दोस्तों के लिए।' कहकर क्रिस ने गहरी मुस्कुराहट से शुवे की तरफ देखा तो शुवे ने धीरे से सिर हिला कर हामी भर दी। क्रिस बिना समय गँवाए अपना सामान शुवे के साथ वाले बेडरूम में रखने चला गया।

शुवे को क्या हो रहा था कभी हल्का सा डर लग रहा था माँ-पा क्या कहेंगे, उन्हें तो कुछ बताया नहीं, बताने का समय कहाँ दिया क्रिस ने। कभी हल्का सा खौफ किसी अन्जान विदेशी के साथ में रहने का, कभी अपनी चाहत के इतना करीब रहने का सोच के हल्का- हल्का नशा।

शुक्रवार तक तो उसने माँ से इस बारे में कुछ नहीं कहा, शुक्रवार रात को माँ से बात की तो उसकी आवाज़ की चहक से ही माँ अंदर तक भीग गई।

'अरे उसके साथ रहने चली जाओ।'

'माँ वो बात नहीं ..... असल में क्रिस मेरे साथ यहाँ रहना चाहता है।'

' अरे तो इसमें क्या बात है ? मतलब तो साथ रहने से है न ?'

' हाँ माँ। वो यहाँ आ गया है।'

थोड़ी चुप्पी के बाद माँ हँसी थी, ''वाह यह तो बहुत अच्छा है, हम अभी आते हैं उससे मिलने।''

'नहीं माँ अभी इतनी रात को नहीं।

'ठीक है तो कल आते हैं।'

'रुको माँ, कल उसे दोस्तों के साथ कहीं बाहर जाना है।

'आ ... कितने बजे ?'

'यही कोई नौ दस बजे निकलेगा।'

'हाओ (गुड), हम तो पहले ही आ जाएँगे, ठीक है ?

'ओ. के. '

थकी हुई शुवे सोने चली गई। सुबह सात बजे माँ-पा दोनों ही नीली आँखों और भूरे बालों वाले लम्बे तगड़े विदेशी को देखने के लिए उतावले हुए शुवे के दरवाज़े पर खड़े थे। डोरबेल बजा कर दोनों ही अजीब से धड़कते दिल के साथ इंतजार कर रहे थे कि अचानक ही लम्बी चौड़ी देव तुल्य आकृति उनके सामने आकर खड़ी हो गई।

'यस ?'

वो दोनों घबरा से गए जैसे किसी अजनबी के घर में आ गए हों। शुवे ने बता दिया था कि वो टूटी-फूटी चीनी भाषा बोल लेता है फिर भी उन्हें समझ नहीं आ रहा था वो उससे क्या कहें। झिझकते हुए माँ इतना ही कह पाई, ''शुवे है ?''

'यस ..... आप ?'

'माँ.....

'ओ माँ। तो आप ज़रूर पा होंगे।'

दोनों के सीने से जैसे मनों भार उतर गया।

वे दोनों उसके साथ अंदर आ गए पर पहले जैसे नहीं, कुछ परायापन लिए हुए।

वो खथिंग (ड्राईंग रूम) में बैठ गए, क्रिस उन्हें बैठा कर, अगर कुछ चाहिए तो वे अपने आप ले सकते हैं कह के अंदर कमरे में गायब हो गया।

थोड़ी देर बाद शुवे बाहर आई तो पूछने लगी इतनी सुबह क्यों आ गए ? फिर खुद ही चहकती हुई बोली, ''मुझे पता है, आप तो पाँच बजे ही पहुँच जाते, मैं देर तक सोती रहूँ इसीलिए देर से आए।

बातों-बातों में आठ कब बज गए पता ही नहीं चला, तभी क्रिस अपना बड़ा सा बैग लेकर बाहर निकला और ओके, आज कुछ जल्दी है फिर मिलते हैं कभी, बैठकर बातें करेंगे।

क्रिस तुम्हें नौ बजे जाना था ना।

ओ बेबी..... सॉरी, प्रोग्राम चेंज हो गया, तुमने भी कहाँ बताया कि यह लोग आएँगे।कहकर क्रिस यह गया और वो गया, वे तीनों देखते रह गए।

पर माँ-पा को बेटी की पसंद पर नाज़ था।

क्या बड़िया लड़का चुना है ! सबके मुँह बंद हो जाएँगे।

अगले हफ्ते भी क्रिस शुक्रवार शाम को ही निकल गया। माँ पा आए, उससे मिल नहीं पाए पर ज़्यादा बातें क्रिस के बारे में ही होती रहीं।

उससे अगले हफ्ते वो उनसे मिला, अच्छे से बात करता रहा। बातों-बातों में माँ ने उससे पूछ ही लिया, ''क्रिस तुम शुवे के हम उम्र ही लगते हो, तुमने भी शुवे की तरह अब तक शादी क्यों नहीं की ?''

क्रिस बिना किसी झिझक के बोला,

''नहीं, मैं बिआलिस साल का हूँ और मेरी एक शादी हो चुकी है। मेरा मतलब मैं कुँवारा नहीं, पर सिंगल हूँ।''

शुवे को काटो तो खून नहीं।

'क्रिस तुमने कभी बताया नहीं।'

'तुमने कभी पूछा नहीं डार्लिंग।'

'पर तुमने बिना कुछ बताए कैसे मुझसे शादी का प्रस्ताव रखा ?'

क्रिस अपने चिर परिचित अंदाज़ में मुस्कुराया और बोला, ''अब मैं सिंगल हूँ, छह साल पहले डाईवोर्स हो चुका है मेरा।''

आ ..... आ.....

माँ-पा ने राहत की साँस ली, पर शुवे के मन में काँटा सा गढ़ गया जैसे। इतनी बातें करते हैं आपस में फिर यह बात क्यों नहीं बताई ?

माँ ने समझाया कि कई बार ऐसी बात बताने के लिए कुछ खास माहौल चाहिए होता है, साथ ही बात उलझ के बिगड़ने का डर भी माँ के चेहरे पर उतर आया।

शुवे चुप हो गई। उसने ली से बात करना ठीक समझा, पर ली भी पैरिस में जा कर ऐसी रमी कि अब आई, अब आई करते-करते चार पाँच महीने निकल गए। सिर्फ फ़ोन पर ही बताया था उसे क्रिस के बारे में और उसके साथ रहने के बारे में।

उसके बाद सब ठीक ही चल रहा था। वह क्रिस के साथ मज़े में थी और रिलैक्सड भी, अब रिश्तेदारों, फ्रेंडज़ और ऑफिस में क्लीग्ज़ की तंज़ भरी नज़रों का सामना भी नहीं करना पड़ता। बल्कि अब उसके साथ क्रिस को देखकर कइयों की नज़रों में ईर्ष्या ज़रूर झलक जाती है, पर उससे शुवे को कोई गिला नहीं। उसे बस अपनी पूर्णता का एहसास शान्ति देता। जबसे क्रिस उसके बेडरूम में शिफ्ट हुआ है, वे दोनों और करीब हो गए हैं। रातें चाँदनी की फुहार वाली हो गईं तो दोपहरी सहलाने लगी थी।पर कहीं- कहीं कुछ अखर सा जाता।

माँ-पा क्रिस से मिलने की चाह में दो चार बार आए, लेकिन क्रिस बिना बहाना किए सीधे उनसे यह कहके निकल जाता कि अभी वह फ्रेंडज़ के साथ एन्जॉय करने जा रहा है। माँ-पा को भी बुरा नहीं लगा शायद, क्योंकि उनके चेहरे पर शिकन तक नहीं देखी उसने।

पर पता नहीं क्यों शुवे को यह बात खल गई और वह कई दिन तक क्रिस के साथ नॉर्मली बात कर ही नहीं पाई। क्रिस ने उसे ऐसे ही नहीं छोड़ दिया वह अपनी तरफ से उसे मनाने की पूरी कोशिश करता रहा और उसे मना कर ही दम लिया। यही उसकी खासियत थी, जिसके कारण शुवे उसकी बाकि नापसंद कमियों को दरकिनार कर देती थी, मसलन क्रिस बहुत मुँहफट था, किसी को कोई बात बुरी लगे इससे उसे कोई मतलब ही नहीं होता था, पिछली बार जब उसने माँ-पा को इस तरह बैठा छोड़ कर जाने की बात की तो उसने साफ-साफ कह दिया कि उसे उनका इस तरह से आ धमकना नहीं जमा इसीलिए वो नौ की बजाए आठ बजे ही निकल गया। यह सुनकर तो शुवे को और भी बुरा लगा बल्कि थोड़ा गुस्सा आया कि वो जानबूझ कर अवॉयड करके गया था। पर उसने अपनी चिर परिचित मुस्कान फैंकते हुए जुमला छोड़ दिया। आप चाईनीज़ लोग ना बड़े ही क्यूट होते हो, माँ-बाप जो भी करें आपको कभी गल्ती से भी एहसास नहीं होता कि उन्हें भी समझना चाहिए कि वो अपनी मैच्योर औलाद को इस तरह से कैंडी बना के हर वक्त मुँह में न रखें, उन्हें अपनी ज़िंदगी जीने दें। अरे डिअर उन्हें हर बार यहाँ आने की क्या ज़रूरत है ? उन्हें नहीं लगता हमें एन्जवाय करने के लिए भी समय मिलना चाहिए ?

'तुम तो हर सप्ताहाँत पर निकल ही जाते हो फिर वो मुझ अकेली को कम्पनी देने ही आते हैं।'

'नहीं डिअर वो महीने का हिसाब देखने भी तो आते हैं न ? '

शुवे को लगा कहीं फिर से हिस्ट्री ना दोहरा दी जाए। चार दिन की चाँदनी यहीं खत्म न हो जाए।

उसने माँ को हौले से इशारा कर दिया, वो समझ गई थी फिर माँ-पा का उसके घर आना काफी कम हो गया। जब वह फ्री होती तो खुद जाके उनसे मिल आती।

दिन ठीक-ठाक निकल रहे थे। दोनों संतुष्ट थे शुवे एक खास विदेशी साथी पाकर और क्रिस बिना खर्चा किए सारी सुविधाओं के सुख भोगकर। दोनों खुश थे, अभी किसी ने भी शादी की बात नहीं उठाई थी। शायद दोनों के मन में हो कि सुखों की बहती धारा को मोड़ देने की क्या ज़रूरत है।

ली आई तो अपनी प्यारी सहेली का बसता संसार देखकर खुश हो गई। उसकी बातों का पिटारा ख़त्म होने पर शुवे ने अपनी भावनाओं और छुट-पुट परेशानियों का ज़िक्र छेड़ दिया।

बस फिर क्या था, ली ने प्रश्नों की झड़ी लगा दी शुवे के सामने।

'क्रिस तुम्हारे कहने पर तुम्हारे यहाँ शिफ्ट हुआ या बिन बुलाए मेहमान की तरह ?'

'इससे क्या फर्क पड़ता है ली ! हम दोनों इक्कट्ठे खुश हैं।'

'बिल्कुल पड़ता है।और वह महीने का खर्चा कितना देता है ?'

'खर्चा होता ही कितना है, यहाँ पैसे की कमी है क्या ?'

'ए..... वई ..... तुम्हारी गाड़ी भी इस्तेमाल करता है क्या ?'

'वो तो मैंने ही उसे कहा है, ली। मैं तो सारा दिन ऑफिस में रहती हूँ, मैं गाड़ी का सारे दिन में क्या करूँगी ?'

कई काँटे गड़ गए ली के मन में।

'रुको सहेली, तुम्हारे सुख का ही तो ख़याल है मुझे, इसीलिए यह सब पूछ रही हूँ।'

'ली, माँ-पा हमारी शादी का भी सोच चुके हैं। सभी जानने वालों को क्रिस के बारे में बता भी दिया है।मज़े की बात यह है कि किसी ने भी क्रिस की उम्र, जॉब या सैलरी के बारे में नहीं पूछा। सबके लिए इतना ही काफी है कि क्रिस अमेरिकन है।'

ली ने ज़ोर से ठहाका मारा, 'यह अच्छी कही वरना देशी लड़के के बारे में तो सब हज़ार बातें पूछते हैं-

'लड़का क्या करता है ?'

'पढ़ाई कहाँ तक की ?'

'कमाता कितना है ?'

'अपना घर और गाड़ी कौन सी ..... कौन सी स्टेट .....यह कैसा ..... वो कैसा।'

तभी क्रिस आया तो चहका, 'हाय ली ! कब आई पैरिस से ?'

'हेलो, तुम्हें कैसे पता ?'

'कल शुवे ने बताया था तुम आ रही हो।' कहते-कहते वह बैठ गया।सबसे

पहले इसने तुम्हारी फ़ोटो ही दिखाई थी मुझे। काफी गहरी दोस्ती है, मुझे तुमको भी इम्प्रेस करना पड़ेगा ! कहते-कहते वो ली के भावों को तोलने लगा।

ली ने नोटिस किया क्रिस बाहर से तीन दिन बाद लौटा है पर उसने शुवे को एक बार भी प्यार से नहीं देखा। उससे बातें करके वह शुवे से मुखातिब हुआ-

'हे डिअर आप दोनों बातें करो, मैं थोड़ा आराम कर लूँ।'

शुवे के चेहरे पर भी वो रंगत न थी, जो ताज़े प्यार में होनी चाहिए। पर शुवे संतुष्ट ज़रूर लग रही थी।

ली चाहे पापा के बड़े बिजनेस में हाथ बंटा रही थी पर पढ़ाई उसने साईंकॉलोजी में की थी। उसे क्रिस से दो चार मुलाकातों के बाद ही उसके बिहेविअर में कुछ खटकने लगा था। और यही उसने शुवे से बयाँ कर दिया।

शुवे को उसकी बातों से कोई मतलब नहीं था, उसे सिर्फ दिखता था माँ-पा कितने खुश हैं सो वो भी खुश है।

क्रिस अपने ढंग से ज़िंदगी जीता है, पर उसे तो कुछ नहीं कहता।

ली फिर दलील देती, ''शुवे वो हफ्ते में चार-चार दिन भी गायब हो जाता है तुम्हें छोड़ कर, और बिना पूछे तुम्हारे पर्स में से पैसे ले जाता है।''

''पर वो मुझे बता देता है कि उसने पैसे लिए थे, और अभी हमने शादी नहीं की सो वह मुझे क्यों बताएगा वो कहाँ जा रहा है।''

''शादी नहीं की पर करने वाले हो और साथ में रहते हो तो उसे बताना चाहिए।''

''पर उनका कल्चर हमसे अलग है, ली, और न ही क्रिस ने मुझे खाने से रोका या मेरे मोटापे के बारे में कुछ कहा।''

ली चुप हो गई।

''पर तुम्हें पता है कि वो जिम तो रोज़ आता है, फिर है तो इसी शहर में।''

''हाँ पता है, मैंने उसे दो तीन बार पूछ लिया था तो वो उखड़ गया था। कहने लगा यही प्रोब्लम है तुम्हारे देश में, सब रिश्ते में बंधन चाहते हैं।''

एक दिन ली धड़-धड़ करती हुई शुवे के ऑफिस में आ घुसी। उसका मुँह लाल और नाक फूल रही थी। शुवे डिक्टेशन दे रही थी, सो उसे बैठने का इशारा किया, पर ली ने डिक्टेशन लेने वाली लड़की से माफ़ी माँग ज़रूरी बात करने के लिए एकांत चाहा तो वह लड़की बाहर निलक गई। एकांत पाते ही ली फट पड़ी। शुवे क्रिस को मैंने पूरे एक हफ्ते फॉलो किया, वो किसी लड़की के साथ घूमता है ओर तुम्हें उल्लू बना रहा है।

शुवे को जैसे करंट लगा हो।

''ली, तुम होश में तो हो, क्रिस चार दिन से रोज़ घर आ रहा है।''

''हाँ, पर दिन में स्कूल के बाद उस लड़की के साथ ही होता है।''

''ली, वो उसकी कलीग भी तो हो सकती है।''

''पर उनको देख कर मुझे इतना अंदाज़ा तो हो सकता है कि वो उसकी कलीग है या कोई और।''

पहले शुवे सिर पकड़ कर बैठ गई, फिर एकदम सुर बदल कर बोली, ''ली, तुमसे किसने कहा उसकी जासूसी करने को ? तुम्हें उसकी हर बात में खोट नज़र आता है !''

''मैं तुम्हारे साथ ग़लत होते देख चुप नहीं बैठ सकती शुवे, तुममें और मुझमें कोई फर्क है क्या ?''

''या.... तुमसे मेरा विदेशी फ्रेंड के साथ रहना नहीं देखा जाता।'' सुनकर ली जैसे सकते में आ गई। फिर से कहना, मैं ज़रा समझी नहीं, पर यह सुनने से पहले ही शुवे उठ के वाशरूम में जा चुकी थी।

ली को तो जैसे विश्वास ही नहीं हो रहा था कि उसकी प्यारी और इकलौती सहेली उसके बारे में ऐसा भी सोच सकती है। बिना शुवे का इंतज़ार किए वह वापिस चली गई।

शाम को शुवे ने क्रिस से पूछा तो पहले वो अंजान सा बना खड़ा रहा, फिर कहने लगा, 'ओह ली शायद केट की बात कर रही होगी। वो मेरी कज़िन की फ्रेंड है, कुछ दिन के लिएआई है ब्राज़ील से। हे.... बड़ी चिपकू सहेली है तुम्हारी,' कह कर वह हँसने लगा।

'तुमने अपनी सहेली मेरे पीछे क्यों लगा दी ?'

'लगाई नहीं क्रिस, वो भी बिजनेस वूमेन है, घूमती रहती है सो तुम्हें देख लिया।'

'और तुमने मुझ पर शक कर लिया ?' क्रिस की नीली आँखें गहरा सी गई थीं।

'शक नहीं, सिर्फ पूछ रही हूँ।'

'ओ.के.'

क्रिस से बात करके उसे असीम शांती मिली थी, जैसे सपना पानी होते-होते फिर से रंगीन हो गया हो। उस दिन क्रिस से बच्चे की तरह चिपक के सोई थी वह, जैसे उसे सोता छोड़ कर चल ही देगा।

क्रिस भी हँसा था उस पर।

दूसरे दिन शुवे ने उसे बताया था कि माँ-पा शादी के लिए ज़ोर लगा रहे हैं तो क्रिस ने यही कहा था कि वो भी छुट्टियों में पेरेंट्स को बुला लेगा फिर अच्छी सी, बड़ी सी पार्टी करेंगे और अंगेजमेंट कर लेंगे।

शुवे का चेहरा गुलाबी हो उठा ओर आँखों में रंगीन सपनों के डोरे हिलोरें लेने लगे।

ऑफिस में दो तीन क्लीग्ज़ ने कहा था कि वो पहले से काफी चुस्त दुरुस्त और पतली हो गई है।

क्यों न हो, उसने इतनी मेहनत की है जिम में, और डाईट पर भी इतना कंट्रोल रखा है। क्रिस के पेरंट्स को भी तो इम्प्रेस करना है।

और हाँ, अपनी प्यारी ली को भी मनाना है। यह सोचकर उसने फ़ोन उठाया तो क्यू क्यू पे वाँग आई के भेजे विडिओ पे नज़र पड़ी। अभी डाउनलोड हो रहा था। वह मुस्कुरा दी आई भी फ्री बैठे-बैठे अब यह काम करने लग गई।

ली को फ़ोन किया तो ली ने झट से उठा लिया था।

'सॉरी ली ! उस दिन पता नहीं मुझे क्या हो गया था।'

'बस रहने दे, तेरी शादी का पता चला वो भी आई से।'

'अरे अभी कहाँ ! अभी क्रिस ने यही कहा है कि छुट्टियों में उसके पेरंट्स यहाँ आएँगे, तब अंगेजमेंट करेंगे।'

'तो जल्द ही शादी भी कर लेना।'

'हाँ, मेरा भी यही मन है उसके पेरंट्स के यहाँ रहते शादी भी हो जाए।'

'सुन, मैं आज आऊँगी क्रिस से माफ़ी माँगने, और मैंने तुम्हारा भी दिल दुखाया था।'

'नहीं, हम लोगों में कल्चर का फर्क है, इसी से गड़बड़ हो जाती है।'

'ओके चल अब रखती हूँ।'

शुवे ने फ़ोन पे आई की भेजी वीडिओ चला दी। वीडिओ में क्रिस किसी लड़की के साथ पर्ल टी वी टावर के आगे पोज़ बना-बना कर फ़ोटो खिंचवा रहा है, कोई खूबसूरत विदेशी लड़की है। क्रिस कभी उसके गले में बाहें डाल रहा है, कभी उसे उठाकर फ़ोटो खींची जा रही है। कभी दोनों एक दूसरे की आँखों में डूबे लिपटे फ़ोटो खिंचा रहे हैं, फिर क्रिस की आवाज़ आई, वन मोर.....द लास्ट वन, यह कहके क्रिस ने अपने होंठ लड़की के होंठों से जोड़ते हुए पोज़ दिया, और जेब से रिंग निकाल कर उस लड़की की ऊँगली में डाल दी। आस-पास खड़े लोगों ने तली बजाई। वीडिओ खत्म हो गया शुवे को लगा वो भी खत्म हो जाएगी, अभी और यहीं।

उसने टेबल पर रखा पानी गट-गट कर पिया तो उसे होश आया। फटाफट टेबल का लॉकर बंद कर पर्स उठा कर बाहर निकल आई। उसकी शक्ल देखकर किसी के पूछने से पहले ही बोल पड़ी, ''तबीयत ठीक नहीं घर जा रही हूँ। कोई फ़ोन मत करना प्लीज़, मैनेज कर लेना।''

कैसे कार चलाई, कैसे घर पहुँची..... इसकी कोई सुध नहीं।

घर आकर बहुत घुटन महसूस होने लगी सो आकर बालकनी में चेयर में धंस गई।

तब से यहीं बैठी कब रात हुई कुछ खबर नहीं।

चित्त वश में आया तो उसने वीडियो ली को फारवर्ड कर दिया। उसी टाईम ली का फ़ोन आ गया, 'तुम कहाँ हो ?'

'घर, पर.....' शुवे ली से बात न कर पाई, रोने से बात गले में अटक गई।

'ओके, मैं आती हूँ।'

शुवे सोच रही थी, माँ-पा से कैसे कहूँ ? क्या कहूँ ? सब लोग क्या कहेंगे ? सोचते-सोचते वह टायलेट में शीशे के सामने आ खड़ी हुई, उसकी आँखों से बहते आँसुओं के कारण उसे अपना अक्स दिख नहीं रहा था। उसने आँखें पोंछी और फिर से अपने आप को शीशे में देखने लगी, देखा और देर तक देखती रही..... उसने देखा, जो शुवे उसे नज़र आ रही है वह अच्छी खासी सुलझी हुई, मुसीबतों में पली-बड़ी, उनसे से लड़ने वाली मज़बूत लड़की है। उसने हाथों से खुद को छुआ, क्या वह इधर भी है या सिर्फ शीशे में ही है ? वह वही है, बिल्कुल वैसी ही पूरी की पूरी, कहीं से अधूरी नहीं।

उसने मुँह धोया और किचन में आ गई। फ्रिज खोला, जो कुछ था बारी-बारी सब खाने लगी।

डोरबेल बजा रही ली का दिल किसी आशंका से ज़ोरों से धड़क रहा था। दरवाज़ा खुला तो शुवे सामने खड़ी थी, उसे देख ली को कुछ राहत मिली।

ली ने देखा शुवे की आँखों में आँसू सूख चुके थे,उसकी आँखें खाली-खाली सी थीं, मुँह नूडल से भरा हुआ था।

उसका मन किया कि शुवे को डाँट दे कि अब वह बड़ी हो गई है, उसे समझनाचाहिए कि परेशानियाँ मुँह या पेट भरने से कम नहीं होती, लेकिन उसने चुपचाप शुवे का हाथ अपने हाथों लिया और उसे खींच अपने साथ सोफे पर बिठा लिया, वह धीरे से शुवे का हाथ सहलाने लगी।

शुवे बैठे-बैठे मुँह चलाती रही, मुँह खाली हुआ तो शुवे ने ली से कहा, 'चलो क्रिस का सामान इक्कट्ठा करवाओ। उसका सारा सामान बाँध कर बाहर दरवाज़े के सामने रख दो।'

'शुवे, इस तरह से बिना कोई बात किए.....'

शुवे ने बीच में ही बात काट दी, 'ली, जिस तरह से वह बिना पूछे, बिन बताए अपना सामान उठाकर खुद ही घुस आया था, उसी तरह हम भी बिना कुछ बताए उसका सारा सामान अगर बाहर रख देंगे तो इसमें बुराई क्या है?' ली ने आज्ञाकारी बच्चे की तरह सिर हिला दिया।

ली अंदर बेडरूम की तरफ बढ़ गई, किंतु फिर रुकी, पूछने लगी, 'माँ और पा को बताया?'

माँ-पा से कल निबटेंगे, मल्टीनेशनल कम्पनी में मैनेजर हूँ, अब इतना तो मैनेज कर ही सकती हूँ, यह कहते हुए शुवे की हल्की मुस्कान और आँखों में स्वाभिमान की चमक ली को अंदर तक ख़ुशी से सरोबार कर गई।

***

लघु कथा

लड्डु

मुरारी गुप्ता

अस्पताल के गलियारे में बिस्तरों पर पड़े कैन्सर के मरीज़ों में खुशी का माहौल था। एक बुज़ुर्ग कैंसर के मरीज़ का परिजन एक बड़े डिब्बे में से सभी को लड्डू बाँट रहा था। एक बुज़ुर्ग मरीज़ ने पूछा, क्या तुम्हारे पिताजी को अस्पताल से छुट्टी मिल गई बेटा?

मरीज़ के परिजन ने डिब्बे में से एक और लड्डु उस बुज़ुर्ग को देते हुए मुस्कुराते हुए कहा, नहीं अंकल, शायद कल से पिताजी का ईलाज शुरू हो जाए। डॉक्टर साब ने सबके लिए ये मिठाई भिजवाई है। कह रहे थे कल रात सरकार से उनकी बात हो गई है। सब डॉक्टर लौट आए हैं। डॉक्टर साब कह रहे थे, जो मर गए उन्हें छोड़ो, लेकिन अब किसी भी मरीज़ को मरने नहीं दिया जाएगा।

जीवन के आख़िरी पड़ाव में जीवन की उम्मीद में पड़े कैंसर के मरीज़ों का चेहरा खिल उठा।

***

संपर्क: ई-37 ए, शंकर विहार, एयरपोर्ट के सामने, मालवीय नगर, जयपुर-302017
ईमेल: murliyyou@gmail.com
मोबाइल: 9414061219

एक अरसे के बाद

अमरेन्द्र कुमार

अमेरिका निवासी अमरेन्द्र कुमार के चूड़ीवाला और अन्य कहानियाँ, गाँधी जी खड़े बाज़ार में (कहानी संग्रह), अनुगूँज (कविता संग्रह), मेरे तूणीर, मेरे बाण (व्यंग्य संग्रह) हैं।
Ross School of Business, University of Michigan, से MBA और ओहायो स्टेट यूनिवर्सिटी से औद्योगिकी अभियंत्रण में स्नातकोत्तर अमरेन्द्र कुमार का अमेरिका में हिन्दी के प्रचार-प्रसार में बहुत योगदान है। संयुक्त राज्य अमेरिका से निकलने वाली त्रैमासिक हिन्दी साहित्यिक पत्रिका ''क्षितिज'' का प्रकाशन-सम्पादन (2003-2006), ''अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी समिति'', अमेरिका के निदेशक (2005), ''अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी समिति'', अमेरिका द्वारा प्रकाशित हिन्दी पत्रिका ''ई-विश्वा'' का सम्पादन (2007), भारत, अमेरिका समेत कई हिंदी पत्र-पत्रिकाओं, अनेक संकलनों में कविता, कहानी, यात्रा-संस्मरण, व्यंग्य आदि प्रकाशित।
संपर्क:2100 N Harvest Cir, Midland, MI -48642, SA
ईमल: amarendrak14@gmail.com
मोबाइल:001-989 488 2178

एक अरसे के बाद लौटे थे वे अमेरिका से। पहले वह आता था अकेले, फिर दोनों आने लगे और अब वे तीन हो गए हैं, लेकिन नहीं चार और चौथे वे हैं उनके अराध्य जिन्हें दोनों प्रेमवश बुलाते हैं ''लल्ला''। जहाँ भी वे जाते हैं चावल से भरे एक डिब्बे में ''लल्ला'' की मूर्ति को वे रखकर ले जाते हैं। अमेरिका के एक मंदिर के पुजारी ने इस मूर्ति को लड़की की गोद में देते हुए कुछ सालों पहले कहा था, ''आज से ये तुम्हारे बच्चे हुए। इन्हें अपना बच्चा मानकर जीवन भर इनको प्यार करना। देखना एक दिन ये तुम्हारे घर आएँगे, तुम्हारी संतान के रूप में।''

तब से ही दोनों उनको ''लल्ला'' कहकर बुलाते हैं और अपने बच्चे-सा प्यार देते हैं। लड़की को याद है जब वह भारत में अपनी माँ से बात करती थी। उसने बताया था अपनी माँ को लल्ला के बारे में। उसकी माँ भी जब आशीर्वाद देती थी तो कहती थी, ''तुम तीनों खूब खुश रहो।'' यह सुनकर लड़की के पापा माँ से फ़ोन पर ही पूछने लगते कि कोई खुशखबरी है क्या ? माँ हँस देतीं। माँ की हँसी और पापा की जिज्ञासा देर तक फ़ोन पर बात के बंद हो जाने के बाद भी हज़ारों मील दूर अमेरिका के उनके घर में एक कमरे से दूसरे कमरे तक देरे तक लहराया करतीं। माँ-पिता ऐसे ही होते हैं आप जाएँ दूर या रहें पास पर वे होते हमेशा आपके साथ-साथ, आपका साया बनकर। धूप में छाया, बरसात में छतरी, सर्दी में कम्बल, अकेले में अपना और क्लेश में संबल बनकर, वे हरदम आपके साथ होते हैं, कभी दिखते हुए कभी छिपते हुए। बाद में पापा भी उन तीनों को आशीर्वाद देने लगे। ऐसा समय भी आया जब वे चारों को आशीर्वाद देते थे। उनका एक चार साल का बेटा है जिसे वे दोनों लल्ला का छोटा भाई मानते हैं। जब भी कुछ खरीदते हैं तो पहले लल्ला के

लिए, उसके बाद ही उनके छोटे भाई के लिए कुछ खरीदा जाता है। बरसों पहले शुरू हुआ यह क्रम आज भी जारी है।

पहले वह अकेला आता था, कॉलेज के समय, फिर दिल्ली से नौकरी के दौरान और बाद के दिनों में अमेरिका से भी। लेकिन इस बार वे तीन....नहीं-नहीं... चार आए थे। दूसरे शहर के हवाई अड्डे से उन्होंने टैक्सी ले ली थी। जैसे-जैसे अपना शहर पास आने लगा, लड़के को याद आने लगे वे सब जो अरसा पहले छूट गए थे। टैक्सी जब पुल से गुज़री तो लगा जैसे आकाश पर पहुँच गए हों, नीचे लहराती गंगा, दूर तक पुल का दूसरा सिरा धूल और धुंध में डूब गया था, नीचे केले के विशाल खेत थे जिनके बीच-बीच में गंगा के अतिक्रमण से छोटे-छोटे सरोवर बन गए थे या फिर गंगा के विशाल कछारों के बीच केले के पेड़ों के हरे-हरे द्वीप से बने थे। गंगा पर बने पुल से गुज़रते हुए उन्होंने मन-ही-मन सर झुकाया था। उनके संस्कार ऐसे थे कि किसी भी विभूति को देखकर श्रद्धा से आँखें मूँद जातीं, हाथ जुड़ जाते और होठ से अस्फुट-से स्वर निकलते। कई बार वे ऐसा अजाने भी करते। लड़का देख रहा था गंगा की अथाह जल राशि को पुल की उस ऊँचाई से। जहाँ सूरज की किरणें गंगा के जल पर पड़ रही थीं, वहाँ सहस्रों मणियाँ तैर रही थीं। बड़ी लगने वाली जल राशि उस ऊँचाई से और भी रहस्यमयी और अथाह लगने लगी थी। उसे याद आया कि पहले भी उसने देखा है और हर बार वह यही सोचता रहा है - कहाँ से आती है यह गंगा और कहाँ जाती है। उसे भूगोल की किताब में पढ़ा आज भी याद है। लेकिन फिर भी वह वही सोचता है। शायद वह अपने अंतर्मन में तो ''क्यों'' सोचता है लेकिन स्थूल रूप में वह ''क्यों'' ''कहाँ'' में बदल जाता है। मन की यात्रा में कुछ भी हो सकता है। लड़की को याद आता है वह सब कुछ जो अपनी ससुराल के उन चंद दिनों में देखा-सुना, जाना-समझा और महसूस किया था - घर, गली, शहर, बाज़ार, देवी माँ का वह मंदिर जहाँ दोनों शादी के बाद पहली बार गए थे और वह रेस्त्राँ जहाँ वह लड़का पहली बार उसे ले कर गया था। वह जाती गर्मियों के दिन थे और बरसात शुरू होकर भी नहीं हुई थी। तपती दोपहरी के बाद शाम को वे घर से निकलते थे, कभी पैदल तो कभी रिक्शे में एक दूसरे के हाथों में हाथ लिए जैसे दो बच्चे साथ-साथ चलते हों। कोई भी देखकर कह देता कि दोनों की अभी-अभी शादी हुई है। रेस्त्राँ से उसे याद आया कि शादी के कुछ ही दिन पहले कैसे

हँसते-हँसते उसकी दीदी की सास ने कहा था कि उस शहर में उस रेस्त्राँ में जाना भूलना मत, वही तो एक जगह है उस शहर में। और कहते-कहते उन्हें याद आने लगे अपने दिन जब शादी के बाद वे और उनके पति उस शहर में पहली बार रहने आए थे।

दो घंटे के सफ़र में ''लल्ला'' चुप थे, बच्चा सोया था और वे दोनों खोए थे अपने में। वह चैत का महीना था, धूप तेज़ थी, हवा शोख और पेड़ हरे-भरे। गाड़ी भाग रही थी और वे भी अपने ख़यालों में। शहर पीछे छूट गया और गाँव का रास्ता शुरू हो गया। सड़क अच्छी नहीं थी इसलिए धूल का रेला-सा उठता, उन्होंने टैक्सी की खिड़की चढ़ा थी लेकिन यह रेला सिर्फ़ बाहर ही नहीं उठ रहा था...बाहर के रेला में तो हवा और धूल थी..लेकिन अंदर के रेला में तो न जाने क्या-क्या, बीते दिन, रीती शाम, बचपन, लोग, शहर, स्कूल, मंदिर, नदी का किनारा, दोस्त...सब कुछ ही तो जिन्हें समय बहाकर कब का ले गया था। रह गया अगर कुछ तो था, बाढ़ के बाद बिछे कंकड़-पत्थर, गली-पची किसी टहनी की तरह एक ऐसी स्मृति जो धुँधली तो पड़ती है लेकिन मिटती नहीं, एक टीस की तरह जो जान तो नहीं ले सकती लेकिन जीने के एहसास को हर पल चुनौती देती-सी अवश्य लगती है...

मुन्ना कुनमुनाया था, आँखें भी खोली थीं लेकिन फिर बंद कर लेटा रहा। लड़की ने उसके मुँह में पानी की बोतल दे दी तो वह पीता हुआ सोता रहा। लड़का मुड़-मुड़ कर देख लेता। दोनों अकेले पड़ने लगे थे। करना चाहते थे कुछ बात लेकिन हौसला साथ छोड़ देता तो कोशिशें नाकाम हो जातीं। गाड़ी चलती रही, समय सरकता रहा, धूप और पेड़ों में आँख-मिचौनी चलती रही। गाड़ी कहीं रुकती तो वह सर निकाल कर देखता उन दुकानों को, बाहर बैठे लोगों को, उसे याद आती पहले की अनगिनत की यात्राओं की। वह लैंडस्केप कभी नहीं बदला। टैक्सी जब एक मोड़ पर आकर हाईवे को छोड़ शहर जाने वाले रास्ते से गुज़री तो उसे यकायक पसीना आने लगा। उसने खिड़की खोल दी। वह कम से कम बेचैनी में छाती भर साँस तो ले ही सकता था ऐसे में। शहर की सीमा शुरू होते ही उसे दिखने लगे शहर में बदलाव। ऐसा होता है एक अरसे के बाद। एक ही चीज़ चाहे वह एक समूची सृष्टि ही क्यों न हो, जिसे देखने की आदत हो जाए उसमें तनिक भी बदलाव हमें कभी उत्सुक तो कभी बेचैन कर जाता है। ऐसा होता है एक अरसे के बाद। रेलवे गुमटी होते हुए जब कॉलेज की तरफ से गाड़ी गुज़री तो वह सोचने लगा उन दोस्तों के बारें में जब वे वहाँ पढ़ते थे। वह दूसरे कॉलेज में था और वह वहाँ एक बार एक दोस्त से मिलने आया था। उसे याद है उस दोपहर की एक-एक घड़ी, ऐसी ही तपती दोपहरी में एक अन्य मित्र से मिलने की प्रतीक्षा में एक क्लास में बैठे किस तरह से उसका दोस्त अपने नए खरीदे स्कूटर के रख-रखाव के बारे में बता रहा था। उसे याद आया कि ठीक इसके बाद दो सिनेमा हाल आएँगे। पहले सिनेमा हाल के बाद उसने देखा कि वहाँ एक फ्लाई ओवर बनने लगा था। उस सड़क पर मीलों दूर जाम लग जाता था, जब भी कोई ट्रेन वहाँ से गुज़रने वाली होती। अक्सर लोग वहाँ खड़े होकर एक फ्लाई ओवर के होने की आवश्यकता पर चर्चा करते। लेकिन जैसे ही रास्ता साफ होता सब लोग अपनी गाड़ी चला कर निकल जाना चाहते, भूल जाते कि किसी फ्लाई ओवर की वहाँ पर कभी कोई ज़रूरत होगी, भूल जाते अपनी चर्चा को। उन्हें लगता कि निकल लो जल्दी नहीं तो और भी फँस जाओगे। और इसी जल्दी-जल्दी निकलने के चक्कर में अपने लेन से परे चले जाने के कारण रास्ता एकदम जाम हो जाता और फिर वहाँ चीख-पुकार, घंटी और हार्न के सिवा कुछ भी नहीं सुनाई पड़ता। उसे याद आया कि कितनी जल्दी बातें बदल जाती हैं। उसे लगा ऐसा होता है एक अरसे के बाद। भीड़ बदल जाती है, लोग बदल जाते हैं, ज़रूरतें बदल जाती हैं, चर्चाएँ बदल जाती हैं - एक अरसे के बाद सब बदल जाता है। अब टैक्सी जिस मोड़ पर आ गई

थी वहाँ झ से कुछ दूर पर पानी का टंकी था और उसके परे उसका स्कूल। वह बताना चाहता था लड़की को लेकिन लड़की अपनी सोच में डूबी थी। उसने समय को निकल जाने दिया, रास्ते को निकल जाने दिया, चौक-चौराहों को निकल जाने दिया, दूकानों, सिनेमा हाल, उसके आगे की गुमतियाँ और सब्जी की टोकरियाँ लिए बैठे सब्जी वाले-वालियों को निकल जाने दिया। उसे पता था समय के साथ सब बह जाता है। एक घड़ी बस देर करने की है कि सब कुछ बह जाता है। उसे ऐसा पहले नहीं लगता था जब वह छोटा था, और फिर बड़ा होने के बाद भी क्योंकि तब वह सोचता था कि प्रयास से सब कुछ हो जाता है। जो चाहो मिल जाता है जैसा चाहो वैसा पाया जा सकता है। लेकिन धीरे-धीरे उसे ऐसा लगने लगा कि ऐसा हरदम नहीं होता। और ऐसा लगने लगता है एक अरसे के बाद। एक अरसे के बाद ऐसा ही लगने लगता है।

टैक्सी पुराने बाज़ार के देवी माँ के मन्दिर के पास से गुज़री तो दोनों ने फिर सिर झुकाया। लड़की ने देखा लड़के की तरफ जैसे गहरी नींद के बाद कोई देखता है। हालाँकि वह सो नहीं रही थी। इतनी हलचल में कोई सो भी कैसे सकता है। हलचल बाहर उतनी नहीं जितनी कि अन्दर होती है। लेकिन लोग थकने लगते हैं, आँखें बोझल होने लगती हैं और लोग जागते हुए भी सोने लगते हैं। ऐसा होता है एक अरसे के बाद। एक हल्की मुस्कान लड़की के होठों से तैरती हुई लड़के के होठों से जा मिली।आँखें चमकीं और फिर छुप गईं जैसे बरसात में बिजली होती है। उन्हें याद आया कि उसी मन्दिर के पुजारी ने बरसों पहले बताया था लड़के की माँ को कि आपको आपकी छोटी बहू बहुत सुंदर मिलेगी। उसे याद आया कि उसके बाद जब भी कोई फोटो आता और माँ को अगर नहीं जंचता तो वह रुंआसी हो जाती। वह कितनी बेचैन थी अपने छोटे बेटे की शादी के लिए। हर माँ-पिता होते हैं। उसे एक-एक बात याद आने लगी। वह सोचने लगा कि क्यों हर बात याद आती है। उसने सोचा ऐसा होता होगा एक अरसे के बाद। ऐसा ही होता होगा एक अरसे के बाद।

टैक्सी जब मुहल्ले में आई तो उसे लगा कि माँ आकर लौट चुकी है। उसे याद है जब कॉलेज से लौटता था, माँ अक्सर वहीं मिल जाया करती थी। बढ़कर माँ के पाँव छुए। माँ ने लल्ला को माथे से लगाया और बच्चे को अपने अंक में भर लिया। लौटने से पहले मोड़ पर राधे-कृष्ण के मंदिर में उन्हें ले जाना नहीं भूलीं। पुजारी जी से थोड़ी देर बात-चीत हुई। माँ को हर कोई पहचानता था और माँ सबको। साथ लौटे वे घर। बाबूजी दरवाज़े पर बैठे इन्तज़ार कर रहे थे, ठीक वैसे ही जब वह कॉलेज से आया करता था। बोल पड़े - ट्रेन लेट हो गई ?

''बाबूजी, फ़्लाईट से आए हैं हमलोग।''

''अच्छा..'' सोचने लगे, ''भला फ़्लाईट से क्यों ?''

''बाबूजी, आप आज भी सोचते हैं कि मैं इलाहाबाद या दिल्ली से आता हूँ। आपको याद नहीं अब मैं अमेरिका में रहता हूँ।'' हँसते हुए कहा उसने। झुककर बहू ने पैर छूए तो बाबू जी को लगा कि उनका छोटा अब उतना छोटा नहीं जितना कि वे आज भी सोचते हैं। वह कब का बड़ा हो गया। अमेरिका गया, शादी हुई और अब एक बच्चा भी है, एक नहीं दो लेकिन उनके लिए एक कहना ठीक है। नहीं तो दूसरे के बारे में समझाना कठिन हो जाएगा।

घर पहुँच कर माँ ने उन चारों को भगवान् के पास ले जाकर खड़ा कर दिया। वह ऐसा ही करती थीं - कहीं जाने से पहले, आने के बाद, स्कूल-कॉलेज, घर-बाजार कहीं भी। उनका कहना था भगवान् के आगे जब भी मौका लगे सर झुका लेना चाहिए। अक्सर उसे याद है कि माँ के हाथ लगभग जुड़े ही होते थे -घर से निकलते हुए, मुहल्ले के मन्दिर फिर चौक पर माता का मंदिर के पास। वह लड़के को भी कहती कि प्रणाम करो और हमेशा दोहराती थी कि भगवान् के आगे सर झुकाना चाहिए। आज भी लड़का ऐसा ही करता है। उसे पत्नी मिली उससे भी एक कदम आगे। और तो और उनका चार साल का बेटा घर से निकलते हुए दरवाज़े पर लगी गणेश जी की प्रतिमा के सामने बिना सर झुकाए कदम आगे नहीं रखता। जब वह साल-डेढ़ साल का था तब से ही ऐसा करता आया है। प्रणाम करके वे बैठ गए थे। लड़का चुप बैठा था और उससे सटकर उसकी पत्नी। लल्ला सूटकेस में थे और छोटा अभी भी सो रहा था। न जाने यह सब सोचते वे कब तक बैठे रहे थे। अब न वहाँ माँ थी, न बाबूजी, था तो सिर्फ़ पूजा का वह स्थान जहाँ माँ पूजा किया करती थी। एक जलता दिया कब का बुझ चुका था। एक अरसे के बाद कितनी स्मृतियाँ साँस लेने लगती हैं, पलकें खोलकर वर्तमान में झाँकती हैं। जब आँख खुलती है तो सिर्फ़ आज का आज रह जाता है लेकिन बीता कल कब का बीत चुका लगता है। हम कितना कुछ अपनी मुट्ठी में बन्द कर लेना चाहते हैं, कितना कुछ हासिल करना चाहते हैं और सम्भवत: ऐसा करने में सफल हो भी जाते हैं लेकिन एक समय ऐसा भी आता है जब मुट्ठी खोल के देखो तो वहाँ कुछ भी नहीं होता। बचपन के उस एक खेल की तरह जब हम एक दूसरे को ऐसा करके छकाया करते थे। होता वहाँ पहले भी कुछ नहीं था। सिर्फ़ सामने वाले को भ्रम होता था; वह जितने कठिन परिश्रम से मुट्ठी को खोल कर देखना चाहता था और हम अपनी मुट्ठी को उतना ही कसते जाते थे। एक समय जब सामने वाला थककर छोड़ देने वाला होता था तो हम मुट्ठी खोल देते थे। और तब खोलने वाले को यह अहसास होता था कि वह बेकार में इतनी कोशिश कर रहा था। कुछ भी न पाकर फिर हम सब लोग हँसने लग जाते थे। लेकिन वे बचपन की बातें थीं जब पाना और खोना दोनों एक खेल के हिस्सा थे। खेलना हमारा धर्म और आनन्द हमार लक्ष्य। खोना-पाना जीवन में लगा रहता है लेकिन हम बच्चे से बड़े हो जाते हैं। तब बात एक जैसी नहीं रहती। हमारी मुट्ठी बड़ी हो जाती है और हमारी आशाएँ - आकांक्षाएँ उससे भी बड़ी। हमारी मुट्ठी में वे सब समा नहीं पातीं फिर भी हम कोशिश यही करते हैं कि जितना हो सके भरते जाओ मुट्ठी में। फिर एक समय के बाद जब मुट्ठी खोल के देखो तो सब गायब। तब हमें हँसी नहीं आती है, नैराश्य में डूबी एक खीज होती है और मन रुआँसा हो जाता है। ऐसा अक्सर होता है जब हम बड़े हो जाते हैं। हम किसी चीज़ को खेल में नहीं लेते। लेकिन खेल तो खेल ही रहेगा हमारे और आपके कहने, सोचने और समझने से कुछ बदल तो नहीं जाएगा। कभी-कभी कुछ

बदलता तो नहीं लगता, कहीं कोने में एक अहसास होता है कि हर एक छोटी सी खुशी, एक चाहना और बहुत बड़ी आकांक्षा सब अपने नहीं, अपने बस में नहीं। होता है ऐसा एक अरसे के बाद। एक अरसे के बाद शायद हर किसी के साथ ऐसा ही होता है।

दीदी से फ़ोन पर बात हुई थी उसकी। वह नहीं आ पाई थी। बहुत सालों तक, जब माँ नहीं थी, बाबूजी नहीं रहे थे, वह आती अपना घरबार छोड़कर भी, उनके बच्चे बड़े हो रहे थे लेकिन छोटा भाई, वह तो तब कितना छोटा और अकेला रह गया था। यही सोचकर वह आ जाती थी। लेकिन अब तो भाई की शादी हो गई है, वह अकेला नहीं। वह अब सँभाल सकता है अपने आपको, अपने परिवार को, बीते हुए कल की यादों को, आने वाले कल की सम्भावनाओं को..... अब वह बड़ा हो गया होगा.... .सब यही सोचने लगे थे..... कई बार आप बड़े होते नहीं बना दिए जाते हैं। वरना माँ, पिता और उनसे जुड़ी बातों-स्मृतियों की ज़रूरत कब नहीं होती ? लेकिन, एक अरसे के बाद सब बदल जाता है। आँगन, घर, कमरे, शहर, गलियाँ, यहाँ तक कि दीवार, धूप-मिट्टी, हवा-धूल...

घर के सब कमरे बंद थे। माँ ने गिनकर कमरे बनवाए थे। चार कमरे चार भाइयों के लिए, एक दीदी के लिए, एक अपने और अपने भगवान् के लिए। आज वे अपने कमरे से निकल माँ-बाबूजी और भगवान् के कमरे में आ बैठे थे। वह कमरा जहाँ कभी माँ, बाबूजी और उनके भगवान् रहते थे। बाकी सब कमरे बंद थे। एक अरसे के बाद ऐसा होता है। कमरे बंद हो जाते हैं। रास्ते बंद हो जाते हैं। दरवाज़े बंद हो जाते है। अतीत का रास्ता इकहरा होता है। जब चलकर उससे निकल आए तो वापस लौट नहीं सकते। एक-एक कदम के बाद पीछे जाने के रास्ता बंद होने लगता है। आप ठहर भी नहीं सकते उस रास्ते पर। चलते रहने के सिवा कोई विकल्प नहीं होता वहाँ। एक अरसे के बाद ऐसा होता है। ऐसा ही होता है हर किसी के साथ एक अरसे के बाद। लड़के को याद आया किस तरह वह और उसकी माँ और सब भाई-बहन जाते थे नानी के घर। उसने नाना को कभी देखा नहीं था। उसकी सोच और समझ में नाना का अस्तित्त्व माँ की बताई बातों, घटनाओं और कहानियों में ही था। जिसको आपने कभी देखा नहीं उसके होने और न होने के साथ आपका अहसास एक बहते पानी जैसा होता है साफ, गीला और अकिंचन..उसे याद आया कि जब नानी को पता लगता कि वे आने वाले हैं तो वह कितना कुछ तैयारी करती। उनकी गाड़ी जब घर पर रुकती तो वहाँ का वातावरण गमगीन हो जाता था। बच्चे दूसरे बच्चों से जा मिलते लेकिन माँ और नानी एक दूसरे से गले मिलतीं और...वह दौड़कर अपनी माँ से लिपट जाता..फिर सब कुछ सामान्य हो जाता। बीते कल, शिकायतें-उलाहनें, सुख-दुख, हँसी-खुशी, लेन-देन की बातें घर-कमरों से निकल दलान-गली-खेत हर तरफ निकल पड़तीं। गाँव के लोग मिलने आते और सब कुछ धीरे-धीरे स्थिर होने लगता। एक समय आया जब नानी भी नहीं रहीं। माँ के साथ एक आख़िरी बार लड़का गया था वहाँ। तब वह थोड़ा बड़ा हो गया था। उसे तब अहसास हुआ कि कितना कुछ बदल गया था एक नानी ने नहीं रहने से..ऐसा होता है एक अरसे के बाद। ऐसा ही होता है एक अरसे के बाद।

मुन्ना जग गया था, लड़की ने उसे उठा लिया था अपनी गोद में। लड़का अभी भी चुप बैठा था। लड़की और बढ़कर सट गई थी उससे। एक हाथ से बच्चे को अपनी गोद में लिए और दूसरे से लड़के के हाथ को सहलाती हुई वह निर्निमेष पूजा-स्थान की ओर देख रही थी, जहाँ श्री कृष्ण राधा जी के साथ खड़े बाँसुरी बजा रहे थे, फ़ोटो में। इस सृष्टि में अकेले वे ही इस तरह से बाँसुरी बजा लेते हैं। वे ही बजा सकते है इतना कुछ देखते हुए, समझते हुए। वे ही ऐसा करते हैं वे ही ऐसा कर सकते हैं।

मुन्ना उसकी गोद से सरक कर नीचे उतर आया था। चलता हुआ वह आँगन में चला गया। उसकी आवाज़ सुन बंद दरवाज़े खुलने लगे थे। पहले आए बच्चे फिर आए उनके माता-पिता। आँगन फिर से लोगों से भर गया था। फिर से वहाँ धूप थी, हवा थी और चैत का महीना था। एक अरसे के बाद ऐसा होता है। एक अरसे के बाद ऐसा ही होता है ...

***

लघु कथा

मेरी याद

डॉ. चंद्रेश कुमार छतलानी

रोज़ की तरह ही वह बूढ़ा व्यक्ति किताबों की दुकान पर आया, आज के सारे समाचार पत्र खरीदे और वहीं बाहर बैठ कर उन्हें एक-एक कर पढ़ने लगा, हर समाचार पत्र को पाँच -छः मिनट देखता फिर निराशा से रख देता।

आज दुकानदार के बेटे से रहा नहीं गया, उसने जिज्ञासावश उनसे पूछ लिया, ''आप ये रोज़ क्या देखते हैं?''

''दो साल हो गए, अख़बार में मेरी फोटो ढूँढ़ रहा हूँ।'' बूढ़े व्यक्ति ने निराशा भरे स्वर में उत्तर दिया।

यह सुनकर दुकानदार के बेटे को हँसी आ गई, उसने किसी तरह अपनी हँसी को रोका और व्यंग्यात्मक स्वर में पूछा, ''आपकी फोटो अख़बार में कहाँ छपेगी?''

''गुमशुदा की तलाश में...।'' कहते हुए उस बूढ़े ने अगला समाचार-पत्र उठा लिया।

***

संपर्क: 3 प 46, प्रभात नगर, सेक्टर - 5, हिरण मगरी, उदयपुर (राजस्थान) - 313002
ईमेल: chandresh.chhatlani@gmail.com
मोबाइल: 99285 44749

वेटिंग क्लियर

महेश शर्मा

ऐसा है जनाब हम कोई पेशेवर क़िस्सागो तो है नहीं, शौकिया क़िस्सागोई करते हैं इसलिए कोई एब न निकालें। .....क्या कहा, जगबीती है या आपबीती ?.....जनाब हम पर बीती हो या किसी और पर जब हम सुनाएँगे तो आपके लिए तो जगबीती ही रहेगी। किसी पर बीती हो, आपको क्या फर्क पड़ता है। आप तो आम खाएँ, गुठलियों से वास्ता न रखें। .....तो हम क़िस्सा शुरू करते हैं, टोकिएगा नहीं। ध्यान रहे क़िस्सा तब तक चलेगा जब तक आप हूँका देते रहेंगे। भई कायदा यही है...हम क्या कर सकते हैं ! हूँका बंद तो क़िस्सा बंद। ठीक है ?

कई बरस पहले का वाक्या है एक खूबसूरत जगह हुआ करती थी, बेहद खूबसूरत जैसे धरती पर जन्नत का टुकड़ा ! उसे हिन्दुस्तान के नाम से जाना जाता था। तब ये धरती हरी-भरी थी और दरिया लबालब। आज की तरह न तो जंगल उजड़े थे और न ही दरिया मैदान में तब्दील हुए थे। न इतनी गरमी होती थी और न ही बारिश में लोग पीने के पानी की तलाश में भटकते थे। सुनते हैं तब आज-सा छल-कपट भी नहीं था।.....क्या कहा, यकीं नहीं होता ? न हो यकीं हमारे ठेंगे से लेकिन ऐसा ही था। इन्सान, इन्सान से मोहब्बत करता था और सच्चाई के लिए अपनी जान की बाज़ी तक लगा देता था। आज-सा बे ग़ैरत नहीं था इन्सान। चारों ओर अमन था और अकेली ख़ातून कितने भी लम्बे सफ़र पर निकल पड़े, जंगली जानवरों को छोड़ उसे दूसरा कोई खतरा नहीं था। क्या..ऽऽऽ हम लम्बी-लम्बी छोड़ रहे हैं...? जनाब आपने हमें समझ क्या रखा है.....। हम कोई आजकल का क़िस्सा नहीं सुना रहे, पुराने ज़माने में जो हाल था वही बता रहे हैं। अब आज हालात बदल गए हैं तो हम क्या करें ? .....अच्छा.....आज की जुबान में आज का किस्सा सुनने की ख़्वाहिश है आपकी। बड़ी मुश्किल है भई, शर्म आती है हमें, कैसे सुनाएँ ? आजकल तो इन्सान को न मिट्टी खराब होने का डर है और न ही ऊपर वाले की बेआवाज़ लाठी का। खैर, चलिए आपकी इच्छा पूरी करते हैं लेकिन प्लीज़ बीच में रोके-टोके नहीं और हाँ-हूँ ज़रूर करते रहें, जिससे पता चले कि आप सोए नहीं हैं, सुन रहे हैं।

पेशे से पत्रकार महेश शर्मा कहानियाँ और कविताएँ भी लिखते हैं। कुछ कहानियाँ और कविताएँ पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुकी हैं। इंडिया टुडे के लिए पत्रकारिता करते हैं।
संपर्क: 28 क्षपणक मार्ग,
फ्रीगंज,उज्जैन(म.प्र.)
ईमेल:
maheshsharma.ujn@gmail.com
मोबाइल: 09425195858

गाड़ी जैसे ही प्लेटफार्म पर लगी मैं कोच के दरवाज़े के पास लगे चार्ट की ओर बढ़ा। एसएमएस द्वारा पीएनआर इंक्वायरी करने पर पता चला था कि आरएसी क्लियर नहीं हुई। पूरी रात बैठे हुए ही यात्रा करनी थी इसलिए जिज्ञासा थी कि बी-3 के 31 नम्बर बर्थ पर मेरा हमसफ़र कौन है ? चार्ट में नाम और उम्र देखते ही मेरी बाँछे खिल गई। .....पिंकी उम्र 23 वर्ष एनजीपी टू एनडीएलएस.....। वाह नागपुर से दिल्ली तक जाएगी और लगता है अकेली ही है क्योंकि आसपास की बर्थ पर कोई भोपाल का यात्री है तो कोई आगरा या ग्वालियर का। आसपास दिल्ली तक का तो कोई नहीं दिखाई दे रहा.....। बैतूल या बल्हारशाह से दिल्ली जाने वाले ज़रूर दिखाई दे रहे हैं। मैं उल्लास से भरा डिब्बे में चढ़ा, देखें तो कैसी है ? ठीक ठाक हुई तो मज़े से कट जाएगा सफ़र। सीट पर कोई न था इसलिए नीचे सामान रख मैं दरवाज़े पर आ खड़ा हुआ।

गाड़ी चलने में पाँच मिनट ही बचे थे तभी हड़बड़ी में दौड़ते-भागते एक युवा जोड़ा डिब्बे की ओर आता दिखाई दिया। दरवाज़े के पास पहुँचकर लड़के ने चार्ट देखा और कहा-यही है....। एक पल को मेरे उत्साह पर जैसे पानी पड़ गया लेकिन तभी मैंने देखा कि लड़का लगातार समझाइश देने वाले अंदाज़ में लड़की को कह रहा था-पहुँचते ही फ़ोन करना, रात में मेरा मोबाइल चालू रहेगा...कोई दिक्कत हो तो रिंग कर देना। पता नहीं कौन है थर्टी वन पर.....। मैंने चैन की साँस ली.....ये तो लड़की को छोड़ने आया है। सामान सीट के नीचे रखकर दोनों दरवाज़े की ओर लौटे। तब मैंने गौर से लड़की की ओर देखा....तीखे नाक-नक्श, गौरा रंग, मध्यम कद.....वह चूड़ीदार की तरह तंग सलवार और बगैर दुपट्टे की डिज़ायनर कुर्ती पहने थी। मन में आया...शादीशुदा है...! होती रहे.....मुझे क्या करना है। एक रात की ही तो बात है.....। लड़का भी मध्यम कद का ही था जो जींस पर शॉर्ट शर्ट पहना था, पैरों में सेंडिल, गले में सोने की चैन और हाथ में सुनहरी घड़ी। लगता था खानदानी व्यापारी है.....। लड़की बड़े अंदाज़ में कह रही थी-देखो अपना ख़याल रखना, टाइम पर खाना खा लेना, सुबह देर तक मत सोना और मुझे लेने जल्दी आना.....। बहुत याद आएगी आपकी, कैसे रहूँगी मैं इतने दिन ....। और हाँ देर रात तक टीवी मत देखना, मुझे रोज़ फ़ोन करना.....। मुझे विश्वास हो गया कि ये नवविवाहित जोड़ा है। न तो उम्र ज़्यादा दिख रही है और न ही कोई बच्चा साथ है और फिर विरह की इतनी पीड़ा.....। शुरूआती सालों में ही तो ये हाल रहता है, फिर तो कहा जाता है.....जल्दी मत आना, साल में एक बार ही तो जाने को मिलता है.....थोड़ा कन्ट्रोल करना, वेट ज़्यादा नहीं बढ़े।

तभी इंजन की तेज़, लम्बी सीटी सुनाई दी और प्लेटफार्म पर खड़े यात्री अपने-अपने डिब्बे में चढ़ने लगे। सिग्नल हो गया था और लड़के की आँखों में पानी साफ दिख रहा था। गाड़ी चल पड़ी.....दरवाज़े पर खड़ी लड़की ने हाथ हिलाकर बाय कहा और फिर हथेली को होठों पर ले जाकर 'फ्लाइंग किस' लड़के की ओर उछाला। जवाब में लड़का सिर्फ मुस्कुराकर रह गया। मैं अपनी सीट की ओर बढ़ गया जबकि लड़की कुछ देर वहीं खड़ी रही। जब वह सीट पर आई तो मैं बर्थ पर पैर फैलाकर बैठ चुका था और मन ही मन भगवान् को मना रहा था कि बर्थ कन्फर्म न हो। तभी लड़की ने कहा-एक्सक्यूज मी! मैंने चैंकने की एक्टिंग करते हुए उसकी ओर देखा। उसने कहा- मेरा भी 31 है....। मैंने पैर सिकुड़ते हुए कहा-ओह...। वह सीट पर बैठ गई। कुछ पल चुप्पी रही और मैं उससे बातचीत की भूमिका बाँध ही रहा था कि उसके मोबाइल पर गाना बज उठा ' बहुत प्यार करते हैं तुमसे सनम.....' उसने खीजते हुए मोबाइल ऑन किया और रुखाई से कहा-हैलो....। दूसरी ओर से एक पुरुष स्वर सुनाई दिया, क्या कहा जा रहा है ये तो मैं नहीं सुन पाया लेकिन लड़की ने जवाब दिया-नहीं कोई दिक्कत नहीं है.....हैं कोई.....। मैं समझ गया कि 31 नंबर पर मौजूद शख्स यानी मेरे बारे में तफ्तीश हो रही है। जब लड़की ने कहा देखो अपना ध्यान रखना और जल्दी आना.....तो मैं समझ गया कि लड़के ने ही फ़ोन किया था। फ़ोन डिसकनेक्ट कर लड़की किन्हीं ख़यालों में खो गई। गाड़ी तेज़ रफ़्तार पकड़ चुकी थी और मैं बातचीत शुरू कर ही रहा था कि लड़की मोबाइल हाथ में लेकर कोई नम्बर डायल करने लगी। जैसे ही घण्टी की आवाज़ सुनाई दी उसने कॉल डिसकनेक्ट कर दिया। मेरे चेहरे पर बरबस ही मुस्कुराहट आ गई.....ज़रूर लड़के को ही मिस कॉल दिया है.....नई-नई शादी है, ऐसे खेल होंगे ही। अब लड़का फ़ोन करेगा, फिर लड़की कहेगी-आपकी याद आ रही थी.....कैसे रहूँगी मैं इतने दिन....। तभी लड़की के मोबाइल पर गाना बज उठा 'भीगे होंठ तेरे, प्यासा मन मेरा.....'। लड़की के चेहरे पर मुस्कुराहट आ गई और उसने फ़ोन चालू किया। एक बार फिर पुरुष स्वर था लेकिन पहले से भिन्न आवाज़ लग रही थी। कुछ स्पष्ट सुनाई नहीं दे रहा था लेकिन लड़की कह रही थी ''ऑल क्लियर.....नो टेंशन...''। उसने फ़ोन डिसकनेक्ट कर दिया। ऐसे कोडवर्ड वाले जवाब सुनकर मैं उलझन में पड़ गया। ऐसा न लगे कि मैं उसकी गतिविधि पर गौर कर रहा हूँ, इसलिए मैंने बैग से इंडिया टुडे निकाली और पन्ने पलटने लगा। कनखियों से मैं देख रहा था कि लड़की पलट-पलटकर दरवाज़े की ओर देख रही है। एक बार फिर बातचीत शुरू करने की कोशिश करते हुए मैंने अंगडाई ली और पत्रिका एक ओर रख दी। मैं उससे कुछ कहने जा ही रहा था कि एक लम्बा-चौड़ा युवक सीट के नज़दीक आ खड़ा हुआ। उसे देखते ही लड़की खुशी से भर उठी.....ओह सिद्धार्थ.....। युवक भी मुस्कुराया और उसने अपना हाथ आगे बढ़ाया। जवाब में लड़की ने अपना हाथ उसके हाथ में दे दिया। लड़की ने एक बार फिर मुझे 'एक्सक्यूज़ मी ' कहा और वह युवक मेरे और उस लड़की के बीच आ धँसा। लड़की का हाथ अब भी उसने थाम रखा था। उसने लड़की की हथेली को ज़ोर से दबाया और लड़की की सिसकती-सी आवाज़ सुनाई दी ''..... आई मिस यू सिद्धार्थ....रियली आई मिस यू।'' मेरा तो दिमाग ही घूम गया। ये हो क्या रहा है ? अभी थोड़ी देर पहले तो प्लेटफार्म पर खड़े लड़के को कह रही थी.....जल्दी आना, कैसे रहूँगी इतने दिन। और अब ये हाल, आख़िर माज़रा क्या है ये समझते हुए भी जैसे समझ नहीं आ रहा था।

युवक कह रहा था-''कल भी कन्फर्म नहीं हो पाया था टिकट, सारी रात जागते हुए ही आया हूँ।'' इतना सुनते ही लड़की ने भावातिरेक में ओह कहते हुए उसे गले से लगा लिया। यह देख मेरा तो खून ही खौलने लगा.....ये क्या बेहयाई है ? आख़िर पब्लिक प्लेस है ये। मन ही मन जैसे मैं उन पर चिल्ला रहा था। तभी युवक ने नीचे रखे अपने बैग में से एक डिब्बा निकाला और लड़की की ओर बढ़ाया। उसे खोलते ही लड़की जैसे उछल पड़ी.....पैस्ट्री ! ओह सिद्धार्थ रियली यू आर सो स्वीट.....कितना ख़याल रखते हो तुम मेरा, आई लव यू।'' इतना कहते-कहते उसने एक बार फिर युवक को अपनी बाहों में भर लिया। लड़की पैस्ट्री खा रही थी और मैं सोच रहा था कि निश्चित रुप से यह लड़की का बॉयफ्रेंड है और स्टेशन पर उसका पति होगा। युवक कह रहा था-''जैसे ही तुम्हारा फ़ोन आया, मैं रिजर्वेशन कराने भागा लेकिन न आते समय सीट मिली और न ही वापसी में यहाँ से वेटिंग क्लियर हुई।'' लड़की ने कहा-''मेरी टिकट ही आरएसी की बनी थी,तभी मुझे लगा था कि अब तुम्हें तो शायद वेटिंग ही मिलेगी।'' इस पर लड़के ने सवाल दागा-''तुमने जल्दी क्यों नहीं बताया कि तुम्हारा अकेले आने का प्रोग्राम है ?'' लड़की बोली-''अरे आख़िर तक मेरे साथ इनके आने का ही प्रोग्राम था, मैं कैसे बताती ? मन ही मन मैं भगवान् से प्रार्थना कर रही थी कि हे भगवान् इनका जाना कैंसिल हो जाए तो मज़ा आ जाए। मैंने सोच रखा था कि मैं तुम्हें बुला लूँगी। आख़िर भगवान् ने मेरी सुन ली।''

मुझे स्पष्ट हो गया कि युवक दिल्ली से सुबह ही यहाँ पहुँचा और साथ में यात्रा करने के लिए ही आया है। न चाहते हुए भी मेरे कानों में दोनों का वार्तालाप सीसे की तरह उतर रहा था। उनकी बातचीत सुन कर मेरा मूड पूरी तरह खराब हो चुका था। मेरे उत्साह पर जैसे पानी फिर गया था। मैं सोचने लगा भगवान् भी कैसे-कैसे लोगों की सुन लेता है। तभी मुझे याद आया कि युवक कह रहा था कि वेटिंग क्लियर नहीं हुई, इसका मतलब इसका टिकट वेटिंग का है..... तो ये इस कोच में चढ़ कैसे सकता है ? एक बार फिर मुझे आशा की किरण दिखाई देने लगी और मैं टिकट कंडक्टर का इंतज़ार करने लगा। युवक कह रहा था-''तुम्हारी आरएसी ही क्लियर हो जाती तो मज़ा आ जाता। आख़िर इसीलिए तो दिल्ली से भागा चला आया।''

मैं मन ही मन कह रहा था- बच्चू, भगवान् हर बार तुम्हारी ही नहीं सुनेगा। कभी हमारा भी ध्यान रखेगा..... आख़िर इतने भी पापी नहीं हैं हम। तभी लड़की ने मुझसे कहा-''भाई साहब, आप थोड़ा सामने बैठ जाएँगे क्या ? हम खाना खा लें।'' मैंने कहा- व्हाई नॉट...और मैं अनिच्छापूर्वक सामने की सीट पर जा बैठा। नागपुर आने के पहले ही कोच में पहले से बैठे लोग सो गए थे। तभी मेरा ध्यान ऊपर वाली बर्थ यानी 32 नम्बर पर गया जिस पर एक अधेड़ सरदार जी लेटे थे। लग रहा था जैसे वे नीचे की सीट पर हो रहे वार्तालाप का रस ले रहे हैं। जहाँ मैं बैठा वह 25 नम्बर बर्थ थी जिस पर एक बुज़ुर्ग महिला आराम कर रही थी और सामने 28 नम्बर बर्थ पर एक 12-13 साल की बच्ची सो रही थी। गर्दन झुकाकर बैठे-बैठे मुझे काफी देर हो गई। उधर वह युवक और लड़की आराम से बैठकर चुहलबाज़ी करते हुए जैसे खाना चुग रहे थे। मेरा गुस्सा भड़कने लगा और मैं चुप न रह सका। मैंने कहा-''हो गया क्या ? मेरी गर्दन में दर्द होने लगा है।'' युवक ने जवाब दिया-''बस पाँच मिनट और।'' इसके बाद उन्होंने जल्दी-जल्दी खाना समेटा और मेरे लिए जगह बना दी। मैं पुन: अपनी सीट पर जा पहुँचा। मैंने पाया कि मेरा स्थान कुछ सिमट गया है और बर्थ पर तीन बराबर हिस्से हो गए हैं। लड़की नज़ाकत से कहने लगी-''मुझे तो नींद आ रही है।'' युवक ने झटपट मेरी ओर खिसक कर लाइट बंद की और अपनी गोद पेश करते हुए कहा-'' सो जाओ।'' लड़की ने युवक की गोद में सिर रखा और पैर समेटे लेट गई। युवक उसकी जुल्फों से खेलते हुए कहने लगा-''कितना तड़पा हूँ मैं तुम्हारे आने के बाद। किसी काम में मन ही नहीं लगता था।'' फिर उसका हाथ बालों से निकलकर लड़की के चेहरे की ओर बढ़ा, तत्काल लड़की ने होठों से उसे थाम लिया। मुझसे सहा नहीं जा रहा था.....ये कैसा ज़माना आ गया है, कैसा चरित्र हो गया है लोगों का, अति हो गई ये तो...। आख़िर मुझसे रहा नहीं गया और मैंने युवक से पूछा-''भाई साहब कौन सी बर्थ है आपकी ?'' युवक ने पलटकर घूरते हुए जवाब दिया ''वेटिंग है।'' मैंने तत्काल आश्चर्य व्यक्त करते हुए कहा-''अरे वेटिंग है....फिर तो टीसी अलाऊ नहीं करेगा।'' युवक ने बेरुखी से जवाब दिया-''देखा जाएगा।'' मैं फिर चुप हो गया। उन दोनों की चुहलबाजी फिर शुरू हो गई और मेरी आँखों में प्लेटफार्म पर खड़े युवक की तस्वीर घूमने लगी। बेचारा, कितना दुखी लग रहा था बीवी को विदा करते समय और ये यहाँ.....छि छि छि क्या ज़माना आ गया। एक बार फिर गुस्से की लहर मेरे तनबदन में उठी लेकिन दाँतों की किटकिटाहट के बाद शांत हो गई। आख़िरकार मैंने युवक से कहा-''आप सामने बैठ जाएँ, दो की सीट पर तीन कैसे बैठ पाएँगे, फिर सफ़र भी लम्बा है।'' युवक तो घूरते हुए चुप बैठा रहा लेकिन लड़की बोल उठी-''आधी सीट तो हमारी भी है, आपकी अकेले की नहीं।'' मैंने कहा-''आधी ही है न, फिर मेरी आधी तो मेरे लिए छोड़िए, अपनी आधी पर आप कुछ भी करें।'' लड़की ने आग्नेय नज़रों से मेरी ओर देखा और उठ बैठी। अब सिकुड़कर वे दोनों आधी सीट पर बैठे और बची आधी पर मैंने अपनी चादर डाल ली।

जैसे ही टीसी आया युवक ने अधीरता से पूछा-''सर आरएसी क्लियर हो जाएगी क्या ?'' टीसी ने स्वीच ऑन किया और चार्ट देखते हुए कहा-'' फिलहाल कोई बर्थ खाली नहीं है।'' हमारे टिकट चेक कर वह आगे बढ़ गया। मैंने टीसी से लड़के की ओर संकेत देते हुए पूछा-''आजकल वेटिंग वालों को अलाऊ करने लगे हैं क्या ?'' टीसी ने कहा -''नहीं.....''। वह आगे चल पड़ा। मुझे लगा अजीब मूर्ख है, इशारा किया फिर भी समझ नहीं आया.....कैसे-कैसे लोगों को सरकारी नौकरी मिल जाती है जबकि अच्छे-अच्छे घूमते रहते हैं। युवक मुझे ऐसे घूर रहा था जैसे कच्चा खा जाएगा। उसने एक बार फिर बत्ती बुझा दी। दोनों को सटकर बैठे देख मुझे फिर कुछ-कुछ होने लगा। मैं सोचने लगा....इससे तो अच्छा होता कि ये लेटे ही

रहती, यूँ ही इन्हें टोक दिया, जिससे इनकी तो पौ बारह हो गई। मुझे समझ नहीं आ रहा था कि मैं क्या करूँ ? खिड़की के बाहर अँधेरा, डिब्बे में अँधेरा। देखूँ भी तो किस ओर देखूँ। एसी कोच नहीं होता तो अब तक नीचे चादर बिछा कर लेट गया होता.....आख़िर कब तक बैठे रहें। यहाँ तो नीचे भी नहीं लेट सकते क्योंकि इससे तो इस लड़की और युवक के मन की हो जाएगी। आख़िरकार मैंने एक बार फिर स्वीच ऑन किया और बैग से पत्रिका निकालकर पन्ने पलटने लगा। रोशनी ने जैसे युवक की हरकतों पर रोक लगा दी। वे दोनों मुझे घूरकर देखने लगे, उन्हें ऐसे देख मुझे खुशी हुई। मुझे महसूस हुआ कि रोशनी करने का मेरा तीर निशाने पर बैठा। तभी युवक उठा और उस ओर बढ़ चला जिस ओर टीसी गया था।

कुछ देर बाद वह मुस्कुराते हुए लौटा और लड़की को बताने लगा–''हो गया काम, 500 रुपए लिए साले ने।'' मैं गफलत में पड़ गया कि जाने कौनसा दाँव खेला हरामखोर ने। तभी टीसी भी आ गया और चार्ट में से मेरा नाम पढ़कर बोला–''मिस्टर राजेश आप उधर बी–2 में 72 नम्बर पर चले जाएँ, खाली है।'' मैं हारे हुए खिलाड़ी की तरह अपना सामान उठाकर बी–2 की ओर जा रहा था तो युवक के साथ ही लड़की के अधरों पर भी विजयी मुस्कान थी। कन्फर्म बर्थ पर जाकर मैं स्वयं को दिलासा देते हुए सोचने लगा–चलो अच्छा ही हुआ वरना् रात यूँ ही काली होती। मिलना–जुलना कुछ नहीं था, नींद फालतू हराम होती। मैं कुछ देर बाद ही नींद के आगोश में पहुँच गया लेकिन उधर बी–3 की 31 नम्बर बर्थ पर चादर के नीचे एक पुरुष स्वर साफ सुनाई दे रहा था – एसी फ़र्स्ट क्लास में कराना था रिज़र्वेशन या फिर एसी टू टीयर में करा लेतीं, कम से कम पर्दे तो अच्छे रहते हैं उसमें। नारी स्वर खिलखिलाते हुए गूँजा–उसमें तुम्हारी वेटिंग क्लियर नहीं होती.....रात भर वेट करते बैठे रहते। पुरुष स्वर की खिलखिलाहट भी गूँजी।

ट्रेन तेज़ रफ़्तार से हिचकौले लेती हुई दौड़ी जा रही थी, अब दिल्ली दूर नहीं थी।

***

लघु कथा

बाजरे की रोटी

डॉ. पूरन सिंह

लंच शुरू हो गया था। रणवीर ठाकुर, जितेन्द्र मिश्रा और राजीव गुप्ता साथ–साथ खाना खा रहे थे। ये सभी लोग मेरे असिस्टेंट हैं।

यार पालक पनीर तो बहुत सुंदर बना है। बड़ा टेस्टी है। राजीव गुप्ता खाने में बहुत माहिर है।

पनीर असल में, पालक के साथ थोड़ा और होना चाहिए था तब मज़ा आता। जितेन्द्र मिश्रा को हर चीज़ थोड़ी और चाहिए होती है।

पालक के साथ मक्का की रोटी बहुत अच्छी लगती है। जब गाँव में था..... लेकिन अब क्या इस शहर में आकर सबकुछ .....। रणवीर ठाकुर रह ज़रूर दिल्ली में रहा है लेकिन उसका मन हमेशा उसके गाँव में, अतीत में ही डूबा रहता है।

मैं सभी की बातें सुन रहा था कि अम्मा–पिताजी याद आ गए थे। कैसे अम्मा लोगों के खेतों से माँगकर लाए गए पालक, मैथी, बथुआ और सरसों को मिलाकर साग बनाया करती थी और शाम को पिताजी पूरे दिन मज़दूरी करके बाजरा खरीदकर अपनी कमीज़ के दामन में लाते थे और अम्मा उसे छाँट –फटककर पीसती थी, तब बाजरे की रोटी के साथ साग खाया जाता था। सोचते –सोचते ही मुँह से निकल गया था। अच्छा आप सभी एक बात बताओ, आपमें से किसी ने बाजरे की रोटी के साथ मिक्स साग खाया है।

'बाजरे की रोटी।' जितेन्द्र मिश्रा बोला था।

'हाँ –हाँ, बाजरे की रोटी।'

'सर हम जानते हैं बाजरा..... सर, बाजरा हमारे यहाँ जानवरों के लिए बोया जाता था, सर बाजरा तो जानवर खाते थे। एक ही साँस में तो बोल गया था जितेन्द्र मिश्रा।

इतना सुनते ही मेरी आँखें से फल्ल से आँसू निकले और मेरी सब्जी में मिक्स हो गए थे। उस दिन कोई नहीं जान पाया था कि मन से निकली पीड़ा आँसुओं से होती हुई बिखर गई थी।

***

संपर्क: 240, बाबा फरीद पुरी,वेस्ट पटेल नगर, नई दिल्ली–1100008
दूरभाष : 25888754
मोबाइल: 09868846388

कानपुर निवासी गोविन्द उपाध्याय साढ़े तीन दशक से भी ज़्यादा समय से कहानी लेखन में सक्रीय। देश के लगभग सभी प्रतिष्ठित पत्र-पत्रिकाओं में कहानियों का निरंतर प्रकाशन। आंचलिक कथाकार के रूप में विशेष पहचान। कुछ कहानियों का बांग्ला, तेलगू और उर्दू में अनुवाद। गोविन्द उपाध्याय के पंखहीन, समय रेत और फूकन फूफा, सोनपरी का तीसरा अध्याय, चौथे पहर का विरह गीत तथा आदमी, कुत्ता और ब्रेकिंग न्यूज़, बूढ़ा आदमी और पकड़ी का पेड़ तथा नाटक तो चालू है.., चुनी हुई कहानियाँ, बड़े कद के लोग और घोंसला और बबूल का जंगल (दस कहानी संग्रह) हैं।
संपर्क: एफ.टी.-211, अरमापुर इस्टेट, कानपुर-208 009
मोबाइल: 09651670106
ई-मेल: govindupadhyay78@gmail.com

कटही

गोविन्द उपाध्याय

सितंबर के महीने का आख़िरी सोमवार था। लेकिन दिन में ऐसा लगने था कि मानों जेठ वाली गर्मी है। सेंट्रल ए सी पिछले दो साल से रो-रो कर चल रहा था। इस साल जून में ऐसा बंद हुआ था कि आज तक नहीं चला। जयंती अरोड़ा जैसे आफिस में घुसी, मरे हुए चूहे जैसी गंध, उनके नाक से टकराई और वह अंदर तक गनगना गई। इच्छा तो यही हो रही थी कि वापस घर चली जाए। लेकिन अब छुट्टियाँ बची ही कितनी थी। पंद्रह दिन बाद तो वह आई थी। ऑफिस खोलकर किशोर अपने साथियों के पास भाग गया था। बाकी लोग भी आते होंगे। लेकिन किसी को कोई फर्क नहीं पड़ता। लोगों के नाक बंद हो चुके हैं। वही ऑफिस में घुसते ही बेचैन हो जाती है।

वह अपनी कुर्सी पर बैठ गई। मेज़ के दराज़ से खुशबूदार अगरबत्ती निकाली और जलाकर अपने चारों तरफ घुमाया। मोंगरे के तीक्ष्ण गंध ने मरे चूहे वाली गंध को दबा दिया था। जयंती अरोड़ा के अन्दर पहने कपड़े तक पसीने से भींग गए थे। वह पंखे के नीचे आकर खड़ी हो गई। उसके पसीने से नहाए शरीर को थोड़ी राहत मिली। इधर वह बहुत जल्दी

गुस्सा जाती है। मन के विपरीत कुछ भी हुआ, उनके मुँह से माँ-बहन की गुप्त अंगों वाली गालियाँ अपने आप निकलने लगती हैं। किसी पढ़ी-लिखी औरत के मुँह से ऐसी गालियाँ सुनकर आदमी भौचक हो जाता।

जयंती अरोड़ा ने बत्तीस साल इस संगठन में काम किया। चौदह विभागों में रही। कहीं भी दो साल से ज़्यादा नहीं टिक पाई। सब उसे झगड़ालू और दुष्ट औरत समझते हैं। इस विभाग में ज़रूर आठ साल रूक गई थी। यहाँ के लोग उसे बर्दाश कर गए। ऐसा भी नहीं था, उसे यहाँ से भी हटाने का बहुत प्रयास किया गया था। लेकिन उसे कोई लेना ही नहीं चाहता था। लोगों का यह आरोप था कि वह सिर्फ वातावरण खराब करती है। स्वयं तो तनाव में रहती ही है। पूरे आफिस को तनाव में डाल देती है। धीरे-धीरे लोग उसकी आदतों के अभ्यस्त हो गए और उसकी बातों का अनसुना करने लगे। उसे ऑफिस के अंतिम छोर पर अछूतों जैसा बैठा दिया गया था। उसके पास कोई काम नहीं रहता। वह दिनभर बैठे अखबार पढ़ती और उनकी खबरों पर टिप्पणियाँ करती रहती।

जब वह इस संस्थान में आई थी, तब तीस की थी। एक खूबसूरत और जवान औरत...। नहीं, खूबसूरत, जवान और बेचारी विधवा औरत....। पति के मृत्यु के बाद मिली थी यह नौकरी। सहानुभूति के आधार पर ...। तब गोद में था शिवा। अचानक शादी के चार साल बाद ही वह सड़क पर आ गई थी, ''ओह! इस बेचारी का क्या होगा? अभी इसकी उम्र ही क्या है...। इसके ऊपर तो मुसीबतों का पहाड़ टूट पड़ा है।'' लोगों की सहानुभूति उसे और डराती थी। शिवा मात्र डेढ़ साल का था। लेकिन ऐसा कुछ नहीं हुआ। उसे नियमों के तहत पेंशन मिलने लगी और दस महीने बाद नौकरी। अब वह आर्थिक दृष्टि से किसी पर आश्रित नहीं थी। जो रिश्ते एक बारगी पति के मृत्यु के बाद दूर हो गए थे। वह पास आने लगे थे।

जयन्ती अरोड़ा ने एक गहरी साँस ली,''ये साला सुबह-सुबह दिमाग के अंदर कब्र से निकल कर पुराना मुर्दा काहें चिल्लाने लगा। जब भी निकलता है, सारा बदन चिंचिनाने लगता है। मेहरा, पाठक, अंसारी ...सब साले जाग जाते है। सबसे घिनौना तो पाठक था। बहन कहता था। मैं भी उस पर विश्वास करने लगी थी। देखने में भी बहुत सीधा लगता था। अपना दुखड़ा रो-रो कर दस हज़ार डकार गया। और जब माँगना शुरू किया तो मैं बुरी हो गई। यहाँ तक कि मेरे बारे में ढेर सारे मनगढ़ंत किस्से फैलाने शुरू कर दिए।''

जयंती अरोड़ा को पाठक ने पैसा नहीं दिया। उल्टे उसको चरित्रहीन ठहराने में कोई कसर नहीं छोड़ी। पाठक का जवान बेटा मर गया था। तब जयंती ने उसके सामने ही कहा था, ''ये एक बेवा की आह है। पाठक जी, आपने मेरा धन लूटा और धर्म लूटने में कोई कसर नहीं छोड़ी। उसी का दुष्परिणाम है यह। ऊपर वाले का डंडा लगता भले देर से है। पर लगता पूरे ज़ोर से है।''

पाठक तिलमिला कर रह गए थे। जिसने सुना वह थू-थू किया,''कैसी कमीनी औरत है। इस समय बेचारे पर दुख का पहाड़ टूटा पड़ा है। कम-से-कम अभी तो उसे चुप रहना चाहिए था।''

जयंती अरोड़ा की यह आदत बनती जा रही थी। बिना सोचे-समझे कुछ भी बोल देती थी। मेहरा की शिकायत तो उसने वरिष्ठ अधिकारी से कर दिया। वह थोड़ा रसिया था और जयंती मैडम सुंदर थी। बस वह लबराने लगा। जयंती पहले तो टालती रही। मेहरा समझता रहा कि चिड़िया दाना चुग रही है। फिर क्या था, एक दिन मौका देखकर प्रपोज कर दिया। जयंती को लगा अब पानी नाक से ऊपर जा रहा है, ''उठाई चप्पल और उसके चेहरे पर लहराया,''साले कुत्ते देख रहा है इसे, तेरे बीबी-बच्चों के सामने मारूँगी। ताकि तेरी करतूत उन्हें भी तो पता चले।''

बात वरिष्ठ अधिकारी तक पहुँच गई। अधिकारी महोदय ने समझाया,''आपको मेहरा जी से कोई समस्या है, तो लिखित शिकायत करनी चाहिए थी। इस तरह का ड्रामा करके माहौल नहीं खराब करना चाहिए था।''

जयंती अरोड़ा कहाँ दबने वाली थी। उसने फौरन जवाब दिया,''साहब, आप भी मुझे ही डाँट रहे हैं। वह जो सारे ऑफिस में गंध मचा रहा था, उसे आप कुछ नहीं कह रहे हो। उसने मुझे दो रुपए वाली... समझ लिया था।''

साहब भी भौचक। ऐसी विकट औरत उन्होंने अपनी ज़िंदगी में नहीं देखी थी। उन्होंने सिर हिलाया और जयंती अरोड़ा सीना ताने ऑफिस से बाहर।

''दो रुपए वाली...'' वाली बात पूरे संस्थान में फैल गई थी।

मेहरा तो जला - भुना था ही, ''साली पहले बताती की वह हाई प्रोफाइल चीज़ है, तो मैं उधर देखता ही नहीं। मैं तो दो रुपए वाली ही समझ रहा था।''

जयंती ने सिर झिटक कर मुर्दों को दिमाग से बाहर किया। उमस बहुत थी। लेकिन पंखें के नीचे खड़े रहने से पसीना सूख गया था। जयंती ने दुपट्टे से मुँह पोंछा और मेज़ के दराज़ से गंगाजल निकालकर कुर्सी और मेज पर छिड़कने लगी। उसके बाद दराज़ से मैली जिल्द वाली किताब निकाल पढ़ने लगी। यह वह समय था, जब ऑफिस का कोई भी बंदा उधर जाने का साहस नहीं कर सकता था। जाने का मतलब ही था, जयंती मैडम की तपस्या का भंग हो जाना। फिर प्रलय ही था।

कभी-कभी लगता वह जानबूझकर पंगे लेती थी। दूसरों को तनाव देने में उसे मज़ा आता है। लेकिन हकीकत में ऐसा था नहीं। जब उसका अच्छा मूड होता तो बहुत प्यार से बात करती थी। लोगों का सुख-दुःख सुनती। एक सफाई कर्मी के दो बच्चियों के स्कूल का पूरा खर्चा वह देती थी। लेकिन जब उनका मूड खराब होता तो किसी के हालचाल पूछने पर ही, उसको धो देती, ''नहीं ठीक हूँ ....। तू ठीक कर सकता है? नहीं न... तो फिर काहें पूछ रहा है ?''

वह काफी दुबली हो गई थी। चेहरे पर कुछ ज़्यादा ही झुर्रियाँ उग आई थीं। उसका गोरा रंग धूमिल हो गया था और तीन चौथाई चेहरा काले धब्बों से ढक गया था। वह गर्मी में भी पूरा शरीर ढकी रहती। चेहरे पर बड़ा सा काला चश्मा होता।

''बुढ़िया क्रेक हो गई है। रिटायरमेंट के बाद देखना, शहर में चुर्राइट करते हुए दिखेगी। उसको अपने दिमाग का ईलाज करा लेना चाहिए।''

''अबे वह पहले यह तो माने कि

उसका दिमाग खिसक गया है। देखते नहीं कितना पूजा-पाठ करती। सुबह-सुबह इतनी अगरबत्ती सुलगाती है कि साँस लेना दूभर हो जाता।''ऑफिस के लोग उसके पीछे तरह-तरह की बाते बनाते। जयंती अरोड़ा सब जानती थी कि लोग उसके पीछे उसकी प्रशंसा तो कदापि नहीं करते होंगे। एक औरत के लिए जितने अश्लील ढंग से सोचा जा सकता है, सोचते होंगे।

लेकिन यह कोई नहीं जानता कि वह कितने मोर्चे पर लड़ रही थी। सारी जवानी उन्होंने बेटे को देखकर काट लिया, ''शिवा तो है न...। नौकरी और शिवा की देखभाल, दोनों ही जीवन के लिए महत्त्वपूर्ण था। एक से वर्तमान जुड़ा था और दूसरे से भविष्य...। सदा खुश रहने वाली एक सीधी-सादी औरत थी वह। शुरू-शुरू में बहुत घबड़ाहट होती थी। फिर धीरे-धीरे उसी दुनिया में रम गई और उनसे ज़्यादा आक्रामक ढंग से जवाब देने लगी।''

''दो रुपए वाली ....' से वह 'कटही' कहलाने लगी थी। लोग उसे देखकर अपना रास्ता बदल देते हैं। जयंती अरोड़ा को कोई फर्क नहीं पड़ता। वह जानती है, यह डरपोक लोग हैं। अगर उन्हें देखकर वह घबरा जाती तो यही लोग उसे भभोड़ देते। उसकी दबंगई ही उसका सबसे बड़ा हथियार बन गया था। अब कोई भी उससे पंगा नहीं लेता था।

ब्रजबासी काफी साल से जयंती को जानते हैं। वह हँसते हुए कहते है,''अजीब औरत है। किसी को भी व्यक्ति विशेष से नफरत हो सकता है। स्त्री या पुरुष विरोधी हो सकता है। लेकिन अपने जीवन में यह पहला केस है, जिसे पूरे मानव जाति से नफरत है। और इस नफरत में वह क्या बोल जाएगी, कोई भरोसा नहीं...।''

ब्रजवासी भाई की बात भले अटपटी लगती हो, लेकिन वह सही कह रहे थे। एक दिन तो जयंती अरोड़ा ने महिला शौचालय के सामने चिल्लाना शुरू कर दिया,''कौन हरामज़ादी निकल कर गई थी। चोंत भर हग कर चली गई है। अरे कुतिया फ्लश चला देती। दिन भर यार लोग ला-ला कर देते हैं। खूब ठूँसती हैं। चोंत-चोंत भर हगती हैं। न खाने का तरीका मालूम न हगने....।'' बड़ी देर तक तमाशा लगा रहा। जब सफाई वाले ने जाकर दुबारा सफाई किया, तब जाकर मामला शांत हुआ।

उसे लोगों से घिन थी।खिड़की दरवाज़ों को नहीं छूती थी, न जाने कहाँ- कहाँ हाथ फिराते हैं। फिर उसी हाथ से हैन्डिल छूते हैं। मूतने जाएँगे हाथ नहीं धोएँगे। बिना हाथ धोए ही खाना ढूँसने बैठ जाएँगे। फिर उसी हाथ से खिड़की - दरवाज़े खोलेंगे। अब उसे किसी बात का भय नहीं रह गया। प्रबंधन का भी नहीं। कोई उसका क्या बिगाड़ लेगा। वह हमेशा सही बात करती है। झूठ बोलती नहीं। मार-पीट करती नहीं। फिर डर किस बात की। कभी लिखा-पढ़त वाली बात आ गई तो फिर आँखों से आँसुओं की बाढ़ आ जाती,''सबको मालूम है कि मेरे सिर पर कोई हाथ रखने वाला नहीं है। मैं एक असहाय औरत हूँ। ऊपर वाला देख रहा है। जो मुझे सताएगा। उसकी औरत भी एक दिन इस फैक्ट्री मेरी तरह आएगी।''

कभी-कभी दूसरा स्वरूप भी होता,''क्या समझते हो तुम्हीं लिखना-पढ़ना जानते हो। एक-एक की पोल खोलूँ गी। जो गंध तुम लोगों ने ऑफिस में मचा रखी है। वह सब जानती हूँ।''

अब तो लोग जयंती से उलझते भी नहीं हैं। सबका यही मानना है कि उसे छेड़ना, खुद को मुसीबत में डालना है। वैसे भी ऑफिस के ज़्यादातर लोग रिटायर हो चुके थे। नई भर्तियाँ हुई नहीं थीं। जो शेष बचे थे वह अपने रिटायरमेंट के दिन गिन रहे थे। बस छः-सात लोग...। जयंती से कुछ दिनों बाद उन्हें भी जाना था..।

वह डरती थी, तो बीमारी से। उसे डाक्टर के पास जाने से घबड़ाहट होती थी। उसने अपने मोहल्ले के एक होम्योपैथिक के डॉक्टर को पकड़ रखा था। उसने कभी कोई जाँच नहीं कराई। उसे हमेशा लगता कि यदि जाँच में कोई गंभीर बीमारी निकल गई तो...? फिर डॉक्टरों के इंतज़ार में लाइन लगाओ। अस्पताल में एड़ियाँ रगड़ो। पैसा फूँको.....। जयंती अरोड़ा का दिल बैठने लगता। जब नहीं पता है तो एक दिन चलते-चलते लुढ़क जाएगी। बहुत जी लिया है। ज़िंदगी का हर रंग तो देख ही लिया। दो दिन ज़्यादा जी लेगी, तो क्या बन जाएगा। दो दिन कम जिएगी तो क्या बिगड़ जाएगा।

जयंती के घर के आस-पास के लोग भी उससे त्रस्त थे। यहाँ तक कि उसका इकलौता बेटा भी। शिवा बैंक में नौकरी करता था। सुंदर था, किसी प्रकार का कोई व्यसन नहीं था। उसके बावजूद आज तक वह कुँआरा था। जब भी कोई रिश्ता आता, जयंती का व्यवहार देखकर ही बिदक जाता। एक बार तो सब कुछ लगभग तय हो गया था। लड़की भी सुंदर थी। जयंती ने सिर्फ इस लिए उस परिवार में रिश्ता नहीं किया, उनके घर के टॉयलेट से बदबू आ रही थी। शिवा ने माथा पीट लिया। शिवा ने तैंतीस पार कर लिया था। जयंती के व्यवहार को देखकर उसने विवाह के बारे में सोचना बंद कर दिया। उसे लगता अगर कहीं विवाह हो गया, तो वह लड़की माँ को कैसे झेलेगी। वह माँ को छोड़ नहीं सकता था और न माँ अपनी आदत छोड़ सकती है।

सच तो यह था कि जयंती किसी से बात नहीं करना चाहती थी। उसे लगता सब उसके खिलाफ षड्यंत्र कर रहे हैं। सब उसको नुकसान पहुँचाना चाहते हैं। उसे बदनाम करने के बहाने ढूँढ़ते हैं। यहाँ तक कि शिवा पर भी उसे विश्वास नहीं था। वह अपने पैसे का हिसाब-किताब गुप्त रखती थी। उसने बैंक से ए टी एम कार्ड नहीं लिया था। वह मोबाइल फ़ोन भी नहीं रखती थी,''क्या ज़रूरत है मोबाइल रखने की। मुझे किसी से बात नहीं करनी है। मैं जानती नहीं क्या। लोग मोबाइल में क्या देखते हैं। ज़रूरत भले न हो, लेकिन दिखाने के लिए मोबाइल ज़रूर चाहिए। 'हॉलीवुड-बॉलीवुड' देखने के लिए...।''

जयंती अरोड़ा ने वह दिन भी देखा था। उसके विपत्तियों का दौर। जब अचानक पति बीमार पड़ गया। बीमारी लंबी खिंचती गई। घर की जमा पूँजी के साथ उसका ज़ेवर तक बिक गया। न मायके ने साथ दिया, ना ही ससुराल वालों ने। झौआ भर यार-दोस्त थे। वह भी सब गायब हो गए। अकेले लड़ती रही थी सारी मुसीबतों से...। पति के मरने के बाद उसे जब ग्रेचुएटी के पैसे मिलें तब सास-ससुर अचानक प्रगट हो गए,''मेरा भी बेटा था, उसके पैसे पर हमारा भी तो हक है...। आख़िर हमारा बुढ़ापा कैसे कटेगा। तुम्हें तो पेंशन मिल रही है। नौकरी भी मिल

जाएगी। हमारा तो अब कोई सहारा नहीं है।''

जयंती अरोड़ा के तन -बदन में आग लग गई थी। वह सीना तानकर उनके सामने खड़ी हो गई थी,''एक्को फूटी कौड़ी नहीं मिलेगा। जब बेटा एड़ियाँ रगड़ रहा था, तब आप दोनों कहाँ थे। जब मैं उसकी निशानी अपने कोख में लिए, उसके इलाज के लिए अस्पताल में भटक रही थी, तब आप लोग कहाँ थे। आप लोगों को ऐसा कहते हुए शर्म आनी चाहिए।'' खूब तमाशा खड़ा हो गया था। लेकिन तब लोगों ने भी उसका ही पक्ष लिया था और बूढ़ा-बुढ़िया आँखों में आँसू लिए मुँह छिपा कर चले गए।

जयंती ने उसी पैसे से यह घर खरीदा था। वह अच्छी तरह जानती थी कि अगर किसी को ग़लती से भी उँगली पकड़ा दी तो उसे फौरन दबोच लेंगे। यही कारण था कि धीरे-धीरे लोग उससे कटने लगे थे। जब तक वह जवान थी, वह सबसे भिड़ती रही। अब भिड़ना उसकी आदत में शामिल हो गया था। बुढ़ापे में वह ज़्यादा उग्र हो गई थी। उसके दिमाग में तरह-तरह के ख़याल आते। उसे लगता ऑफिस हो या घर, सभी उसे नुकसान पहुँचाने का षड्यंत्र कर रहे हैं। दो आदमियों को बातें करता देखकर उसे लगता कि उसकी बुराई कर रहे हैं। कोई उसकी तरफ फ़ोन करके बात करता तो पहले ही चिल्लाने लगती,''दूर-दूर...इसे दूर रखो। जेब में रखो। फिर बात करो।''

उसे लगता वह बातों को टेप कर रहा है। या उसकी फोटो खींचने की कोशिश कर रहा है। उन तस्वीरों को अश्लील तस्वीरों के साथ जोड़कर उसे बदनाम करेगा। ऑफिस में जब वह नहीं आती, सब कुछ सामान्य रहता। उसके आते ही पूरे ऑफिस में अदृश्य सा तनाव फैल जाता। पिछले एक वर्ष से उसे कोई काम नहीं दिया जाता था। कौन देगा काम...? उसके किए गए काम में इतनी त्रुटियाँ होती कि सामने वाले को सब कुछ दुबारा करना होता। अब वह अक्सर छुट्टियों पर रहती। उड़ती-उड़ती खबर यह मिली थी कि शिवा ने घर छोड़ दिया था। उसने जयंती अरोड़ा की मर्ज़ी के विरुद्ध विवाह कर लिया था। लड़की भी सजातीय नहीं थी। अब माँ, अपने नालायक बेटे का मुँह नहीं देखना चाहती। इस बात में कितनी सच्चाई थी, यह कोई नहीं जानता था। फिलहाल उसके बाद से वह ज़्यादातर छुट्टियों पर ही रहती थी। ऑफिस के लोगों में सकून था। ऑफिस के लोग दिन गिन रहे थे। जल्द ही वह शुभ दिन आए, जब जयंती अरोड़ा से इस ऑफिस को मुक्ति मिले।जयंती के रिटायर होने के एक माह पहले से ही, ऑफिस फिर तनाव में आ गया,''इस सिरफिरी औरत को विदाई कैसे दी जाए ?''

जयंती ने धमकाना शुरू कर दिया था, ''जाने के पहले मैं आधिकारियों को इस ऑफिस के लोगों की सारी करतूतें बताकर जाऊँगी। यहाँ क्या-क्या होता है। क्या मुझे नहीं मालूम...। मुझे विदाई पार्टी का कोई लालच नहीं है। देते रहना मेरे पीछे गाली। मुझे कोई फर्क नहीं पड़ता।''

''क्या भरोसा इस पागल औरत का। इसके दिमाग में बेहूदा कहानियाँ पलती रहती हैं। वैसे तो अधिकारी भी इसकी बात पर ध्यान नहीं देंगे। फिर भी..?'' लोगों के मन में आशंका तो थी ही।

पर ऐसा कुछ हुआ नहीं। रिटायरमेंट से एक सप्ताह पहले ही, जयंती बदल गई थी। वह खुद ही सबको अभिवादन करने लगी थी। लोगों से मुस्कराकर बात करती। उसने विदाई पार्टी के लिए विनम्रता से मना कर दिया, ''मुझे ऐसी औपचारिकता की ज़रूरत नहीं है। मेरे सामने प्रशंसा करेंगे। मेरी बड़ाई में झूठे कसीदे पढ़े जाएँगे। मैं जानती नहीं हूँ क्या ज.कि लोग मुझे 'कटही' कहते हैं ज।''

सेवानिवृत्त वाले दिन, जब वह जाने लगी तो उसके हाथ में संस्थान के निदेशक द्वारा दिया गया बुके था। लोगों ने उसे मुख्यद्वार तक छोड़ने का आग्रह भी किया, लेकिन उसने सख्ती से मना कर दिया,''मैं यहाँ अकेली आई थी। अकेली ही जाऊँगी। आप लोगों को धन्यवाद...।''

उसके गंभीर चेहरे का भाव बदलने लगा था। जब तक उसकी आँखों में आँसू आएँ, वह तेज़ी से ऑफिस से बाहर निकल गई। मुख्यद्वार पर उसका रिक्शा वाला खड़ा था। वह रिक्शे वाले को देखकर मुस्कराई और बैठ गई। उसने मुख्यद्वार द्वार की तरफ देखा। उसकी आँखों में धूप का बड़ा वाला चश्मा था। रिक्शा आगे बढ़ने लगा था।

***

लघु कथा

कमर के नीचे का यथार्थ

डॉ. पूरन सिंह

दिव्या घोषाल ने पढ़ाई की और बहुत बड़ी आर्किटेक्टर बनी। उसने जब से व्यावसयिकता में कदम रखा तब से पीछे मुड़कर नहीं देखा। करोड़ों अरबों रुपयों की मालकिन की आँखों में भी सपने तैरने लगे। लोगों के लिए मकान बनाते-बनाते अपने लिए एक छोटे से घर के सपने। तभी एक दिन अपने पापा की ओर आँखें उठाकर देखा तो पापा को उनमें सपने साफ-साफ दिखाई देने लगे थे।

पापा तो पापा ठहरे। बस बेटी के लिए एक राजकुमार की तलाश जारी कर दी। बड़े-बड़े रहीस, नेता और बिजनेसमैन स्वयं उनके आगे सजदा करने लगे थे। आख़िर उनकी बेटी ऊँचाइयों के शिखर जो पर थी।

देश के एक बहुत बड़े आइकॉन कहे जाने वाले व्यावसायिक घराने से बेटी का रिश्ता तय करने के आतुर पापा की आँखों में खुशियाँ ही खुशियाँ भर गई थीं। लड़की के परिवारवालों ने अपने बेटे को लड़की के बारे में सब कुछ बताया और उसकी राय माँगी तो लड़के ने कहा था, ''यह सच है कि दिव्या घोषाल आज बहुत बड़ी बिजनेस आइकॉन है। अच्छे-अच्छे लोग उसके आगे पानी भरते हैं। मैं भी उनमें से एक हूँ, लेकिन आप सभी ने कभी यह सोचा कि इस शिखर तक पहुँचते-पहुँचते उसकी कमर के नीचे की सच्चाई क्या रही होगी। मैं उसे एक पत्नी के रूप में कभी स्वीकार नहीं कर सकता हूँ।''

दिव्या घोषाल को जब यह पता चला कि उसके शिखर पर पहुँचने के बाद भी उसके चाहने वाले उसकी कमर के नीचे के यथार्थ में उलझे हुए है तो वह रो पड़ी थी।

दुनिया के लिए बड़े-बड़े महल खड़े करने वाली बेटी अपने लिए एक छोटा सा घर सजाने का सपना लिए-लिए ही सो गई थी।

***

संपर्क: 240, बाबा फरीद पुरी,वेस्ट पटेल नगर, नई दिल्ली-1100008
मोबाइल: 09868846388

रिफ्यूजन

चन्द्रकान्ता अग्निहोत्री

हरियाणा निवासी चन्द्रकान्ता अग्निहोत्री के ओशो दर्पण (ओशो -साहित्य पर आधारित), वान्या और गुनगुनी धूप के साये (काव्य संग्रह), सच्ची बात (लघु कथा संग्रह) तथा गीतिका लोक-साँझा काव्य संग्रह हैं। मनोरमा, नवनीत, मनस्वी, दैनिक भास्कर, दैनिक ट्रिब्यून, काव्यायनी,पंजाब -केसरी, शुभ-तारिका, पंजाब-सौरभ, पुष्पगंधा विभोम-स्वर व कथा समय आदि कई प्रतिष्ठित पत्र - पत्रिकाओं में कविताएँ, कहानियाँ व आलोचनाएँ आदि प्रकाशित। कहानी-अकेली हरियाणा साहित्य अकादमी द्वारा पुरस्कृत। संप्रति सेवा-निवृत ऐसोसिएट प्रोफ़ेसर व पूर्वाध्यक्ष हिन्दी-विभाग, राजकीय कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय, सेक्टर -11,चंडीगढ़।
संपर्क: #404,सेक्टर -6,पंचकूला हरियाणा 7134109
ईमेल:agnihotri.chandra@gmail.com
मोबाइल:+917973833595

हॉस्पिटल का माहौल न जाने कैसा होता है। अच्छा -भला व्यक्ति भी यहाँ आकर थका -थका सा अनुभव करता है। भागते -दौड़ते, तेज़ कदमों से चलते परेशान लोग। चारों ओर केवल उदासी ही उदासी। उदासियों के कारण चाहे अलग -अलग ही क्यों न हों ?

इस गर्मी में सुबह की धूप भी परेशानी को और बढ़ा रही थी। रमा के कमरे से निकलते ही मिसेज़ राधा की नज़र सामने वाले कमरे पर पड़ी। किसी महिला को उसने बड़ी ही कठिनाई से अपनी ओर देखते पाया। पाँव ठिठक से गए मानों ज़मीन से चिपक ही गए हों। चेहरे जाना-पहचाना सा लगा, शायद लता, वह मन ही मन बोली। कितने वर्ष बीत गए पर लगता है जैसे कल ही की बात हो। याद ताज़ा हो जाने का शायद यही अर्थ है। साल,दिन, महीने सब बीतते हैं लेकिन, और कुछ नहीं बीतता। मुँह चिढ़ाता, रुलाता और कभी- कभी हँसाता हमारा अतीत सदा सामने खड़ा है। हृदय के किसी कोने में दबी छुपी यादें और उनका संसार।

'हेलो मिसेज राधा !'लता ने आवाज़ दी थी। राधा को ऐसा लगा मानों आवाज़ कहीं बहुत दूर से आई थी। वह जैसे सपने से जागी और लता के पास पहुँच गई।

'हेलो! ....लता। इतने वर्षो बाद। क्या हुआ ? कितनी दुबली हो गई हो। उसने लता का हाथ अपने हाथ में लेते हुए हैरानी भरे भाव में कहा।

'बस हार्ट प्रोब्लम है। आजकल तो कॉमन है यह सब। लता ने कुछ मुस्कुराने की कोशिश करते हुए कहा।

'कब से है यह प्रोब्लम ?'

'कई साल हो गए।'

'ओह्ह.! कौन है यहाँ तुम्हारे पास ?'

'मेरी फ्रेंड है ...अनीता। मेरे साथ ही रहती है। अभी वह घर गई है और

आप ? लता ने बड़ी संदीजगी से पूछा।

'कोई हैं दूर के रिश्ते में। उन्हें ही देखने आई थी। अभी तो नीचे जा रही हूँ, काउन्टर पर पैसे जमा कराने है। फिर मिलती हूँ तुमसे।

'अच्छा।' उसने बड़े आभार से राधा की ओर देखा।

राधा यह सोच रही थी कि आज अगर किशोर होता तो शायद उसकी यह अवस्था न होती। और उसका बच्चा ? क्या हुआ उसका ? और किशोर .....?

उसे याद आ रहा था, उसने रिटायर होने के बाद कुछ समय पहले इस नए शहर में एक बार उनके नाम का एक विज्ञापन देखा था। तब ध्यान ही नही दिया था और अब तो उसने सोचा भी नहीं था कि उसका सामना लता से होगा या किशोर संबंधी किसी सूचना की बात उसके मन में उठेगी। बार -बार वह विज्ञापन उसकी आँखों के आगे घूमता रहा।

राधा के कदम रैम्प पर जल्दी -जल्दी बढ़ने लगे। उसने महसूस किया,नीचे उतरना कितना आसान है और चढ़ना कितना मुश्किल।

अब एक कसैला सा शब्द उसके भीतर कड़वाहट सी घोल रहा था। लता के लिए क्या सोचना,उसने अपने मन को समझाया। जब हमारा पूरा का पूरा समाज ही ऐसा सोचता हो तो किसी एक व्यक्ति को दोष क्यों देना, और लोग तो जैसे तैयार ही बैठे हैं कि कुछ मिल जाए ऐसा कहने को जिससे मन की पूरी भड़ास ही निकल जाए तो क्या बुराई है। दंगों में क्या होता है ? न किसी से दुश्मनी न कोई वैर। फिर भी अक्सर देखा गया है कि मौका मिलते ही, बस मारो, काटो, अपनी हैवानियत को तृप्त करो।

देश के बंटवारे से इतना कष्ट पाने के बाद भी अब किसी को क्या कहना? अपने ही देशवासियों ने अपने ही भाई -बहनों के दु:ख को नहीं समझा। जो मर गए वो मर ही गए, जो बच गए उन्हें शरणार्थी कहा, रिफ्यूजी कहा, छि:.....। अपने ही देश में उन्हें यह नाम मिला।

आज़ादी के तीस वर्ष बाद यह शब्द उसे बहुत कुछ याद करा गया।

बंटवारे के बाद उस छोटे से कस्बे में आए अभी तीन महीने ही हुए थे। एक स्कूल में अध्यापिका के पद के लिए आवेदन पत्र दिया। पर बिना किसी प्रमाणपत्र के नौकरी मिलना असम्भव था। लायलपुर के स्कूल का नाम भी बताया पर कोई लाभ न हुआ। अंतत: स्कूल की कमेटी के सदस्यों की सहायता से लायलपुर में नौकरी करने का प्रमाण पत्र मिल ही गया। और क्या चाहिए था? निक्की के बाऊ जी को लाइब्रेरियन की जॉब मिल गई, जो घाव बंटवारे ने दिए थे वे कभी भर तो नहीं सकते थे पर जीने का सहारा मिल गया था।

जब वह पहले दिन स्कूल गई थी उसे सब बहुत अच्छा लगा था। स्टाफ, प्रिंसिपल और बच्चे भी। लता ने ही उसका परिचय सबसे कराया था। जगह बदली है पर सब कुछ वैसा ही, अपना सा। पर जैसे ही वह स्टाफ रूम से बाहर निकली किसी ने पीछे से कहा, 'रिफ्यूजन' है।

कौन होगा ?शायद लता ही थी। उसी की आवाज़ थी। बुरा लगने को बचा ही क्या था। अचानक सब कुछ छूटना, लाहौर स्टेशन पर गाड़ी का दो दिन खड़े रहना; मौत के साए में गोद में छोटी सी बच्ची को लेकर गाड़ी की छत पर दो दिन तक बैठे रहना, व सामने हरी वर्दी वालों को नंगी तलवारें लिए घूमते देखना। उस गाड़ी से पहले जाने वाली गाड़ी काट दी गई थी। लोग ऐसा नहीं कहते थे कि लोगों को मार दिया,कहते थे गाड़ी काट डाली गई। लोगों की क्षत-विक्षत लाशें हर जगह बिखरी पड़ी थीं। मौत का रास्ता देखते कराहते लोग। अब इससे अधिक और क्या देखना बाकी था ? उसे जो अब नौकरी मिली थी उसके लिए निश्चय ही बहुत बड़ी बात थी। यह उसके लिए बहुत कुछ था पर सब कुछ नहीं। ख़ुशी तो बहुत पीछे रह गई थी, जो पीछे छूटा वह तो अब सपना ही था। घर और शहर तो ऐसे छूटे जैसे कभी अपने थे ही नहीं। घर की याद आते ही आँखों में आँसू आ गए। इतनी बड़ी हवेली, वह सारा ठाठ -बाठ अब कहाँ ?सब ऐसे छूटा जैसे अपना था ही नहीं।

जो अपनी इन आँखों से देखा उसे याद करके आज भी दिल की धड़कन उस दिन की तरह रुकने लगती है।

स्टेशन के पास ही घर था। अचानक ज़ोर -ज़ोर से आवाज़ें आने लगीं.....

मारो मारो,पकड़ो -पकड़ो, सुनकर वह जल्दी से अपनी बच्ची को उठाकर छत पर गई थी, तो जो दृश्य देखा वह दिल दहलाने के लिए काफी था। हरी वर्दी पहने लोग नंगी तलवारें हाथ में लिए स्टेशन पर भाग रहे थे और वह बदहवास सी अपने पति को आवाज़ें लगाने लगी थी पर उस शोर में कौन सुन सकता था। जान बचाते भागते लोगों में कहीं भी निक्की के बाऊ जी उसे दिखाई नहीं दे रहे थे। वह और ज़ोर से चिल्लाने लगी। कुछ नहीं हुआ था बस उसकी आँखों के आगे अन्धेरा छा गया था। फूली हुई साँस,सहमा हुआ वजूद और रोम -रोम पर दहशत की मोहर। तभी नीचे देखा, निक्की के बाऊ जी भाग कर आ रहे थे। आते ही उन्होंने दरवाज़ा बंद किया और निक्की को गोद में लेकर उसे बेतहाशा चूमने लगे।

फिर उन्होंने कुछ सामान जो बाँध रखा था, उठाया और राधा की ओर देख कर कहा चलो, यह गाड़ी निकल गई तो दूसरी न जाने कब मिलेगी। अब शोर भी कम है शायद कहीं और चले गए हैं वे लोग। अब थोड़ी शान्ति है।

कुछ देर बाद वे सब स्टेशन पर थे। सामान रखा ही था कि कुछ लोग आए सामान उठा कर ले गए। अब एक बक्सा और एक चारपाई थी। एक अंतहीन शोर। देखते ही देखते गाड़ी खचाखच भर गई थी। निक्की और राधा को गाड़ी की छत पर बिठाया और कहा, मैं फिर आऊँगा, बहन शारदा को भी लाना है। पलक झपकते गाड़ी चल पड़ी।वह कुछ भी न कह पाई थी। उसके पास था आँसुओं का सैलाब, निक्की और निक्की के बाऊ जी की चिंता। उसे होश ही न था,अब जो हो, सो हो। वह कर भी क्या सकती थी।

गाड़ी अचानक लाहौर रुकी तो दो दिन रुकी रही।

ज़िंदगी और मौत में यह कैसी आँख मिचौनी थी ? कैसे वह उस चारपाई पर दो दिन बैठी रही। दो दिन दो सदियों जैसे लगे थे उसे। निक्की को गोद में लेकर झपकी कैसे ले सकती थी ? गाड़ी इसलिए रुकी

रही क्योंकि अब जो पाकिस्तान बना था वहाँ आने वाली गाड़ी अभी नहीं आई थी। अगर इधर आने वाली गाड़ी ठीक -ठाक पहुँचती है तभी वह गाड़ी सही सलामत हिन्दुस्तान पहुँचेगी अन्यथा काट दी जाएगी।

मौत पल भर में आ जाती है तो बात कुछ और ही थी लेकिन दो दिन मौत की तलवार सर पर लटकती ही रही। ऐसा लगा था मानों हर साँस, हर धड़कन पर मौत का संगीन पहरा था।

पास के गाँवों के लोग खाने-पीने को कुछ दे जाते थे। अगस्त का महीना, तेज़

धूप और पानी को तरसते लोग।

क्या कुछ हुआ नहीं था, औरतों के साथ बलात्कार, माँ-बाप के सामने बच्चियों से बलात्कार। स्त्रियों की लाशों से कुएँ पटे पड़े थे। धरती माँ क्रंदन कर रही थी। उसकी ही औलाद एक दूसरे के खून की प्यासी थी। न जाने इस पृथ्वी पर कितनी बार खून की होली खेली गई। मनुष्य कुछ नहीं सीखता। इतिहास बार-बार दोहराता है खुद को। खूनी इतिहास।

वक्त की मार से कुछ अपनी जान बचा कर अपने ही देश में लौटे तो उन्हें रिफ्यूजी कहा गया। वाह .....। अपने ही निर्दोष लोगों को इस तरह मरते देख कर भी हम नहीं बदलते। धर्म, सम्प्रदाय, जाति, प्रान्त, समाज व सरहदों के नाम पर कितना खून बहा है। मिला क्या ? पिछले तीन हज़ार सालों में पाँच हज़ार युद्ध।

ओह्ह....वह भी किन बातों में उलझ गई। सिर्फ उसके सोचने से कुछ न होगा।

जब से वह स्कूल जाने लगी है उसने अपने भीतर एक परिवर्तन सा महसूस किया था। क्या था, पता नहीं, उसकी समझ से परे था। लेकिन कुछ अच्छा ही था। पर यह सब अधिक दिन नहीं चला।

उसके स्कूल ज्वायन करने के कुछ ही दिन बाद स्कूल की अध्यापिकाओं ने हड़ताल कर दी। उसे भी हड़ताल में शामिल होने के लिए कहा गया। उसने सबको समझाया कि वह हिस्सा नहीं ले सकती; क्योंकि एक तो स्कूल वालों ने उसकी बहुत मदद की है दूसरा वह तो अभी आई है स्कूल में। पर किसी ने उसकी बात नहीं मानी बल्कि उसका बहिष्कार कर दिया। उससे कोई भी बात न करता था। कुछ दिन बाद हड़ताल खत्म हो गई। उसे लगा बात खत्म हो गई।

एक दिन नोटिस-बोर्ड पर एक नोटिस पढ़ा जिसमें वार्षिकोत्सव की तैयारी के विषय में विस्तार से बताया गया था। देश की स्वतन्त्रता के बाद यह पहला उत्सव था। बड़ी गहमागहमी से तैयारियाँ होने लगीं।

उत्सव का दिन भी आ गया। राधा भी ख़ुशी -ख़ुशी स्टाफ के साथ बैठ गई। प्रोग्राम में एक नाटक भी था। उसमें एक दृश्य था.....एक फैक्ट्री के सब लोग हड़ताल पर जाते हैं, लेकिन एक रिफ्यूजी कर्मचारी हड़ताल पर नहीं जाता, परिणाम स्वरूप सभी कर्मचारी मिलकर उसका मुँह काला करके बाज़ार में घुमाते हैं और उसे असहयोगी करार देते हैं। यह देख राधा वहाँ से उठ जाती है और बिना किसी को कुछ कहे घर आ जाती है।

देश के स्वतंत्र होने के बाद क्या इस तरह की बातों से उन शहीदों को श्रद्धांजलि देनी चाहिए थी। अभी तो घाव ताज़ा था और दर्द असीम। क्या यही भावनाएँ थीं उन लोगों के लिए; जिन्होंने आज़ादी के हवन कुण्ड में अपने परिवारों व अपने घरों की आहुति दी थीं।

एक दिन उसे पता चला कि यह नाटक लता ने तैयार करवाया था। उसने एक लम्बी साँस ली।

पैसे जमा करवा कर वह लौट रही थी यन्त्रवत्।

चलने की गति धीमी थी। धीरे -धीरे चल कर वह लता के पास पहुँची। तभी लता ने करवट बदली।

उसने प्यार से लता का हाथ अपने हाथ में लिया और कहा,'किशोर कभी मिले?'

'नहीं। आते तो भी क्या होता ?'लता ने रुआँसे स्वर में कहा।

आज बात कुछ और है। उन दिनों विधवा के लिए सर उठा कर जीना कठिन था।उस दिन आप मुझे नहीं मिलती तो मैं मर ही जाती। लोग मुझे मार ही डालते। मुझे दु:ख है मैंने आपके साथ कैसा व्यवहार किया, आपको रिफ्यूजन कहा। जबकि रिफ्यूजन तो मैं हूँ, मैं। वह फूट -फूट कर रो पड़ी।

'पुरानी बातों को याद करके रोते नहीं। अतीत केवल सीखने के लिए होता है, आज की सोचो। '

लता किसी गहरी सोच में डूब गई। राधा कुछ देर बैठी फिर बोली।

'अभी मैं चलती हूँ। जल्दी ही आऊँगी। तुम आराम करो।

लता ने मुस्कुरा कर सर हिला दिया। चारू चली गई। फिर क्या था ?किशोर को याद करते ही शुरू हो गया स्मृतियों का लम्बा सिलसिला।

वह बाल विधवा थी पर थी खूबसूरत। विवाह तो हो नहीं सकता था, यह वह जानती थी। फिर भी कभी -कभी उसके दिल की धड़कन उसे कुछ कहती। उसे अपने रोम -रोम में जीवन का स्पन्दन अनुभव होता। उसके भी दिल में शहनाइयाँ बजतीं। काश !वह भी सपने देख सकती। लोगों के विवाह देखती तो मन में एक टीस पैदा होती।

एक दिन उसने सचमुच सपना देखा। स्कूल में नए प्रिंसिपल आए थे .....किशोर।

पहली झलक में ही इतना भा गए थे कि न चाहते हुए भी वह उनकी ओर आकर्षित होती चली गई। उन्हीं की सोच में डूबी रहती। जितना बाहर निकलना चाहती, उतना अधिक उनकी याद में डूबती जाती। उन्हें देखे बिना उसे चैन ही न पड़ता। कोई न कोई बहाना बना कर ऑफिस पहुँच जाती। वह यह भी अनुभव कर रही थी कि वह आधारहीन जगत् में प्रवेश कर रही है। अजन्मी पीड़ा और अभूतपूर्व सुख। सुख की रिमझिम को अनुभव किया उसने। इस सुख में उसका तन-मन दोनों भीग गए थे। न जाने उसे क्या हो रहा था था। चारों और उसे किशोर दिखाई पड़ते। वह चलती तो जमीं पर थी पर लगता जैसे पंख लग गए हों। वह हर समय इस संदेह से भी घिरी रहती मानों उसे कोई देख रहा है।

किशोर भी उसे चोर नज़रों से देखने लगे थे शायद वे भी प्रेम करने लगे थे।

कई बार चैकिंग के बहाने उसकी कक्षा में चले जाते। आँखें मिलती और झुक जातीं। बस एक बासंती बयार ने उसे घेर लिया था। उसकी खुशबू उसके रोम-रोम में प्रवेश कर रही थी।

इस तरह कई मास बीत गए। एक बार अधिक अस्वस्थ होने के कारण वह कुछ दिन स्कूल नहीं गई। यही सोच रही थी,

कितने दिन हो गए किशोर जी को देखे।

तभी दरवाज़े पर दस्तक हुई। दरवाज़ा खोला, सामने किशोर। क्या करे, क्या कहे, विश्वास ही न हो रहा था।

आप ?उसने घबरा कर कहा।

वे जल्दी से भीतर आ गए। पता नहीं किस्मत उस दिन अच्छी थी या बुरी पर लता के माता -पिता शहर से बाहर थे। उन्हें इतना समीप पाकर वह काँपने लगी। उसके हाथ -पाँव ठंडे पड़ गए और वह चक्कर खाकर गिर पड़ी। किशोर ने ही उसे सँभाला। वे उस पर झुके हुए थे। गर्म साँसों की लयबद्धता ने दोनों को घेर लिया। जैसे ही उन्होंने उसे बाहों में भरा, वह मोम की तरह पिघलती चली गई और कभी बर्फ की तरह घुलती रही। कभी चाशनी बन लिपटती रही। वैसे ही नदी जैसे अपने से बहती है, हवा जैसे अपने से चलती है, जैसे धूप खिलती है, कलियाँ फूल बनती हैं; चाँदनी पर जैसे निखार आता है वैसी ही थी लता उसके चौड़े वक्षस्थल पर जैसे कोई बेल वृक्ष से लिपटी हो। वह नहीं थी, जो हुआ उसकी समझ से परे था। फिर क्या था ?एक मौन स्पंदन। सब ठहर गया था, सूर्य, चाँद, पृथ्वी और तारे सब। दुनिया तो इसे ग़लत ही कहेगी। पर उस दिन से सब बदल गया था। वह तो पवित्र हो गई थी।

दिन बीतने लगे। कभी -कभी वह आशंकाओं से घिर जाती थी। भीतर एक भराव था, एक चैन, एक अनुग्रह का भाव। उसे लगा वह एक पूरा अस्तित्व है, पूर्ण सृष्टि, पूरी कायनात; लेकिन अब वह किशोर का सामना करने से सकुचा रही थी। इस सारे परिवर्तन को राधा ने भी महसूस किया पर कहा कुछ नहीं।

एक दिन उसकी माँ को पता चला की वह गर्भवती है, घर के लोगों को भी पता चला। बात घर से बाहर भी निकली। आगे कोई बात करता पर किशोर को तो अमेरिका जाना पड़ गया। कुछ महीनों के लिए जाना था। किशोर बात भी करना चाहते थे। वे लता के घर गए, लता ने ही दरवाज़ा खोला, सामने किशोर को देखते ही वह फफक-फफक कर रो पड़ी पर मुँह से आवाज़ तक न निकली। उधर लता के माता -पिता ने बात करने से इनकार कर दिया और किशोर को घर से निकल जाने के लिए कहा। अपमानित अनुभव करते हुए भी जाते -जाते उसने जैसे लता को पूरा आश्वासन दिया था कि वह लौट कर अवश्य आएगा।

वह दिन बड़ा मनहूस था जब गली मोहल्ले के लोग इकट्ठे होकर लता के घर आ गए, उसे नीचे बुलाया, एक आदमी और एक औरत ने उसे पकड़ कर उसका मुँह काला किया और बाज़ार में घुमाया, उसे मारा भी बोले ....यही सिखाओगी तुम बच्चों को तुम्हें तो डूब मरना चाहिए। एक विधवा होकर और एक अध्यापिका होते हुए भी तूने उस लफंगे के साथ मुँह काला किया इस शहर से निकल, हमारी बहू -बेटिओं पर क्या असर पड़ेगा सोचा है तुमने ?

वह सड़क पर भाग रही थी। सामने राधा का घर था, उसने द्वार खटखटाया। द्वार खुला, सामने राधा को पाकर उससे लिपट गई। ज़ोर-ज़ोर से रोने लगी।

'किसने किया तुम्हारा यह हाल ?' उसने सामने खड़े लोगों से कहा .....'क्यों पड़े हो इसके पीछे ?'

'तुम्हें पता है यह विधवा है।'भीड़ में से कोई बोला।

'तो इसमें इसका क्या दोष ?'

'यही तो दोष है और फिर यह माँ बनने वाली है, किशोर के बच्चे की। यही कह रही है। राम जाने।'

'तो उसी से शादी कर दो। इस तरह पहरा देने से तो अच्छा है। शादी कर दो।'

'यह बालिग़ है, अपने धर्म कानून को अपने पास रखो। शादी कर दो।' राधा ने पूर्ण विश्वास से कहा।

'हरगिज़ नहीं। यह तो उसको भी खा जाएगी जैसे पहले को खा गई।' ये उसके अपने थे शायद जो बोल रहे थे।

कुछ देर हंगामा करने के बाद सब चले गए। वह और राधा वहीं बैठे रहे। फिर राधा ने उसे समझाया -बुझाया था।

'कौन ज़िम्मेवार था उसकी हालत का ? यह सब सोचते -सोचते न जाने कब उसकी आँख लग गई। सुबह उठी तो अनीता को पास बैठे देखा। अनीता ने चाय मंगवाई। लता उठ कर फ्रेश हुई। तभी थोड़ी देर बात राधा को आते देखा।

'अब कुछ ठीक लग रही हो। चाय पी लो।'

'आप भी।'

'नहीं मैं तो चाय पीकर ही आ रही हूँ।'

चाय पीकर अनीता जाने लगी। फ़ोन करना। किसी चीज़ की ज़रूरत हो तो शरमाना मत। मैं चलती हूँ। अनीता ने कहा।

चाय की चुस्कियों में अतीत घुलने लगा।

एक खुश -खबरी दूँ तुम्हें। चाहती थी ख़ुशी खुद तुम्हारे दामन में आ गिरे ;घेर ले तुम्हें, पर मुझसे रहा नहीं जा रहा। पूरी खोज खबर के बाद किशोर का पता लगा पाई हूँ। वे भी इसी शहर में हैं और तुम जानती ही नहीं। एक शैक्षणिक संस्थान चलाते हैं। मुस्कुराते हुए बोली राधा।

लता उसे विस्फारित नेत्रों से देख रही थी। उसकी आँखों में विस्मय था, आशंका थी लेकिन ख़ुशी भी थी।

जैसे ही मैंने उन्हें तुम्हारे बारे में बताया। ख़ुशी से फूले न समाए थे। तुम खुशकिस्मत हो, बहुत अच्छे हैं किशोर। अभी आते होंगे। यहीं बुलाया है उन्हें।

कुछ देर पहले ही फ़ोन पर बात हुई थी।

'राधा दी, मैंने आपके साथ बुरा किया, वह नाटक .....

'मुझे पता है।' उसने लता के सिर पर हाथ फेरते हुए कहा।

'फिर भी मेरे साथ इतना अच्छा व्यवहार क्यों किया ?'

'जो दु:ख को उसकी नग्नता व उसकी आत्यान्तिकता में अनुभव कर लेता है या मौत को बड़े करीब से देखता है, उसके भीतर वैर भाव मिट जाते हैं।'

तभी सामने से किशोर आते दिखाई दिए।

'लो आ गए तुम्हारे किशोर।'

वे लता के सामने थे और लता काठवत्। भीतर भावनाओं का झंझावात था। किसी तरह उठकर किशोर से लिपट गई।

'चिंता मत करो मैं आ गया हूँ न ?'

लता फूट -फूट कर रो पड़ी।

'यह तो जश्न मनाने का वक्त है।'

'हाँ दी।'

'एक उम्र बीत गई तुम्हें याद करते लता।'

'मेरी भी।'

फिर न जाने क्यों वह चारू के पैरों पर गिर पड़ी।

***

ब्लैक एन्ड व्हाइट

नकुल गौतम

बहुत दिनों के बाद अजय स्टोर रूम में गया। दरवाज़ा खुलते ही सीलन की गंध ने नाक पर हमला किया। दीपावली की सफाई की शुरूआत यहीं से होती है। दशहरे के दिन स्टोर रूम में भरे गत्ते के डिब्बे, ख़ाली बोतलें और अन्य धातु के सामान निकाल कर अजय रद्दी वाले को देता है। इसके साथ ही वार्षिक सफाई अभियान के लिए उपयोग में आने का सामान जैसे पुताई के लिए खाली ड्रम, ब्रश, लम्बे बाँस के डंडे, लोहे के ब्रश वगैरह भी तो स्टोर में ही रहते हैं। स्टोर के पिछली तरफ बहती नाली की वजह से यहाँ काफी सीलन रहती है। एक मात्र रौशनदान के सामने भी एक पुरानी अलमारी रखी हुई है; जिसमे कुछ ग़ैर ज़रूरी सामान भरा हुआ है। इस रौशन दान से हल्की रौशनी के साथ नाली की नम हवा स्टोर में आती रहती है।

अजय ने बत्ती जलाई और रद्दी अखबार और डिब्बे बटोरने लगा। तभी एक बूढ़ी सी कराह ने अजय को आकर्षित किया। उसे लगा जैसे किसी ने उसका नाम बुदबुदाया हो।

'क.. क... कौन है, कौन है यहाँ?'

'अरे अजय! तुम मुझे सुन पाए। म म.. मैं हूँ... ठीक तुम्हारे सामने।' अजय को महसूस हुआ कि अलमारी के दरवाज़े की झिर्री से एक मन्द सी आवाज़ आ रही है। अजय ने घबराते हुए अलमारी का दरवाज़ा खोला।

'क कौन है।' अजय ने फिर कहा।

'अरे मैं हूँ भाई।'

एक सफ़ेद कपड़े पर एक बिल्ली का चित्र ज़रा सा फड़फड़ाया। यह चित्र इस कपड़े पर अजय ने ही बचपन में बनाया था। माँ ने इसे टीवी पर डाल कर टीवी का कवर बना दिया था।

'क कौन? तुम... तुम टीवी बोल रहे हो क्या? पर तुम तो कब से खराब.. ?'

'हाँ। मैं ही हूँ। मेरी स्क्रीन में कुछ खराबी थी, कम वोल्टेज में मेरे परदे पर फ़िल्में कभी कभी ऊपर नीचे हुआ करती थीं। लेकिन मेरे स्पीकर तो ठीक ही थे।'

'कहो क्या कहना चाहते हो।'

'अजय, मैं यहाँ पड़ा पड़ा उकता गया हूँ। मुझे यहाँ से बाहर निकलना है। इस बार मुझे भी कबाड़ी को बेच दो।'

'अरे! मैं तुम्हे कैसे बेच सकता हूँ। तुम्हारे साथ कितनी यादें जुड़ी हैं हमारी।'

'यादें... यादें ही तो हैं। क्या फर्क पड़ता है। मुझे अब यहाँ नहीं रहना।'

'क्यों फर्क नहीं पड़ता। तुम तो एक मशीन हो, तुम्हें जज़्बातों की कीमत नहीं मालूम,

मुम्बई निवासी नकुल गौतम पेशे से software engineer हैं और साथ ही हिन्दी साहित्य में रुचि रखते हैं। हिन्दी / उर्दू ग़ज़ल, कविताएँ और कहानियाँ लिखते हैं।
संपर्क: बी विंग, 202, सरयू, शुचिधाम, मलाड पूर्व, मुम्बई 97
ईमेल: nakulgautam1@gmail.com

इसीलिए ऐसा कह रहे हो।'

'जज़्बात? तुम्हें मेरे जज़्बातों की परख कहाँ है अजय। मैं तुम्हारी आहट से तुम्हें पहचान लेता हूँ। तुम चलना भी नहीं जानते थे जब तुम्हारे पिता मुझे खरीद लाए थे। सन् तिरासी का जून महीना था। भारत वर्ड कप के सेमी फाइनल में जीत चुका था। सब लोग रेडियो पर ही कॉमेंट्री सुना करते थे। तुम्हारे पिता जी फाइनल देखने के लिए मुझे खरीद लाए थे। मगर...

मगर क्या?

वही हुआ जो तब अक्सर हुआ करता था। दूरदर्शन का संपर्क लंदन से टूट गया। मुझे बहुत दु:ख हुआ था कि मैं पूरा मैच नहीं दिखा सका। तुम्हारे पिता जी भी गुस्से से लाल हो गए। खैर रेडियो सुनते हुए पता चला कि भारत जीत गया है। तुम्हारे पिता जी ने यह खबर सुनकर मुझे और दूरदर्शन को क्षमा कर दिया था।'

'अरे वाह। यह किस्सा तो मैंने कभी सुना ही नहीं।'

'तुम्हें कैसे पता होगा। तुम बहुत छोटे थे तब।'

'और कुछ सुनाओ ना।'

'उसके बाद शाम की ख़बरें, शुक्रवार की फ़िल्में, रविवार का चित्रहार और वो काली सफ़ेद पट्टियाँ तुम्हारे परिवार की दिनचर्या का हिस्सा बने और धीरे-धीरे मैं तुम्हारे परिवार में शामिल हो गया।'

'काली- सफ़ेद पट्टियाँ?

हाँ, ये पट्टियाँ टीवी पर तब दिखती थीं जब कुछ प्रसारित नहीं हो रहा होता था। इसके अलावा किसी फ़िल्म के बीच में ''रुकावट के लिए खेद है'' का सन्देश एक लोकोक्ति की तरह हमारे परिवार में प्रयोग होने लगा।

और क्या याद है तुम्हें ?'

'बहुत सी यादें हैं, जैसे रामायण का प्रसारण। तुम लोग मुझे घर के आँगन में लगा देते थे और पूरा मोहल्ला रामायण देखता था, और मैं पूरे मोहल्ले को निहारता था। एक दिन बिजली नहीं थी जब पड़ोस का विक्की कहीं से कार की बैटरी लाया था, और पूरे मोहल्ले ने बैटरी से मुझे कनेक्ट कर के रामायण देखी थी।

सचिन का पहला मैच भी मेरी यादों में एक अहम जगह रखता है, जिसमें हल्की-हल्की मूछों वाला वो छोटा सा लड़का उन पाकिस्तान के ऊँचे कद के खिलाड़ियों के सामने एक शेर की तरह खड़ा हुआ था। तुम तो ऐसे खुश होते थे जैसे तुम ही सचिन तेंदुलकर हो।'

'हा... हा। हाँ वो भी कमाल के दिन थे... मेरे बचपन के दिन।'

'बचपन नहीं, लड़कपन। एंटीना ठीक करने के बहाने तुम पड़ोस की छत पर धूप सेंकती लड़कियों को निहारते थे। ''क़यामत से क़यामत तक'' देखने के लिए तुम वी सी आर किराए पर लाए थे। जब नया-नया केबल टीवी शुरू हुआ था, तब तुम छत से जाने वाली केबल को मेरे एंटीना की तार से जोड़ कर फ़िल्में देखते थे। ''हम आपके हैं कौन'', याद है तुम्हें?'

'हाँ.... हाँ, सब याद है। कितनी फ़िल्में, कितने मैच इसी तरह देखे थे। एक दिन मैंने और पिता जी ने मिलकर एक ही दिन में तीन फ़िल्में निपटाई थीं।

हा..... हा।'

'हाँ... महाभारत, सुरभी, मालगुड़ी डेज़, अलिफ़ लैला, जंगल बुक, चन्द्रकांता, शक्तिमान, सिगमा, अंताक्षरी और सारेगामा। कितने मज़े से तुम सब मिलकर देखते थे। फिर क़स्बे में बिजली की कमी होने लगी। तुम लोग मेरे लिए स्टेब्लाइज़र नहीं लाए और मेरी स्क्रीन ख़राब होने लगी। तुम्हारे परिवार की लापरवाही की सज़ा मुझे ही मिलने लगी। जब भी फ़िल्म क्लाइमेक्स की तरफ़ बढ़ती तो मेरी स्क्रीन के चित्र टेढ़े होने लगते, और तुम मेरे सिर पर ज़ोर से हाथ मारते। दरअस्ल उस समय वोल्टेज कम होती थी, और तुम सब मुझे ही दोष देते थे।'

'अरे हाँ। मुझे तब तक वोल्टेज की कमी के बारे में कुछ नहीं मालूम था। जब इन्जीनीरिंग की पढ़ाई की तब समझ में आया।'

'फिर सत्तानवे का क्रिकेट वर्ल्डकप आ गया और तुम अपने पिता जी के साथ जा कर नया टीवी ले आए। मैं बहुत दुखी हुआ था। सुना है उस वर्ल्डकप में भारत का प्रदर्शन भी अच्छा नहीं रहा था।'

'हाँ। बहुत बुरा हुआ। तुमने नहीं देखा था क्या?'

'मैं कैसे देखता भला। बीस साल से यहीं स्टोर में पड़ा हूँ। बस इतना पता है कि वह टीवी भी तुमने दो हज़ार ग्यारह में बदल लिया है। वह भी चौदह साल तुम्हारे ड्राइंग रूम में था और मैं भी। फ़र्क़ बस इतना है कि उसे तुमने एक्सचेंज में आज़ादी दी, और मैं पिछले बीस साल से यहाँ स्टोर में पड़ा हूँ।'

'अरे भाई ऐसा नहीं है। उस टीवी से हमारी उतनी यादें नहीं जुड़ी थीं जितनी तुमसे। और आजकल नए दौर के टीवी हैं। हलके भी हैं और पतले भी। एक दीवार पर तस्वीरों की तरह लटका सकते हैं। तुम्हें पता है.. हमारे घर के हर कमरे में अब एक टीवी है।'

'हाँ! मुझे सब पता है। अब न वो महफ़िलें हैं और न परिवार के साथ देखने लायक कार्यक्रम। समाचार भी व्यावसायिक होते जा रहे हैं।

'थोड़ा रुक कर टीवी ने फिर से अपनी बात दोहराई 'सब नए टीविओं के डिब्बे यहीं स्टोर में तो रक्खे थे। पिछले दशहरे पर तुमने सब निकाल कर कबाड़ी को दे दिए। इस बरस मुझे भी दे दो। कब तक यहाँ पड़ा रहूँगा।'

'लेकिन तुम्हें तो अब कबाड़ी भी नहीं लेगा। तुम्हारे समय की टेक्नोलॉजी अब पुरानी हो गई है। तुम्हारे पुर्ज़े भी किसी काम के नहीं और तुम्हारी ब्लैक एन्ड व्हाइट स्क्रीन भी अब बस काँच का एक टुकड़ा भर है।'

'अरे कितना वक़्त लगाओगे अजय। जल्दी कबाड़ बाहर निकालो।' पिता जी की आवाज़ ने अजय का ध्यान खींचा। टीवी को उदास देखकर अजय ने टीवी को उठाया और बाहर आ गया।

'अरे, इसे क्यों उठा लाए।' कबाड़ी ने कहा। इसका तो मैं एक रुपया भी नहीं दूँगा।

अजय ने अपनी जेब से पचास रुपये निकाल कर कबाड़ी को दिए और कहा, ''इसे ज़रा प्यार से ले जाना''।

कुछ ही देर में कबाड़ी की साइकिल के पीछे बंधा टीवी आज़ादी की साँसे लेता हुआ अपने अंतिम सफ़र पर निकल गया। जाते हुए वह उस घर और आँगन को अपनी ब्लैक एन्ड व्हाइट स्क्रीन पर लगे नीले चश्मे में से निहारता रहा, जिसमें उसने अपना स्वर्ण काल बिताया था।

***

भाषांतर

स्व. डॉली तालुकदार असमिया कहानी जगत् का सुपरिचित नाम है। उनकी रचनाओं की विशेषता है शोषित-दमित वर्ग के प्रति उनकी गहरी संवेदनाएँ। उनके कथा साहित्य में महिलाओं के सशक्त किरदार देखने को मिलते हैं। उन्होंने कहानियों के अलावा, यात्रा संस्मरण, बच्चों की कविताएँ और गीत भी लिखे हैं। उनकी दो प्रमुख किताबें हैं -मधुलेखा और मन माटी आरू मेघ। उन्होंने कई किताबों के अंग्रेज़ी से असमिया में अनुवाद भी किया है। रेडियो के लिए भी वे निरंतर नाटक लेखन करती रहीं। सन् 1996 में उनका निधन हो गया था।

पिछले ढाई दशकों से साहित्य की दुनिया में सक्रिय पापोरी गोस्वामी ने हिन्दी, असमिया एवं बांग्ला से परस्पर अनुवाद के क्षेत्र में ख़ास पहचान बनाई है। वे असमिया में कविताएँ और कहानियाँ भी लिखती हैं। उनकी अनूदित रचनाएँ देश भर की प्रतिष्ठित पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होती रहती हैं। उन्होंने असमिया की प्रसिद्ध कथाकार इंदिरा गोस्वामी के दो उपन्यासों जंग लगी तलवार एवं छिन्नमस्ता के नाम से हिन्दी में अनुवाद किया है। भवेन्द्र नाथ सैकिया के कहानी संग्रह श्रृंखल का उनके द्वारा किया गया अनुवाद साहित्य अकादमी से प्रकाशित हुआ है। इसके अलावा इंदिरा गोस्वामी के साथ मिलकर हिन्दी की प्रमुख कहानीकारों की कहानियों का हिन्दी से असमिया में अनुवाद (कलम) भी किया है।

संपर्क: C-1302, Ape3 Green Valley, Sector-9, Vaishali, Ghaziabad [up]
मोबाइल: 9899699958

पांचाली

असमिया कहानी

डॉली तालुकदार
(अनुवाद-पापोरी गोस्वामी)

लगभग पाँच साल बाद पाँचाली को देखकर मैं उस आदमी की तरह चौंक उठी, जिसने भूत देख लिया हो। क्यों, ये बाद में बताऊँगी।

इससे पहले पांचाली से मै गुवाहाटी में मिली थी। मिलने का मतलब मैंने उसे देखा था। हमारे घर के पास एक छोटी सी झोपड़ी में। शुरू से ही उस काली, सींक जैसे शरीर वाली, चिड़चिड़ी औरत से मैं बहुत खीझती थी। सुबह से शाम तक वह चकरी की तरह घूम-घूमकर काम करती रहती थी और मुँह से अविराम बक-बक करती थी। दुनिया की पूरी कड़वाहट के साथ वो अपनी बूढ़ी सास को गालियाँ देती थी, बेकार, नशेड़ी पति की बुराई करती थी, अपने बच्चों को बिना बात श्राप देती रहती थी और भगवान् से शिकायतें करती थी। वो इस बात पर ध्यान ही नहीं देती थी कि कोई उसकी बात सुन रहा है या नहीं। जैसे वो इसलिए दुनिया में आई है कि सिर्फ बोलती जाए। कभी-कभी मुझे बहुत गुस्सा आता था। लेकिन क्या करें समझ में नहीं आता था। वैसे मैं ज़ोर से दरवाज़ा खिड़की बंद करके परोक्ष रूप से अपनी असंतुष्टि और प्रतिरोध जताने की कोशिश करती थी, यहाँ तक कि बाकी पड़ोस के लोग भी पांचाली को मना करते रहते थे, लेकिन टोके जाने पर वो और ज़ोर-ज़ोर से बोलने लगती थी। मैं इस कोशिश से निष्फल होकर आश्यर्य के साथ सोचती थी कि इस तेईस-चौबीस साल की मरियल सी लड़की को पूरी दुनिया के विरुद्ध विक्षोभ प्रदर्शन की शक्ति कहाँ से मिली!

इस मोहल्ले में शिफ्ट करने के लगभग एक महीना बाद ही एक दिन पांचाली हमारे घर आ गई।

''क्या चाहिए ?'' मैंने पूछा था।

मेरे सवाल में स्पस्ट रूप से खीज दिख रही थी। शायद पांचाली को इस बात का आभास हो गया था। उसने विनय के स्वर में कहा-''दीदी, बुरा मत मानिए, बस एक रुपया दे दीजिए। कल से बच्चों के पेट में एक दाना भी नहीं पड़ा है।''

आज की पांचाली और रोज़ दिखने वाली पांचाली के बीच ज़मीन-आसमान का अंतर था। इतने दिनों से मैं पांचाली का कठोर चेहरा देख रही थी, आज उसके मातृत्व का करुणामयी रूप देखकर मेरा मन पसीज उठा।रुपया लेकर वह चली गई। दो घंटे के बाद मैंने सुना पांचाली अपनी सास,पति और बच्चों को चिल्ला-चिल्लाकर खाना खाने के लिए बुला रही है। लड़के-बच्चों का कोहराम शांत होने के बाद थोड़ी ही देर निस्तब्धता रही, फिर से पांचाली की आवाज़े आने लगीं। वह हाँडी-बर्तन पटक-पटक कर धो रही थी और अपने पति के चौदह पुरखों को गालियाँ दे रही थी।गरीबी की कठोर मजबूरियाँ भी पांचाली का मुँह बंद नहीं कर सकती। अपराजेय वाक् शक्ति, अपराजेय मन लेकर पांचाली जीवन की लड़ाई में जुटी रही।

दो-चार लोगों से कहकर पांचाली ने कई बार अपने पति के लिए काम ढूँढ़ दिया था। चालीस रुपया महीना तनख्वाह में बरुआ जी के घर में माली का काम भी वही खोज लाई थी।

''तुम काम पर जाओ तो, फूलों के बीज और पौधों के बारे में सोचने की ज़रूरत नहीं है। मैं उसका जुगाड़ कर दूँगी। देसी-विलायती जैसे भी पौधे की ज़रूरत होगी, मैं ला दूँगी। क्या फूलों का अकाल पड़ा है ? नशेड़ी, आलसी पति को काम पर भेजने के लिए पांचाली बहुत कोशिश करती थी। कोशिश करने में पांचाली बहुत तेज़ थी। दुकानदार उधार नहीं देना चाहता तो पांचाली कहती है,''चिंता न करना भैय्या, घर का आदमी काम में जाने लगेगा तो तुम्हारा सारा उधार चुका दूँगी। दुकानदार उधार की बात याद दिलाता है तो वो बोलती है-''हम क्या भाग जाएँगे? लड़कों के बाप को काम में जाने तो दो, तुम्हारे सारे पैसे सूद समेत वापस कर देंगे। चिंता मत करो।'' इसी तरह पांचाली हर समस्या का समाधान करती आई है। और वैसे भी, कौन पांचाली जैसी औरत के साथ बहस करना चाहेगा ?

माली की नौकरी करने जिस दिन से पांचाली के पति जाने लगा, उसी दिन मैंने उसे अकेले बड़ बड़ाते सुना था- दुकान का उधार चुकाना पड़ेगा, लड़के-बच्चे के लिए कपड़ा, माँ को भी कुछ ले देंगे, लड़के के बाप को भी कहना पड़ेगा, इतने बड़े घर में माली है, पहनने वाले कपड़े भी तो अच्छे होने चाहिए न।'' सिर्फ चालीस रुपये में जैसे वो पूरा साम्राज्य खरीद लेगी, ख़ुशी से वो मगन हो उठती है।

सिर्फ दो दिन बाद ही उसका पति काम छोड़कर लौट आया तो पांचाली ने उसे बस पीटना बाकी रखा। गुस्से से उसने अपने बच्चों को ही पीट दिया। उसकी सास रोते हुए बच्चों को मनाने आई थी, पांचाली उन पर भी गालियाँ बकने लगी।

अगले दिन सुबह पांचाली चावल माँगने मेरे पास आई तो मैंने कहा-''तुम क्यों माँग-माँगकर खिलाती रहती हो, इसलिए तुम्हारे आदमी को बैठकर खाने की आदत पड़ गई है। ज़िम्मेदारी अकेले तुम्हारी नहीं है न।''

पांचाली चुपचाप चली गई। थोड़ी देर बाद उसकी आवाज़ सुनाई दी-''मैं घर के आदमी को बैठाकर खिलाना पसंद करती हूँ, इसमें दूसरों को क्यों तकलीफ होनी चाहिए ?''

मैं समझ गई कि ये मेरे उपदेश की प्रतिक्रिया है। रोज़ नए-नए रूप में पांचाली को देखने के बाद मैंने तय कर लिया था कि वो एक ऐसी पहेली है जिसका कोई हल नहीं। सिर्फ पति ही नहीं, सास और बच्चों के बारे में भी कोई कुछ कह नहीं सकता। सिर्फ अपने ही प्यार, अपनी शिकायतों, अपनी ही डाँट-फटकार से वो अपने परिवार को घेरे रखती थी। कुछ दिनों के बाद पांचाली को मैंने एक नए रूप में देखा। एक दिन मेरे घर के सामने से वो दो प्यारे से, गोरे-चिट्टे बच्चों को घुमाने ले जा रही थी। पांचाली के बच्चे उन्हें देखकर ''वो हमारी माँ, वो हमारी माँ,'' चिल्लाते हुए उसके पास आने लगे।

''पास मत आ'' पांचाली ने उन्हें फटकार लगाई और मेरे कुछ न पूछने पर भी मुझे बताने लगी-''वो बम्बई वाले साहब के घर में काम लिया है मैंने, ज़्यादा काम नहीं है, इन मुन्ना-मुन्नी की देखभाल करना पड़ता है बस। बहुत अच्छे लोग हैं। '' कहते हुए ही वो आगे बढ़ गई।

सुबह पांचाली काम पर चली जाती है, उसका पूरा घर शांत रहता है। शाम को पांचाली के घर पहुँचने के साथ ही घर फिर से कोलाहल से भर जाता है। कितनी सारी बातें होती हैं उसके पास कहने के लिए। बम्बई साहब की मेम क्या खाती है, क्या पहनती है, कैसे रहती है। वो अपनी सास को सुनती है-''जानती है माँ, बम्बई साहब की मेम दिन में चार जोड़ी कपड़े बदलती है।''

''अरे सुनते हो, तुम तो कहते हो बड़े आदमी को बहुत गुस्सा होता है, लेकिन बम्बई साहब को तो बिलकुल गुस्सा नहीं आता। तुम्हारे लिए एक काम माँगा है मैंने, उन्होंने हाँ कहा है। तब हम सब को उन्हीं के अहाते में कमरा मिल जाएगा।'' पांचाली एक बार सास की तरफ और एक बार पति की तरफ देखकर कहती है।

उनके घर में एक नया उमंग आई है। लड़के-बच्चों की देह में साहब के बच्चों की पुरानी कमीज़ सज रही थीं..... उनके स्वेटर और जूते पहनकर वे पूरा मोहल्ला फुदकते रहते थे।उसके पति और सास को भी नए कपड़े मिले थे। पांचाली के छोटे से घर में भी लीपा-पोती हो गई थी। एक दिन पांचाली मेरे घर आई और याद दिलाकर बहुत पहले मुझसे लिया हुआ एक रुपया लौटा गई। मै बिलकुल अवाक् रह गई।

मैंने सुना कि नए साल की पहली तारीख से पांचाली के पति को नौकरी मिलेगी। बम्बई साहब के हेड चपरासी ने पांचाली से पहले ही कह रखा है। नौकरी मिलने के बाद वे लोग साहब की कोठी में चले जाएँगे। अच्छा ही है, बच्चे दिनभर उसकी आँखों के सामने रहेंगे।अब पूरे दिन के लिए उन्हें छोड़कर काम पर जाना पड़ता है, उसे चिंता लगी रहती है। बूढ़ी सास अकेले नहीं सँभाल पाती। वहाँ जाएँगे तो सब ठीक हो जाएगा। अब वो सिर्फ मुन्ना-मुन्नी की आया नहीं रहेगी, साहब के चपरासी की बीवी कहलाएगी, उसका सम्मान ज़्यादा होगा। बहुत अच्छा होगा। पांचाली सपना देखती है। उसकी कल्पना के संसार में उसके काले, दुबले-पतले, मरियल से बच्चे मुन्ना-मुन्नी की तरह मोटे-ताज़े, गोरे-प्यारे बनकर घूमते रहते है। इसी रूप में वे धीरे-धीरे बड़े हो जाते हैं।

नए साल के लिए अब सिर्फ एक महीना बाकी है। और दिनों की तरह उस दिन भी पांचाली काम से घर वापस लौट रही है। उसके घर में घुसते ही बच्चे चींख-चींखकर कहने लगे-''माँ,माँ, हमारी एक नई माँ आई है, तुम दिन भर घर में नहीं रहती हो। इसलिए।''

पांचाली उसी जगह जड़ हो गई, जैसे उसपर बिजली गिरी हो। बूढ़ी सास ने भी कहा -''हा री, किसी लड़की को घर ले आया है, मैं क्या करती?''

अब पांचाली का पति आया और कहने लगा-''घर नहीं चलता इस तरह। तू अगर बाहर घूमती रहेगी तो बच्चों को कौन देखे ? खाना कौन बनाए ?''

इतने दिनों से गूँगे बने रहने वाले आदमी की भी जबान फूटी। हमेशा बक-बक करने वाली पांचाली आज गूँगी हो गई। वो सिर्फ सुनती रही, जैसे अब उसकी सुनने की बारी है। मैंने देखा, रात को ग्यारह बजे पांचाली उसी तरह बाहर बैठी है। मैंने एक बार उसे बुलाया था, उसने कुछ नहीं कहा था,एक बार मुझे देखा था। मैंने देखा था, उसकी आँखे शेरनी की आँखों की तरह चमक रही है।

अगली सुबह से ही पांचाली गायब हो

गई। सास आँसू पोंछ-पोंछ कर उसके गुण गाने लगी। बच्चे माँ-माँ पुकारकर रोते रहे। पति भी छः-सात दिन गुमसुम बना रहा। फिर सब कुछ पहले की तरह हो गया। पांचाली घर बनाती है, टूटे घर में वो क्यों रहेगी ? इन बातों को वह सहज रूप में नहीं ले पाई। मैंने हमेशा देखा है, पांचाली कभी हार नहीं मानती। कोई भी समस्या का समाधान वो करके ही छोड़ेगी, चाहे कोई भी तर्क देना पड़े। लेकिन आज जीवन के इस चरम मुहूर्त में कोई समाधान न खोजते हुए अपराजिता पांचाली क्यों चुपचाप चली गई, इतने दिनों से प्यार से बांधकर रखे संसार को क्यों यूँ ही छोड़ गई, उसका ये पलायन रूठना है या अपमान-बोध।

इसलिए पाँच साल के बाद खोई हुई पांचाली को उपरी असम के इस छोटे रेल-स्टेशन में देखकर मैं भूत देखे हुए आदमी की तरह चौंक उठी थी। एक सूप में कुछ बेर रखकर वह बेच रही थी। उसके पास दो बच्चे और एक बूढ़ी औरत बैठी थी। मुझे देखते ही पांचाली छोटे लड़के को गोद में उठाकर मेरे पास आई और पहले की तरह मेरे कुछ पूछने से पहले ही बोलने लगी- ''अब ये सब मेरे गले पड़ गए है। इस बूढ़ी के आदमी को रेल ने कट दिया। अब बिन माँ-बाप के उसके नातियों को मुझे ही देखना पड़ रहा है। इनका और कोई नहीं, जब तक ज़िंदगी, तब तक देखूँगी न। मरने के बाद कौन किसे देखता है, दीदी।'' पांचाली ने एक ही साँस में कहा। मैं आश्चर्य में चुप हो गई।

रेल ने सीटी बजाई। ''दीदी'' पांचाली ने पुकारा। पता नहीं वो क्या कहना चाहती थी। मैंने उसकी एक हथेली अपनी दोनों हथेलियों से पकड़कर कहा- ''पांचाली,तुम्हारे बच्चे अच्छे हैं। अब वे बड़े हो गए हैं।''

मेरी बात सुनकर उसका चेहरा चमक उठा। -''दीदी, आप ही ने तो कहा था कि ज़िम्मेदारी सिर्फ मेरी नहीं है। उनके पास बाप है, वे देखेंगे।'' उसकी आवाज़ भारी हो गई -''उनके पास तो अब माँ भी है''- लड़के को सीने में चिपकाकर वो ज़ोर से रो पड़ी। जीवन में पहली बार मैंने पांचाली को रोते देखा था।

***

लघु कथा

मौक़ापरस्त

सुभाष चंद्र लखेड़ा

राकेश का बचपन और किशोरावस्था दिल्ली की सरकारी कॉलोनी राम कृष्ण पुरम के टाइप फोर के उस फ्लैट में बीता जो उसके पिता कृष्ण किशोर के नाम आबंटित था। उसके पिता उस दौरान भारत सरकार में प्रथम श्रेणी के राजपत्रित अधिकारी थे। खैर, उसी कॉलोनी में उसके घर से पचास गज की दूरी पर सरकारी फ्लैटों के बीच उस कुशला धोबी की झुग्गी थी जो आसपास रहने वाले अफ़सरों और उनके परिवारों के कपड़े इस्त्री करता था। कुशला का बड़ा बेटा सोहन राकेश से एक साल छोटा था। एक फर्क यह भी था कि राकेश एक पब्लिक स्कूल में पढ़ रहा था जबकि सोहन पास के सरकारी स्कूल में। खैर, बचपन से ही राकेश और सोहन में दोस्ती हो गई थी लेकिन जब राकेश दसवीं कक्षा में पहुँचा तो उसके पिता जी को उनकी यह दोस्ती अखरने लगी। एक दिन उन्होंने राकेश को चेतावनी देते हुए कहा कि भविष्य में वह उन्हें उस धोबी के बेटे के साथ नज़र नहीं आना चाहिए। वैसा ही हुआ। राकेश अब सोहन से दूर रहने लगा।

कुछ वर्षों बाद कृष्ण किशोर रिटायर हुए तो उन्होंने पास ही मुनीरका में एक डीडीए फ्लैट खरीदा और सपरिवार उसमें शिफ्ट हो गए। इस बीच राकेश ने गुड़गाँव के एक प्राइवेट इंजीनियरिंग कॉलेज से बीई की डिग्री हासिल की तो उधर सोहन ने भी उससे एक वर्ष पहले किसी सरकारी संस्थान से इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग का डिप्लोमा हासिल किया। ऐसा संयोग बना कि वह कुछ ही दिनों बाद नौकरी करने दुबई चला गया। साल बीतते - बीतते यह बात जब कृष्ण किशोर को पता चली तो वे डिग्री लेने के बाद साल भर से घर बैठे अपने बेरोज़गार बेटे से बोले, ''तुम्हारे बचपन का दोस्त सोहन आजकल दुबई में है। उसके बाप से उसका मोबाइल नंबर पता करो। मुझे यकीन है वह तुम्हें भी वहाँ कोई अच्छी नौकरी दिलवाने में मददगार साबित हो सकता है।''

***

सी - 180, सिद्धार्थ कुंज, सेक्टर - 7, प्लाट नंबर - 17, द्वारका, नई दिल्ली - 110075

हरजीत अटवाल पंजाबी भाषा के जाने-माने प्रवासी साहित्यकार है। जो 1977 से इंग्लैंड में निवास कर रहे है। जिन्होंने साहित्य की सभी विधाओं में साहित्य सृजन किया है। अब तक इनके सात कहानी संग्रह और दस के करीब उपन्यास प्रकाशित हो चुके है। प्रवासी जीवन के साथ-साथ समाज और समकालीन विषयों को आधार बनाकर लेखन किया है। साहित्य लेखन में इन्होंने नए- नए प्रयोग किए हैं। जो इन्हें अन्य लेखकों से अलग पहचान देता है।

दिल्ली निवासी बलबीर सिंह ने बी.ए/ एम.ए की शिक्षा दिल्ली विश्वविद्यालय से प्राप्त की। जामिया मिल्लिया इस्लामिया से एम.फिल, वर्तमान में जामिया मिल्लिया इस्लामिया से पीएॅच.डी में शोधरत। 15 से ज़्यादा राष्ट्रीय- अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठियों में प्रपत्र वाचन एवं प्रतिभागी के रूप में सहभागिता। कई पत्रिकाओं और संपादित पुस्तकों में भिन्न-भिन्न विषयों पर आलेख प्रकाशित। कविता और कहानी लेखन में रुचि।

संपर्क:148 ए, हुमायूँपुर गाँव, सफदरजंग एन्क्लेव, नई दिल्ली।
मोबाइल:9718394576
ईमेल: balbir.luvsingh@gmail.com

नए गीत का मुखड़ा

पंजाबी कहानी

हरजीत अटवाल

(अनुवाद -बलबीर सिंह)

केवला मेरे सामने ज़िद्द करके बैठी थी। मेरी एक-एक बात को नकार रही थी।

''जब लड़के ने इटली जाना था तब तुम्हारे से दो सौ पौंड नही निकले थे, कह रहे थे कि लड़के ने सारी उम्र घूमते ही रहना है। लड़की को इस बात से जर्मनी नहीं जाने दिया कि खर्चा होता है 'अब आप इतने पैसे कहाँ से निकालोगे... मैंने यह सब नहीं होने देना।''

''पगली तीन चार सौ पौंड की तो सारी बात है।''

''क्या तीन चार सौ कम होते है। सारा दिन मशीनों के साथ मशीन बनकर कमाते हैं। साथ ही यह तीन चार सौ तो शुरूआत है,... हम नहीं हमारी ना है।''

उसने एक दम क्रॉस लगा दिया ऐसा क्रॉस वो पहली बार लगा रही थी। मेरा गुस्सा बढ़ने लगा। मैं ऊँची आवाज़ में बोलते- बोलते खड़ा हो गया। दोनों बच्चे खड़े देख रहे थे। वो एकदम उठकर उसके अगल-बगल बैठ गए। सिपाही की तरह डट गए। मेरा गुस्सा यहाँ तक पहुँच गया कि मुझे लगा कि मैं कुछ कर बैठूँगा। मैं सँभलते हुए घर से बाहर निकल आया। अपने रास्ते से निकल मैं मेन रोड की तरफ चल पड़ा। मैं अक्सर ऐसे ही करता हूँ। जब भी गुस्से वाले क्षण आते है तो मैं नैग़्ज़हेड में जा बैठता हूँ। आज भी मैंने ऐसे ही ठीक समझा। पर आज वाला झगड़ा महज़ झगड़ा नहीं बल्कि इज़्ज़त को धक्का था। मेरी बहुत सारी बातों का केवला विरोध करती थी। कई बार बहुत सख्त विरोध पर आख़िर में चलती मेरी ही थी। आज वो बिल्कुल भी नही झुकी थी। उसका इस प्रकार नहीं झुकना मुझे बहुत दुखी कर रहा था। उसके साथ दो हाथ करने को दिल कर रहा था पर बच्चे उसके अगल-बगल बैठ गए थे।

अपने घर वाली रोड से उतरकर मैं मेन रोड पर आ गया। बाएँ हाथ से मुड़कर मैं दाएँ आ

गया। पब में कम आने की वजह से यहाँ मेरा कोई जानकर नहीं था। मैं बियर का गिलास भरकर जुए की मशीन पर खेलने लगा। अभी दो पौंड ही गँवाए थे, किसी ने पीछे से आकर कहा कि''यह आदत अभी तक छोड़ी नहीं ?''

पीछे शमशेर खड़ा था। शमशेर मेरा पुराना दोस्त है और पब वाली परेड में उसकी दुकान है। हमारी शोपिंग के लिए यह लोकल परेड होने के कारण आना-जाना बना रहता है। मैंने हाथ मिलाकर पूछा तू ''यहाँ कैसे?''

क्योंकि वह पब नहीं आता उसको उसकी दुकान से फुर्सत ही नहीं मिलती। कुछ कहे बिना वह मेरा हाथ पकड़कर एक तरफ ले गया। सामने सीट के ऊपर बड़ी पगड़ी पहने एक आदमी बैठा था। मुझे लगा जैसे लक्खा बैठा है। लक्खा मेरा मित्र है, जो पटियाले में रहता है। वहाँ वह किसी ऑफिस में क्लर्क है और अब तो हमारा कोई भी इंडिया में नहीं रह गया है। लक्खा ही जिसको अपना कह सकें। लक्खे की माँ से हमे माँ वाला ही स्नेह मिलता है। उसकी पत्नी केवला की सहेली बन गई है। इस बड़ी पगड़ी वाले का डील-डौल लक्खे जैसा था। मैंने उससे हाथ मिलाया, उसके हाथ दबाने में अजीब सी गर्मी थी, शमशेर बोला ''यह बल्लू है, बलराम, अपना यार है, आज ही इंडिया से आया है, हम क्लासफेलो रहे हैं, लुधियाने यूनिवर्सिटी में... मैंने ही ज़ोर डाला कि एक बार घूमने आ जा। बलराम के चेहरे की ताज़गी और आँखों में तेज बना रहे ये कि अभी पहुँचा ही है। शमशेर बियर का बड़ा घूँट भरते हुए बलराम को अपना गिलास उठाने को कहता है, और मेरी और अपनी दोस्ती के बारे में बताने लगता है। फिर मुझे कहने लगा।''हम तेरी ही बात कर रहे थे, तेरे लिए एक काम है।''

''हुक्म कर।''

''एक तो बल्लू को लन्दन देखना है, दूसरा इसके लिए काम ढूँढ़ना है।''

''लन्दन तो इसे हम कल ही दिखा देंगे, शनिवार है। बाकी काम का तो तुम्हें पता ही है।''

''तू ट्राई कर, काम ठीक हो ढूँडर काटने वाला न हो, पैसे भी ठीक हों, मैं चाहता हूँ जो दो-तीन महीने रहना है तो कुछ काम भी कर ले।''

उन दोनों के साथ बातें करते-करते मेरा मूड ठीक हो गया। हम काफी देर तक बैठे रहे। इंडिया के बारे में बात करते रहे। अचानक शमशेर घड़ी देखते उठ खड़ा हुआ।

''दुकान में वाइफ है दुकान बंद करने का समय हो गया... मैं फ़ोन करूँगा तू एक बार में आ जइयो। हम गिलासों के आख़िरी घूँट भरते उठ खड़े हुए। पब में से निकलकर बाहर आए तो बलराम को अपनी रोड दिखाते हुए कहा, वो सामने वाली रोड बाएँ हाथ का अंतिम- हाउस मेरा है, ऐनी टाइम वेलकम।''

अपनी रोड पर आते ही मैं केवला के बारे में सोचने लगा। उसका गुस्से वाला चेहरा नज़र आते ही मुझमें कड़वाहट भरने लगी। मैं सोच रहा था कि बच्चे अब तक सो चुके होंगे और अब उसके साथ पंगा लेना आसान रहेगा। गुस्से में तना हुआ मैं दरवाज़ा खोल कर अंदर गया तो बच्चे अभी भी टीवी देख रहे थे। केवला ने बहुत मुलायम सी नज़र के साथ मुस्कराहट फैंकी। मेरे गुस्से को भगाने के लिए वो ऐसे ही करती है। मैंने बच्चों से कहा,

''अभी तक सोए नहीं?''

भला बच्चे कैसे सो जाते! तुम दरवाज़ा ज़ोर से मारकर चले गए। बच्चे डरे-डरे से थे। मैं तुम्हें सुबह ही पैसे निकलवा कर दे दूँगी, ऐसे ही अपना खून मत जलाओ।''

मैं सोफे पर बैठा तो मेरे साथ सटकर बैठ गई और मेरी बाज़ू सहलाते हुए बोली,

''हम तुम्हारे से कभी हटकर चले है... मैंने तो अपनी सलाह दी थी पर एक तुम हो जो नाक पर मक्खी भी बैठने नहीं देते?''

बात करते हुए उसने अपना सिर मेरे कंधे पर रख दिया। मेरे को काबू करने के लिए वो ऐसे हथियार इकट्ठे करती रहती है। पर उस दिन मैं वापिस नहीं आना चाहता था। फिर बच्चे मुझ से छोटे-छोटे प्रश्न करने लगे। केवला ने मुझे पूछा कि खाना लगाऊँ या रुक कर खाओगे?'

मैंने कोई जवाब नहीं दिया। वो उठकर रसोई में चली गई और गर्म- गर्म एक-एक रोटी मुझे परोसने लगी। रोटी खाते ही नींद ने घेर लिया।

सुबह-सुबह शमशेर का फ़ोन आ गया, पूछ रहा था, ''क्या प्रोग्राम है आज का?''

''कोई खास नही क्यों?''

''अगर समय है तो बल्लू को लन्दन दिखा लाएँ ?''

वाइफ की छुट्टी करवाई है हम जल्दी ही लौट आएँगे, वैसे नॉर्मन को भी जल्दी बुला लिया है। नॉर्मन उसकी दुकान पर काम करने वाला अंग्रेज़ था। उसकी पत्नी कहीं और काम करती थी जो शनिवार को भी काम करने के लिए जाती थी।

हम घर से चले तो जल्दी ही थे पर वापिस जल्दी नहीं लौट पाए, लेस्टर-स्कवेयर, टराफलगर स्केयर, पिक्कडली सर्कस, मार्बल आर्च, बकिंघम पैलेस, पार्लियामेंट हाउस, पता नहीं हम कहाँ-कहाँ घूमे। पर घूमे पक्षियों की तरह ही। कार खड़ी करने की समस्या थी और कुछ वक़्त भी कम था। शमशेर एक दिन में ही उसे सब कुछ दिखा देना चाहता था वो बलराम को कोई ईमारत दिखाकर उसके बारे में बताने लगता, और उसकी खासियत बताता। किसी-किसी ईमारत के आगे गाड़ी रोककर बलराम को उसके आगे खड़ा करता और उसकी फोटो खींचकर कहता,''मेरे पास तो समय कम है, लन्दन के बारे में एक किताब ले दूँगा, पास बनवाकर तुम स्वयं ही सब कुछ अच्छे से देख लेना।''

मुझे उनके साथ ऐसे ही घूमना बहुत अच्छा लग रहा था। पर एक दिन में इतना ज़्यादा घूमना कुछ जँच नहीं रहा था। मैं जब किसी स्थान पर घूमने जाता हूँ तो पूरे ध्यान से, समय खर्च कर देखता हूँ। कि अगली बार जब मैं वहाँ जाऊँ तो किसी गाइड या किताब की ज़रूरत न पड़े। एक बात यह भी महसूस होती है कि कोई नया व्यक्ति मेरे साथ हो और उस स्थान के बारे में उसे जानकारी दूँ। लक्खे के बारे में मैं ऐसे ही सोचता था कि वह इंग्लैंड आए और उसको एक-एक महत्त्वपूर्ण जगह दिखाऊँ, उसको ऐसे घुमाऊँ जैसे वो मुझे इंडिया पहुँचने पर जगह-जगह लेकर घूमता है।

कुछ घंटे हम कार इधर-उधर लेकर घूमते रहे। फिर शमशेर कार खड़ी करने के लिए पार्किंग ढूँढ़ने लगा। हमने कार खड़ी की और एक पब में जा बैठे। शमशेर गिलास भरवाने गया तो बलराम मुझे कहने लगा,

''भाईजी मुझे घूमने का कोई शौंक नहीं, टिकट चाहे शेरे ने भेज दी, पर फिर भी मुझे पैसों की बहुत ज़रूरत है, मुझे आप जल्दी से जल्दी काम ढूँढ़ कर लगवा दो।''

''उसने मुझसे जैसे कहा सुनकर मैं भावुक हो गया। मन हो रहा था कल की कल ही जानकार लोगों को कहकर हर फैक्ट्री स्टोर का दरवाज़ा खटका दूँ।''

घूम फिरकर मैं शाम को जब अपने घर पहुँचा तो मैं थकने की जगह तरोताज़ा था। केवला के साथ हुई मुझे लड़ाई भूल चुकी थी। भूलने की हल्की सी बीमारी मुझे भी है। पेन, किताबें, चाबियाँ खोई रहती हैं। और बहुत सारी बातें भी भूल जाती है। कुछ दफा तो ऐसे हुआ कि केवला के साथ हुआ झगड़ा ही भूल गया। सुबह अच्छी लड़ाई करके घर से निकला, जब घर वापिस आया तो सीटी बजाता हुआ आदत से मजबूर, घर पहुँचते ही केवला को बाँहों में भर लिया और बोला-''किसी नए गीत का मुखड़ा सुना तो फिर छोड़ूँ''....यह मेरा और केवला का पुराना चला आ रहा है। जब याद आता और केवला याद दिलाती तो हल्की सी शर्म महसूस होती और अच्छा भी लगता। इस बार भी केवला ने समझा मैं भूल-भुला गया हूँ। उस दिन शनिवार था, सोच रहा था कि वो पैसे निकाल कर ले आई होगी। रविवार निकलकर सोमवार हो गया फिर मंगलवार और बुधवार, पर केवला ऐसे थी जैसे कोई बात हुई ही ना हो। पैसे तो मेरे खाते में भी थे पर मैं केवला को देखना चाहता था कि मुझे कितना मानती है। या फिर मेरी घर में कितनी चलती है। उसके बर्ताव से लग रहा था कि वो मुझे हरा रही है। मेरी यह सोच बड़े झगड़े का कारण बनती जा रही थी। इसके लिए मैं अपने आप को तैयार करने लगा। उन दिनों में एक अनहोनी घटना हो गई मैं सब-कुछ भूल गया। लक्खे का फ़ोन आया कि उसकी माँ का देहांत हो गया है। हमें बहुत दु:ख लगा, हमारे घर का माहौल ही उदास हो गया। कई दिन तक ऐसे ही चलता रहा। हम सबको वो बहुत प्यार करती थी। एक- दूसरे को ढाँढ़स देते हुए वो झगड़ा टल गया।

मैं शमशेर की दुकान पर गया तो बलराम नॉर्मन के साथ अंग्रेज़ी बोलने की कोशिश कर रहा था, मुझसे हाथ मिलाते हुए बोला, ''मैं तो इंग्लिश की एम.ए करके भी दुखी था पर यहाँ आकर ज़ीरो हो गया।''

''बस थोड़ी प्रैक्टिस की ज़रूरत है बाकी सब वो ही है।''

फिर मैं उसके काम-काज के बारे में पूछने लगा। उसकी जगह शमशेर ने कहा, ''काम तो मिल रहा है, बैमली, पटेल की दुकान पर पैसे बहुत कम दे रहे हैं, सौ पौंड, सात दिन काम करवाकर सुबह से रात तक।''

''सौ पौंड तो कम हैं।''

''इतने से तो जेब खर्च भी नही चलेगा, मैं चाहता हूँ कि कहीं बाहर का काम बन जाए, बिल्डर के पास घंटे भी कम और पैसे भी ठीक।''

एक दिन मैं दुकान पर पहुँचा तो बलराम के चेहरे से पहले वाली चमक गायब थी। शायद घर की याद आ रही होगी। फिर एक दिन गया तो शमशेर की आवाज़ भी ढीली थी। मुझे डर लगा कि कहीं कुछ ग़लत न हो। एक दूसरे से ऊब ही न गए हो। बहुत समय एक साथ रहने से रिश्ते ठंडे पड़ने लगते हैं। शमशेर का काम भी थकाने वाला था। सुबह सात बजे से लेकर रात्रि के दस बजे तक। पूरे पंद्रह घण्टे। उसकी पत्नी रविवार के दिन ही दुकान पर हाथ बंटाने को आती है, या किसी खास दिन जब कोई समस्या हो। बच्चे मैंने कभी-भी दुकान में नहीं देखे। शमशेर सारा दिन दुकान में ही रहता है। ऊपर के सारे काम जैसे कि बैंक जाना, दुकान का सामान आदि लेकर आना सब नॉर्मन ही करता।

बलराम भी शमशेर के साथ पूरा दिन दुकान में ही रहता है। शायद दोनों एक-दूसरे से चिढ़ने लगे हो। ऐसे सोचते हुए मैं एक दिन बलराम को अपने साथ घूमाने ले गया। इधर-उधर की बातें करते हुए पूछा, ''तेरा दिल तो लग रहा है न इंग्लैंड में?''

'भाई जी, दिल कैसे लगेगा...सपने लेकर आया था कि पहुँचते ही काम पर लग जाऊँगा और पैसे कमाऊँगा। काम तो पटेल की शॉप पर मिल रहा था, शेरा नहीं माना, कहता है पैसे कम है, मैं कहता हूँ कि सौ पौंड मतलब हफ्ते के सात हज़ार, महीने के 28-30 हज़ार, भाई जी और मुझे क्या चाहिए ज बस जी मुझे लग रहा है कि अपनी दुकान में शेरा मुझे मुफ्त में ही रगड़ना चाहता है।''

उसका ऐसे बोलना मुझे बहुत बुरा लगा पर मैं चुप रहा। फिर बोला ''शेरा मुझे एडवाइज़ बहुत देता है, यह कर, यह न कर लेकिन खुद मेरे लिए कुछ नहीं करता, अब मेरा पॉलिटिकल स्टे ही देख लो ऐसे ही देर कर रहा है, कहता है अभी टाइम नहीं है।''

एक दिल किया शमशेर की तरफ से कुछ कहूँ फिर सोचा मेरी बात को उल्टा ही न समझ ले।

शमशेर मुझे अकेला मिला तो मैंने कहा कि '' बलराम खुश नहीं लगता।''

''क्या बताऊँ यार। बल्लू को इधर की लाइफ में एडजस्ट करना मुश्किल हो रहा है ज वहाँ बड़ी जॉब है, शहर में रहता है पर मैनरज़ नहीं है। किसी के रूम में जाना हो तो डोर नॉक नहीं करता, बस पुश करके घुस आता है। सारा बाथरूम थूक थूक कर भर दिया है। ब्रश करते हुए लाउन्ज में घूमता रहता है।''

''धीरे-धीरे सीख जाएगा।''

''पता नही कब सीखेगा। शराब बहुत खराब है पीकर गाली देने लगता है, बहुत बुरी आदत है न औरत देखता है न आदमी, भगवान् खैर करे। उसने गोरों की तरह सामने वाली दो-दो उंगल की कैंची बनाई है।''

एक दिन मैं काम से वापिस आया तो बलराम हमारे घर में बैठा था। उसे अपने घर अचानक देख मुझे हैरानी हुई। वो बहुत उखड़ा-उखड़ा था। हाल चाल पूछा तो उसने आँखें भर ली, माथे पर हाथ मारते हुए बोला, 'भाई जी मैं इंग्लैंड आकर फँस गया, न तो काम मिलता है न कुछ और। शेरे को कहा था कि नॉर्मन को हटा दे उसका काम मैं कर लूँगा, वो ही पैसे मुझे देता रहियो। वो कहता है कि नॉर्मन बहुत पुराना मेरे पास काम करता है, विश्वास बना हुआ है। अभी भी मैं दुकान में इधर-उधर हाथ मारता ही हूँ।''

''बलराम जी काम भी मिल जाएगा, इतना तो है तुन्हें रहने का ठिकाना मिला हुआ है।''

''कैसा ठिकाना जी, बच्चे तो मेरे साथ बोलते ही नहीं, मैं कोई बात करूँ तो हँसने लगते है। आपस मे ही गिट-मिट करते है,भाभी भी अब सीधे मुँह बात नहीं करती,

इंडिया जाता था तो हम उसकी इतनी इज़्ज़त करते थे।''

मुझे उसकी बातें सुननी मुश्किल हो रही थी, फिर भी मैं सुन रहा था। वो बोला कि ''शेरा अब पहले वाला नहीं रहा, बदल गया है, बहुत बदल गया है। अब कुछ दिन से कह रहा है कि उसने शराब छोड़ दी है, रात को खाना खाने से पहले दो पेग लगा लेता है पर उसे मेरा पेग चुभता है।''

''किसी की सेवा में शराब की कोई कमी नहीं छोड़ता शमशेरा।''

''वैसे आए -गए की बहुत इज़्ज़त करता है एक दिन गेस्ट आ गए, पब गए तो हम आठ आदमी थे, पाँच-पाँच गिलास बियर के पीए, दो पौंड का भी गिलास हुआ तो अस्सी पौंड खड़े-खड़े खर्च कर दिए थे, छः हज़ार रुपये, वैसे भी जिस दिन से मैं आया हूँ देख रहा हूँ कि सौ पौंड हफ्ते का उसका अकेला खर्चा है,... रोज़ मीट, रोज़ शराब,... मैंने एक दिन कहा कुछ उधार दे दे, घरवाले देख रहे होंगे तो साफ ही मना कर गया, कहता है कि हाथ तंग है।''

''दुकानदारों की ओवर-डोज़ भी बहुत होती है।''

''कहाँ भाई जी, अगर हाथ तंग हो तो इतने खर्चे न करे, मैंने खुद भाभी की पासबुक देखी है, पैसे है इनके पास। तुम खुद देखो छः हज़ार हफ्ते की बढ़त, चार लाख से ऊपर। देखो बात कहाँ निकलती है।''

वो हैरान हुआ बता रहा था। शायद शमशेर ने इसको दुकान के बारे में पूरी जानकारी नहीं दी थी। इसको सारी बढ़त दिखाई दे रही थी, खर्चे नहीं। हमारे बातें करते पर केवला चाय-पकौड़े ले आई। हमारे कपों में चाय डालकर हमारे पास ही बैठ गई, चाय का घूँट भरकर बलराम ने कहा, भाई जी शेरा मुझे अब घर में रखकर खुश नहीं है और न ही मैं वहाँ रहकर, मैं चाहता हूँ कि आपके घर आ जाऊँ।''

मुझे धक्का लगा। मैंने केवला की तरफ देखा। उसने मुँह घुमा लिया। मैंने अपने भीतरी उतार-चढ़ाव पर काबू करते हुए कहा ''बलराम जी, मैं और शमशेर बहुत पुराने मित्र है। अगर आप गुस्से में उठकर मेरे घर आ गए तो मेरे रिलेशन खराब हो जाएँगे।''

मेरा उत्तर सुनकर उसका चेहरा उतर गया। हाथ में पकड़ा चाय का कप उसने टेबल पर रख दिया। जल्दी ही जाने के लिए उठकर खड़ा हो गया। मैंने बहुत कहा खाना खाकर जाना वह नहीं रुका। उसके जाने के बाद मेरा मूड ऑफ हो गया। दूसरे दिन काम पर भी दिल नहीं लगा। वापिस आते हुए मैं शमशेर के पास गया तो वो पहले ही भरा बैठा था, कहने लगा, ''हमारी बड़ी सॉलिड दोस्ती थी, क्लास फेलो थे, फिर रूम-मेट रहे, एक-दूसरे के घर आना-जाना और कई रातों तक एक दूसरे के घर मे ही रहना, यहाँ से जाकर भी इसके घर ही ठहरता था पर वो सब मेहमान नवाजी थी, टेम्परेरी, किसी में स्थायी तौर पर रहना डिफिकल्ट है।''

''इतनी भी क्या बात हो गई।''

''एक हो तो बताऊँ ! कमीज़ उठाने से अपना ही पेट नँगा होता है। घर की तलाशी पता नहीं इसने कब ले ली। वाइफ की बैंक पासबुक इसके हाथ लग गई। उस दिन से पैसे ही माँगता जा रहा है, जो भी मैं पौंड ख़र्चता हूँ, उनको रुपये में गिन लेता है, और भी बहुत कुछ जो मैं एक्सप्लेन नहीं कर सकता हूँ। वो रोने वाला हो रहा था। घर में रखने के बारे में बोला ''अगर उसने दो-तीन महीने रहना होता तो मैंने एडजस्ट करना ही था। अब दोनों लड़कियाँ एक रूम में और लड़के वाला रूम उसको दे रखा है। लड़का हमारे रूम में हमारे साथ सोता है। तू समझ सकता है जवान लड़का हमारे बीच में अच्छा नहीं लगता।ज अब वो यहाँ पक्का ही रहना चाहता है, पॉलिटिकल स्टे के लिए केस कर दिया है, ऊपर से सोशल सिक्युरिटी वाले भी कुछ देंगे, पटेलों की दुकान पर आज लगवा दिया हैज वहीं पर कमरे का इंतज़ाम भी कर दिया है, अपना कमाए, अपना खाए, कुछ बचा सके तो बचा ले, नहीं तो उसकी मर्ज़ी।''

बलराम उसके बाद नहीं मिला। वो वेंथली में कहीं रहने लगा था। शमशेर से उसके बारे में पूछता तो हूँ-हाँ कर देता।

उस दिन मैं ब्रॉडवे गया तो बलराम मुझे दूर से आता हुआ दिखाई दिया। उसने भी मुझे देखा और मुँह घुमा लिया।

फिर मुझे भी उससे मिलने की कोई इच्छा नहीं हुई कि जो स्पेशल जाकर मिलता। मैं तो पहले ही घर से तपे हुए आया था। सुबह से केवला के साथ युद्ध चल रहा था। वही पुराना झगड़ा था। मैं उसे कह रहा था कि बैंक जाकर पैसे निकलवा कर दे दे, लक्खे को टिकट भेजना है। उसका खत आया था, इंग्लैंड आने के लिए उतावला हो रहा था। आज फिर केवला ने वही दलीलें देते हुए साफ मना कर दिया कि पैसे नहीं निकलवाएगी। मैं घर में काफी हंगामा करके अपनी पासबुक उठा कर बैंक आ गया था। ट्रेवल एजेंट का ऑफिस भी पास में ही था। मैं बैंक से निकला तो बलराम टकरा गया, इस बार वो मुझे अनदेखा नहीं कर सका। उसने बेमन से ठंडा सा हाथ मिलाया। मैंने हाल-चाल पूछा तो कहने लगा, ''भाई जी अपने कैसे हाल, इंग्लैंड आकर पछता रहे हैं, भारत में कुर्सी के पीछे कोट टाँग कर बाज़ार चले जाते थे, ऑफिस में हाज़िरी लग जाती थी, यहाँ सुबह से शाम तक काम करते हैं। गधे की तरह फिर भी बड़ी मुश्किल से गुज़ारा होता है।''

''यह विलायत भी दूर के ढोल सुहावनी वाली बात है।''

''कइयों को बहुत सुख आराम है। जिनका साथ देने वाले कई यार हैं।''

''पॉलिटिकल स्टे के केस का क्या बना।''

''शेरे ने पता नहीं कैसे वकील को केस दिया। कोई पता ही नहीं लग रहा। मेरे साथ वालों को कब के पैसे मिलने शुरू हो गए। अब गवर्मेंट भी शिकंजा कसती जा रही है।''

वो चुप हो गया। मेरे पास भी करने के लिए कोई बात नहीं थी। चलते हुए बलराम बोला, 'भाई जी शेरे, लड़की के खसम ने मेरे साथ अच्छा नहीं किया, जब मुझे सँभाल नहीं सकता था, तो मुझे बुलाया ही क्यों, इंडिया में आता था तो लम्बी-लम्बी गप्पें मारा करता था, उसने एक और गंदी गाली दी और थूकते हुए वहाँ से चला गया।''

मैंने अपनी जेब पर हाथ रखा। बैंक से निकलवाए हुए पैसे सुरक्षित थे। वहाँ से मैं सीधे घर आ गया।

मैंने सीटी बजाते हुए दरवाज़ा खोला। केवला रसोई में थी मैंने उसको चुटकी काटते हुए कहा ''किसी नए गीत का मुखड़ा सुना तो छोड़ूँ।''

***

'चम्मच-चुराण' महापुराण

डॉ. अनीता यादव

खाने की थाली में चम्मच के अभाव से पिताजी के तुनक मिजाज और ससुराल में नकचढ़ी सास के भुनक मिजाज से मैं इस अपरिहार्य वस्तु के महत्त्व को जान गई थी, पर इसके अतिमहत्त्व का ज्ञान 'साले' इन अँग्रेज़ों ने दिया, जब 'मानुष' पर चम्मच चोरी का इल्ज़ाम मढ़ा। इल्ज़ाम तक ही बात ना सुल्टी बल्कि पेनल्टी भी लेकर छोड़ी। अजी, एक बार अपने गिरेबान में भी झाँक लेते। हमारा कोहिनूर ले गए,हमारी सोने की चिड़िया ले गए और तो और जाते जाते हमारे 'चचा' का दिल भी ले गए! जनाब! हम इतना छोटा काम कर ही नहीं सकते; क्योंकि हम पान मसाला ही ऐसा खाते हैं- ऊँची सोच और ऊँची पसंद हैं' टाइप। और तो और हमारे तो बाप दादा हमें जन्म-घुट्टी में ही पिला देते हैं -'देखो,बेटा! गू खाओ तो हाथी का खाना! बकरी की मींगन के लिए जात ना दियो कभी' अब ऐसा शिक्षण प्राप्य व्यक्ति भला इस अदनी सी चम्मच के लिए नियत डुबोता? अबे! अंग्रेज़ों 'उन्नीस सौ सैंतालीस' का बदला ले रियो हो का ? माना कि हम 'चोरण कला' में दक्ष हैं पर जो करते हैं अपनी सरजमीं पर सीना ठोक कर करते हैं। अगर इल्ज़ाम ही लगाना था तो-आधार से डाटा चुराने का लगाते,हॉस्पिटल से बच्चा चुराने का लगाते,ए टी एम मशीन से पैसा चुराने का लगाते, रास्ते चलती गाड़ी चुराने का लगाते, ट्रेफिक हवलदार से आँख चुराने का लगाते, नाबालिग बच्चियों की इज़्ज़त चुरा कर मार डालने का लगाते,भ्रूण हत्या,दहेज हत्या और भी ऐसे अनेकों अच्छे और पवित्र काम हैं जिन्हें हम करते न डरते हैं न शर्माते हैं....ऐसे इल्ज़ाम लगते तो हमे कतई बुरा नहीं लगता! पर ये चम्मच चोरी! लाहोल बिला अकूवत! हमसे हज़म न हुई जी! हम तो हाथ से भकोसनेवाले प्राणी हैं भला इस चम्मच का करते भी क्या ? अब कहनेवाले तो ये भी कह रहे हैं कि हमारे भोले मानुष 'हेरा-फेरी थ्री' फिल्म की शूटिंग कर रहे थे; क्योंकि बड़े होटल का सेट लगाने का सारा खर्च बच जाता। पर इस 'बचाने' के चक्कर में इज़्ज़त का तो चूरमा बन गया! इन मुए सफेदी पुते चमड़ी वालों ने सब सपनों पर पानी फेर दिया। अब ऐसी फिल्मों की डिमांड भी ज़रा ज़्यादा ही हैं क्योंकि भंसाली जैसे 'इतिहास निचोड़' और 'पद्मावती मरोड़' फिल्म पेश करेंगे तो कौन देखने देगा भला ? हमारी छोटी-छोटी भावनाओं पर इतना ज़ुल्म ढाइएगा तो क्या हम बर्दाश्त करेंगे? वे चूँकि छोटी हैं जल्दी आहत होती हैं पर इन फिल्मवालों को थोड़ा तो सोचना चाहिए। बस बेसोचे समझे ठान लेते हैं। तो हम कौन कम हैं?मरने-मारने पर उतारू होगें ही।वैसे हम असमंजस में हैं कि बात किसकी माने! हमारी एक मित्रा जो 'मानुष' संग गई थी उसका तो यहाँ तक कहना हैं कि खाने की मेज़ पर हम तो मेज़बान का मनोरंजन करने हेतु अपना करतब मतलब जादू दिखा रहे थे! वही हाथ की सफाई, जो अपने यहाँ गली- कूचों में चलता हैं।जिसमें कभी आदमी की मुंडी गायब, कभी धड़ तो कभी पूरा आदमी ही गायब कर देते हैं जादूगर ! वहाँ तो चम्मच मात्र हाथ से बैग तक ही गई थी कि 'चोर-चोर' कह पीछे पड़ गए गोरे! हमारी इस कला को मेज़बान ने चोरी का नाम दिया जो हमारे साथ नाइंसाफी हैं। ये मुद्दा यू एन में उठना चाहिए कि हमारी भावना ग़लत नहीं थी। अब वे खुद चोर थे -''जाकि रही भावना जैसी''। अब? अब क्या! हमारी भावना हमारे साथ। उनकी भावना भी हमारे साथ। बहुत खिच-खिच हो चुकी अब विक्स की गोली लो और ये खिच खिच दूर करो!

***

संपर्क: 6/10, तृतीय तल, इंदिरा विकास कॉलोनी, मुखर्जी नगर
नई दिल्ली 110009
ईमेल: dr.anitayadav@yahoo.com
मोबाइल: 9873650465, 8920225355

रामभरोस का भरोसा रामभरोसे

मोहनलाल मौर्य

कई लोग इत्ते भरोसे के साथ यकीन दिलाते हैं कि आपका अमुख कार्य। अमुख तारीख को सुनिश्चित हो जाएगा। यह सुनकर हम भी सुनिश्चित की चादर ओढ़कर सो जाते हैं। सुनिश्चित की अवधि समीप आने पर हमारी आँखे खुलती हैं तो सुनिश्चित की चादर अनिश्चित में समेटी हुई मिलती है। अनिश्चित में समेटी हुई चादर को आप हम तो दोबारा ओढ़ना मुनासिब नहीं समझते। पर मित्र ! रामभरोस अनिश्चित में समेटी हुई चादर को भी फैलाकर दुबारा ओढ़ लेता है। अब रामभरोस को कौन समझाए? वह किसी कि मानता भी तो नहीं। कहता है,बेचारे की कुछ मजबूरी रही होगी। वह तो तकरार में भी इनकार नहीं करता। इनकार ही किया है। इकरार तो यथावत है। इकरार है तो भरोसा भरसक है। इसे क्या मालूम? ऐनवक्त पर मना करने पर वहीं स्थिति होती है। जो चुनाव में नेताजी की ऐनवक्त पर टिकट कटने पर होती है।

कहते है कि जिस पर भरोसा होता है। वहीं मुसीबत में काम आता है। लेकिन भरोसा देकर ऐनवक्त पर टालमटोल कर जाना। मुसीबत में एक ओर मुसीबत झेलना मजबूर करना है। फिर एक ओर एक मुसीबत मिलकर ग्यानरह का काम करती हैं। मौका मिलने पर काम भी तमाम कर देती है। मुसीबत यहाँ तो आती नहीं और आती है जल्दी सी जाती नहीं। खुद तो आती है,जो आती है,अपने संग मानिसक तनाव और गृहक्लेश भी साथ लाती है। जेल से कैदी का बाहर निकलता आसान है पर मुसीबत से निकलना मुश्किल है। मुसीबत तो मुसीबत है।

रामभरोस का जिस पर भरोसा कायम है। उसे रामभरोस के नाम में,जो 'राम' है उसमें मर्यादा पुरुषोत्तम 'राम' तो नज़र आता है। पर राम के पीछे जुड़ा 'भरोस' में भरोसा दिखाई नहीं देता। वह सोचता होगा। जिसका नाम ही राम के भरोसे है यानी रामभरोस है। उस पर क्या भरोसा करें? विश्वास कुमार होतो। कम से कम नाम पर तो विश्वास रहता है। फिर चाहे वह नाममात्र का ही विश्वास कुमार क्यूँ ना हो। इसमें रामभरोस का दोष थोड़ी है। माँ-बाप दोषी है। जिन्होंने ऐसा नाम रखा। माँ-बाप भी क्यूँ दोषी है? दोषी तो ज्योतिषी है। ज्योतिषी भी क्यों दोषी? वह तो पंचाग के मुताबिक चलता है। दोषी तो ग्रह है जिसमें

संपर्क: ग्राम पोस्टी चतरपुरा वाया नारायणपुर, तहसील बानसूर जिला अलवर (राज.), पिनकोड़ 301024
ईमेल: mohanlalmourya@gmail.com
मोबाइल: 0963615-5555

इसका जन्म हुआ था। ग्रहों का भी क्या दोष है? दोष तो तुला राशि का है जिसने यह नाम प्रदान किया। इसमें तुला राशि का भी क्या दोष है? तुला राशि ने थोड़ी कहा था कि रामभरोस ही नाम रखना। तुला में रामभरोस के अलावा ओर भी अनेकानेक नाम थे। उनमें से भरोसा लायक नाम रख लेते। खैर,छोड़ों।

रामभरोस ऐसा क्या करें? उसका जिस पर भरोसा है। वह भी उस पर भरोसा कर ले। आप ही कोई सुझाव दीजिए। हो सकता है,आपका सुझाव। उसके दिमाग में घुस जाए और वह भरोसा कर ले।

एक भाई साहब! ने बहुत अच्छा सुझाव दिया। भरोसा तो भरोसा है। करें ना करें उसकी मर्ज़ी। इसमें आप-हम क्या कर सकते है सरजी। आप भी किसी के भरोसे आश्वस्त है तो जान लीजिए भाई साहब का सुझाव शाश्वत है। इसके बावजूद भी भरोसा करते हैं तो इसकी ज़िम्मेवारी खुद की होगी।

एक दूसरे भाई साहब ने सुझाव दिया- भरोसे पर दुनिया कायम है। भरोसा है तो सब कुछ है। अन्यथा कुछ भी नहीं। सुझाव तो इनका भी वाजिब है। ऐतबार ही है,जिसकी बुनियाद पर रिश्तों की इमारत टिकी हुई है। अन्यथा कब की ध्वस्त हो गई होती। ऐतबार नहीं होता तो प्रेमी-प्रेमियों में प्रेम ही नहीं होता। प्रेम नहीं होता तो प्रेमी-प्रेमिका नहीं होती। ऐतबार है तो प्रेम है और प्रेम है तो प्रेमी-प्रेमिका है।

रामभरोस जिस पर अटूट भरोसा करता है। उसने मुझे बताया कि अधुनातन में भरोसा रहा ही कहाँ? जो निहायत कम बचा हुआ है। उसके भी स्वार्थ की दीमक लग गई है। जो भरोसे को धीरे-धीरे चट कर रही है। जिस पर खुद से ज़्यादा विश्वास है। वहीं विश्वास का गला दबा रहा। इसीलिए तो भाई भाई से आँखे नहीं मिला रहा है। उसी ने आगे बताया कि भाई साहब ! होने को तो भरोसा तो भरसक होता है। लेकिन जिस पर भरोसा होता है। वहीं विश्वासघात निकल आए तो इसमें भरोसा भी क्या करे? रही बात रामभरोस की,जिसका नाम ही रामभरोस है। उस पर भरोसा करना भी रामभरोसे ही है।

***

लघु कथा

संवेदना

भारती शर्मा

शहर में अबोध चिराग़ की दर्दनाक हत्या से सभी के मन में आक्रोश था। कई सामाजिक संस्थाएँ धरना/प्रदर्शन कर हत्यारे के खिलाफ मोर्चा निकाल रही थीं। चिराग़ के माता-पिता अपने बच्चे की असमय दर्दनाक हत्या से पूरी तरह से टूट चुके थे। चिराग़ उनकी इकलौती संतान था।

घर के बाहर एक बड़ी-सी गाड़ी आकर रुकती है। उसमें से दो हट्टे-कट्टे आदमी हाथ में रायफल लिए जल्दी से उतर कर बाहर निकलते हैं। एक अन्य व्यक्ति कार का दरवाज़ा खोलता है। सफेद खादी की साड़ी पहने, काला चश्मा लगाए अपने आप को व्यवस्थित करते हुए एक महिला उतरती है और घर के भीतर प्रवेश करती है।

एक महिला- अरे!...कौन हैं ये..कोई नेता लगती हैं।

दूसरी महिला-ये बहुत बड़ी समाज सेविका हैं। तारा देवी।

घर के भीतर एक कार्यकर्ता तारा देवी को बच्चे की माँ के पास ले जाता है। चिराग़ की माँ स्तब्ध-सी तारा देवी को देखती है। तारा देवी कभी बच्चे के फोटो को गोद में लेकर फोटो खिंचवाती हैं तो कभी चिराग़ की माँ के कंधे पर हाथ रख कर...कार्यकर्ता बार-बार कैमरामैन को सही एंगल से फोटो लेने की हिदायत देते हैं। तारा देवी कुछ देर चिराग़ के माता-पिता से घटना के बारे में बातचीत करती हैं फिर बच्चे की फोटो पर फूल चढ़ाते हुए इशारे से अपने सेक्रेटरी को बुलाकर धीरे से पूछती हैं...'क्या नाम था बच्चे का?' सेक्रेटरी दिमाग़ पर ज़ोर देते हुए बताता है जी...चिराग़...तारा देवी...ओ.के.। और चिराग़ के माता-पिता की ओर मुखातिब होकर कहती हैं कि हम चिराग़ को न्याय दिलाकर रहेंगे।

गाड़ी में बैठते हुए तारा देवी सेक्रटरी को हिदायत देती हैं 'न्यूज़ कवर पेज़ पर आनी चाहिए!'

***

संपर्क: द्वारा: अशोक 'अंजुम', गली नं.-2, चन्द्रविहार कॉलेनी, क्वार्सी बाई पास, अलीगढ़-200201
मोबाइल:08630176757

यात्रा वृत्तान्त

उमेश पंत

सुबह उठते हुए कुछ देर हो गई। साढ़े सात बज चुका था।

''अरे आप लोग उठे नहीं अभी.. आदि कैलास तो सुबह-सुबह ज़्यादा अच्छा लगता है..''

चाय लेकर आए उस शख्स ने ज़ोर से कहा तो मेरी और मेरे सफ़र के साथी रोहित की नींद खुली।बिस्तर पे लेटे-लेटे ही हमने चाय पी। उनींदी आँखों से उस छोटी सी शीशे की खिड़की के बाहर देखा और सब कुछ जगमगाता सा लगा। जल्दी से चाय पीकर बाहर गए। बाहर काफी ठण्ड थी लेकिन आँखें चौंधिया रही थीं। चारों ओर बर्फ से ढके पहाड़ थे और उन पहाड़ों के बीच मैदान सी जगह में हमारा ये बॅन्कर था।

कल शाम जब यहाँ पहुँचे तो अँधेरा था, इसलिए आस-पास का नज़ारा एकदम साफ़ दिख नहीं रहा था। लेकिन अभी जब सूरज ने अपने रंग बिखेरे तो ये नज़ारा जैसे एकदम बदल गया हो। लगता था कि रात के अँधेरे के छंटते ही सारे पहाड़ एकदम नए सफ़ेद कपड़े पहनकर आस-पास खड़े बातें कर रहे हों। तेज़ चलती हवा की सरसराहट ही जैसे उनकी आवाज़ हो।

हम अगले आधे घंटे में तरो-ताज़ा हुए और अपने कैमरे लेकर निकल पड़े। गेस्ट हाउस के कर्मचारियों ने बता दिया कि यहाँ से मुश्किल से तीन किलोमीटर चलकर पार्वती सरोवर है और आदि कैलास तो बस अगले कुछ चार सौ मीटर बाद ही पूरी तरह नज़र आने लगा।

उसका कुछ हिस्सा गेस्ट हाउस से भी दिखाई दे रहा था।

जैसे ही हमने चलना शुरू किया वायुमंडल का दबाव सर में महसूस होने लगा था।

संपर्क: 4 ए, ब्लॉक के, साकेत, नई दिल्ली 110017
ईमेल : mshpant@gmail.com

ऑक्सीजन की कमी एकदम साफ़ पता चल रही थी। एक-एक कदम रखना यहाँ भारी लग रहा था। हमारे चलने की रफ़्तार खुद ब खुद धीमी हो गई थी।

ज़रा सा आगे बढ़ने के बाद ही हमारी बाईं तरफ बर्फ से पूरी तरह ढंका एक बहुत खूबसूरत पहाड़ हमें देख कर मुस्कुरा रहा था। एक चील उसकी चोटी को छू आने की कोशिश कर रही थी। जैसे झक सफ़ेद पश्मीना ओढ़े कोई उजला शख्स किसी सोच में डूबा कोई कविता लिख रहा हो।

बचपन से अब तक दिवाली के दिनों घर में आने वाले पोस्टरों में जिस पहाड़ को देखा था वो आज आँखों के एकदम सामने था। इसे देखना ठीक वैसा ही था जैसे पहली बार शाहरुख़ खान को कुछ क़दमों की दूरी पर देखा था और अनिल कपूर जब पहली बार मुझे देख के मुस्कुराया था। किसी फ़िल्मी सितारे की सिनेमाई भव्यता को एकदम करीब से देख लेने से भी कहीं आगे का एहसास था आदि कैलास को इतने पास से देख लेना।

कुछ देर आदि-कैलास की तस्वीरें अपने कैमरे में उतारते रहने के बाद जब उसकी खुमारी कुछ हल्की हुई तो हम बहुत धीमी रफ़्तार से आगे बढ़ गए। आस-पास झक सफ़ेद पहाड़ों से घिरे बस दो शख्स, तेज़ चलती हवा की आवाज़ से लिपटी ठंड को खुद में जज़्ब किए आगे बढ़ रहे थे। जैसे कोई दुनिया से परे की जगह हो ये। दूर-दूर तक न कोई पंछी, न कोई जानवर, न कोई आवाज़ और उसका अंदाज़ा भी नहीं कि जहाँ हम जा रहे हैं वो जगह आख़िर कैसी होगी।

दूर से कई बार ऐसी आवाज़ें आती कि लगता सामने जो बर्फ से ढके पहाड़ हैं वहाँ बर्फीले चक्रवात चल रहे होंगे। हल्का डर भी था कि कहीं कोई अवलोंच या बर्फ का तूफ़ान न उठने लगे। छियालेख से लौटते हुए एक शख्स ने बताया था कि एक बार बर्फ का एक तेज़ तूफ़ान वहाँ आया और आईटीबीपी के करीब दस जवान उसकी चपेट में आकर मारे गए थे।

हालाँकि यहाँ आस-पास सबकुछ एकदम शांत था। इस शान्ति में एक ख़ास तरह की सौम्यता थी जिसे देखकर किसी प्राकृतिक क्रूरता की आशंका लगती तो नहीं थी। पर ये जगह उस नए-नए मिले अजनबी की तरह थी जिसके बारे में हमें पता नहीं होता कि वो किस बात पर कैसी प्रतिक्रिया देगा।

दूर एक टीला दिख रहा था जिसके पार एक अजूबे सी दुनिया है ये हमें लोगों ने बताया था। मुझे गर्बियांग में मिले उस बावन वर्ष के आदमी की बात याद रही थी।

''अजीब सा सम्मोहन है वहाँ.. एक बार जाओ तो फिर लौटने का मन ही नहीं करता।''

कुछ ही आगे बढ़े थे कि कहीं ऊपर से सन्नाटे को बाधित करती एक आवाज़ सुनाई दी।

ये एक चरवाहे की आवाज़ थी शायद। ऊपर देखा तो उस टीले के एकदम सिरे से एक शख्स चलता हुआ नीचे उतर रहा था। हमें देखकर वो शख्स हमारी तरफ ही आने लगा। पास पहुँचा तो शक्ल पहचान में आ गई। ये वही शख्स था जो ज्योलिंगकोंग पहुँचने के ठीक पहले मिला था। वही शख्स जिसका नाम एकदम नाटकीय तरीके से इस जगह के एकदम मुफीद था- तस्वीर। आदि कैलास में तस्वीर नाम के इस आदमी से मिलकर बड़ी खुशी हुई। वो हमारे साथ-साथ चलने लगा। चलते हुए तस्वीर ने बताया कि पार्वती सरोवर सामने दिख रहे टीले के एकदम करीब है। हमें इस टीले पर चढ़कर कुछ नीचे उतरना था।

तस्वीर से बातें आगे बढ़ी तो उसने बड़े खुश होते हुए बताया''मेरा नाम तस्वीर है करके एक यात्री ने मुझे एक हज़ार रुपये दे दिए। कहने लगे ये बस इसलिए दिए हैं क्यूँकि तेरा नाम तस्वीर है।''

तस्वीर। आस-पास सब कुछ यहाँ किसी खूबसूरत तस्वीर सा ही था। एकदम कवितामय। बस साँस लेनी थोड़ी मुश्किल लग रही थी। ऐसा लग रहा था जैसे हल्की सी मदहोशी छा रही हो और इस मदहोशी में सबकुछ और रहस्यमय सा लगने लगा था।

तस्वीर ने बताया कि वो नेपाल से आया है और एक नौकरी कर रहा है। नौकरी ये कि उसे सैकड़ों भेड़ों को पालना है। उन्हें एक जगह से दूसरी जगह चरने के लिए ले जाना है।

घुमक्कड़ चरवाहों की इस सदियों पुरानी और धीरे-धीरे ख़त्म होती जाती परंपरा (जिसे अंग्रेज़ी में पेस्टोरल नोमेडिज्म कहा जाता है) की आख़िरी निशानदेही सी देता तस्वीर पहाड़ के पीछे कहीं गुम हो गया था और हम अब पार्वती सरोवर के एकदम करीब थे।

टीले के दूसरी तरफ बर्फ से ढके आदि कैलास के पैरों पर एक शांत और एकदम साफ़-सुथरी झील बह रही थी। इसी झील का नाम था पार्वती सरोवर। इस झील में आदि कैलास पर्वत की परछाईं दिखाई दे रही थी जैसे इस जनशून्य इलाके में ज़मीन पर कोई साफ़ सुथरा आइना बिछा हो, जिसमें आस-पास के पहाड़ उचक-उचक कर अपनी परछाईं देख रहे हों।

इस वक्त मैं कह सकता था कि इतना खूबसूरत नज़ारा मैंने आज तक अपनी आँखों के सामने इससे पहले कभी नहीं देखा था। और इस भरी पूरी ख़ूबसूरती को रोहित और मुझे किसी और से नहीं बाँटना था। प्रकृति की इस खूबसूरत नेमत के हम अकेले अधिकारी थे।

इस वक्त हम समुद्र तल से करीब-करीब पाँच हज़ार मीटर की ऊँचाई पर थे। पीले-पीले फूलों के सामने पार्वती झील थी और झील के सामने एकदम अनछुई ताज़ी बर्फ से ढंका, आकाश की ऊँचाइयों को छूता आदि-कैलास। इससे खूबसूरत नज़ारा मैंने अपनी ज़िंदगी में पहले कभी नहीं देखा था।

करीब एक घंटा हम एक टीले पर बैठे आस-पास बिखरी दुनिया को निहारते सोचते रहे कि स्वर्ग अगर कहीं होगा तो वो और कैसा दिखता होगा ? ये कौन सी ताकत थी जो हमें करीब सवा सौ किलोमीटर के पैदल सफ़र के बाद यहाँ ले आई थी ? इतनी मेहनत करके हम क्यों चले आए थे यहाँ ? वो कौन सी मन:स्थिति है जो अपने-अपने कम्फर्ट ज़ोन से खींचकर हमें देश और दुनिया में बिखरे ऐसे विरले कठिन रास्तों पर ले आती है ?

इन सारे सवालों का मौन उत्तर देता हुआ सा एक रहस्यमय वातावरण था ये।सचमुच यहाँ एक ऐसा सम्मोहन था कि लौटने का मन नहीं कर रहा था। और फिर अचानक एक एहसास हुआ। एक अजीब सा एहसास। ऊँचाई का एहसास।

जहाँ हम इस वक्त खड़े थे वहाँ बर्फ से ढंकी बड़ी-बड़ी पर्वत शृंखलाएँ हमें खुद से नीचे दिखाई दे रही थी। ये वो जगह थी जहाँ इंसान नहीं बसते। दूर-दूर तक बस हवा की आवाज़। न पेड़, न पंछी, एक शांत सी झील मौनव्रत करती हुई। चारों तरफ नुकीले पहाड़ बर्फ पहने हुए। जैसे कोई अलौकिक सी दुनिया हो ये जहाँ न कोई बड़ी इच्छा है, न कोई डर, न घबराहट। जैसे सारी जिज्ञासाएँ ख़त्म हो गई हों। मन धुल गया हो जैसे। यहाँ प्रकृति से कोई छेड़छाड़ नहीं थी। कुछ भी बनावटी नहीं था। बिना छेड़छाड़ के, बिना बनावट के, निहायती मौलिक हो जाना कितना खूबसूरत और मासूम हो सकता है ये क्यों नहीं समझ पाते हम ?

फिर एक और एहसास कि यहाँ वही पहुँच पाते हैं जो ज़िंदगी के रोज़मर्रापन में थोड़ा कम यकीन रखते हैं। जो कुछ समय के लिए ही सही उन बेड़ियों को तोड़ पाते हैं, जो आपको ज़िंदगी के बहुत क़रीब आने से रोक देती हैं। इतना क़रीब कि आप ये जानने लगें कि आपकी धड़कनें वायुमंडल का कितना दबाव सह सकती हैं ? आपके पैर कितने मील चलकर डगमगाने लगते हैं ? आपका चेहरा कितना थककर पसीने से नहा जाता है ? आप कितनी ठंड सहन कर सकते हैं ? किसी अजनबी की मुस्कराहट देखके आप कितने खुश हो सकते हैं या फिर बिना किसी पुराने रिश्ते के आप पहली बार किसी के दु:ख को देखकर कितना दुखी हो सकते हैं ? ऊँची पहाड़ी से गिरता कोई झरना, किलोमीटरों तक पहाड़ उतरती जाती कोई पगडंडी, अपनी ही धुन में छलछलाती चलती चली जाती कोई नदी आपकी भावनाओं में क्या फर्क डालती है ?

मुझे इस वक्त उस चरवाहे तस्वीर की वो इच्छाशक्ति याद आ रही थी जो इतनी दुरूह जगह पर बस इसलिए महीने गुज़ार सकता है कि भेड़ें चराकर कमाए पैसे से अपने बच्चों को अच्छे स्कूल में पढ़ा सके। वो माँ याद आ रही थी जिसने मान लिया था कि उसके लिए मेरी बेटी मर गई है, क्यूँकि उसने एक परदेसी से प्यार कर लिया है। कुहू की वो आँखें याद आ रही थी जो उसके नन्हे हाथों में कैमरा आ जाने से कौतूहल से चमक उठी थी।

क्षतिग्रस्त रास्तों की मरम्मत करने वाला वो मज़दूर याद आ रहा था जो बर्फ के ग्लेशियर के किनारे सूखी ज़मीन पे बैठा अपनी चोट के बारे में बताते हुए आकाश से भी गहरी उदासी उस सन्नाटे में बिखेर रहा था। उस खच्चर के चेहरे की वो तनती नसें याद आ रही थी जो भारी बोझ लादे खडंजा चढ़ रहा था।

मुझे वो मैं याद आ रहा था जो यात्रा शुरू करने से पहले इन अजनबी लोगों, जीवों और दृश्यों से नहीं मिला था। जिसने ज़िंदगी में इससे पहले कभी भोजपत्र के पेड़, जंगली भरल, झुप्पू और ग्लेशियर नहीं देखे थे। जो नहीं जानता था कि पाँच हज़ार मीटर की ऊँचाई पर खड़े होकर दुनिया को अपने क़दमों के नीचे महसूस करना कैसा होता है ?और फिर अचानक सामने खड़े बर्फ की सफेदी से चमक रहे उस आकाश को करीब-करीब छू लेते उस आदि कैलास पर्वत पर नज़र गई तो अपने अदनेपन को भी तुरंत महसूस कर लिया मैंने। इतनी पड़ी प्रकृति के एक बिंदु मात्र हिस्से सा मैं। आँखें बंद कीं। पूरी दुनिया उस अँधेरे में एक पल को कहीं खो गई। फिर चेहरे पर पड़े ठंडी हवा के तेज़ झोंके ने जैसे सारे ख़यालों को माँज दिया हो। आँख में पानी की एक हल्की सी लकीर उस मिटाए हुए को धोने चली आई।

अपना पुराना 'मैं', आदि कैलास पर्वत की उन ऊँचाइयों में छोड़ दिया था मैंने। जो यहाँ आता है वो नया होकर लौटता है। पर लौटता है वहीं जहाँ से वो पुराना सा चला आया था।

अपने पुरानेपन में नया होकर लौटना था मुझे। लौटना था मुझे।

ये लौटना यात्राओं का एक ऐसा सच है जिसे चाहे-अनचाहे हमें अपनाना तो होता है। ऐसी यात्राओं के बाद जहाँ हम लौट रहे होते हैं, जिसे हम घर कहते हैं उसकी अवधारणा ही बहुत अर्थहीन लगने लगती है। पैसा हासिल करने के लिए नौकरी नहीं बल्कि अनुभव हासिल करने के लिए यात्राएँ अगर जीवन का सच बन जातीं तो ज़िंदगी कितनी हसीन होती। है ना ?

* * *

यह वृत्तांत उमेश पंत की किताब 'इनरलाइन पास' का एक अंश है।

चिट्ठियों का महत्त्व
कबूतर जा-जा-जा

शशि पाधा

चिट्ठियाँ सैनिकों के जीवन की वो डोर है जिसका एक छोर दूर दराज़ क्षेत्र में तैनात सैनिक के पास और दूसरा उसके प्रियजनों के पास। एक छोटे से लिफ़ाफ़े में भेजा जाता था अगाध प्रेम, आँसू, उलाहने, हिदायतें, वायदे और आशीष। आज की युवा पीढ़ी इसके महत्त्व को समझ ही नहीं सकती क्यूँकि आज ईमेल, व्हाट्सअप का ज़माना है। आज तो पल-पल की ख़बर सात समन्दर पार और दुर्लभ पर्वतों को लाँघ कर भी पहुँच जाती है। अब न तो विरह की पीड़ा है, न प्रतीक्षा के अंतहीन पल। जब जी चाहे, मोबाइल का बटन प्रियजन से मिला देता है।

मैं मोबाइल फोन के आने के पहले की बात कर रही हूँ जब सुदूर पूर्वोत्तर सीमा पर तैनात या सियाचन की बर्फ़ीली चोटियों के शीत से जूझते सैनिकों के पास अपने प्रियजनों से सम्पर्क करने का एक मात्र साधन था-चिट्ठी। यह चिट्ठी या तो फौजी अंतर्देशीय नीले पत्र में आती थी जिसके बाहर सेना की मोहर लगी होती थी या बंद लिफाफे में। सुना है आने वाली और भेजने वाली चिट्ठी को कई बार सुरक्षा की दृष्टि से पढ़ लिया जाता था और फिर भेजी जाती थी। फौज में चिट्ठी को लेकर कई गीत बने हैं, कई लघु नाटक खेले गए है। जिस परिवार का कोई सदस्य सेना में नहीं है वो इसके महत्त्व को नहीं जान सकता।

चिट्ठियों के विषय में फौजियों के पास कई किस्से कहानियाँ हैं। मेरे विवाह के समय मेरे पति भारत चीन सीमा पर स्थित 'शुगर सैक्टर' में तैनात थे, जहाँ पहुँचने के लिए कई दिन लग जाते थे। शिमला के आगे बर्फीली पहाड़ियों पर रेंगती हुई फौजी गाड़ियाँ अपने कैम्प तक पहुँचने में कई दिन लगा देतीं थीं। ऐसे बर्फीले प्रदेश में चिट्ठी भी हैलीकॉप्टर से पहुँचाई जाती थीं और वो भी सप्ताह में एक बार और अगर मौसम ख़राब तो ------???? मेरे

संपर्क:10804, Sunset Hills Rd, Reston VA, 20190, USA.
मोबाइल:2035896668
ईमेल : shashipadha@gmail.com

पति मज़ाक में बहुत बार कहते थे कि कबूतर के पैरों में बंधे संदेशों से ही प्रेरित होकर हैलीकॉप्टर का निर्माण किया गया होगा। नहीं तो चिट्ठी पत्री बादलों के पंखों के साथ बंद कर भेजनी पड़ती। मैं जानती थी कि मैंने उन्हें कालीदास के मेघदूत के कुछ अंश कभी पढ़ कर सुनाए होंगे। नहीं तो कहाँ गोली और कहाँ इतनी खूबसूरत कल्पना।

चिट्ठी पहुँचने की रोमांचक कहानी मेरे पति के शब्दों में --- सप्ताह में एक बार जब मौसम साफ़ होता था तो हमें दूर से हैलीकॉप्टर के आने का शोर सुनाई देता था। शायद सभी सैनिकों की हृदयगति उस समय बढ़ जाती थी। हैलीकॉप्टर तो किसी बेस कैम्प तक ही आता था लेकिन एक आस बन जाती थी कि हमारी चिट्ठी आएगी। उसके बाद उस बेस कैम्प से अलग-अलग स्थान की ओर फ़ौजी गाड़ियों से अपनी अपनी यूनिट के डाक के थैले भेजे जाते थे। कभी-कभी सुबह के देखे हैलीकॉप्टर के कई घंटे बाद देर शाम तक ही डाक पहुँचती थी, प्रतीक्षा के वो पल कहीं चहल कदमीं में, कहीं रेडियो पर फिल्मी गाने सुनने में और कभी कनखियों से खिड़की के बाहर झाँकते हुए निकलते थे। इन दारुण पलों में सामने दराज़ पर पर रखी ब्लैक एंड वाइट तस्वीर आपके मन के सारे भेद जान जाती थी। आख़िर शाम हो ही जाती और चिट्ठियाँ आपके कैम्प तक पहुँचा दी जाती थीं।

सेना अधिकारियों को आई चिट्ठियाँ उनके सहायक उनके बंकरों में पहुँचा देते थे। केरोसिन के लैम्प की रोशनी में उन्हें जाने कितनी बार पढ़ा जाता था, यह लैम्प जाने या सैनिक के काँपते हाथ जानें। दो-चार या उससे भी ज़्यादा बार पढ़ने के बाद तुरंत उत्तर भेजने की प्रक्रिया भी आरम्भ हो जाती थी। क्यूँकि डर यह था कि प्रेम संवाद का ताना- बाना टूट न जाए।

अन्य सैनिकों के पास चिट्ठी पहुँचने की अलग प्रक्रिया थी। शाम के समय कम्पनी के हिसाब से सैनिकों को एक स्थान पर एकत्रित किया जाता था। इस समय को 'रोल कॉल' का नाम दिया गया था। सभी सैनिक एक या दो लाइन बना कर खड़े हो जाते थे। हवालदार मेजर सामने से चिट्ठियों का थैला लेकर आता था। जवान आस में टकटकी लगाए उस थैले को बड़ी हसरत से देखते थे। हवलदार मेजर एक-एक करके पत्र निकालता था और जिसका नाम पढ़ता था वो आगे आकर अपनी चिट्ठी ले जाता था। जिसके नाम से कोई पत्र नहीं आता था, उसके चेहरे पर गहन निराशा का भाव छा जाता था। चिट्ठियाँ बंटने के बाद लाइन तोड़ का आदेश मिलते ही सभी अपने-अपने बंकरों में चले जाते थे। कोई तो हाथों में खुशी समेटे और कोई आँखों में घोर उदासी। पहाड़ों की चोटियों पर उस समय जाने कितने शायरों ने जन्म लिया होगा और कितनी प्रेम कहानियाँ बुनी गई होंगी। यह तो चिट्ठी भेजने वाला और चिट्ठी पाने वाला ही जानता होगा। अब चिट्ठी की जबाब तो वहाँ भी उसी समय लिखा जाता था ताकि कल की डाक से संदेश छूट न जाए।

यह तो है 'उस तरफ़' की कहानी। अब इस तरफ की कहानी मेरे शब्दों में ---

हमारे घर में मेरे बचपन से ही जो डाकिया चिट्ठी लेकर आता था उन्हें हम मणिराम चाचा कहते थे। जब भरी दोपहरी की धूप में चाचा अपनी साइकल हमारे घर के गेट के साथ टिकाते तो हमें पता चल जाता था कि डाक आई है। वो तो अक्सर पत्र गेट के ऊपर से घर के आँगन में फेंक के चले जाते थे। लेकिन हमारे घर का नियम कुछ अलग ही था। उन्हें अंदर बुला कर ठंडा निम्बू पानी का गिलास देना मेरी ज़िम्मेवारी होती थी। पानी पीकर चाचा ढेरों आशीषों से मेरी झोली भर देते थे।यह सिलसिला कई वर्षों तक चलता रहा। फिर मेरा विवाह एक फ़ौजी अधिकारी के साथ हो गया। मैं अभी स्नातक की पढ़ाई कर रही थी और 'ये' अपनी पलटन के साथ भारत चीन सीमा पर तैनात थे। मेरे और मेरे पति के बीच भी सम्पर्क का एकमात्र साधन था- चिट्ठियाँ।

मेरे विवाह के बाद चाचा का काम कुछ बढ़ गया था। मेरे पति सप्ताह में दो तीन चिट्ठियाँ तो मुझे लिखते ही थे। मेरी चिट्ठी कभी भी गेट के ऊपर से नहीं फेंकी जाती थी। चाचा अपने साइकल की घंटी बजाते थे और मैं दौड़ कर उनसे अपनी चीज़ ले लेती थी। चाचा बड़े प्यार से कहते, ''बिटिया, कप्तान साहब को हमारा प्यार ज़रूर लिखना।'' मैं उनकी बात सुनती तो थी लेकिन उत्तर देने का समय कहाँ होता था मेरे पास। कभी-कभी चाचा कहते, ''आज नीम्बू पानी का वक्त नहीं है? कोई बात नहीं, सादा पानी भी चलेगा।''

उन सुदूर पर्वतों पर हैलीकॉप्टर भी पत्र एकत्रित करने हर रोज़ नहीं आ सकता था इसलिए शायद डाक भी कई दिनों तक अपने गंतव्य तक नहीं पहुँचती थी। फिर डाक विभाग वाले जाने कैसे छंटनी करते थे कि बहुत बार मेरे नाम से एक दिन में दो या तीन चिट्ठियाँ भी आती थीं। चाचा के लिए विडम्बना यह थी कि उन्हें केवल मेरी चिट्ठी पहुँचाने के लिए हमारे क्षेत्र में दिन में दो बार भी आना पड़ता था। यानी दो अलग-अलग समय, सुबह बारह बजे और दोपहर के बाद तीन बजे। शुरू -शुरू में तो चाचा बड़ी खुशी से मुझे मेरे सम्पर्क सूत्र थमाते। जब यह सिलसिला सप्ताह में तीन चार बार चलने लगा तो कई बार चाचा कुछ खीझ कर मुझसे कहते, ''पता नहीं क्या लिखता है वो हर रोज़। मुझे केवल तुम्हारा पत्र पहुँचाने के लिए इतनी भरी दोपहरी में इतनी दूर से आना पड़ता है।'' उन बातों में प्यार अधिक और खीझ कम होती थी। शायद थोड़ा-थोड़ा सूरज देवता के प्रकोप का भी असर होता था।

मैं चुपचाप उनसे चिट्ठी लेकर शकंज्बी का गिलास थमा देती थी और वो उसी पुराने अंदाज़ में कहते, '' कप्तान साहब को मेरा प्यार ज़रूर लिख देना।'' यह सिलसिला भी लगभग दो वर्ष रहा।

वर्ष 1971 के भारत-पाक युद्ध में मेरे पति जम्मू के पास सीमा पर शत्रु से जूझ रहे थे। तब तक चाचा मणिराम सेवा निवृत भी हो गए थे। लेकिन वे रोज़ दोपहर के समय अपनी साइकल से हमारे घर आते, मेरे पास बैठते और सांत्वना भरी बातें सुनाते।मैं जानती थी कि उन्हें मेरी चिंता यहाँ खींच कर लाती थी। हमारी चिट्ठियों ने इतना मधुर रिश्ता जो जोड़ दिया था हम तीनों के बीच।

मैं जब भी अपने आरम्भिक वैवाहिक जीवन को याद करती हूँ तो मणिराम चाचा का स्नेहिल चेहरा मेरी आँखों के सामने आ जाता है।

और मैं सोचती हूँ..... उन रिश्तों की मिठास आज के व्हाट्सअप या ईमेल में कहाँ ???

***

गीत

शिवकुमार अर्चन

10, प्रियदर्शिनी ऋषि वैली, ई-8,
गुलमोहर एक्सटेंशन, भोपाल-462039
(म.प्र.)
मोबाइल - 09425371874

वे दिन

अब न रहे वे दिन चमकीले
नहीं रहे वे दिन
जब दिन होते थे अवारा
रातें थीं कमसिन

नींद-बैंक में अपने भी
सपनों के खाते थे
कत्था, पान, सुपारी जैसे
रिश्ते नाते थे
तट छूटे, सम्मोहन टूटे
रह रह कर पल छिन

ज्यों कबीर के पीछे पीछे
होती थी भाषा
कर्मों से पूछा करते थे
सुख की परिभाषा
समय अहेरी चुभा गया है
गुब्बारे में पिन

हम चलते थे
चंदा, सूरज, तारे चलते थे
बाहों में आकाश, नदी
के जिस्म पिघलते थे
कहा बावरे मन को वे दिन
पोरों पर मत गिन
***

एक और दिन

मुँह बाए उँगली चटकाते
बीत गया एक और दिन

आँखों से छटे नहीं
स्वप्न के कुहासे
साँसों में धुले नहीं
धूप के बताशे
भीतर ही भीतर धुँधवाते
बीत गया एक और दिन

मित्रों का परिजन का
फ़ोन नहीं आया
कमरे में डटा रहा
चुप्पी का साया
खुद अपने ऊपर झुँझलाते
बीत गया एक और दिन

शायद ये कठिन समय
किसी तरह बहले
खींसे में प्यार लिए
सड़कों पर टहले
इधर उधर आँखें मटकाते
बीत गया एक और दिन
***

गीत गाओ बंधु

कलकल, छलछल
प्रतिपल निर्मल
किसी नदी का, या झरने का
गीत गाओ बंधु

तट पर जब लगते थे मेल
मन होता हो जाएँ अकेले
संस्पर्शों के सुख अलबेले
कोई दे दे, यह सब ले ले
झुले पर पेंगे भरने का
गीत गाओ बंधु

ऐसी रही वनों की माया
सूरज कब छू पाया छाया
धरती ने जब अनहद गाया
पत्थर ने भी सुमन खिलाया
धुन सुन चकित हुए हिरने का
गीत गाओ बंधु
कहाँ गए उजले संबोधन
लज्जा के झीने अवगुँठन
हर प्रतिमा का हुआ विसर्जन
खुरच गया माथे का चन्दन
तुलसी पर दीपक धरने का
गीत गाओ बंधु
***

आओ चलें

आओ चलें
विगत में लौटें
फिर से बचपन जी लें
सुलझाकर मन की गाँठों को
याद करें कुछ भूलें

काट पतंगें, माझा लूटें
चलकर मैदानों में
धीरे-धीरे सीढ़ी-सीढ़ी
उतरें तहखानों में
सपनों के घर में लटकाएँ
जुगनू की कंदीलें

साध निशाना, चला गुलेलें
तोड़ें कच्ची कैरी
खींसे में पुखराज सरीखी
भर लें नीम निबौरी
वर्तमान धुँधला-धुँधला है
देखें पिछली रीलें

नदी नहाएँ, छप-छप तैरें
सीपी शंख बटोरें
बना रेत में नए निकेतन
दुख की बाँह मरोरें
खुशियों की मीठी नहरों का
निर्मल पानी पी लें
***

कविताएँ

निर्देश निधि की कविताएँ

संपर्क: विद्या भवन, कचहरी रोड,
बुलंदशहर, (उप्र) पिन - 203001
ईमेल : nirdesh.nidhi@gmail.com
मोबाइल: 9358488084

तुम थोड़ा तो बदलो

तुम थोड़ा तो बदलो
तुम मेरे वजूद का बेजोड़ हिस्सा हो
ठीक वैसे ही
जैसे मैं तुम्हारे वजूद का
मैं शृंगारिणी भी तुम्हारी वजह से
वीतरागिनी भी तुम्हीं से
जैसे तुम
मुझसे मिलकर नृत्य रात गोपाल
और मेरे बिन वीतरागी राम
पर कभी तुम मुझपर ढाते हो कहर
कभी मैं तुम पर उछालती हूँ हथेली भर - भर कीचड़
उलीच देती हूँ मन की सारी गंद तुम पर
भले ही
तुमने धोकर अपना तन
पहना हो श्वेत वसन
की हो योग साधना
बनाया हो मन कुन्दन
अपने पैरों के बंद खोलकर
उन्हें बाँध देती हूँ तुम्हारे टखनों में
और खींच देती हूँ झटके से
ताकि इस वार से अंजाने
मुँह के बल गिरो पक्के रास्ते पर तुम
क्यों कर रही हूँ मैं ऐसा
ले लेना चाहती हूँ
सदियों का प्रतिशोध
गुज़र जाना चाहती हूँ
तुम निरंकुश जार के सिर से
या अभिशप्त है समय ही
अशांति की कोख में कैद हो जाने को
नहीं जानती मैं
पर हाँ
इतना जानती हूँ कि
प्रतिशोध से और भी भड़कती है आग
शायद मुझे ही निःस्पृह हो
तुम्हें कर देना होगा क्षमा
बशर्ते कि तुम थोड़ा तो बदलो।

***

ए परदेसी सुनो न

ए परदेसी सुनो न
मैं आज भी तुम्हारी राह तकती हूँ
उसी रेत के टीले पर
जो हवाओं के रुख से
घटता और बढ़ जाता है
ठीक मेरी घटती बढ़ती आशाओं की तरह
घास की गठरी रोज़ ही रह जाती है हल्की
साँझ पड़े रोज़ ही खाती हूँ माँ की डाँट भारी
वो पूछती है
रेत के टीलों पर कौन सी घास उगती है मरजानी
देखो न परदेसी
माँ की बकरियाँ आज भी रहेंगी भूखी
क्यों कि आज तो दिन भर
उसी झड़बेरी को निहारा
जिसकी कठखनी टहनियों में फँसी
मेरी गुलाबी चूनर छुड़ाकर
ओढ़ाई थी तुमने बिन देखे
मेरा बिन चूनर वाला तन
तभी जा छुपा था तुम्हारे सीने में
मेरा मन रोमिल खरगोश बन
आज वही रेत पहनी
अपने कोरे तन पर, दिन भर
जिस पर पाँव गढ़ाते चले गए थे तुम
वादा कर जल्दी लौट आने का
मेरी कुँवारी हथेलियों को छुए बिन।
ए परदेसी सुनो न।
जेठ की इन गुस्सैल गरम दुपहरियों में
मुश्किल, बहुत ही मुश्किल होता है
रेत के इस टीले पर
तुम्हारी राह तकना
और भी दुखकर होता है
माँ की बकरियों का भूखों रह जाना
पर हरी घास वाले मैदानो से
तुम्हारी पगडंडी का
कोई एक छोर भी तो नहीं दीख पड़ता
श्यामा बकरी के कान में
रोज़ यही बताती हूँ मैं
ए परदेसी सुनो न
मुझ पर न सही
माँ की बकरियों पर तो तरस खाओ
कहीं मेरी आशा खेत न रहे
अब लौट आओ।
लौट भी आओ।

***

छद्म हो क्षण बना युग

तुम सामने हो मेरे
मुँदी जाती हैं मेरी पलकें
प्रेम के अतिरेक में
नहीं, मैं नहीं मूँद सकती उन्हें,
क्षण भर को भी तो नहीं,
क्षण के परिवर्तन का क्रम भी तो है
युग का ही निर्मम हिस्सा
कौन जाने सदी से रिसता हुआ
उसका यह नामालूम हिस्सा, क्षण ही
मुझे लहरा दे तिनके सा दूर समंदर पर
या फिर तुम्हें ही
कोई तेज़ हवा का झोंका उड़ा दे
कंटीली सरहदों के पार
कभी न लौट पाने की
बोझिल मजबूरी में लिपटने से पहले
छद्म हो क्षण बने इस युग को
आओ सोख लें पूरा - पूरा।

***

विश्वम्भर पाण्डेय 'व्यग्र' की कविताएँ

संपर्क: कर्मचारी कालोनी, गंगापुर सिटी, स.मा.(राज.)322201
ईमेल :vishwambharvyagra@gmail.com
मोबाइल:9549165579

कलम...

लोग कहते हैं
कि कलम हाथ से चलती
मैं कहता, कलम हाथ से नहीं,
दिमाग़ से चलती है
सोच से चलती है
जिसकी जैसी सोच होगी
कलम की उतनी पहुँच होगी
खूने-जिगर काग़ज पर
वो बिखेर देती है
परन्तु अपनी मर्ज़ी से
निर्णय कुछ ना लेती है
उसे तो जकड़े रहता है
पकड़े रहता है
उस कवि/शायर का हाथ
जिसके सिर में चल रही होती
उथलपुथल जैसी
मजबूरन लिखती वो इबारत वैसी...
***

एक युग बीता...

एक युग बीता एक युग आया
युग आएँगे जाएँगे ...
जो कर जाते काम सुनहरे
युग-युग गाए जाएँगे...
जी कर भी जो जी ना पाए
नाकामी में दिवस गंवाए
बने रहे जो आए -जाए
बैठ किनारे सोचा करते,
वो मोती कैसे पाएँगे...
तुमसे आश जगत् करता है
मन की गागर वो भरता है
गत इतिहास से डरता है
रीती रह गई अगर कहीं जो,
फिर से वो पछताएँगे...
अमिट बनो हस्ताक्षर ऐसा
जो समय से मिटे ना वैसा
राह कठिन घबराना कैसा
लगातार चलने वाले ही,
एक दिन मज़िल पाएँगे...
बात है ये सीधी-साधी
ना करना समय की बर्बादी
अब तो तीर-कमान हैं साधी
मतस्यचक्षु लक्ष्य है जिनका
वो द्रोपदि वर के लाएँगे...
***

मैं कवि...

कभी अक्षर की खेती करता
कभी वस्त्र शब्दों के बुनता
बाग लगाता स्वर-व्यंजन के
मात्राओं की कलियाँ चुनता
मैं कवि, कृषक के जैसा
करता खेती कविताओं की
और कभी बुनकर बन करके
ढकता आब नर-वनिताओं की
भूत-भविष्य-वर्तमान सभी
तीनों काल मिले कविता में
बर्फ के मानिंद ठंडक मिलती
ताप मिलेगा जो सविता में
मैं भविष्य का वक्ता मुझको
सूझे तीनों काल की बातें
मेरी ही कविता को गायक
कैसे-कैसे स्वर में गाते
वेद पुराण गीता और बाईबल
ये सब मेरे कर्म के फल है
डरते मुझसे राजे-महाराजे
कलम में मेरी इतना बल है
***

राग रंजन की कविताएँ

A - 202, Shriram Suhaana,
Doddaballapur Road,
Yelahanka, Bangalore - 560064
मोबाइल 9686694459

...अधूरे किरदार की कविता

और फिल्म के आख़िर में जब
प्रेम में पड़ी नायिका को
मर ही जाना था
ऐन उस दृश्य से पहले
उसे झपकी आ गई थी
और तब से अब तक
उस एक किरदार को
ज़िंदा रखने की ज़िद में
वह हिम्मत नहीं जुटा सकी है
कि वही फिल्म
दोबारा देखे आख़िर तक...
***

देखना

देखो जब ठहरना, ठहर कर देखना
दोनों आँखों से सधी दृष्टि से भाँपकर
देखना सहसा रुकी बारिश की बूँदों को
दूब की नोक से वाष्प होते हुए
और इस तरह आकाश के गुरुत्व को देखना
दो आँखें जो कभी नहीं देख पातीं
एक दूसरे को
उनसे वह सब देखना जो
दो के एक साथ देखने लायक है
आकाश के अनहद कुएँ में झाँककर
देखना मुक्ति के नए मार्ग
झपक भर में उतार लाना सारा नयापन
ऊँचे तनों पर टिका देना हरे बादल
और इस तरह फिर बसे हुए वनों को देखना
पृथ्वी पर अपने आसपास
जिन्हें कोई नहीं देखता उन्हें देखना देर तक।
***

संध्या की कविताएँ

संपर्क: नेशनल महाविद्यालय, लिंकिंग रोड़, बांद्रा (पश्चिम)
मोबाइल:9769640629

ज़िंदगी

ज़िंदगी ने हर बार मुझे
पहन कर उतार दिया
पुराने चलन के कपड़ों की तरह
जिस्म पर पड़ गईं सिलवटें
रूह को कई बार रफू कराया
ज़िंदगी ने मुझे यूँ इस्तेमाल किया
जैसे मैं उसके दरवाज़े पर बैठी
बूढ़ी, खाँसती ''कनीज़'' हूँ
और रोटी के लिए उसकी मोहताज।
***

मोहे बिटिया न कीजो

माँ की नाल से कटकर
प्लास्टिक के बैग में जब पहुँचाया गया था,
मेरी आँखें तब भी खुली थीं...
नाल से कटकर दिल से भी निकल गई
गुदड़ी की तरह तहा कर थैली में
रखा जा रहा था जब
मेरी आँखें तब भी खुली थीं...
उसके चेहरे को देख रही थी
पर उन पथराई आँखों ने
मुझे नज़र अंदाज़ ही किया था।
बर्फ की मानिंद ठंडे पड़े हाथ
जब गोद में उठाए थे
लगा था अहसासों की गर्मी से कुछ तो पिघल जाएगी
मेरी आँखें तब भी खुली थीं...
कूड़ेदान के पास रखा जब...सोचा पलटकर
एक बार तो निहारेगी
पर ठंड आत्मा तक उतर आई थी
आँखों की हया भी मर आई थी।
आँखें मेरी तब भी खुली थी...
जब झाड़ुओं की चुभन बदन पर उभर आई थी
खून की कुछ लाली भी उभर आई थी
चूहे की कुतरन की पीड़ा बदन पर नज़र आई थी
मेरी आँखें तब भी खुली थी...
जब लोंगों ने मेरी आँखों की नमी को नज़र अंदाज़ करके
फोटो मेरी उतारी थी
कुछ लोग आए थे
नारे लगाने को...शोर मचाया था
मेरी आँखें तब भी खुली थीं...
जब गोद में उठाकर कब्र में मुझे लिटाया था
दो हाथों ने मिट्टी जब मुझपर उड़ाई थी
आँखें मैंने तब भी झपकाई थी
पर कहाँ किसी को नज़र आई थीं
मेरी आँखें तब भी खुली थीं...
जब मिट्टी से पूरी ढँक गई थी
जाते हुए लोंगों को तब भी मैं निहारी थी
मेरी आँखें फिर धीरे -धीरे बंद हो गईं
प्रार्थना करते हुए...
'कौनौ जनम मोहे बिटिया न कीजो'...
***

कर्ज़दार

एक बार मौत मेरे सिरहाने बैठी थी
और ज़िंदगी,
उसके कदमों में झुकी थी।
बहुत दूरदर्शी थी वो,
वो भी देख रही थी, जो मैं
नहीं देख पाई थी।
मौत ने तरस खाकर
मुझे ज़िंदगी के हवाले कर दिया।
उसने मुझे अकेले में बहुत डाँट पिलाई थी।
तब से ... मैं ज़िंदगी की कर्ज़दार हूँ
वो मदारी बनकर मुझे नचाती है
मेरी डोर उसके हाथों
चौबीसों घंटे मुझे नज़र आती है।
मैं खामोश हूँ मैं मूक नहीं...
उसका कर्ज़ मेरे सिर -माथे है
इसी जन्म में चुकता कर देना चाहती हूँ
सुना है...
कर्ज़ लेकर मरने वाले
बार-बार जन्म लेते हैं...
***

सतीश सिंह की कविताएँ

संपर्क: मुख्य प्रबंधक, आर्थिक अनुसंधान विभाग,चतुर्थ तल, भारतीय स्टेट बैंक, कॉर्पोरेट केंद्र,''स्टेट बैंक भवन'', मैडम कामा मार्ग, मुंबई-400021 (महाराष्ट्र)
ईमेल: singhsatish@sbi.co.in
मोबाइल:08294586892

पिता के कुछ खत

घर की सफाई में
अचानक!
मिल गए
पिता के कुछ खत

याद आ गए वो दिन
जब पिता घर से बहुत दूर
रहते थे एक कस्बेनुमा शहर में

अपनी व्यस्तम दिनचर्या में से
कुछ पल चुराकर
लिखा करते थे वे इन्हें
सबकुछ उड़ेल देते थे इनमें
सुख-दु:ख और न जाने क्या-क्या

इतने बरस बीत गए
पिता को गुज़रे हुए
और अचानक!
ये खत
मानों फिर से सजीव हो गए पिता

इतने भावनात्मक हैं ये खत कि
आश्चर्य में डूबा है
पत्नी का चेहरा

सहसा!
वह कह उठती है
इतने भावुक थे तुम्हारे पिता
वह भी

पुलिस में होने के बावजूद

ये ख़त, केवल ख़त हैं
या जीवन में संघर्ष करने के प्रेरणास्रोत
जो तीस बरस पहले
लिखे थे उन्होंने मुझे

कितनी आसानी से
गुज़र जाता है वक्त

सब कुछ बदल गया है
पर, खतों में रची-बसी
पिता की खुशबू
आज भी जस की तस है

शायद,
इन सब चीज़ों में ही
बचा है
जीवन का सार।
***

जड़ों से कटते बच्चे

कुछ बच्चे
ऐसे नहीं हैं
जिन्हें जी-भरकर
प्यार कीजिएगा
हुलसकर उनकी शैतानाइयाँ देखिएगा
और पुलक से भर जाइएगा

आभासी दुनिया की संस्कृति में
जिस्मानी नज़दीकियों की दरकार नहीं होती
ऐसे रिश्तों में
पनप रहे हैं अवसाद के पौधे
और शिक्षा की दुकानों में
डाला जा रहा खाद-पानी

जीवन के ताने-बाने में
बड़े-बुजुर्ग, गाँव
या फिर नदी-पोखर उपेक्षित रह गए हैं
और लोक की सामूहिक स्मृति भी
तिरोहित हो गई है

आधुनिकता की बयार में
देशी थाती बन गए हैं उत्पाद

नाना-दादी के प्यार से महरूम
बच्चों की कहानियों में
पिस्टल, चाकू या फिर बमों के चित्रांकन हैं
बच्चों का निर्मल मन
सहज-सरल स्वभाव
खो गया है कहीं अँधेरे में

आज की शिक्षा प्रणाली में
आदर्श के प्रतिमान नहीं गढ़े जाते

भय पैदा करना
या तनाव रचना
स्कूलों का शगल है
''प्रतिशत'' है उनका हथियार
जिसके डर के साये में
बच्चे या किशोर
नहीं खेल पा रहे हैं
साँप-सीढ़ी का खेल

व्यापारीकरण
के ऐसे दौर में
शायद इसलिए
रेयान स्कूल में
पंद्रह साल का बच्चा
एक नौ साल के बच्चे का
खून कर देता है

शायद,
जड़ों की ओर
लौटने से ही
बचा रह सकता है बचपन।
***

संगीता सिंह 'भावना' की कविताएँ

संपर्क: सह-संपादक --करुणावती
साहित्य धारा त्रैमासिक, वाराणसी
ईमेल: singhsangeeta558@gmail.com

तुम्हारी याद

एक मौन,
जो समाया है मेरे अंतर्मन में
यूँ ही कभी चित्कारता है और
तुम्हारे आसपास होने की साजिश करता है
तुमसे बातें करने के बहाने ढूँढ़ता है
तुम्हारी यादों को खुद में समाने की,
पुरज़ोर कोशिश करता है .....
पर दुर्भाग्य का खेल देखो,
तुम्हारे आसपास जो अनगिनत
जाल से बने हैं
मुझे रोक लेते हैं तुम्हारे पास होने से .....
तुम्हारे शब्दों को मूक बाँध लिए हैं
अपने सुखद एहसासों में,
और साथ ही तुम्हारी यादों में
जमाए बैठे हैं खुद का डेरा .....
अब तुम्हीं बताओ कितना मुश्किल है
यूँ तुमसे मिलना,
बातें करना और तुम्हें अपनी
यादों में बसाना .....
पर, अडिग है मेरा प्यार जो न कभी
सहमा है, रुका है और न ही थका है
हाँ, एक सत्य ज़रूर है तुम्हारी
रूसवाइयों से थोड़ा डरता है .....!
***

जीवन का विस्तार

समय के आकाश में तुम
जगमगाते तारों सा .....
विश्वास और प्रेरणा की
अनुपम सौगात .....
मन की अन्तरिम गहराइयों में,
तुम्हारे चंद शब्द .....
अपने समय और अपने जीवन को निहारती
थोड़ी अधीर सी मैं .....
जब भी खुद को तलाशती हूँ
तुम्हारे इर्द-गिर्द....
पाती हूँ प्रेरणा के असंख्य सूत्र
जहाँ से अपने ही जीवन के अनन्य
प्रतिबिम्ब दिखते हैं
रूपान्तरण की अनंत संभावनाएँ जब
जगमगाती हैं.....
सोचती हूँ जीवन का विस्तार हो चला है!
***

तुम्हारे नाम का

यादों की दहलीज़ पर, ,
एक दीया तुम्हारे नाम का

जलाना चाहती हूँ....
हाँ मैं तुम्हें,
शब्दों में उतारना चाहती हूँ ....!
तुम्हारे साथ,
जीवन के कुछ उलझे सवालों को
रख अपनी कविताओं में
तुम्हें कुछ बताना चाहती हूँ
हाँ मैं तुम्हें शब्दों में उतारना चाहती हूँ ...!
तुम्हारा संबल जिनसे मिला मुझे,
जीवन की नई राह और
यूँ लगा जैसे....
लौट आया हो फिर से जीवन बचपन बनकर
मैं बचपन के उन्हीं मासूमियत में फिर से
खोना चाहती हूँ,
हाँ मैं तुम्हें शब्दों में उतारना चाहती हूँ .....!
तुम्हारे सुन्दर साथ का हर लम्हा, ,
जो जगाता है मुझमें
एक सुखद एहसास
और भर उठता है जीवन तमाम
अनंत खुशियों से,
उन्हीं खुबसूरत पहलुओं में खोकर
कुछ गुनगुनाना चाहती हूँ,
हाँ मैं तुम्हें शब्दों में उतारना चाहती हूँ ...!
***

सुनीता काम्बोज के गीत

संपर्क: मकान नं. 120, टाइप 3,
संत लौंगोवाल अभियांत्रिकी एवं
प्रोधौगिकी संस्थान, लौंगोवाल
जिला-संगरूर
पंजाब-148106
ईमेल : sunitakamboj31@gmail.com
मोबाइल: 9464266415

बठूँगी नज़दीक तुम्हारे

बठूँगी नज़दीक तुम्हारे
और तुम्हारा मौन सुनूँगी
छूट गए जो इन हाथों से
ढूँढ़ रही हूँ उन लम्हों को
बन कर मैं चंचल सी नादिया
हरपल तेरे साथ चलूँगी
बैठूँगी....

साँसों की लय बतलाएगी
मन की पीड़ा बह जाएगी
धड़कन का संगीत बजेगा
उर के सब जज़्बात पढ़ूँगी
बैठूँगी....

आँखों के प्याले छलकेंगे
निर्मल से मोती ढलकेंगे
तुम हिम्मत बन जाओ मेरी
टूटे सारे ख़्वाब बुनूँगी
बैठूँगी...
***

खोया बचपन ढूँढ़ रही हूँ

खोया बचपन ढूँढ़ रही हूँ
वो घर आँगन ढूँढ़ रही हूँ

अम्मा के चूल्हे की रोटी
वो इच्छाएँ छोटी- छोटी
नीम घनेरा वो आँगन का
फिर वो सावन ढूँढ़ रही हूँ
खोया....

बेपरवाही वो मनमानी
दादा -दादी,नाना -नानी
वो संगीत मधुर चक्की का
छन- छन कंगन ढूँढ़ रही हूँ
खोया.....

वो दर्पण का टूटा टुकड़ा
आज है मुझसे रूठा टुकड़ा
वो मिट्टी में लिपटे कपड़े
वो अपनापन ढूँढ़ रही हूँ
खोया.....

सर पर वो तारों की छत भी
वो हल्के नीले से ख़त भी
प्यार की खुशबू पावन-पावन
वो पागलपन ढूँढ़ रही हूँ
खोया.....

तीज सुहानी सुन्दर होली
आटे की चौरस रंगोली
माखन से चुपड़ी सी रोटी
तितली चंचल ढूँढ़ रही हूँ
खोया.....
***

बैरी पतझर बीत गया है

बैरी पतझर बीत गया है
आया है मधुमास नया
धरती लगती नई नई सी
लगता है आकाश नया

मुदित नयन थे जो कलियों के
धीरे-धीरे खोल रही
अमलतास की डाली पर अब
कोयल कू-कू बोल रही
लगता नई उमंगे जागी
जागा है विश्वास नया
बैरी.....

मन्त्र -मुग्ध हैं भवँरे सारे
गुन -गुन राग सुनाते हैं
कमल, केतकी, चम्पा, जूही
मधुर- मधुर मुस्काते हैं
चिड़िया बुनती लेकर तिनका
सपनों का आवास नया
बैरी.....

गेहूँ के खेतों में देखो
मृदुल बलियाँ झाँक रही
नई कोपलें डाली ऊपर
बैठी सबको ताँक रही
फिरे तितलियाँ दीवानी सी
छाया है उल्लास नया
बैरी....

आम्र मंजरियाँ भी डाली पर
हँसती हैं मुस्काती हैं
मात शारदा इस सृष्टि पर
करुणा ही बरसाती है
महकी है अब सभी हवाएँ
लाई हैं अहसास नया
बैरी पतझर बीत गया है
आया है मधुमास नया
***

नव पल्लव

अमृत वाधवा
संपर्क:
ईमेल: amrit.wadhwa@gmail.com
मोबाइल: 919 414 5494

दिल्ली मेरी दोस्त, तू कहाँ गई

जहाँ मैं हरदम घूमता था,
यारों के साथ चलता था
अब पत्थर की सड़कों ने,
रेत के महलों ने मेरे चलने के जगह छीन ली
दिल्ली मेरी दोस्त, तू कहाँ गई....

जहाँ मेरे बचपन की आवाज़ गूँजा करती थी,
मेरे मित्रो की हँसी सुनाई देती थी,
अब कारों की गुंजन में,
हॉर्न की चीत्कार में उनकी आवाज़ खो गई
दिल्ली मेरी दोस्त, तू कहाँ गई....

जहाँ मेरे पड़ोसी,
मेरे चाहने वाले नज़र आते थे
अब सिर्फ पार्किंग लॉट से बने पुल और बाईपास नज़र आते हैं
चाहने वालों की मोहबत अब ट्रैफिक जैम में सिमट गई
दिल्ली मेरी दोस्त, तू कहाँ गई....

जहाँ मैं बेझिजक गलियों में भागता था,
अब उन्हीं गलियों में कार से निकलते डरता हूँ,
मेरी डगर, मेरी राह सीमेंट के कंक्रीट में दफ़न हो गई
दिल्ली मेरी दोस्त, तू कहाँ गई....

जिन झरोखों की धूप में,
पड़ोस की लड़कियों को देखा करता था
उन पर अब काले मैले शीशे की दीवार लग गई,
चेहरा अब फेसबुक की प्रोफ़ाइल बन गया,
बातें अब सिर्फ़ व्हाट्सअप पर रह गईं
दिल्ली मेरी दोस्त, तू कहाँ गई....

उस नुक्कड़ पर अपने लोगों के साथ चाट खाता था,
देश की खबरें सुनता था,
अब मैक्डॉनल्ड और केएँफ़सी में विदेश की बात होती है,
उसके बर्गर से चाट की मात हो गई
दिल्ली मेरी दोस्त, तू कहाँ गई....

वक़्त की दौड़ में, तरक़्क़ी के दौर में,
मेरी दिल्ली अब बदल गई
दिल्ली दिलवालों की नहीं, अब पैसेवालों की बन गई
दिल्ली मेरी दोस्त, तू कहाँ गई....

***

फार्म IV
समाचार पत्रों के अधिनियम 1956 की धारा 19-डी के अंतर्गत स्वामित्व व अन्य विवरण (देखें नियम 8)।
पत्रिका का नाम : विभोम स्वर
1. प्रकाशन का स्थान : पी. सी. लैब, शॉप नं. 3-4-5-6, सम्राट कॉम्प्लैक्स बेसमेंट, बस स्टैंड के सामने, सीहोर, मप्र, 466001
2. प्रकाशन की अवधि : त्रैमासिक
3. मुद्रक का नाम : जुबैर शेख़।
पता : शाइन प्रिंटर्स, प्लॉट नं. 7, बी-2, क्वालिटी परिक्रमा, इंदिरा प्रेस कॉम्प्लैक्स, ज़ोन 1, एमपी नगर, भोपाल, मप्र 462011
क्या भारत के नागरिक हैं : हाँ।
(यदि विदेशी नागरिक हैं तो अपने देश का नाम लिखें) : लागू नहीं।
4. प्रकाशक का नाम : पंकज कुमार पुरोहित।
पता : पी. सी. लैब, शॉप नं. 3-4-5-6, सम्राट कॉम्प्लैक्स बेसमेंट, बस स्टैंड के सामने, सीहोर, मप्र, 466001
क्या भारत के नागरिक हैं : हाँ।
(यदि विदेशी नागरिक हैं तो अपने देश का नाम लिखें) : लागू नहीं।
5. संपादक का नाम : पंकज सुबीर।
पता : रघुवर विला, सेंट एन्स स्कूल के सामने, चाणक्यपुरी, सीहोर, मप्र 466001
क्या भारत के नागरिक हैं : हाँ।
(यदि विदेशी नागरिक हैं तो अपने देश का नाम लिखें) : लागू नहीं।
4. **उन व्यक्तियों के नाम / पते जो समाचार पत्र / पत्रिका के स्वामित्व में हैं। स्वामी का नाम :** पंकज कुमार पुरोहित। **पता :** रघुवर विला, सेंट एन्स स्कूल के सामने, चाणक्यपुरी, सीहोर, मप्र 466001
क्या भारत के नागरिक हैं : हाँ।
(यदि विदेशी नागरिक हैं तो अपने देश का नाम लिखें) : लागू नहीं।
मैं, पंकज कुमार पुरोहित, घोषणा करता हूँ कि यहाँ दिए गए तथ्य मेरी संपूर्ण जानकारी और विश्वास के मुताबिक सत्य हैं।
दिनांक 20 मार्च 2018

हस्ताक्षर पंकज कुमार पुरोहित
(प्रकाशक के हस्ताक्षर)

समाचार-सार

डॉ. मुकेश कुमार तथा डॉ. नुसरत मेहदी को शिवना सम्मान से सम्मानित किया गया

नई दिल्ली में चल रहे विश्व पुस्तक मेले में शिवना प्रकाशन द्वारा आयोजित सम्मान समारोह में देश के वरिष्ठ पत्रकार डॉ. मुकेश कुमार को ''शिवना पत्रकारिता सम्मान'' तथा सुविख्यात शायरा और मध्य प्रदेश उर्दू एकेडमी की सचिव डॉ नुसरत मेहदी को ''शिवना साहित्य सम्मान'' से अलंकृत किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता देश के वरिष्ठ पत्रकार तथा नवभारत टाइम्स के संपादक श्री नीरेंद्र नागर ने की जबकि विशिष्ट अतिथि के रूप में सुप्रसिद्ध लेखिका डॉ प्रज्ञा उपस्थित थीं। कार्यक्रम का संचालन आज तक टी वी चैनल के सुप्रसिद्ध एंकर श्री सईद अंसारी ने किया। नुसरत मेहदी का परिचय लेखक नीरज गोस्वामी ने तथा डॉ. मुकेश कुमार का परिचय लेखक मुकेश दुबे ने प्रस्तुत किया। दोनों सम्मानित लेखकों को शिवना की ओर से शॉल श्रीफल स्मृति चिन्ह भेंट कर सम्मानित किया गया।

नई दिल्ली के प्रगति मैदान पर आयोजित विश्व पुस्तक मेले के लेखक मंच पर आयोजित इस गरिमामय समारोह में बड़ी संख्या में दिल्ली के साहित्य प्रेमी पत्रकार तथा साहित्यकार उपस्थित थे। शिवना प्रकाशन द्वारा आयोजित इस सम्मान समारोह में बोलते हुए श्री नीरेंद्र नागर ने कहा कि देश भर में पत्रकारिता को लेकर आज जो स्थिति निर्मित हो गई है, वह चिंता जनक है लेकिन उसका भी उपचार हो सकता है। पत्रकार को यह तय करना होगा कि वह ऐसा कुछ ना लिखे जो उसे नहीं लिखना चाहिए। उन्होंने कहा कि हर बात के दोनों पहलू समझ कर ही बात करनी चाहिए, एक पक्षीय बात से पत्रकारिता को भी नुकसान होता है। हिंदी की सुप्रसिद्ध कथाकार डॉ प्रज्ञा ने इस अवसर पर बोलते हुए पत्रकारिता के साथ साथ हिंदी और उर्दू में आपसी अनुवाद की संभावनाओं पर भी लंबी चर्चा की उन्होंने कहा कि हिंदी और उर्दू के बीच वास्तव में अनुवाद की भी आवश्यकता नहीं है, वहाँ तो लिप्यंतरण से ही सारा कार्य हो जाएगा। उन्होंने डॉ मुकेश कुमार के संग्रह फेक एनकाउंटर पर भी चर्चा की। इस अवसर पर बोलते हुए डॉ मुकेश कुमार ने कहा कि फेक एनकाउंटर उनके लिए एक चुनौतीपूर्ण कार्य रहा है विभिन्न वर्गों के प्रसिद्ध लोगों का फैक इंटरव्यू पत्रकार बन कर लेना और उसमें उन सारे प्रश्नों को शामिल करना जो समाज और देश के प्रश्न हैं वह बहुत मुश्किल होता है उनके लिए। इस अवसर पर बोलते हुए पंकज सुबीर ने डॉ मुकेश कुमार की पुस्तक पर प्रकाश डाला। डॉ नुसरत मेहदी ने श्रोताओं की फरमाइश पर अपनी कुछ प्रसिद्ध गजलें प्रस्तुत की जिन्हें श्रोताओं ने खूब सराहा। अंत में आभार शिवना प्रकाशन के प्रकाशक श्री शहरयार ने व्यक्त किया।

***

श्रीलाल शुक्ल स्मृति इफको साहित्य सम्मान रामदेव धुरंधर को

उर्वरक क्षेत्र की प्रमुख संस्था इफको द्वारा वर्ष 2017 का 'श्रीलाल शुक्ल स्मृति इफको साहित्य सम्मान' मॉरीशस के वरिष्ठ कथाकार श्री रामदेव धुरंधर को प्रदान किया गया। उन्हें यह सम्मान दिनांक 31 जनवरी, 2018 को नई दिल्ली के एनसीयूआई ऑडिटोरियम में आयोजित एक समारोह में सुविख्यात साहित्यकार श्री गिरिराज किशोर ने प्रदान किया। कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि के तौर पर मॉरीशस उच्चायोग के प्रथम सचिव श्री वी चिट्टू मौजूद थे।

श्री धुरंधर का चर्चित उपन्यास 'पथरीला सोना' छः खंडों में प्रकाशित है। अपने इस महाकाव्यात्मक उपन्यास में उन्होंने किसानों-मजदूरों के रूप में भारत से मॉरीशस आए अपने पूर्वजों की संघर्षमय जीवन-यात्रा का कारुणिक चित्रण किया है। उन्होंने 'छोटी मछली बड़ी मछली', 'चेहरों का आदमी', 'बनते बिगड़ते रिश्ते', 'पूछो इस माटी से' जैसे अन्य उपन्यास भी लिखे हैं। 'विष-मंथन' तथा 'जन्म की एक भूल' उनके दो कहानी संग्रह हैं। इसके अतिरिक्त उनके अनेक व्यंग्य संग्रह और लघु कथा संग्रह भी प्रकाशित हैं।

साहित्यकार एवं सांसद श्री देवी प्रसाद त्रिपाठी की अध्यक्षता में गठित निर्णायक मंडल ने श्री रामदेव धुरंधर का चयन बंधुआ किसान मजदूरों के जीवन संघर्ष पर केन्द्रित उनके व्यापक साहित्यिक अवदान को ध्यान में रखकर किया गया है। निर्णायक मंडल के अन्य सदस्य प्रो. नित्यानन्द तिवारी, श्री मुरली मनोहर प्रसाद सिंह, श्रीमती चंद्रकान्ता एवं डॉ. दिनेश कुमार शुक्ल थे।

प्रतिवर्ष दिया जाने वाला यह प्रतिष्ठित पुरस्कार किसी ऐसे रचनाकार को दिया जाता है जिसकी रचनाओं में ग्रामीण और कृषि जीवन से जुड़ी समस्याओं,आकांक्षाओं और संघर्षों को मुखरित किया गया हो। मूर्धन्य कथाशिल्पी श्रीलाल शुक्ल की स्मृति में वर्ष 2011 में शुरू किया गया यह सम्मान अब तक श्री विद्यासागर नौटियाल, श्री शेखर जोशी, श्री संजीव, श्री मिथिलेश्वर, श्री अष्टभुजा शुक्ल एवं श्री कमलाकान्त त्रिपाठी को प्रदान किया गया है। सम्मानित साहित्यकार को एक प्रतीकचिह्न, प्रशस्तिपत्र तथा ग्यारह लाख रुपये की राशि प्रदान की जाती है।

अपने स्वागत भाषण में इफको के प्रबंध निदेशक डॉ. उदय शंकर अवस्थी ने कहा कि आज कृषि और किसानों के जीवन पर लिखने वाले कम ही लेखक हैं। ऐसे में मॉरीशस की धरती पर मजदूर किसानों के

आर्त्त स्वर को अपनी लेखनी से मुखरित करने वाले श्री रामदेव धुरंधर धन्यवाद के पात्र हैं। उनका विपुल साहित्य पूरी तरह किसानों के जीवन पर केन्द्रित है, विशेष रूप से छः खण्डों में प्रकाशित उनका उपन्यास 'पथरीला सोना' अपने आप एक महाख्यान है।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री गिरिराज किशोर ने मॉरीशस के लेखक को सम्मानित करने पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा कि श्री रामदेव धुरंधर का लेखन अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। किसानों की व्यथा को मुखरित करने का काम जो धुरंधर जी ने किया है, वह अन्यत्र दुर्लभ है। उन्होंने कहा कि धुरंधर जी की कृतियों में प्रेमचंद की छाप है, आपका शब्दों का चयन और मुहावरानवीसी विलक्षण है, अन्य प्रवासी भारतीय लेखकों में यह प्रवृत्ति नहीं दिखती।

सम्मान चयन समिति के अध्यक्ष एवं सांसद श्री देवी प्रसाद त्रिपाठी ने श्री रामदेव धुरंधर जी को बधाई देते हुए कहा कि धुरंधर जी का पूरा साहित्य किसानों और मजदूरों के जीवन को समर्पित है। विशिष्ट अतिथि श्री वी चिट्टू ने अपने वक्तव्य में कहा कि इफको ने श्रीलाल शुक्ल स्मृति इफको साहित्य सम्मान के लिए मॉरीशस की धरती को चुना, इसके लिए इफको प्रबंधन और सम्मान चयन समिति धन्यवाद की पात्र है। श्री रामदेव धुरंधर मॉरीशस की साहित्यिक धरोहर हैं। इस सम्मान के लिए उन्होंने श्री रामदेव धुरंधर को बधाई दी।

इस अवसर पर श्री लोकेश जैन के निर्देशन में श्रीलाल शुक्ल जी के उपन्यास 'अज्ञातवास' पर आधारित नाटक का मंचन भी किया गया। नाटक में कलाकारों ने अपने बेहतरीन अभिनय से दर्शकों का दिल जीत लिया।

कार्यक्रम के अगले सत्र में ''मुखामुखम'' के तहत वरिष्ठ प्रोड्यूसर श्री इरफान ने अपने चिरपरिचित अंदाज़ में पुरस्कृत लेखक श्री रामदेव धुरंधर का साक्षात्कार लिया। इसके दौरान लेखक ने अपने व्यक्तित्व और कर्तृत्व से जुड़े अनेक अनछुए पहलुओं से दर्शकों को रूबरू कराया। श्री धुरंधर ने 1973 में छपी अपनी पहली कहानी से लेकर आज तक के अपने साहित्यिक सफर का जिक्र किया। उन्होंने बताया कि मॉरीशस में भारतीयों के इतिहास के बारे में लिखने की दृढ़ इच्छा उनके अन्दर हमेशा से थी। लगभग 25 वर्षों की अन्तःसाधना के फलस्वरूप 'पथरीला सोना' जैसा विशाल महाख्यान सामने आया।

अंतिम सत्र में आयोजित कवि सम्मेलन में श्री कुलदीप सलिल, श्री नरेश सक्सेना, श्री रामकुमार कृषक, श्री अष्टभुजा शुक्ल, डॉ. अनामिका एवं श्रीमती अलका सिन्हा ने अपनी-अपनी कविताओं से श्रोताओं का मन मोह लिया।

इस अवसर पर साहित्य और कलाप्रेमियों के लिए एनसीयूआई ऑडिटोरियम परिसर में 'कला-साहित्य प्रदर्शनी' का भी आयोजन किया गया। नवोदित कलाकारों की चित्रकला को प्रदर्शनी में स्थान दिया गया। प्रदर्शनी में दिल्ली के कई पुस्तक प्रकाशकों ने भी अपने स्टॉल लगाए। इस मौके पर श्रीलाल शुक्ल की रचनाओं के साथ-साथ सम्मानित साहित्यकार श्री रामदेव धुरंधर की रचनाओं को भी प्रदर्शित किया गया।

समारोह में दिल्ली विश्वविद्यालय, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय और जामिया मिल्लिया इस्लामिया सहित विभिन्न विश्वविद्यालयों के शिक्षक, छात्र सहित बड़ी संख्या में साहित्यप्रेमी शरीक हुए।

***

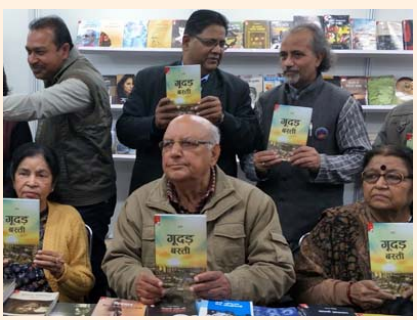

प्रज्ञा के उपन्यास 'गूदड़ बस्ती' का लोकार्पण

प्रगति मैदान में साहित्य भंडार के स्टॉल पर कथाकार प्रज्ञा के पहले उपन्यास 'गूदड़ बस्ती' के लोकार्पण के अवसर पर उपन्यास पर गंभीर चर्चा सम्पन्न हुई। इस अवसर पर साहित्य जगत की वरिष्ठ और युवा पीढ़ी के अनेक लोग मौजूद रहे। इस अवसर पर वरिष्ठ कथाकार मैत्रयी पुष्पा, उषाकिरण खान, नाट्यालोचक देवेंद्रराज अंकुर, नाटककार प्रताप सहगल, कथाकार पंकज सुबीर और विवेक मिश्र ने उपन्यास पर अपने विचार रखे। मैत्रेयी पुष्पा ने प्रज्ञा को सामाजिक सरोकारों की दिशा में चुनौतीपूर्ण लेखन की बधाई देते हुए कहा-''मुझे खुशी है कि प्रज्ञा ने ऐसा उपन्यास लिखा। आज स्त्री लेखन में अधिकांश ऐसा लिखा जा रहा है कि एलीट वर्ग ही उसका संज्ञान लेता है जिसे कोई मतलब नहीं कि समाज में और भी स्त्रियाँ हैं। शहर की गूदड़ बस्ती की स्त्रियाँ भी हैं, गाँव की स्त्रियाँ भी हैं। जो जीवन की सुविधाओं के लिए श्रम कर रही हैं, कई लेखिकाएँ ये नहीं देख रही हैं। 'गूदड़ बस्ती' ने मेरी वो शिकायत दूर की है। प्रज्ञा ने फर्स्ट हैंड अनुभव की तरह इसे लिखा। जाति के आधार पर भक्ति गीत गाने के लिए सुरेंद्र को निकाले जाने की विडम्बना बहुत कुछ कहती है। हम जातिगत विभेद को देख लेते हैं, तरस खाते हैं पर बराबरी का व्यवहार क्यों नहीं करते? क्यों नहीं हमारी लेखिकाओं की नज़र यहाँ नहीं जाती? काश प्रज्ञा की तरह अन्य लेखिकाएँ भी इन सच्ची समस्याओं को अपने लेखन में उठाएँ।''

देवेंद्रराज अंकुर ने 'गूदड़ बस्ती' के कथ्य और इसकी शिल्प पर बहुत विस्तार से अपनी बात रखी। उपन्यास की कहानी को उन्होंने पाठक के लिए एक फिल्म के इफैक्ट की तरह माना। उनका कहना था - ''दलित लोगों ने अपनी आत्मकथाएँ लिखीं तुलसीराम, ओमप्रकाश वाल्मीकि, लिंबाले की लेकिन मैं समझता हूँ कि पहली बार क्रियेटिव राइटिंग के रूप में, एक उपन्यास के रूप में एक ऐसी रचना का आना और उसमें एक ऐसी ज़िंदगी का आना जो कई लोगों के प्रत्यक्ष अनुभव का हिस्सा नहीं रही। जिस तरह से प्रज्ञा ने दलित जीवन की पूरी जमीन को टच किया और उसके एक-एक पक्ष को उद्घाटित किया वह काबिले तारीफ है। मैं समझता हूँ कि उपन्यास में एक फिल्म जैसा वातावरण उभरता है। उपन्यास के माध्यम से सुरेंद्र के जीवन को दिखाने का जो प्रयास है वहाँ एक कैमरा काम करता दिखाई देता है। पढ़ते हुए जो ग्राफिक डिस्क्रिप्शन है मोहल्ले का, छतों

का, गलियों का। पूरा विजुअल क्रियेट करता है। यह लेखिका की भाषा का कमाल, गहन अध्ययन का कमाल है। ये उपन्यास की बड़ी शक्ति है।

वरिष्ठ व्यंग्यकार प्रेमजनमेजय ने प्रज्ञा को लेखन के ग्लैमर के पक्ष से अलग चलने और गूदड़ बस्ती को रचने की बधाई दी। उन्होंने कहा जिस संवेदनशीलता के साथ प्रज्ञा ने उपन्यास लिखा है वह उनकी 'तक्सीम' और 'उलझी यादों के रेशम' जैसी कहानियों की अगली महत्त्वपूर्ण कड़ी होगा।

वरिष्ठ कथाकार उषाकिरण खान ने प्रज्ञा के लेखन को अपने मन के बेहद करीब बताया। उनका कहना था –''प्रज्ञा की कहानियों की पहले से मुरीद हूँ उपन्यास अभी आया है। मैं खुद न तो ड्राइंग रूम लेखन करती हूँ और जिस तरह का ड्राइंग रूम लेखन चल रहा है उसकी मुरीद हूँ।' गूदड़ बस्ती' शीर्षक ही बहुत कुछ कहता है। बहुत लंबे समय से इन विषयों पर लिखा जा रहा है पर स्त्रियों का इस ओर बढ़ना बड़ी बात है। प्रज्ञा की स्लम बस्ती की कई कहानियाँ मैंने पढ़ीं और प्रज्ञा एक सफल लेखिका बनने की ओर कदम बढ़ा रही है।

नाटककार–नाट्यालोचक प्रताप सहगल ने उपन्यास पर विस्तारपूर्वक बात रखी– ''कहानी बसाने की कला प्रज्ञा के पास है। 'गूदड़ बस्ती' को मैंने बड़े मनोयोग से पढ़ा। बहुत अच्छा लगा। जो बात अभी मैत्रेयी जी ने भी कही कि जब इस उपन्यास की कहानी आपके अनुभवों से जुड़ती है तो ये कहानी आपको घेर लेती है और आप रचना के और रचना आपकी हो जाती है। मेरा बचपन एक मजदूर बस्ती में बीता। मेरे पिता एक मजदूर थे। मैं उस जीवन के अंतर्विरोध और उन मुश्किलों को बखूबी पहचानता हूँ। उपन्यास को पढ़ते-पढ़ते मुझे यही अहसास गहराता गया कि हमारे यहाँ जो जातीय हैरारकी है वो टूट क्यों नहीं रही है? कितना बड़ा अंतर्विरोध है कि एक तरफ आप दब रहे हैं और दूसरी ओर दबा भी रहे हैं और ये दोनों ही बातें जाति के कारण हो रही हैं। भारतीय समाज के इस बड़े अंतर्विरोध को बहुत ही अच्छी तरह प्रज्ञा ने पकड़ा है।

युवा कथाकार पंकज सुबीर का कहना था कि 'मीरा स्मृति पुरस्कार' के लिए यह उपन्यास एक सही कृति का चुनाव है। उपन्यास ने सचमुच मुझे बहुत प्रभावित इसलिए किया है क्योंकि इसमें कुछ छोटी-छोटी सी ऐसी घटनाएँ हैं ऐसी बातें हैं जो बहुत देर तक साथ चलती हैं। जैसे दलित परिवार के किसी व्यक्ति का रोजगार के लिए पंडित जी का बाना धारण करना। मुझे लगता है संभवत: साहित्य में यह प्रयोग पहली बार हुआ है। उस बच्चे के मन की चिंता कि उसके पिता पूरा बाना धारण करते हैं माला, अंगूठियाँ, रामनामी चादर। उस बच्चे की चिंता कि हम ऐसे क्यों रहते हैं? यही वह बिंदु है जहाँ हमारे समाज की पूरी कलई खुल जाती है। उपन्यास उसी बिंदु पर सफल हो जाता है। क्योंकि आप उस मनोदशा को पकड़ रही हैं जिस मनोदशा का शिकार हजारों साल से भारतीय समाज रहा है। मुझे लगता है दलित विमर्श में प्रज्ञा का एक बड़ा योगदान होगा 'गूदड़ बस्ती'।'

कथाकार विवेक मिश्र ने इस अवसर पर कहा कि लेखन के लिए खतरनाक बात ये नहीं कि कैसे लिखना है वह समय के साथ सीखा जा सकता है लेकिन क्या लिखना है ये न पता होना खतरनाक है। प्रज्ञा जी लेखन के सरोकारों को बहुत अच्छी तरह जानती हैं। लेखन में सरोकारों, पक्षधरता- प्रतिरोध के स्वरों को फैशन के तहत हटाया जाता रहा है पर उनमें प्रज्ञा जी ऐसा नाम हैं जो एक आश्वस्ति की तरह सामने आता है। उनकी कहानियाँ हों या फिर ये उपन्यास दोनों ही इस कथन की गवाह हैं।

इस कार्यक्रम का संचालन युवा आलोचक डॉ. राकेश कुमार ने किया। अंत में प्रज्ञा ने सबका आभार व्यक्त करते हुए कहा कि एक कृति पर इतने वरिष्ठ साहित्यकार बात रखते हैं तो न सिर्फ कृति का महत्त्व बढ़ता है बल्कि रचनाकार को आगे की यात्रा के अनेक सूत्र भी मिलते हैं। इस मौके पर रमेश उपाध्याय,प्रियदर्शन, राजनारायण बोहरे, लालित्य ललित, सत्यनारायण पटेल, नवनीत पाण्डेय, सुरेंद्र रघुवंशी, डॉ. नामदेव, संज्ञा उपाध्याय, नीलम, राजीव कार्तिकेय के साथ अनेक साहित्यकार मौजूद थे।

***

क्लब लिटराटी का आयोजन

स्वामी विवेकानन्द लाइब्रेरी (ओल्ड ब्रिटिश लाइब्रेरी) जी टी बी काम्प्लेक्स, न्यू मार्केट भोपाल में क्लब लिटराटी द्वारा आयोजित कार्यक्रम में शिवना प्रकाशन द्वारा प्रकाशित पुस्तक ''हैप्पीनेस : अ न्यू मॉडल ऑफ ह्यूमन बिहेवियर'' लेखक तरुण कुमार पिथोड़े का विमोचन श्री अंटोनी डी सा (पूर्व मुख्य सचिव मध्य प्रदेश, चैयरमेन) द्वारा किया गया। इस अवसर पर क्लब लिटराटी की अध्यक्ष डॉ. सीमा रायजादा, साहित्यकार पंकज सुबीर, लाइब्रेरी के संचालक लक्ष्मी शरण मिश्र विशेष रूप से उपस्थित थे।

इस अवसर पर बोलते हुए श्री अंटोनी डिसा ने कहा कि एक अच्छा इंसान ही अच्छा लेखक भी हो सकता है और एक लेखक के रूप में यह उसकी ज़िम्मेदारी होती है कि वह ऐसा कुछ लिखें जिससे कुछ चेंज आए और कोई मैसेज समाज तक पहुँचे। पुस्तक के लेखक श्री तरुण कुमार पिथोड़े ने कहा कि मेरे लिए यह पुस्तक लिखना एक अलग तरह का अनुभव रहा है और इस पुस्तक को लिखने के बाद मैं यह कह सकता हूँ कि मैं उस अवस्था में अपने आप को महसूस करता हूँ जिससे निर्वाण कहा जाता है। साहित्यकार पंकज सुबीर इस अवसर पर बोलते हुए कहा कि ऐसे समय में जब चारों तरफ नकारात्मक माहौल पैदा किया जा रहा है बनाया जा रहा है तब इस तरह की पुस्तकों की बहुत आवश्यकता है जो सकारात्मकता को फैलाएँ खुशी की बात करें हैप्पीनेस की बात करें।

अंत में आभार प्रदर्शन करते हुए क्लब लिटराटी की अध्यक्ष डॉक्टर सीमा रायजादा ने उपस्थित सभी श्रोताओं तथा अतिथियों का आभार व्यक्त किया।

इस अवसर पर ओपन सेशन में हैप्पीनेस पुस्तक के लेखक तरुण कुमार पिथोड़े ने

लाइब्रेरी में उपस्थित श्रोताओं के प्रश्नों के उत्तर भी दिए। विवेकानंद लाइब्रेरी का सभागार इस कार्यक्रम के दौरान श्रोताओं से खचाखच भरा हुआ था तथा बड़ी संख्या में पाठक एवं श्रोता वहाँ उपस्थित थे।

कार्यक्रम का संचालन भास्कर इन्द्रकांति ने किया। अथितियों को शिवना प्रकाशन की और से पुस्तकें स्मृति चिन्ह के रूप में प्रकाशक शहरयार खान ने प्रदान कीं।

***

एस आर हरनोट की कथा पुस्तक '10 प्रतिनिधि कहानियाँ' संग्रह का शिमला के भव्य साहित्यिक आयोजन में लोकार्पण और कहानी पाठ

चार घण्टों तक फर्श पर बैठ कर और खड़े होकर लोगों ने लिया आनंद

नवल प्रयास साहित्य मंच शिमला द्वारा हिमाचल अकादमी और हिमालय मंच के सहयोग से आज ऐतिहासिक गेयटी थिएटर सभागार में एक साहित्यिक आयोजन सम्पन्न हुआ जिसमें कादम्बिनी के सहयोगी संपादक श्री राजीव कटारा ने बतौर मुख्य अतिथि शिरकत की। कार्यक्रम की अध्यक्षता दिल्ली हिन्दी अकादमी के पूर्व सचिव श्री नानक चन्द ने की। विशेष अतिथि के रूप में सुपरिचित पत्रकार और लेखक कमलेश भारतीय और वरिष्ठ लेखक श्रीनिवास जोशी के अतिरिक्त बहुत से स्थानीय साहित्यकार, पत्रकार और रंगकर्मी भी इस आयोजन में शामिल हुए।

कार्यक्रम के पहले सत्र में दो पुस्तकों का विमोचन हुआ जिसमें डा. हेमराज कौशिक की आलोचना पुस्तक 'साहित्य के आस्वाद' और एस. आर. हरनोट की 'दस प्रतिनिधि कहानियाँ' पुस्तक लोकार्पित की गई। साहित्य के आस्वाद पुस्तक पर युवा आलोचक डा. इन्द्रसिंह ठाकुर ने टिप्पणी की जबकि चर्चित युवा कवि आत्मारंजन ने हरनोट की कथा पुस्तक पर एक अवलोकन प्रस्तुत किया जो हाल ही में किताबघर प्रकाशन से प्रकाशित है।

आत्मारंजन ने कहा कि एस.आर. हरनोट की ये कहानियाँ आज के जीवन के बड़े प्रश्नों और चुनौतियों से सीधे मुठभेड़ करती हैं। इस संग्रह की कहानियाँ अधिकांशत: मुद्दा केन्द्रित कहानियाँ हैं। मुद्दा चाहे पर्यावरण का हो, सामाजिक या आर्थिक असमानता का या फिर सांप्रदायिक वैमन्स्य या असहिष्नुता का, ये कहानियाँ दृष्टिसंपन्न हस्तक्षेप दर्ज करती हैं। इनमें उथली नारेबाज़ी भर नहीं है न शुष्क यान्त्रिकता, बल्कि हाशिए के जीवन की महीन और प्रामाणिक डिटेल्ज शामिल हैं, वहाँ के जीवन के संघर्ष और दुश्वारियाँ हैं, शोशित प्रताडित मनुष्यता के प्रति कथाकार की स्पष्ट और मजबूत पक्षधरता इन कहानियों की अर्थवत्ता को बढाती हैं, कथाकार यहाँ बीहड़ जीवन अनुभवों को सरल भाषा में अभिव्यक्त करता हैं, अपने स्थापत्य और सांगठनिक ढाँचे के स्तर पर भी ये कहानियाँ आकर्षित करती हैं।

इस सत्र का एक विशेष आकर्षण एस. आर. हरनोट का कहानी पाठ रहा जिसमें उन्होंने अपनी ताज़ा कहानी 'आग' का पाठ किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे नानक चन्द ने इस कहानी को वर्तमान विकट हो चुकि राजनीतिक और धार्मिक परिस्थितियों के संदर्भ बहुत महत्त्वपूर्ण कहानी बताया और कहा कि कहानी के मुख्य पात्र वेद राम शास्त्री जैसे लोगों के बचे रहने पर ही हम सभी का बचा रहना निर्भर करता है। मुख्य अतिथि राजीव कटारा ने इस आयोजन की सफलता के लिए तीनों मंचो को विशेष रूप से बधाई दी और खुशी व्यक्त की कि इस सभागार में युवा से लेकर वरिष्ठ तक अनेक पीढ़ियाँ मौजूद हैं। कमलेश भारतीय ने भी इस अवसर पर दो प्रासंगिक लघुकथाओं का पाठ किया। नवल प्रयास के अध्यक्ष डॉ. विनोद प्रकाश गुप्ता ने अतिथियों का स्वागत करते हुए यह भी जानकारी दी कि मई 2018 में नवल प्रयास का एक और बड़ा आयोजन शिमला में प्रस्तावित है जिसमें विद्यार्थियों की प्रमुखता से भागीदारी रहेगी और साथ ही साहित्य सम्मेलन भी होगा।

इस आयोजन में शिमला की नाट्य संस्था अभिनव दर्पण, रंगकर्मी केदार ठाकुर और डॉ. अक्षय कुमार को स्नेह-सम्मान से नवाजा गया। अभिनव दर्पण ने हाल ही में भोपाल में आयोजित 7 दिवसीय 'नदी की संस्कृति और संस्कृति की नदी' सदानीरा आयोजन में एस आर हरनोट की कहानी 'नदी गायब है' का सफल मंचन किया और केदार ठाकुर को दिल्ली संगीत नाटक अकादमी ने श्रेष्ठ निर्देशन के लिए सम्मानित किया है। वहीं शारीरिक अक्षमता के बावजूद काँगड़ा निवासी युवा अक्षय कुमार न केवल निरन्तर हमारे आयोजनों में आते हैं बल्कि कविता पाठ के लिए भी जाने जाते हैं। वे युवाओं के लिए प्रेरणा हैं।

दूसरा सत्र कवि सम्मेलन का रहा जिसमें करीब 40 वरिष्ठ एवं युवा कवियों ने अपनी रचनाएँ पढ़ीं। कविता पाठ करने वालों में डॉ. अनिल राकेशी, कुलराजीव पंत, के आर भारती, बद्रीसिंह भाटिया, आत्मा रंजन, विनोद प्रकाश गुप्ता, सुमित राज वशिष्ठ, देव कन्या ठाकुर, मृदुला श्रीवास्तव, कंचन शर्मा, प्रियंका वैद्य, पौमिला ठाकुर, प्रियंवदा शमार्, सत्य नारायण स्नेही, अश्विनी गर्ग, सौरभ चैहान, राकेश कुमार सिंह, हेमराज चैहान, अक्षय कुमार, पोरस ठाकुर, नीता अग्रवाल, किरण गुलेरिया, ओम प्रकाश, पूनम तिवारी, नरेश दयोग, अनुराधा कश्यप, वंदना राणा के अलावा स्कूल और कालेज से लगभग पन्द्रह विद्यार्थियों ने भी कविता पाठ किया। इस आयोजन की सफलता इसी में थी कि अंत तक लोग और विद्यार्थी सभागार में जगह जगह फर्श पर बैठे थे और बहुतों ने खड़े होकर इस 4 घण्टें के आयोजन का आनंद लिया।

इस आयोजन में प्रथम सत्र का मंच संचालन युवा कवि आत्मा रंजन ने किया और कवि गोष्ठी का संचालन डा. कर्मसिंह ने किया। आयोजन की खास बात यह भी रही कि सभागार खचाखच भरा हुआ था और बहुत से श्रोताओं ने अंत तक खड़े होकर भी इस आयोजन का आनन्द लिया।

***

(विनोद प्रकाश गुप्ता)
अध्यक्ष, नवल प्रयास मंच, शिमला
मो. 9811169069

कनाडा में विश्व हिन्दी दिवस उपन्यास 'बंद मुट्ठी' का विमोचन

कनाडा में भारत के उच्चायुक्त श्री विकास स्वरूप द्वारा विश्व हिन्दी दिवस पर उपन्यास 'बंद मुट्ठी' का विमोचन। (चित्र में बाएँ से डॉ. वीरेंद्र भारती, उच्चायुक्त श्री विकास स्वरूप, श्री श्याम त्रिपाठी, डॉ. हंसा दीप, डॉ. शैलजा सक्सेना एवं धर्मपाल महेंद्र जैन।)

कनाडा की राजधानी ओटावा में भारत के उच्चायुक्त एवं सुप्रसिद्ध उपन्यासकार श्री विकास स्वरूप के मुख्य आतिथ्य में विश्व हिन्दी दिवस का सुरूचि पूर्ण आयोजन किया गया। श्री स्वरूप ने उपन्यास लेखन की बारीकियों, लेखकीय अवरोधों एवं ठहराव पर चर्चा करते हुए कनाडा में हिन्दी उत्सवों की परम्परा को समृद्ध बनाने पर बल दिया। हिन्दी चेतना के मुख्य सम्पादक श्री श्याम त्रिपाठी ने अपने प्रमुख वक्तव्य में प्रवासी भारतीयों द्वारा हिन्दी के प्रचार-प्रसार के प्रयत्नों, समस्याओं एवं भावी योजनाओं पर सार्थक चर्चा की। इस अवसर पर डॉ. हंसा दीप के कनैडियन पृष्ठ भूमि पर लिखे गए हिंदी उपन्यास 'बंद मुट्ठी' का वरिष्ठ साहित्यकारों की उपस्थिति में श्री स्वरूप ने लोकार्पण किया।

विश्व हिन्दी दिवस की संध्या सुगम संगीत, शास्त्रीय नृत्य और साहित्य के नाम रही। इस अवसर पर आयोजित कवि सम्मेलन में ओटावा के प्रो. जगमोहन हूमड़, डॉ. वीरेंद्र भारती, प्रो. शाइनी, श्री देवगन तथा टोरंटो की डॉ. शैलजा सक्सेना, सुश्री भुवनेश्वरी पांडे, सुश्री लता पांडे, श्री विद्याभूषण धर, आचार्य श्री संदीप त्यागी एवं श्री अखिल भंडारी के काव्य पाठ एवं श्री धर्मपाल महेंद्र जैन के व्यंग्य पाठ का श्रोताओं ने आनंद उठाया। कार्यक्रम का संचालन डॉ. वीरेंद्र भारती ने किया।

* * *

शिवना प्रकाशन द्वारा पुस्तकों के नए संस्करणों का विमोचन किया गया

शिवना प्रकाशन द्वारा प्रकाशित पुस्तकों हैप्पीनेस ए न्यू मॉडल ऑफ ह्यूमन बिहेवियर तथा चुनाव राजनीति और रिपोर्टिंग मध्यप्रदेश विधानसभा 2013 के नए संस्करण का विमोचन स्थानीय पी सी लैब के सभागार में किया गया। इस अवसर पर दोनों पुस्तकों के लेखक श्री तरुण कुमार पिथोड़े तथा श्री बृजेश कुमार राजपूत भी उपस्थित थे। कार्यक्रम में विशेष रूप से भोपाल से पधारे एनडीटीवी के संवाददाता श्री अनुराग द्वारी, जिला पंचायत सीईओ श्री केदार सिंह तथा अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक अवधेश प्रताप सिंह भी उपस्थित थे। कार्यक्रम में सबसे पहले दोनों पुस्तकों के नए संस्करण का विमोचन किया गया। उल्लेखनीय है कि श्री तरुण कुमार पिथोड़े की पुस्तक का पहला संस्करण विश्व पुस्तक मेले में जनवरी में ही आया था और दो माह के अंदर ही इस पुस्तक का दूसरा संस्करण भी प्रकाशित हो गया है, आज इस पुस्तक के दूसरे संस्करण का विमोचन किया गया वहीं श्री बृजेश राजपूत की पुस्तक चुनाव राजनीति और रिपोर्टिंग के तीसरे संस्करण का विमोचन अतिथियों ने किया।

पुस्तक चर्चा के दौरान पुस्तक पर बोलते हुए हैप्पीनेस न्यू मॉडल ऑफ ह्यूमन बिहेवियर पर अपनी टिप्पणी रखते हुए लेखक मुकेश दुबे ने पुस्तक के विभिन्न पहलुओं पर विस्तार के साथ चर्चा की। उन्होंने इस पुस्तक का हिंदी अनुवाद लाए जाने की आवश्यकता पर भी जोर दिया। चुनाव राजनीति और रिपोर्टिंग पुस्तक पर अपनी टिप्पणी करते हुए श्री अनुराग तिवारी ने कहा कि यह पुस्तक चुनाव के दौरान की जाने वाली रिपोर्टिंग को लेकर एक टेक्स्ट बुक हो सकती है जिसे पत्रकारिता के नए छात्रों को चुनाव रिपोर्टिंग सीखने में मदद मिलेगी। इस अवसर पर बोलते हुए अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक अवधेश प्रताप सिंह ने कहा कि प्रशासकीय व्यस्तताओं के बीच में लेखन के लिए समय निकालना यह एक प्रशंसनीय बात है, हैप्पीनेस पुस्तक इसका एक जीवंत उदाहरण है। जिला पंचायत सीईओ श्री केदार सिंह ने कहा की जीवन में इस समय हैप्पीनेस की सभी को आवश्यकता है ऐसे में यह पुस्तक बहुत कारगर साबित होगी। अपनी पुस्तक पर चर्चा करते हुए एबीपी न्यूज़ के विशेष संवाददाता श्री बृजेश राजपूत ने कहा कि उनकी पुस्तक में संकलित किए गए सारे के सारे अध्याय चुनाव के दौरान रिपोर्टिंग के पीछे की कहानियाँ हैं। जो उन्होंने चुनाव की रिपोर्टिंग के दौरान समझे। उन्होंने कहा कि एक रिपोर्टर जब चुनाव का कवरेज करता है तो उसे बहुत कुछ समझ आ जाता है कि चुनाव किस दिशा में जा रहा है। इस अवसर पर बोलते हुए पुस्तक हैप्पीनेस के लेखक तथा सीहोर कलेक्टर श्री तरुण कुमार पिथोड़े ने कहा कि प्रयास करना कभी बंद नहीं करना चाहिए लगातार प्रयास करते रहने से ही सफलता मिलती है, उन्होंने आईएएस परीक्षा में अपनी सफलता का किस्सा भी श्रोताओं को सुनाया कि किस प्रकार लगातार प्रयास के द्वारा उन्होंने इस परीक्षा में सफलता प्राप्त की। उन्होंने कहा कि लेखन उनके लिए जीवन को नई दिशा देने का एक तरीका है, लेखन उनको मानसिक शांति प्रदान करता है। इस अवसर पर श्रोताओं को उन्होंने जानकारी दी कि उनकी अगली किताब भी बहुत शीघ्र पाठकों के हाथ में होगी। इससे पूर्व कार्यक्रम के प्रारंभ में अतिथियों का स्वागत श्री लोकेंद्र मेवाड़ा, श्री कैलाश अग्रवाल, श्री प्रकाश व्यास काका, श्री रघुवर दयाल गोहिया, श्री उमेश शर्मा, श्री हितेंद्र गोस्वामी, एवं एवं शिवना प्रकाशन के शहरयार ने पुष्प गुच्छ भेंट कर किया। कार्यक्रम का संचालन पंकज सुबीर ने किया तथा अंत में आभार प्रदर्शन श्री रघुवर दयाल गोहिया ने किया। कार्यक्रम के अंत में सभी अतिथियों को श्री सनी गोस्वामी, श्री सुनील सूर्यवंशी तथा श्री शिवम गोस्वामी ने स्मृति चिह्न प्रदान किए इस अवसर पर बड़ी संख्या में गणमान्य नागरिक उपस्थित थे।

* * *

रवीन्द्रनाथ त्यागी स्मृति शीर्ष सम्मान डॉ. शेरजंग गर्ग को, सोपान सम्मान डॉ. लालित्य ललित को

प्रख्यात साहित्यकार श्रीमती चित्रा मुद्गल की अध्यक्षता में 7 अप्रैल को रवीन्द्रनाथ त्यागी स्मृति सम्मान निर्णायक- समिति की बैठक हुई। बैठक में निर्णायक समिति के सदस्य डॉ. कमलकिशोर गोयनका, डॉ. प्रताप सहगल, डॉ. हरीश नवल, डॉ. प्रेम जनमेजय तथा श्रीमती शारदा एवं श्रीमती इंदु त्यागी, फ़ोन पर, चर्चा के लिए उपस्थित थे। दो घंटे चली इस बैठक में खुली चर्चा हुई। बैठक में सर्व सम्मति से डॉ. शेरजंग गर्ग को शीर्ष सम्मान एवं डॉ. लालित्य ललित को सोपान सम्मान से सम्मानित करने का निर्णय लिया गया। रवीन्द्रनाथ त्यागी शीर्ष सम्मान में इक्कीस हज़ार रुपये की नगद राशि, श्रीफल, शाल एवं स्मृति- चिह्न प्रदान किया जाएगा। रवीन्द्रनाथ त्यागी सोपान सम्मान में इक्वायन सौ रुपये की नगद राशि, सात हज़ार मूल्य की 'रवीन्द्रनाथ त्यागी रचनावली' श्रीफल,शाल एवं स्मृति चिह्न प्रदान किया जाएगा।

डॉ. शेरजंग की हिन्दी व्यंग्य साहित्य के क्षेत्र में ख्याति इनके शोध प्रबंध 'स्वातंत्र्योत्तर हिंदी कविता में व्यंग्य' के कारण विशेष रूप से है। इस ग्रंथ को हिंदी हास्य-व्यंग्य की विधिवत आलोचना का आरंभिक बिंदु माना जा सकता है। डॉ. शेरजंग गर्ग ने गद्य और पद्य दोनों में समाज सापेक्ष तथा मानवीय मूल्यों पर आधारित रचनाएँ लिखी हैं। 'चंद ताज़ा गुलाब मेरे नाम' काव्य संकलन उनकी काव्य प्रतिभा का तथा 'बाज़ार से गुज़रा हूँ' उनकी गद्य व्यंग्य प्रतिभा का सजग उदाहरण है। वे अपनी गजलों में व्यंग्य की प्रहारक शक्ति के प्रयोग के लिए भी प्रसिद्द हैं। इन्होंने मंच से कभी कोई समझौता नहीं किया है अपितु मंच को सही संस्कार दिए हैं। बाल-साहित्य उनके योगदान को कभी विस्मृत नहीं कर सकता। ऐसे समय में जब हिंदी साहित्य में शिशु गीत न के बराबर थे, डॉ. गर्ग ने उनकी शुरूआत की।

लालित्य ललित की उपस्थिति को साहित्य अभिव्यक्ति के सभी माध्यमों में सक्रिय देखा जा सकता है। लालित्य ललित की कविताओं को पढ़कर समाज और जीवन से उनके जुड़ाव को महसूसा जा सकता है। वे व्यंग्य को लेकर गंभीर हैं। उनका अनुभव संसार बहुत व्यापक है। वे गद्य और पद्य में राजनीति, समाज, शिक्षा, प्रशासन आदि क्षेत्रों की विसंगतियों को अपने लेखन का आधार बनाते हैं। उनकी युवा दृष्टि जहाँ मॉल, लड़कियों और बाज़ार के उत्पादों पर रहती है और आधुनिक होते जीवन की विसंगतियों को रेखांकित करती है वहीं वह सार्थक एवं मानवीय सबंधों से युक्त मूल्यों के प्रतीकों को भी तलाशती है।

सम्मान समारोह नई दिल्ली के हिंदी भवन में रवीन्द्रनाथ त्यागी जी के जन्मदिन पर 9 मई 2018 को शाम 5.30 बजे होगा।

***

विज्ञान व्रत के चित्रों की एकल-प्रदर्शनी

अकादमी ऑव फ़ाइन आर्ट्स कला दीर्घा कोलकाता में कवि - चित्रकार विज्ञान व्रत के चित्रों की एकल-प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। पश्चिम बंगाल के राज्यपाल महामहिम श्री केशरीनाथ त्रिपाठी जी ने प्रदर्शनी का उद्घाटन किया राज्यपाल श्री केशरीनाथ त्रिपाठी जी ने। क़रीब एक घंटे तक दीर्घा में प्रदर्शित विज्ञान व्रत के लगभग 50 चित्रों को बहुत ग़ौर से देखा और चित्रों के बारे में कवि - चित्रकार श्री विज्ञान व्रत से गहन बात - चीत की। इस अवसर पर कोलकाता के गणमान्य लेखक, कवि, चित्रकार, पत्रकार तथा कला प्रेमी दीर्घा में उपस्थित रहे।

***

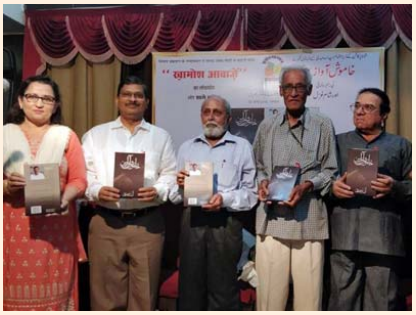

ख़ामोश आवाज़ें का लोकार्पण हुआ

शिवना प्रकाशन के तत्वावधान में सय्यद असद मेहदी के कहानी संग्रह ''ख़ामोश आवाज़ें'' का लोकार्पण होटल शगुन इमामी गेट भोपाल में सम्पन्न हुआ।

यह असद मेहदी का पहला कहानी संग्रह है जिसका विमोचन प्रसिद्ध साहित्यकारों के हाथों से सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम की अध्यक्षता वरिष्ठ कहानीकार श्री नईम कौसर ने की जबकि संग्रह पर वक्तव्य वरिष्ठ साहित्यकार श्री ज़िया फ़ारूक़ी, वरिष्ठ साहित्यकार श्री इक़बाल मसूद, डॉ. नुसरत मेहदी सचिव मध्य प्रदेश उर्दू अकादमी, श्री पंकज सुबीर, सुपरिचित कथाकार व उपन्यासकार ने दिया। कार्यक्रम का संचालन- डॉ. अम्बर आबिद प्रख्यात शायरा ने किया। इस अवसर पर शामे ग़ज़ल का भी आयोजन किया गया जिसमें सारा और समर ने अपनी प्रस्तुति दी।

***

नेशनल डायमंड एचीवर अवॉर्ड

बीकानेर में यूथ वर्ल्ड द्वारा मार्च में आयोजित होने वाले राष्ट्रीय स्तर के सम्मान समारोह नेशनल डायमंड एचीवर अवॉर्ड के लिए राजस्थान राज्य के बाड़मेर ज़िले के सिवाना तहसील के छोटे से गाँव डाबली से युवा कवि साहित्यकार जालाराम चौधरी का चयन आयोजन कमेटी द्वारा किया गया है। यह अवार्ड चौधरी को साहित्य में अग्रणी योगदान के लिए दिया जाएगा।

***

मुख्य निर्वाचन आयुक्त श्री ओपी रावत ने किया मीडियावाला न्यूज़ पोर्टल का लोकार्पण

(सोशल मीडिया के दुष्प्रभाव से बचने के लिए सख़्त चुनाव कानून ज़रूरी)

प्रदेश में सोशल मीडिया और पीआर की अग्रणी संस्था मीडियावाला के न्यूज़ पोर्टल मीडियावाला डॉट इन का लोकार्पण भारत के मुख्य निर्वाचन आयुक्त श्री ओपी रावत ने होटल जहांनुमा पैलेस में ब्यूरोक्रेट्स, राजनीतिज्ञ, जाने-माने पत्रकार और समाज के अन्य क्षेत्रों के विशिष्ट लोगों की उपस्थिति में किया।

मुख्य अतिथि के रुप में संबोधित करते हुए श्री ओपी रावत ने कहा कि मीडियावाला के न्यूज़ पोर्टल का लोकार्पण करते हुए मुझे खुशी है। मैं मीडियावाला ग्रुप से काफी पहले से जुड़ा हूं और इसकी सक्रियता का प्रशंसक रहा हूं। मुझे पूरा भरोसा है कि यह न्यूज़ पोर्टल कुछ अलग काम करने पर सफल होगा।

भारत के मुख्य निर्वाचन आयुक्त ने यह भी कहा कि भारत में शांतिपूर्ण ढंग से सफलतापूर्वक चुनाव कराने में चुनाव आयोग अगर सफल है तो इसका मतलब यह नहीं कि निर्वाचन आयोग कोई जादूगर है। जादूगर तो वो थे, जिन्होंने हमारा संविधान लिखा।जिन्होंने हमें ऐसी व्यवस्था दी, जिस कारण हम यह चुनाव शांतिपूर्ण तरीके से करा पाते हैं। वे लोग सब कुछ जानते थे। वे भविष्य को देखना जानते थे। भारत के मुख्य निर्वाचन आयुक्त ने कहा कि हमारे संविधान निर्माताओं ने यह बात समझ ली थी कि भविष्य में क्या-क्या समस्याएं सामने आ सकती हैं, इसलिए उन्होंने इतनी अच्छी व्यवस्था की।

इस मौके पर आयोजित 'चुनाव, जनमत और सोशल मीडिया' संगोष्ठी में वरिष्ठ पत्रकार महेश श्रीवास्तव, मध्यप्रदेश के संस्कृति और वाणिज्यिक कर विभाग के प्रमुख सचिव श्री मनोज श्रीवास्तव,जी हिन्दुस्तान के सम्पादक डॉ. बृजेश कुमार सिंह और दैनिक भास्कर के राष्ट्रीय संस्करण के संपादक आनंद पांडे ने भी अपने विचार रखे।

श्री पांडे ने कहा कि आज की दुनिया में इंटरनेट और वेब पोर्टल की महत्ता बहुत ज़्यादा है। यहाँ तक कि इंटरनेट की खबरों से प्रभावित होकर अखबारों में खबरों को प्राथमिकता मिलने लगी है।

ज़ी हिंदुस्तान के संपादक श्री बृजेश कुमार सिंह ने कहा कि मानवीय व्यवहार को सोशल मीडिया बदल देगा, इसकी आशा नहीं थी। उन्होंने 1952 के पहले आम चुनाव से लेकर आगामी 2019 के आम चुनाव तक की समीक्षा की।

संस्कृति और वाणिज्यिक कर विभाग के प्रमुख सचिव श्री मनोज श्रीवास्तव ने सोशल मीडिया के उपयोग और दुरूपयोग की आशंकाओं और उससे निपटने के प्रयासों के बारे में विस्तार से चर्चा की। श्री श्रीवास्तव ने कहा कि पत्रकारिता साधना थी, लेकिन अब वह एकाराधना होती नज़र आ रही है। पत्रकारिता साधना है, लेकिन वर्तमान समय में वह साधन होती जा रही है।

वरिष्ठ पत्रकार श्री महेश श्रीवास्तव ने कहा कि वह दिन दूर नहीं, जब मीडिया पूरी तरह से मानवीय व्यवहार को बदलने में सफल हो जाएगा।

कार्यक्रम के प्रारंभ में मीडियावाला डॉट इन के सलाहकार डॉ. प्रकाश हिन्दुस्तानी में मीडियावाला न्यूज पोर्टल के उद्देश्य और कार्यप्रणाली स्पष्ट करते हुए आशा व्यक्त की कि यह न्यूज़ पोर्टल निश्चित ही अपनी अलग छवि बनाने में सफल होगा।

संगोष्ठी में मुख्य चुनाव आयुक्त श्री ओपी रावत ने कहा कि सोशल मीडिया के दुष्प्रभाव से बचने के लिए सख्त चुनाव-कानून बनाए जाना ज़रूरी है। सोशल मीडिया पर चलने वाली न्यूज़ पोर्टल फेक न्यूज़ और झूठी खबरों को भी कभी भी पोस्ट नहीं करें तो उनकी उपयोगिता स्पष्ट होगी। प्रकाश हिंदुस्तानी ने इस अवसर पर श्री ओपी रावत को आश्वस्त किया कि मीडियावाला न्यूज़ पोर्टल निश्चित ही इस दिशा में कदम उठाएगा।

मीडियावाला डॉट इन न्यूज़ पोर्टल का संचालन मीडियावाला समूह द्वारा किया जा रहा है, जिसके प्रबंध संचालक सुरेश तिवारी ने इस अवसर पर कहा कि हम बिना किसी बड़ी भारी पूँजी या विदेशी धन के प्रयास कर रहे हैं। हमने मीडियावाला को एक साल में ही नई ऊँचाइयों तक पहुँचाया है मीडियावाला ने न केवल जनसंपर्क के क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण काम किया है, बल्कि पुस्तकों का प्रकाशन भी कर रहा है।

कार्यक्रम में श्री ओ पी रावत का शाल ओढ़ाकर और श्रीफल देकर स्वागत किया गया। कार्यक्रम में प्रसिद्ध लेखिका श्रीमती स्वाति तिवारी भी मौजूद रहीं।

इस मौके पर पूर्व मंत्री अजय विश्नोई, पूर्व डीजीपी एन के त्रिपाठी, जनसम्पर्क विभाग के पूर्व आयुक्त और सिया के चैयरमैन राकेश श्रीवास्तव, मध्यप्रदेश की मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी सुश्री सलीना सिंह, सहकारिता निर्वाचन पदाधिकारी प्रभात पाराशर, भोपाल के संभागायुक्त अजातशत्रु श्रीवास्तव, कलेक्टर सुदाम खाड़े, डीआईजी धर्मेंद्र चौधरी, अपर सचिव, राजीव शर्मा सहित बड़ी संख्या में पत्रकार, साहित्यकार और समाजसेवी मौजूद थे।

***

मालती जोशीजी का अभिनंदन

वामा साहित्य मंच की मासिक बैठक होटल अपना एवेन्यू में आयोजित की गई। इस अवसर पर पद्मश्री से सम्मानित प्रसिद्ध लेखिका आदरणीय मालती जोशीजी का अभिनंदन समारोह आयोजित किया गया। मंच की अध्यक्ष पद्मा राजेंद्र, सचिव ज्योति

जैन ने मालतीजी को शॉल, श्रीफल भेंट करते हुए सम्मानित किया।

इंदौर में पली- बढ़ी और यहीं से रचना कर्म का प्रारंभ करने वाली आदरणीय मालतीजी ने अपने उद्‌बोधन में मंच की सदस्यों को प्रेरक अनुभव बताए। उन्होंने बताया कि उनकी कहानियों, उपन्यासों के कथानक, चरित्र उनके जीवन के अनुभवों से ही रचनाओं में आएँ।आलोचक उन्हें घर – आँगन की लेखिका मानते रहे किन्तु पाठकों ने इन रचनाओं को पढ़ा और सराहा, क्योंकि ये रचनाएँ पाठकों को अपने करीब की लगी।

कार्यक्रम की अगली कड़ी में ''कविताओं में प्रेम, प्रेम पर कविताएँ'' शीर्षक पर मुख्य अतिथि, लोकप्रिय कवि श्री आशुतोष दुबेजी की प्रेम में पगी कुछ विशिष्ट कविताओं का पाठ हुआ। कविताएँ सुनकर सभी प्रेम काव्य में डूब गए। तत्पश्चात वामा परिवार की सदस्यों रंजना फतेहपुरकर, मृणालिनी धुले, प्रतिभा शर्मा, रोशनी वर्मा, करुणा पांड्ये, सिमरन झालानी, मंजु मिश्रा, निधि जैन, इंदु पाराशर, मधु टांक, दीपा व्यास, गरिमा संजय दुबे, शारदा गुप्ता आदि ने भी प्रेम से सराबोर रचनाओं की प्रभावी प्रस्तुति दी। रंजनाजी की ''मेहँदी रची हथेलियाँ'', बेशुमार ख़्वाब सोए हुए हैं पलकों में, रोशनी वर्मा की, एकांत की ख़ूबसूरत अभिव्यक्ति है प्रेम, डॉ. गरिमा संजय दुबे की प्रेम की अनंतता और अपरिभाष्यता रचनाओं को खूब सराहा गया।

अध्यक्ष पद्मा राजेंद्र ने कहा कि हमारा सौभाग्य है कि आज मालतीजी के रचना संसार से हम प्रत्यक्ष उन्ही की ज़ुबानी रुबरु हुए हैं। निरंतर सृजनधर्मिता एवं सकारात्मक लेखन हेतु वामा सदस्य गरिमा संजय दुबे का अतिथियों द्वारा सम्मान किया गया। सचिव ज्योति जैन ने आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम संयोजक रागिनी सिंह, भावना दामले और प्रीति रांका की टीम ने सफल संयोजन किया। कार्यक्रम का संचालन डॉ. रागिनी सिंह ने किया।

किसी भी राष्ट्र की सभ्यता,संस्कृति और मूल्य उसके साहित्य के बिना निष्प्राण हैं। साहित्यकार का कर्म और धर्म है कि उसका सृजन ऐसा हो जो समाज के मूल्यों, रिश्तों और परस्पर सद्भाव को अनुप्राणित करे। साहित्य भावनात्मक स्तर पर पाठक को सुसंस्कारित करता है। पद्मश्री मालती जोशी का साहित्यिक योगदान इन समस्त कसौटियों पर खरा उतर कर परिवार, व्यक्ति, प्रेम, अनुभूति और रिश्तों के प्रगाढ़ बंधन को प्रस्तुत करता है। वामा साहित्य मंच में मालती जी का इन्हीं शब्द पुष्पों से अभिनंदन किया गया। मालती जी की शहर में उपस्थिति का वामा साहित्य मंच ने सुंदर लाभ लिया। मालती जी को पद्मश्री मिलने से समूचे साहित्य संसार के साथ इंदौर शहर विशेष रूप से हर्षित है। इस शहर से उनका गहरा नाता है। इस अभिनंदन पर मालती जी ने भावुक होकर कहा कि यह सम्मान मेरे पाठकों का है। वे अगर इतने चाव से मेरी रचनाओं को नहीं पढ़ते तो आज मैं यहाँ तक नहीं आती। मेरी रचनाएँ परिवार, रिश्ते, संवेदना और प्रगाढ़ बंधनों में भी अपने स्वाभिमान को बनाए रखने की बात करती है। आरम्भ में मेरे बारे में कहा गया कि मालती जी की रचनाएँ स्त्री विमर्श की हैं जबकि मैंने अपने परिवेश को गहराई से महसूस किया और उससे जो अनुभूतियाँ मुझमें पनपी उन्हें व्यक्त किया।नारी सायास मेरी रचनाओं के केंद्र में नहीं आई बल्कि सामाजिक विषमताओं के चलते वह अनायास ही केंद्र में आती चली गई। और यह ज़रूरी था कि मैं स्वयं नारी होने के नाते उस दर्द को सुव्यक्त कर सकूँ जो मेरे आसपास बिखरा था। मुझे आज की नारी जिन चुनौतियों के बीच अपनी भूमिका तलाश रही है और अपने हिस्से का आकाश नाप रही है उससे मैं प्रसन्न भी हूँ और एक प्यारी सी ईर्ष्या भी है मुझे उनसे। मैंने साहित्य के मूलभूत संस्कारों से कभी समझौता नहीं किया और संवेदनशील मन के साथ सृजन किया शायद यही वजह है कि वह हर पाठक को उनकी अपनी रचना लगती है।

मुझे लगता है संवेदनहीन साहित्य समाज का मनोरंजन तो कर सकता है पर समाज को कभी प्रभावित नहीं कर सकता है। पद्मश्री मिलना सौभाग्य है पर उससे बड़ा सौभाग्य पाठकों के मन में जो मेरे लिए सम्मान धड़कता है वह है। मैं दोनों को पाकर हर्षित हूँ।

***

क्षितिज लघुकथा समग्र सम्मान उज्जैन के लघुकथाकार श्री संतोष सुपेकर को

नव वर्ष के स्वागत में मकर सक्रांति के अवसर पर रविवार दिनांक 14 जनवरी 2018 की शाम को क्षितिज संस्था द्वारा एक रचना पाठ संगोष्ठी का आयोजन डॉ. वसुधा गाडगिल के निवास पर इंदौर में किया गया।

इस आयोजन की अध्यक्षता वरिष्ठ साहित्यकार एवम रंगकर्मी श्री नंदकिशोर बर्वे ने की।

कार्यक्रम में 'क्षितिज ' संस्था द्वारा वर्ष 2018 से शुरू किए गए 'लघुकथा समग्र सम्मान' को इस वर्ष के लिए लघुकथाकार श्री संतोष सुपेकर (उज्जैन) को, लघुकथा के क्षेत्र में उनके महत्त्वपूर्ण योगदान के लिए प्रदान कर सम्मानित किया गया। संस्था अध्यक्ष श्री सतीश राठी उपाध्यक्ष डॉ अखिलेश शर्मा, सचिव अशोक शर्मा तथा आगत अतिथियों ने शाल,श्रीफल से सम्मानित कर सम्मान पत्र (मोमेंटो) प्रदान किया। सम्मान पत्र का वाचन संस्था सचिव श्री अशोक शर्मा भारती ने किया।संस्था अध्यक्ष द्वारा इस वर्ष में किए जाने वाले विविध आयोजनों की जानकारी दी गई।

कार्यक्रम में सर्वश्री पुरुषोत्तम दुबे, ब्रजेश कानूनगो,डॉ. पदमा सिंह, सतीश राठी, अशोक शर्मा भारती, रश्मी वागले, वसुधा गाडगिल, विनीता शर्मा, डॉ. अखिलेश शर्मा, जितेन्द्र गुप्ता, बी .आर. रामटेके,आशा वडनेरे, वैजयंती दाते, डॉ. रमेशचंद्र, राममूरत राही, आभा निवसरकर, आदि ने अपनी रचनाओं का पाठ किया। पढ़ी गई रचनाओं पर अश्विनी कुमार दुबे ने टिप्पणी करते हुए कहा कि लघुकथा अधिक से अधिक बात को थोड़े में कहने की विधा है जिसके साथ इस गोष्ठी में न्याय हुआ है। आपने सभी लघुकथाओं पर विस्तृत चर्चा करते हुए उनमें

निहित सार्थक संदेश और सकारात्मकता की सराहना की। सुश्री कविता वर्मा ने भी रचना पाठ की समीक्षा करते हुए लघुकथा पर चर्चा को ज़रूरी बताते हुए इंदौर के लघुकथाकारों द्वारा देश में नाम और सम्मान पाने के लिए शुभकामनाएँ प्रेषित की। आपने लघुकथाओं की समालोचना करते हुए उनके बिंब और प्रतीकों में अंतर्निहित अर्थ की विवेचना की।

क्षितिज लघुकथा समग्र सम्मान 2018, से सम्मानित श्री संतोष सुपेकर ने अपने वक्तव्य में कहा कि, लघुकथा की टोकरी भर मिट्टी की सौंधी-सौंधी महक विश्व स्तर पर विकसित हो रही है। इस नन्हीं सी उर्वरा से उपजे विचार ने कहानी, व्यंग्य, उपन्यास जैसे वटवृक्षों को जन्म दिया है। इसके साथ ही उन्होंने अपनी कुछ लघुकथाओं और कविताओं का पाठ भी किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए वरिष्ठ रंगकर्मी एवं साहित्यकार नंदकिशोर बर्वे ने कहा कि, लघुकथा में इतनी ताकत होती है कि वह बड़ी से बड़ी बात को अपने छोटे स्वरूप में बड़े ही तीखे तरीके से संप्रेषित कर देती है।

श्री सतीश राठी ने बताया कि, क्षितिज संस्था द्वारा लघुकथा पत्रिका क्षितिज का वर्ष 1983 से सतत प्रकाशन किया जा रहा है, और इस वर्ष से प्रतिवर्ष दो बड़े लघुकथा सम्मानों की शुरूआत की जा रही है और इसके अलावा, दो दिवसीय बड़े लघुकथा आयोजन की योजना भी बनाई जा रही है। श्री अखिलेश शर्मा ने वर्ष 2018 के लिए नई कार्यकारिणी की जानकारी भी दी। कॉर्यक्रम का संचालन सुश्री वसुधा गाडगिल ने किया और आभार प्रदर्शन श्री विष्णु गाडगिल ने किया।

***

महामति प्राणनाथ चतुर्थ जन्म शताब्दी समारोह

भोपाल हिन्दी भवन के श्री नरेश मेहता गोष्ठी कक्ष में महामति प्राणनाथ चतुर्थ जन्म शताब्दी समारोह के अन्तर्गत पं. ब्रजवासीलाल दुबे द्वारा लिखित पुस्तक 'महामति प्राणनाथ : जीवन दर्शन और साहित्य पर एक विमर्श' कार्यक्रम का आयोजन किया गया। मुख्य अतिथि के रूप में म.प्र. शासन के सांस्कृतिक सचिव श्री मनोज श्रीवास्तव ने कहा कि जो कार्य आदिशंकराचार्य ने अपने समय में किया था, वही कार्य अर्थात् राष्ट्रीय एकता एवं अखंडता के लिए महत्त्वपूर्ण प्रयास, महामति ने मध्य युग में किए। विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री कैलाशचंद्र पंत ने कहा कि महामति ने मध्य युग में समाज में जो जागरण का कार्य किया, वह अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। इसी प्रकार दूसरे विशिष्ट अतिथि श्री सुखदेवप्रसाद दुबे ने बताया कि सर्वधर्म समन्वय के क्षेत्र में महामति ने उस कठिन समय में साहसिक कार्य किए एवं सब धर्मों की समानता को सैद्धांतिक आधार पर समझाया। अध्यक्ष पद से बोलते हुए ख्यात साहित्यकार श्री रमेशचंद्र शाह ने बताया कि महामति ने उस समय हिन्दी भाषा एवं देवनागरी लिपि के महत्त्व को प्रतिपादित कर दिया था। उनका दर्शन एवं साहित्य बहुत महत्त्वपूर्ण है।

कार्यक्रम के प्रारंभ में विद्वान लेखक श्री ब्रजवासीलाल दुबे को स्मृति चिह्न एवं शॉल-श्रीफल प्रदान करके सम्मानित किया गया।

कार्यक्रम 'न्यू भूमिका' साहित्यिक एवं सांस्कृतिक संस्था द्वारा आयोजित था, जिसके संरक्षक श्री मनीष गुप्ता द्वारा अंत में आभार व्यक्त किया गया तथा सचिव चंद्रभान ने कार्यक्रम का संचालन किया।

***

भाषा क्लब का ''लेखक से मिलिए'' कार्यक्रम

राजकीय कला महाविद्यालय कोटा में भाषा क्लब के तत्वावधान में हिन्दी विभाग की ओर से लेखक से मिलिए कार्यक्रम के अन्तर्गत बुधवार को भारतीय ज्ञानपीठ और साहित्य अकादेमी के युवा पुरस्कार से सम्मानित युवा कवि ओम नागर से रचना प्रक्रिया पर वार्ता के साथ ही कविता पाठ किया।साथ ही ज्ञानपीठ के नवलेखन पुरस्कार से सम्मानित कथेत्तर गद्य डायरी ''निब के चीरे से'' के चुनिंदा अंश भी सुनाए। कार्यक्रम का शुभारम्भ में डॉ. विनीता राय ने माँ सरस्वती की वंदना प्रस्तुत की। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए कार्यवाहक प्राचार्य डॉ.कल्पना बोहरा ने कहा कि भाषा क्लब ने इस सत्र के दौरान विविधता से भरे भाषाई कार्यक्रम किए हैं। क्लब के सदस्यों को इस बात के लिए बधाई देती हूँ। हिन्दी विभाग की विभागाध्यक्ष डॉ. कंचना सक्सेना ने कहा कि कवि ओम नागर मिट्टी की सौंधी गंध के कवि हैं। उनकी कविताएँ जीवन की गहन अनुभूति से बुनी गई हैं। कविता उनके लिए जीवन के संघर्ष में जीने की शर्त की तरह हैं।

इस अवसर पर ओम नागर की कविता और डायरी पर बात करते हुए डॉ. विवेक कुमार मिश्र ने कहा कि रचनाकार के लिए वस्तुगत संसार और समय वहीं होता जो एक आम आदमी के लिए होता पर देखने की प्रक्रिया व दृष्टि से रचना जीवन और भाषा को गढ़ने का काम करती है। रचनाकार और रचना निरंतर अपने समय का आख्यान रचती रहती है ...इस क्रम में जीवन की सहजता का छन्द रचना के द्वारा ही बुना जाता है। डायरी ''नीब के चीरे से'' पर अपनी बात रखते हुए विवेक मिश्र ने कहा कि यह डायरी जीवन के उन पलों और उन लोगों की है जिन्हें अक्सर हम मामूली समझकर छोड़ देते है पर समाज के इन्हीं छूटे हुए लोगों को रचना के केन्द्र में रखकर ओम नागर लेखकीय संवेदनशीलता व ईमानदारी का बड़ा परिचय देते हैं। यहाँ किसान / मज़दूर / रिक्शावाला / सैलुनवाला है। यहाँ अभाव है पर सुकून की ज़िंदगी और उल्लास भरा जीवन है। इसकी कीमत संघर्ष की दास्ता में देखी जा सकती है।

कवि -लेखक ओम नागर ने इस अवसर पर अपनी कविताओं की भूमि और उस जीवन व समाज के बारे में बताया जहाँ से रचना जन्म लेती है। उनकी रचना की सबसे

उर्वर भूमि गाँव, खेती- किसानी और जीवन का वह ताप है जिससे एक रचनाकार का जन्म होता है। उन्होंने कहा कि रचनाकार अपने परिवेश और आस पास से अपनी विशेष दृष्टि से कविता और गद्य के विषय चुनता है। उन्होंने कहा कि दुनिया को सुंदर बनाने के लिए कवि अपनी रचनाओं में हमेशा मनुष्यता का पक्ष चुनता है,जो कारक मनुष्यता को क्षति पहुँचाते है,कवि उनका सदैव प्रतिपक्षी होता है। कवि का केवल एक पक्ष होता है,वो है मनुष्यता। साहित्य हो,कविता हो या कला का कोई दूसरा माध्यम,कलाएँ मनुष्य में संवेदनशीलता का सृजन कर उसे बेहतर मनुष्य बनने के लिए प्रेरित करती है। इस अवसर पर कवि ने अपनी हाल में पुरस्कृत कविता ''अंतिम इच्छा''का पाठ किया। जहाँ मुख्य बात यह बनती है कि मामूली व आम आदमी की इच्छा कहाँ पूछी जाती। इस क्रम में 'तेरह मासा ' पिताजी की वर्णमाला', देश दिशा से आती हुई खूशबू और राजस्थानी कविता ''भाषा कै भरोसै''आदि कविताओं के साथ ही आम आदमी का जिन्दगीनामा -डायरी ''निब के चीरे से''में से ''उस्तरे की धार से कटती उदासी''गद्य का पाठ किया।

लेखक से वार्ता के क्रम में डॉ. विवेक शंकर ने पुस्तको के शीर्षकों से संबंधित प्रश्न करने के साथ रचना प्रक्रिया पर बात की। डॉ. विनीता राय ने ने कहा कि ओम नागर की कविताएँ सीधे - सीधे हमें अपनी जमीन व गाँव से जोड़ देते हैं। डॉ. साधना कंसल ने कहा कि ओम नागर की कविताए सीधे हमारे मन को छुती हैं। सवाल जवाब के क्रम में डॉ. लालचंद कहार, डॉ. लड्डू लाल मीणा, डॉ. रामावतार डॉ. हुस्न आरा व डॉ. समय सिंह मीणा तथा डॉ.अंजली शर्मा ने कविता व रचना प्रक्रिया पर प्रश्न किए। कार्यक्रम के अंत में भाषा क्लब की ओर से ओम नागर को स्मृति चिन्ह भेंट कर सम्मानित भी किया। इस अवसर पर कार्यक्रम में डॉ. लड्डू लाल मीणा, डॉ. मनोज गौतम, डॉ. उषा व्यास, डॉ. अकीला आजाद, डॉ. हिमा गुप्ता, डॉ. सुनीता माथुर, डॉ. शशि प्रभा, डॉ. यशोदा मेहरा आदि की सक्रिय उपस्थिति रही। अंत में आभार डॉ. लालचंद कहार ने किया।

***

''सर्व भाषा साहित्य उत्सव'' का सफल आयोजन सम्पन्न

भाषा, साहित्य, कला और संस्कृति को समर्पित संस्था 'सर्व भाषा ट्रस्ट' द्वारा 'सर्व भाषा साहित्य उत्सव' का भव्य आयोजन गांधी शांति प्रतिष्ठान में किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि वयोवृद्ध स्वतंत्रता संग्राम सेनानी मेहता ओ. पी. मोहन और नेशनल लॉ यूनिवर्सिटी के वरिष्ठ प्रोफेसर डॉ. प्रसन्नांशु थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता न्यास के अध्यक्ष व वरिष्ठ साहित्यकार डॉ. अशोक लव ने की।

मुख्य अतिथि मेहता ओ. पी. मोहन ने सर्व भाषा ट्रस्ट की नीतियों की भूरि-भूरि प्रशंसा करते हुए कहा कि जिस प्रकार भारतीय संस्कृति वसुधैव कुटुंबकम् की अवधारणा पर सबको जोड़ना सिखाती है, उसी प्रकार 'सर्व भाषा ट्रस्ट' द्वारा भी सबको जोड़ा ही जा रहा है।

बताते चलें कि 'सर्व भाषा साहित्य उत्सव' तीन सत्र में विभाजित रहा। प्रथम सत्र में प्रसिद्ध चित्रकार असगर अली की संस्था कलाभूमि द्वारा चित्र प्रदर्शनी आयोजित की गई तथा द्वितीय सत्र में न्यास की त्रैमासिक ई-पत्रिका 'सर्व भाषा' के प्रवेशांक का लोकार्पण किया गया।

उक्त अवसर पर संपादक केशव मोहन पाण्डेय ने बताया कि पत्रिका के इस पहले अंक में ही 75 रचनाकारों की कुल सत्रह भाषाओं में रचनाएँ प्रकाशित हैं। साथ ही उन्होंने संदीप तोमर के जीवन संघर्ष की दास्तान उनकी आत्मकथा ''एक अपाहिज की डायरी'' के पत्रिका में सम्मलित किए जाने का जिक्र करते हुए बताया इसे धारावाहिक रूप में छापा जा रहा है। हर पाठक को इस आत्मकथायत्मक रचना से प्रेरणा मिलेगी। उन्होंने आने वाले अंकों में और अधिक भाषाओं की सहभागिता की बात कही। 'सर्व भाषा ट्रस्ट' के अध्यक्ष डॉ. अशोक लव ने ट्रस्ट के उद्देश्यों और गतिविधियों की बृहद् जानकारी देते हुए नेक काम में सबको जुड़ने की बात कही।

'सर्व भाषा साहित्य उत्सव' के प्रथम व द्वितीय सत्र का संचालन श्रीमती रेजीना मुखर्जी ने किया वहीं तृतीय सत्र का संचालन श्रीमती रीतिका शर्मा ने किया। कार्यक्रम के अंत में ट्रस्ट की महासचिव श्रीमती रीता मिश्रा से सभी आगंतुकों के प्रति आभार व्यक्त किया।

***

आकाशवाणी और राष्ट्रीय पुस्तक न्यास,भारत के बीच समझौता

आकाशवाणी केंद्र नई दिल्ली में आकाशवाणी लोक संपदा संरक्षण महापरियोजना के अंतर्गत रिकार्ड किये गए पारंपरिक संस्कार गीतों और अन्य अवसरों पर गाये जाने वाले लोक गीतों की लुप्त होती संपदा को पुस्तक रूप में प्रकाशित करने के लिए आकाशवाणी और राष्ट्रीय पुस्तक न्यास,भारत के बीच एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किया गया ताकि इस लुप्त होती संपदा को सामान्य जन के लिए उपलब्ध कराया जा सके। इस अवसर ओर न्यास की और से निदेशक डॉ. रीता चौधरी ने व आकाशवाणी की और से समझौते पर डॉ. राजशेखर व्यास ने हस्ताक्षर किए। इस अवसर पर न्यास अध्यक्ष डॉ. बल्देव भाई शर्मा ने इस समझौते का स्वागत करते हुए कहा कि निसंदेह इस समझौते के तहत न्यास पठनीय सामग्री अपने पाठकों के लिए सुंदर तरीके से प्रकाशित करेगा।इस के तहत तीन खण्ड का लोकार्पण नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेले के तहत किया जा चुका है। न्यास की मुख्य संपादक एवं संयुक्त निदेशक नीरा जैन व सहायक संपादक डॉ ललित किशोर मंडोरा भी मौजूद थे।

***

विश्व पुस्तक मेले में शिवना प्रकाशन द्वारा 9 तथा 12 जनवरी को लेखक मंच पर आयोजित कार्यक्रमों में पुस्तक विमोचन करते डॉ. प्रेम जनमेजय, डॉ. सुशील सिद्धार्थ, श्री नीरेंद्र नागर, डॉ. प्रज्ञा, डॉ. मुकेश कुमार, श्री सईद अंसारी तथा डॉ. नुसरत मेहदी

सुप्रसिद्ध शायर नीरज गोस्वामी की किताब 51 किताबें ग़ज़लों की का विमोचन

कहानीकार, उपन्यासकार मुकेश दुबे के कहानी संग्रह कम्मो मटियारिन का विमोचन

पंकज सुबीर द्वारा संपादित पुस्तक विमर्श-नक़्क़ाशीदार केबिनेट का विमोचन

युवा कहानीकार रश्मि तारिका के कहानी संग्रह कॉफ़ी कैफे का विमोचन

ग़ज़लकार नीरज गोस्वामी के ग़ज़ल संग्रह डाली मोगरे की के पेपरबैक संस्करण का विमोचन

शोधार्थी प्रसीता की पुस्तक प्रवासी भारतीय की समस्याएँ एवं संवेदनाएँ का विमोचन

शोधार्थी शहनाज़ की पुस्तक सुधा ओम ढींगरा की कहानियों में प्रवासी जीवन का विमोचन

उपन्यासकार तरुण कुमार पिथोड़े की पुस्तक हैप्पीनेस ए न्यू मॉडल ऑफ ह्यूमन बिहेवियर का विमोचन

डॉ. कमल किशोर गोयनका की पुस्तक प्रेमचंद अध्ययन की नई दिशाएँ का विमोचन

कवयित्री पूनम सिन्हा श्रेयसी के कविता संग्रह तेरी हँसी कृष्ण विवर सी का विमोचन

कहानीकार पंकज सुबीर के प्रेम संग्रह अभी तुम इश्क़ में हो का विमोचन

युवा कथाकार राजेश सोनवार के उपन्यास दो जुलाई दो हज़ार पाँच का विमोचन

विश्व पुस्तक मेले में शिवना प्रकाशन द्वारा 9 तथा 12 जनवरी को लेखक मंच पर आयोजित कार्यक्रमों में पुस्तक विमोचन करते डॉ. प्रेम जनमेजय, डॉ. सुशील सिद्धार्थ, श्री नीरेंद्र नागर, डॉ. प्रज्ञा, डॉ. मुकेश कुमार, श्री सईद अंसारी तथा डॉ. नुसरत मेहदी

कवयित्री कहानीकार सुमित्रा शर्मा के कहानी संग्रह बेहतर है मेरा खोमचा का विमोचन

वरिष्ठ पत्रकार, स्तंभकार डॉ. मुकेश कुमार की पुस्तक मीडिया मंथन का विमोचन

युवा लेखिका डॉ. प्रीति समकित सुराना के संग्रह दृष्टिकोण का विमोचन

कहानीकार उपन्यासकार मुकेश दुबे के कहानी संग्रह नदी अब नहीं गाती का विमोचन

युवा कवयित्री ई अर्चना नायडू के कविता संग्रह आचमन प्रेम जल से का विमोचन

अनुवाद की आवाजाही पर विशेष वक्ता के रूप में लेखिका डॉ. प्रज्ञा का उद्‌बोधन

वरिष्ठ कवि कृष्णकांत निलोसे के कविता संग्रह तुम्हारे जाने के बाद का विमोचन

युवा रंगकर्मी, लेखक प्रसन्न सोनी के नाटक भँवरा बड़ा नादान का विमोचन

कार्यक्रम संचालक के रूप में मंच संचालन करते सुप्रसिद्ध टीवी एंकर सईद अंसारी

पुस्तकों पर अपनी प्रतिक्रिया प्रदान करते वरिष्ठ साहित्यकार डॉ. प्रेम जनमेजय

पाकिस्तानी लेखिका सबूहा ख़ान के संस्मरण संग्रहों दिल्ली से कराची तथा प्यारे दुश्मन के नाम का विमोचन

मुख्य अतिथि के रूप में अपना उद्‌बोधन देते वरिष्ठ पत्रकार नीरेंद्र नागर

मूसलचंदों का समय

दोस्तो, यह समय मूसलचंदों का समय है, इस समय में जो मूसलचंद नहीं है उसका कुछ नहीं होना-हवाना है। आप ने भी कहावत सुनी ही होगी 'दाल-भात में मूसलचंद', तो ये उन्हीं मूसलचंदों की बात हो रही है। पता नहीं यह कहावत कब बनी, किसने बनाई मगर सच यही है कि यह कहावत आज के समय पर बिल्कुल सटीक बैठ रही है। आप नज़र उठा कर अपने आस-पास देखेंगे तो आपको हर तरफ़ मूसलचंद ही नज़र आएँगे, जो आपकी सजी हुई दाल-भात की थाली में पसर कर विराजमान होने की कोशिश कर रहे होंगे। असल में यह मूसलचंद कौन बला हैं आइए अब यह जानते हैं। आप सुबह उठकर अपने फेसबुक एकाउंट पर आते हैं, तो पता चलता है कि आपके पास तो ढेरों नोटिफिकेशंस आए हुए हैं। आप हैरान कि वाह! हमारे तो इतने चाहने वाले हो गए हैं। लेकिन पता चलता है कि वह नोटिफिकेशंस आपकी किसी पोस्ट पर नहीं आए हैं, वो तो यह हुआ है अमुक साहब की कोई रचना ढिमुक पत्रिका में प्रकाशित हो गई है, और उन्होंने मारे उल्लास के उसे फेसबुक पर डाला है तथा आपको टैगिया दिया है। या फलाने महोदय को कोई ढिकाना सम्मान प्राप्त हो गया है तथा उन्होंने आपको अत्यंत प्रफुल्लित अवस्था में टैगित कर दिया है। या अमुक शहर में वो ढिमुक कार्यक्रम में मुख्य वक्ता / काव्य पाठ / कहानी पाठ, मतलब कुछ भी करने गए थे और अब आपको सूचना देना तो उनका फ़र्ज़ बनता है। अब आप, जो फेसबुक पर कोई पोस्ट लगाने आए हैं, आप बैठ कर टैग रिमूव करने में जुट जाते हैं। मूसलचंदों की सफाई करने में। फिर पता चलता है कि किन्हीं अमाके महोदय ने अपने ही नाम से एक ग्रुप बना लिया है और आपको उसमें जोड़ दिया है कि आप तो उनके प्रशंसक ठहरे। अब आपके पास उस ग्रुप्स से भी नोटिफिकेशंस आने प्रारंभ हो जाते हैं, तथा आप ऑफिशियली उनके समर्थकों में काउंट भी हो जाते हैं। हमें मालूम है कि आप अगले की इतनी कोशिशों के बाद भी उसकी उस रचना को नहीं पढ़ने वाले, आप ठहरे आलसी जीव। तो अगला भी कोई कम मूसलचंद नहीं है, वह आपके फेसबुक के इनबॉक्स में तुरंत फाइल भेज देता है इस संदेश के साथ कि -ढिमकी पत्रिका में मेरी रचना प्रकाशित हुई है, पढ़कर प्रतिक्रिया प्रदान करें। मतलब यह कि पढ़ें भी और साथ में उस पर प्रतिक्रिया भी प्रदान करें। अगले को अभी चैन नहीं मिलना है, वह अब आपको दूसरे मोर्चे पर घेरता है, व्हाट्सअप पर। सबसे पहले तो सारे ग्रुप्स में बमबार्डिंग करता है। और रह-रह कर देखता है कि किस-किस ने उसका मैसेज पढ़ लिया है। जिस-जिस ने नहीं पढ़ा, उसे व्हाट्सअप पर व्यक्तिगत रूप से मैसेज में रचना की फाइल भेजता है, उसी संदेश के साथ कि पढ़ो और प्रतिक्रिया दो। जैसे ही आपको भेजे गए संदेश पर उसे दो नीली टिक्स दिखाई देती हैं, वैसे ही वो तुरंत अगला संदेश भेजता है -कैसी लगी ? आप हैरान कि अभी तो आपने मैसेज को खोला ही है और उस पर प्रश्न भी आ गया। आप मेल खोलते हैं तो वहाँ भी मूसलचंद आपको विद्यमान मिलते हैं, अमके सम्मान, ढिमकी पत्रिका में प्रकाशन, फलाने कार्यक्रम में उपस्थिति, जैसे ईमेल्स से आपका इनबॉक्स भरा हुआ मिलता है। यदि आप इनमें से किसी भी प्लेटफार्म पर नहीं हैं, तो अगला मजबूरन आपको एसएसएस करके बताता है कि क्या महत्त्वपूर्ण उसके साथ घट चुका है और आप हैं कि अनजान ही बने हुए हैं। यह सचमुच आत्मप्रचार में लगे मूसलचंदों का युग है। दोस्तो, आप यदि मूसलचंद नहीं बनना चाहते हैं तो बस और बस अपनी फेसबुक वॉल पर, अपने ब्लॉग पर, हर उस स्थान पर अपना प्रचार कीजिए जो आपका प्राइवेट स्पेस है। दूसरों के स्पेस में घुस-घुस कर अपने आपको सर्वश्रेष्ठ मूसलचंद साबित करने की कोशिश जो आप कर रहे हैं, उसे बंद कर दें..... आज से ही.....

सादर आपका ही,

पंकज सुबीर

पंकज सुबीर
पी. सी. लैब, शॉप नंबर 3-4-5-6,
सम्राट कॉम्प्लैक्स बेसमेंट, बस स्टैंड के
सामने, सीहोर, मप्र, 466001
मोबाइल : 9977855399
ईमेल : subeerin@gmail.com

शिवना प्रकाशन : जनवरी 2018 सेट में शामिल पुस्तकें

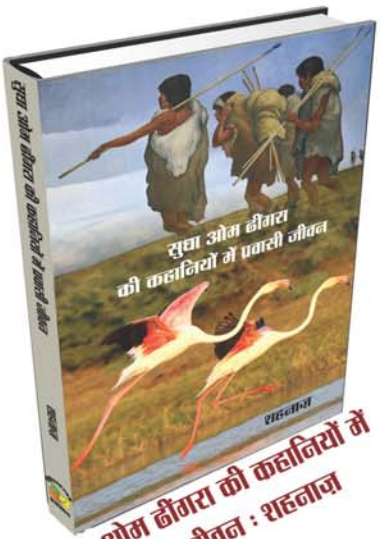

सुधा ओम ढींगरा की कहानियों में
प्रवासी जीवन : शहनाज़

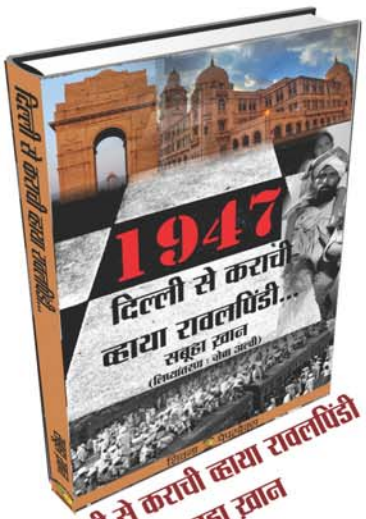

दिल्ली से कराची क्षाया रावलपिंडी
सबूहा ख़ान

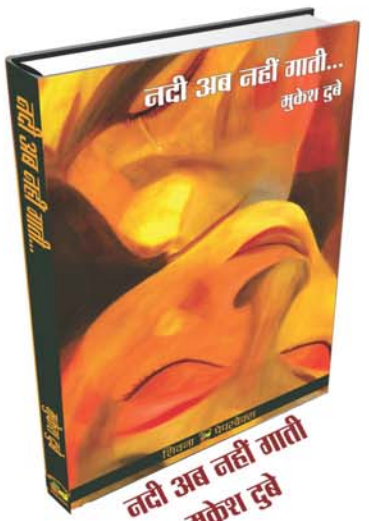

नदी अब नहीं गाती
मुकेश दुबे

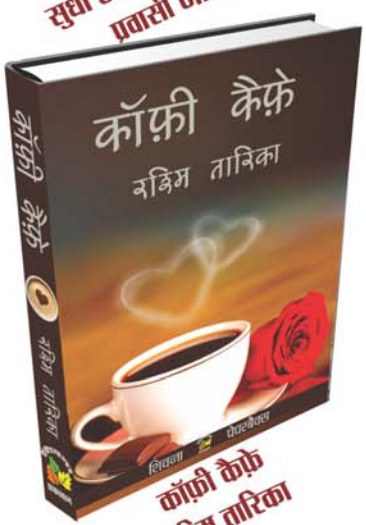

कॉफ़ी कैफ़े
रश्मि तारिका

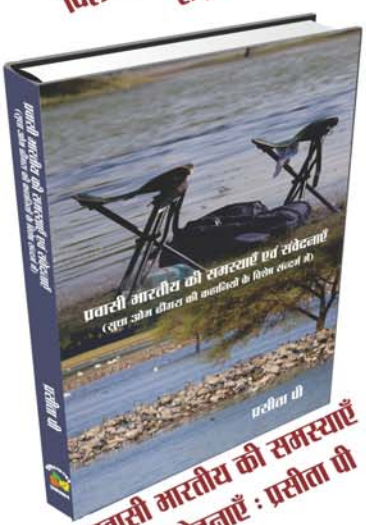

प्रवासी भारतीय की समस्याएँ
एवं संवेदनाएँ : प्रसीता पी

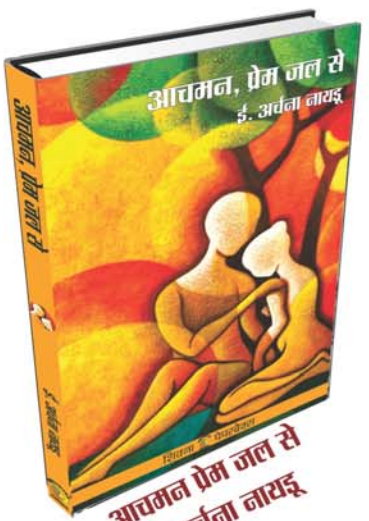

आचमन प्रेम जल से
ई. अर्चना नायडू

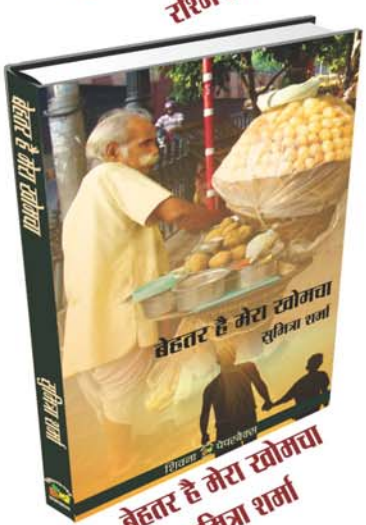

बेहतर है मेरा खोमचा
सुमित्रा शर्मा

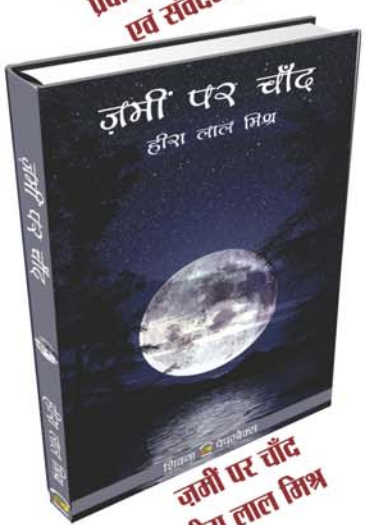

ज़मीं पर चाँद
हीरा लाल मिश्र

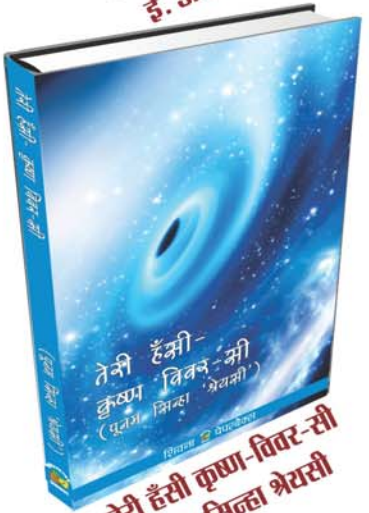

तेरी हँसी कृष्ण-विवर-सी
पूनम सिन्हा श्रेयसी

शिवना प्रकाशन

शिवना प्रकाशन, शॉप नं. 3-4-5-6, सम्राट
कॉम्प्लैक्स बेसमेंट, बस स्टैंड के सामने
सीहोर, मध्य प्रदेश 466001
फोन : 07562-405545, 07562-695918
मोबाइल : +91-9806162184 (शहरयार)
ईमेल : shivna.prakashan@gmail.com
http://shivnaprakashan.blogspot.in
https://www.facebook.com/shivna.prakashan

शिवना प्रकाशन की पुस्तकें सभी प्रमुख ऑनलाइन शॉपिंग स्टोर्स पर

amazon http://www.amazon.in
flipkart.com http://www.flipkart.com
Paytm https://www.paytm.com
ebay http://www.ebay.in

दिल्ली में पुस्तकें प्राप्त करें : हिन्दी बुक सेंटर, 4/5 आसफ अली रोड
फोन : 011-23286757 http://www.hindibook.com

Vibhom Swar ● Quarterly ● April-June 2018 ● RNI No. MPHIN/2016/70609 ● ISSN2455-9814

शिवना प्रकाशन - नई पुस्तकें

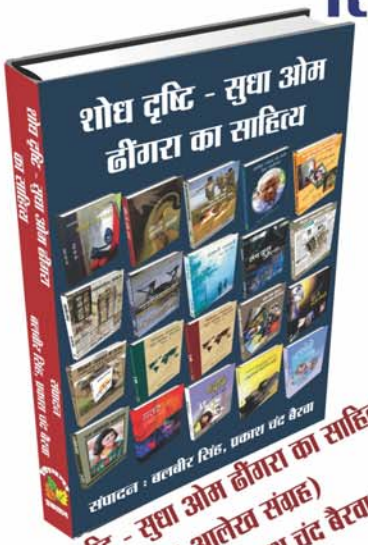

शोध दृष्टि - सुधा ओम ढींगरा का साहित्य
(शोध-आलेख संग्रह)
बलबीर सिंह, प्रकाश चंद बैरवा

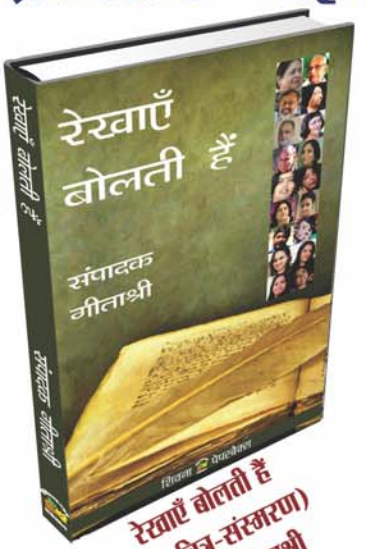

रेखाएँ बोलती हैं
(रेखाचित्र-संस्मरण)
संपादक गीताश्री

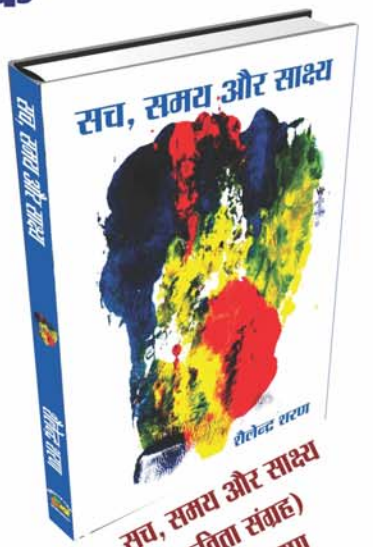

सच, समय और साक्ष्य
(कविता संग्रह)
शैलेन्द्र शरण

खामोश आवाज़ें
(उर्दू कहानी संग्रह)
सैयद असद मेहदी

चारों ओर कुहासा है
(कविता संग्रह)
रघुवीर शर्मा

संकल्प और सपने
(लघुकथा संग्रह)
सदाशिव कौतुक

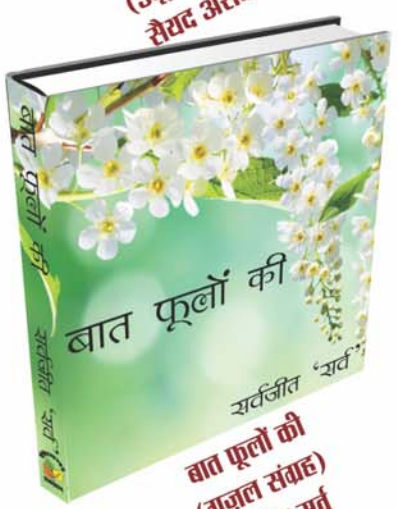

बात फूलों की
(ग़ज़ल संग्रह)
सर्वजीत सर्व

अभी तुम इश्क़ में हो...(पेपरबैक)
(ग़ज़ल संग्रह)
पंकज सुबीर

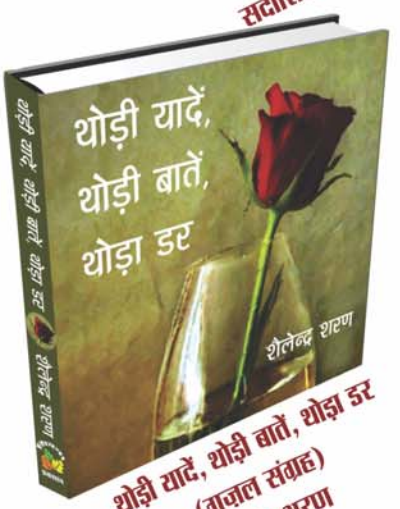

थोड़ी यादें, थोड़ी बातें, थोड़ा डर
(ग़ज़ल संग्रह)
शैलेन्द्र शरण

If Undelivered Please Return to :
P. C. Lab, Shop No. 3-4-5-6, Samrat Complex Basement, Opp. Bus Stand, Sehore, M.P. 466001
Phone 07562-405545, 07562-695918, Mobile 09584425995, 07828313926, 09806162184

स्वत्वधिकारी एवं प्रकाशक पंकज कुमार पुरोहित के लिए पी. सी. लैब, शॉप नं. 3-4-5-6, सम्राट कॉम्प्लैक्स बेसमेंट, बस स्टैंड के सामने, सीहोर, मध्य प्रदेश 466001 से प्रकाशित तथा मुद्रक ज़ुबैर शेख़ द्वारा शाइन प्रिंटर्स, प्लॉट नं. 7, बी-2, क्वालिटी परिक्रमा, इंदिरा प्रेस कॉम्प्लैक्स, ज़ोन 1, एम पी नगर, भोपाल, मध्य प्रदेश 462011 से मुद्रित।